प्रकाशक
श्री प्रभाकर साहित्यालोक
श्रीरामरोड, लखनऊ

प्रथमावृत्ति—जून, १९५९
मूल्य—छः रुपया

मुद्रक
श्री चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु
समाज सेवा प्रेस
सआदतगंज रोड, लखनऊ

अनुवादक का वक्तव्य

मंगलमय भगवान् की दया, पूर्वजों की अनुकम्पा और गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझ अकिञ्चन ने, आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व अवतीर्ण, वंगभाषा के महाकाव्य "कृत्तिवास रामायण" के हिन्दी-रूपान्तर को प्रस्तुत करने का साहस किया है। पाठकों के लिये भी यह कौतूहलजनक है। प्रश्न उठ सकता है कि हिन्दी में रामचरित्र पर तुलसी की अमर रचना 'रामचरितमानस' के अखंड और अखिल भारतीय साम्राज्य के रहते एक नवीन रामायण की रचना करने की आवश्यकता क्या है ? इस जिज्ञासा के समाधान और महासन्त कृत्तिवास तथा उनके सुललित और सर्वांगपूर्ण इस महाकाव्य का, पाठकों के समक्ष, कुछ परिचय प्रस्तुत करने के हेतु, हिन्दीकार के नाते यह वक्तव्य देना आवश्यक प्रतीत हुआ है।

संस्कृत के उत्तरकालीन साहित्य और संस्कृतेतर भारत की क्षेत्रीय तथा जनपदों की अन्य विपुल भाषाओं मे प्राप्त धार्मिक अथवा सांस्कृतिक प्रायः सारे साहित्य पर व्यास के जयग्रन्थ (महाभारत) अथवा रत्नाकर (वाल्मीकि) की रामायण का प्रभाव है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि-रचित 'वाल्मीकीय रामायण', रामचरित्र पर उपलब्ध रचनाओं में सर्वप्रथम काव्य † है। इसी के आधार पर बृहत्तर भारत ‡ के विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न भाषाओं में कालिदास, कृत्तिवास, तुलसीदास आदि सरस्वती के अनेक वरद पुत्रों ने समय-समय पर मर्यादापुरुषोत्तम राम पर अपनी-अपनी भावना के अनुरूप काव्य-रचना की है।

उल्लेखनीय है कि गोस्वामीजी के 'रामचरितमानस' के रचना-काल से लगभग सौ वर्ष पूर्व "कृत्तिवासी रामायण" का आविर्भाव हुआ। उसके रचयिता संत कृत्तिवास वगभाषा के आदिकवि माने जाते हैं। प्रारम्भ में संस्कृत के अभिमानी पण्डितों ने कृत्तिवास की रचना का बड़ा उपहास किया। उन पर चारो ओर से आक्षेप और प्रहार होने लगे। किन्तु परम स्वाभिमानी, संस्कृत और बंगला भाषाओं के समानरूपेण विद्वान, महापण्डित कृत्तिवास की दृढ़ता और ओज के समक्ष उन पण्डितो का मिथ्याभाव टिक नहीं सका। थोड़े ही समय में जनताजनार्दन के हृदय को मुग्ध कर इस महाकाव्य ने चिरंतन साम्राज्य के लिए अपना स्थान बना लिया। वग-भाषा-भाषी प्रत्येक परिवार में आवाल-वृद्ध-वनिता सब इसके अनवरत गान में आनदित होने लगे।

---

† वैसे आर्ष वचनो से यह आभास मिलता है कि च्यवन ऋषि एव उनके अनुवर्ती वशजों ने समय-समय पर रामायण का गान किया है और उन्ही को परपरा मे आगे चलकर उत्पन्न रत्नाकर (वाल्मीकि) द्वारा रामचरित्र का जो सस्करण हुआ, वही आजकल की प्रचलित "वाल्मीकीय रामायण" का कलेवर अथवा कलेवर का आधार है।

‡ वृहत्तर भारत मे अफगानिस्तान, पाकिस्तान, वलख, वरमा, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा हिन्द महासागर के द्वीपपुञ्ज भी सम्मिलित थे।

संत कृत्तिवास का समय गोस्वामी तुलसीदास जी से लगभग एक शताब्दी पूर्व होने के बावजूद उनका जन्म-स्थान, कुल और वंश-परिचय असंदिग्ध और सुविख्यात है। सन् ७३२ ई० में वंग-नरेश 'आदिशूर' द्वारा, यज्ञ के लिए कान्यकुब्ज देश से आमंत्रित और फिर बंगाल में ही बस गये पाँच ब्राह्मण-प्रवरों में सुपूज्य भारद्वाज गोत्रीय 'श्रीहर्ष' पण्डित से तेरहवीं पीढ़ी में 'माधवाचार्य' का जन्म हुआ। माधवाचार्य के 'उत्साह', उत्साह के 'आयित', आयित के 'उद्धव', उद्धव के 'शिव' और शिव के पुत्र 'नृसिंह' ओझा हुए, जो सुवर्णग्राम के अधिपति महाराज 'वेदानुज' के प्रधान मंत्री थे। आज से लगभग ६२५ वर्ष पूर्व वेदानुज-काल में अराजकता उत्पन्न हो जाने के फलस्वरूप नृसिंह ओझा ने सुवर्णग्राम का परित्याग कर उस समय के अति समृद्धिशाली 'फुलिया' ग्राम में जाकर निवास किया।

कृत्तिवास के 'आत्मपरिचय' तथा इतिहास के विद्वानों के मत से प्रकट है कि 'फुलिया' धन-धान्य पूरित और मनोरम पुष्पोद्यानों से प्रफुल्लित, गंगाभागीरथी के उत्तर-पूर्व तट पर, श्रीमानों एवं प्रकाण्ड पण्डितों का उस समय प्रमुख पीठस्थान था। फुलिया, बेलगड़े, मालीपोता, सिमला, नवला, प्रभृति पञ्चग्राम संगठित होकर 'फुलिया-समाज' के नाम से प्रसिद्ध थे। कृत्तिवास से पूर्व और पश्चात् इस जागती भूमि ने अनेक भारतप्रसिद्ध विद्वानों एवं साधकों को जन्म दिया। स्वयं कृत्तिवास के अति पवित्र कुल में ही 'अन्नदामंगल' आदि के रचयिता 'भारतचन्द्र गुणाकर', सुविख्यात स्मार्त और नैय्यायिक 'वासुदेव सार्व्वभौम', ओझा (उपाध्याय) वंश के प्रथम 'मुखोपाध्याय' उपाधिधारी 'श्रीगर्भ', 'रामचंद्र विद्यालंकार', 'सर आशुतोष मुखर्जी' और अभी कल ही हम से बिलग हुए, राष्ट्र के लिये प्राणोत्सर्ग करनेवाले 'स्व० श्यामाप्रसाद मुखर्जी' आदि नररत्नों ने या तो इसी पुण्यभूमि में जन्म लिया अथवा 'फुलिया के मुखर्जी' के पुनीत परिवार का होने के नाते अपनी कुलीनता का गर्व करते रहे हैं। यहीं पर उल्लेखनीय है कि भारत के सुवर्णकलश साहित्य-सम्राट बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय से आठ पीढी पूर्व उनके पूर्वज अवस्थी गंगानन्द भी 'चटर्जीवंश' के अतिकुलीन 'फुलिया घराने' के आदिपुरुष थे और फुलिया के ही निवासी थे। आज कालस्रोत के प्रवाह मे पडकर "फुलिया" गंगा से काफी दूर हटकर एक साधारण ग्राम मात्र रह गया है। संत कृत्तिवास की यादगार उनका 'दोलमञ्च' आज भी एक टीले की शक्ल मे वहाँ विराजमान है।

अस्तु उसी फुलिया में नृसिंह ओझा ने सुवर्णग्राम से आकर निवास किया। नृसिंह ओझा के 'गर्भेश्वर', गर्भेश्वर के 'मुरारि', मुरारि के तृतीय पुत्र 'वनमाली' और इन्हीं वनमाली की पत्नी 'मालिनी' के गर्भ से उत्पन्न छः पुत्र और एक कन्या में कृत्तिवास कदाचित् ज्येष्ठ थे। इस प्रकार इस पुनीत वंश के प्रथम बंगवासी 'श्रीहर्ष' से २२वीं पीढी मे सन्त कृत्तिवास ने जन्म लिया।

कृत्तिवास ने स्वरचित 'आत्मपरिचय' नामक प्रबन्ध मे अपने जन्मदिवस के संबंध में इस प्रकार लिखा है —

"आदित्यवार श्रीपञ्चमी पूर्ण माघ मास। तथि मध्ये जन्म लइलाम कृत्तिवास॥"

इसके अनुसार पंचांग में ठीक शुभ क्षण खोजकर तथा अन्य विविध तथ्यो एवं तर्कों के आधार पर अनेक वंगीय विद्वानों के सहयोग से पण्डितप्रवर अध्यापक योगेशचन्द्र ने १४३३ ई० ११ फरवरी, रविवार माघ सक्रांति, रात्रिकाल को कृत्तिवास का जन्मकाल माना है। उन्हीं विद्वद्वर के मत से ४७ वर्ष की आयु प्राप्त होने पर १४८० ई० में संत का निर्वाण-काल और १४६७ ई० से १४७२ ई० के मध्य के पाँच वर्षों को रामायण कृत्तिवास की रचना का समय माना जाता है। कृत्तिवास के संतान होने का उनके 'आत्मपरिचय' में अथवा अन्यत्र भी कहीं उल्लेख नहीं है।

कृत्तिवास के पितामह मुरारि ओझा व्यास और मार्कण्डेय के समान विद्वान् एव तपस्वी थे। उनके सात पुत्र और वहुसंख्यक पौत्र-प्रपौत्रों का विपुल परिवार अतुल पाण्डित्य, कीर्ति और ऐश्वर्य का यशस्वी केन्द्र था। वारह वर्ष की अवस्था में कृत्तिवास, गंगापार किसी (अज्ञात-नामा) सर्व गुणनिधान गुरु के पास पढ़ने जाने लगे। कृत्तिवास ने स्थान-स्थान पर उनको महातेजस्वी कहकर व्यास-वाल्मीकि से तुलना की है। अध्ययन के पश्चात् सरस्वती के वरद पुत्र कृत्तिवास ने गौड़ेश्वर के प्रमुख सभापण्डित का पद प्राप्त किया। उस समय वगाल मे अनेक राजा-महाराजा सव गौड़ेश्वर करके प्रसिद्ध होते थे। कृत्तिवास के आश्रयदाता गौड़ेश्वर का नाम अज्ञात है। इन्हीं गौड़ेश्वर की प्रार्थना पर 'सन्त' द्वारा रचित ललित महाकाव्य आज 'कृत्तिवास रामायण' के नाम से प्रसिद्ध है।

'कृत्तिवास रामायण' सात काण्डों में समाप्त जनसाधारण के लिए सुवोध अति सरल पयार छन्दों में वर्णित 'पाञ्चाली गान' है। महाकाव्य को पढ़ने पर यह निश्चय प्रतीत होता है कि कृत्तिवास छन्द, व्याकरण, ज्योतिष, धर्म और नीति के अगाध पण्डित थे। भाषा सरल अलकार-अनुप्रास से युक्त तथा भाव और कवित्व-कल्पना से परिपूर्ण है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आचार का पूरा ज्ञान और संस्कृत-भाषा पर सर्वाङ्ग अधिकार है। राम-नाम में परम आस्था और विष्णु-शिव-शक्ति के स्वरूप मे उनकी समानरूपेण भक्ति थी।

'कृत्तिवास' द्वारा हस्त-लिखित रामायण की प्रति अप्राप्य है। यदा-कदा प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपियों और सर्वत्र गाये जानेवाले पाञ्चाली गान के सग्रह वहुधा एक दूसरे से भिन्न भी पाये गये हैं। अत: प्रस्तुत रामायण ग्रन्थ के विषय मे निश्चय रूप से यह कहना असम्भव है कि कृत्तिवास की प्रस्तुत रचना में कितना अंश प्रक्षिप्त है। फिर भी 'वगीय साहित्य परिषद्'-जैसे भाषा-देव-मदिरों में संगृहीत रामायण की अति प्राचीन लगभग ४०० पाण्डुलिपियो का निरीक्षण करके, श्रीरामपुर मिशनरी के प्रधान पादरी श्री केरी साहव के अनुरोध पर, विद्वत्मार्तण्ड स्व० जयगोपाल तर्कालंकार के प्रयास से सन् १८०२ ई० में "श्रीरामपुर मिशन प्रेस" से सर्वप्रथम 'रामायण कृत्तिवास' का परिष्कृत संस्करण प्रकाशित हुआ। तव से अनेक विद्वानों ने समय-समय पर उसका परिमार्जन किया और आज वाजार में उपलब्ध रामायण उन्हीं प्रयासों का पुष्कल परिणाम है। भले ही उनमे कोई-कोई अंश प्रक्षिप्त हों, किन्तु वह पवित्र ग्रन्थ कृत्तिवास की रचना करके मान्य है।

'कृत्तिवास रामायण' बंगभाषा-भाषियों की रग-रग में ओतप्रोत है। धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, पण्डित-मूर्ख, प्रत्येक सम्प्रदाय, समाज और वर्ग के लिए समानरूपेण वह आनन्दकारी है। संस्कृत में कालिदास और हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास के ही समान बँगला में 'कृत्तिवास' अजर-अमर और उनकी 'रामायण-रचना' सर्वकालानुयायी, सर्वतोगामिनी तथा सर्वतोव्यापिनी है। भाव सुस्पष्ट और भाषा प्राञ्जल, सरल और रोचक होते हुए भी अतुल पाण्डित्य-पूर्ण है।

'कृत्तिवास रामायण' का कथानक प्राय. वाल्मीकीय रामायण के अनुसार है, फिर भी स्थान-स्थान पर अन्य पौराणिक अंशों का भी पर्याप्त समावेश है। गोस्वामीजी के मानस की तुलना मे आख्यानों की अत्यधिक प्रचुरता कृत्तिवास रामायण की अपनी विशेषता है।

कृत्तिवास द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों में रामायण के अतिरिक्त 'योगाधार वन्दना', 'शिवरामेर युद्ध', 'रुक्मांगदेर एकादशी' प्राप्य हैं। बँगला भाषा के इस महाकाव्य के रचयिता की सर आशुतोष मुखर्जी ने भी भूरि-भूरि वन्दना की है, और उसी कुल में जन्म पाने के नाते अपने को धन्य माना है।

अस्तु, प्रात स्मरणीय सन्त कृत्तिवास और उनकी 'रामायण' का संक्षिप्त परिचय देने के पश्चात् ऐसे 'सुधाभाण्ड' को हिन्दी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर अधिक लिखने का प्रयोजन शेष नहीं रहता। असख्य कथारत्नों से अलंकृत, सर्वरसपूर्ण इस महाकाव्य से राष्ट्रभाषा के भण्डार की श्रीवृद्धि करने की लालसा इस अकिंचन के मन में जागृत हुई।

इस मनोरथ के जागने पर, सन् १६१६ ई० में स्टीम प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'कृत्तिवास बालकाण्ड' को देखा। उसके सबध में जिज्ञासाएँ कीं जिनसे विदित हुआ कि मेरे पड़ोसी एवं सजातीय, साहित्यमूर्धन्य स्व० पण्डित रूपनारायण पाण्डेयजी ने प्रसिद्ध साहित्यप्रेमी न्यायाधीश स्व० बा० कालीप्रसन्न सिह के आग्रह पर यह रचना की थी। जो बाद मे बा० कालीप्रसन्न सिंह के नाम से ही प्रकाशित हुई। स्व० पाण्डेयजी से चर्चा करने पर उन्होंने मुझे उक्त बातें बतलाईं। अनुवाद के सबध मे भी उन्होंने बताया कि "कृत्तिवास बालकाण्ड" के हिन्दी-अनुवाद से ही बँगला भाषा के हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत करने का कार्य उन्होंने आरम्भ किया था। और शायद इसी कारण बँगला का प्रारम्भिक अभ्यास होने से कृत्तिवास रामायण का हिन्दी भाषा मे प्रस्तुत बालकाण्ड, मूल ग्रन्थ का अनुवाद न होकर एक स्वतंत्र-सा ग्रन्थ बन गया। उनका वह बालकाण्ड स्वतंत्र रूप से निस्सन्देह उनकी विद्वत्ता एव प्रतिभा का परिचायक है। स्व० पाण्डेयजी हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि, संस्कृत-भाषा के प्रकाण्ड पण्डित तथा श्रीमद्भागवत के पुश्तैनी विद्वान् थे। और कदाचित इसीलिये वे कृत्तिवास रामायण के आधार को लेकर भी ग्रन्थ मे श्रीमद्भागवत, योगवाशिष्ठ, अध्यात्म-रामायण, रघुवंश, मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण आदि से विविध विषयों को प्रचुर संख्या मे लेकर एक स्वतंत्र वृहत्काव्य की रचना-निर्माण का लोभ संवरण न कर सके।

यहाँ तक कि वह ग्रन्थ मूल कृत्तिवास के आदिकाण्ड से कई गुना बढ़ भी गया। यह ग्रन्थ बा० कालीप्रसन्न सिंह के नाम से छपा। पाण्डेयजी का नाम उसपर नहीं दिया गया है। आज उसके संस्करण प्राप्य भी नहीं हैं।

अतः यह विचार कर कि स्व० पाण्डेयजी की उक्त रचना से 'कृत्तिवास रामायण' के न तो ७ काण्डों की पूर्ति होती थी और न आदिकाण्ड की ही, हिन्दी के इस अनमोल ग्रन्थ को प्रस्तुत करने की मेरी अभिलाषा दृढ़तर हो उठी।

बँगला रामायण की प्राञ्जल और सुबोध भाषा ने मेरे कार्य को सरल किया। गोस्वामीजी के रामचरितमानस के प्रमुख छन्द "दोहा-चौपाई" मानो रामायण के स्वरूप ही समझे जाते हैं। इसलिए कृत्तिवास के हिन्दी पद्यानुवाद को भी मैंने दोहा-चौपाई में ही रचना आरम्भ किया। यह पुष्कल कार्य १९५३ ई० में आरम्भ हुआ परन्तु मध्यम वर्ग की पारिवारिक एवं अन्यान्य कठिनाइयों के कारण लगभग ६ वर्षों बाद आज केवल आदिकाण्ड प्रकाशित होकर पाठकों के सामने प्रस्तुत हो सका है। द्वितीय खण्ड प्रेस में दिया जा रहा है। इस दूसरे खण्ड मे अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा तथा सुन्दरकाण्ड हैं। तीसरे खण्ड में लंका और उत्तरकांड सपूर्ण होकर पाठकों के सामने प्रस्तुत हो जायें तो भगवान् की असीम अनुकम्पा से जीवन सफल समझूँगा।

हिन्दी-काव्य में १६ चौपाइयों की एक कड़ी रखी गई है। और इन कड़ियों को कहीं एक, कहीं दो, 'दोहा-सोरठा' से जोड़कर एक-एक विराम की क्रमसंख्या दी गई है। एक कठिनाई अनुवाद करते समय मेरे सामने और थी। बँगला भाषा मे संस्कृत के अनुसार प्रत्ययों से क्रिया का भी काम लिया जाता है। हिन्दी मे वह सुविधा कम होने से मैटर "लाइन टु लाइन" जाने में कठिनता होती थी। दूसरी ओर मेरा सतत प्रयास था कि हिन्दी का कलेवर बँगला की अपेक्षा बढ़ने न पाये। इस कठिनाई को किसी प्रकार पार किया। कथानक और भावचित्रण में कहीं ही ऐसा अवसर आया है कि हिन्दी और बँगला-पाठों में कुछ अन्तर प्रतीत हो। उनका उत्तरदायी सर्वरूपेण हिन्दीकार है। हिन्दी-अनुवाद काव्य-भाषा और व्यंजना की दृष्टि से कहाँ तक सफल हुआ है, यह सहृदय पाठको के देखने की वस्तु है। उदार पाठकों से प्रार्थना है कि ग्रन्थ में मेरी त्रुटियों को क्षमा करते हुए सत कृत्तिवास के सुधा-सलिल का पान करें।

पुस्तक को मुद्रण के हेतु देते समय एक नई समयोचित भावना जागृत हुई। बँगला मूल को नागरी लिपि में हिन्दी-रचना के साथ-साथ देने से हिन्दी पाठक को मूल बँगला-काव्य के पढ़ने का भी सौभाग्य प्राप्त होगा। बँगला भाषा जैसी सरल, मधुर और संस्कृतमय है, उससे दो ही एक आवृत्ति कर लेने पर मूल काव्य समझ में आने लगेगा। इस प्रकार बँगला भाषा का ज्ञान और क्रमशः बँगला भाषा के अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की अभिरुचि भी उत्पन्न होगी। दूसरी ओर बँगला भाषा-भाषी अपने पवित्र सद्ग्रन्थ को हिन्दी-लिपि में पाकर राष्ट्रलिपि को सीखने और फिर क्रमश. राष्ट्र-भाषा के साहित्य और विशेष रूप से गोस्वामीजी के 'रामचरितमानस' जैसे अद्वितीय महाकाव्य को पढ़ने-समझने मे भी अनुरक्त होंगे। इस प्रकार

राष्ट्र-भाषा को अखिल देश मे व्याप्त करने और विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को एक राज्य से दूसरे राज्य तक प्रसारित कर सुपाठ्य और सुबोध बनाने के पुनीत राष्ट्रधर्म मे मुझ जैसा साधारण नागरिक समुचित अनुदान देकर धन्य होगा।

बॅगला उच्चारण को नागरी लिपि में देने की समस्या की ओर भी ध्यान गया। कश्मीर से कन्याकुमारी पर्यन्त ग्राम-ग्राम, नगर-नगर और प्रान्त-प्रान्त में, मैं देखता हूँ, एक मूल भाषा कश्मीरी, पजाबी, कौरवी, सौरसेनी, अवधी, मागधी, मैथिल, बॅगला, उड़िया आदि अनेक भाषाओं में परिणत होती चली गई है। किन्तु हिन्दी के राष्ट्रभाषा एव देवनागरी लिपि के राष्ट्रलिपि स्वीकृत हो जाने से भाषा और लिपि मे यथासाध्य एकरूपता को प्रश्रय देना आवश्यक कर्त्तव्य-सा बन गया है। अतएव बॅगला कविता को देवनागरी लिपि में लिखते समय 'योड़' को 'जोड' एवं 'याय' को 'जाय' लिखना उचित समझा गया, फिर भी सर्वत्र उसी शैली का अनुसरण किया गया है जिसे स्वय बगाली लेखकों ने अपनाया है, अर्थात् जलवायु से प्रभावित भिन्न उच्चारण की ओर ध्यान न देकर शब्दों को शुद्ध-रूप मे लिखना। बॅगला वर्णमाला का उच्चारण ओकारान्त होने पर भी बगाली लेखक 'जल' और 'चक्षु' ही लिखते हैं यद्यपि पढ़नेवाले उन्हें 'चोख' और 'जोलो' पढ लेते हैं। हमने भी इसी मार्ग को ग्रहण करके मूल बॅगला का अक्षरान्तर-मात्र कर दिया है। इस सबध में प्राप्त परामर्शों का सादर स्वागत पूर्वक अगले काण्डों के छपते समय उन पर विचार किया जायगा।

अब दो शब्द अवशेष हैं। इस बड़े कार्य मे यदि मेरे गुरुजनों और सहृदय मित्रो द्वारा उत्साह मुझे प्राप्त न होता तो कदाचित् मैं थककर कहीं बैठ जाता। मैं उनके स्नेह और सहृदयता का आभारी हूँ। नवलकिशोर प्रेस बुकडिपो लखनऊ के बटवारे के बाद उसके एक पक्ष के मैनेजर श्री कौशलकिशोर श्रीवास्तव, खेमराज व्येंकटेश्वर प्रेस के सर्वांगीण लेखक विद्यावारिधि स्व० प० ज्वालाप्रसाद मिश्र के यशस्वी सुपुत्र हरद्वार-निवासी प० महावीरप्रसाद मिश्र और प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार मथुरा-निवासी श्री राजेश जी दीक्षित हमारे उन मित्रो मे प्रमुख हैं। स्व० श्री रूपनारायण जी पाण्डेय का आशीर्वाद मुझे प्राप्त था। उन्होंने मेरे छपे कुछ फार्मों को देखकर प्रशसा की थी और मेरे उत्साह को दुचन्द कर दिया था।

पुस्तक के मुद्रण के दौरान मे समाज-सेवा-प्रेस के व्यवस्थापक तथा लेखन-मुद्रण-प्रकाशन के समग्ररूपेण कलाकार श्री चद्रिकाप्रसादजी जिज्ञासु ने मुद्रण के साथ-साथ प्रूफ-सशोधन का कठिन भार भी अपने ऊपर लेकर हमारे इस कार्य को जितना सुगम किया वह उल्लेखनीय है। हमारे कार्य की सपन्नता मे उनको निश्चय श्रेय है।

पुनश्च डा० श्री भगीरथ मिश्र, एम० ए०, पी-एच० डी०, रीडर हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने अपनी सम्मति और भूमिका देने का अनुग्रह किया, उनका भी मैं कृतज्ञ हूँ।

रानी कटरा, लखनऊ
१/—९—५९

अकिञ्चन
नन्दकुमार अवस्थी

भूमिका

आधुनिक भाषाओं में लिखित रामकाव्य की परंपरा मे कवीश्वर कृत्तिवासकृत बँगला रामायण का आदिम कृतियों में स्थान है। कृत्तिवास का आविर्भाव-काल पद्रहवीं शताब्दी विक्रमीय का प्रारभ है † और उनकी रामायण का रचना-काल पंद्रहवीं शताब्दी का मध्यकाल है। वे महाप्रभु चैतन्य के पूर्ववर्ती माने जाते हैं। महाप्रभु का जन्म १४८६ ई० (१५४२ वि०) माना गया है। दोनो का ही क्षेत्र नवद्वीप (नदिया) है। नवद्वीप के फुलिया नामक ग्राम में कवीश्वर कृत्तिवास का जन्म हुआ था। कृत्तिवास की कृति में चैतन्य का उल्लेख या प्रभाव नहीं है, जबकि महाप्रभु के शिष्यों ने कृत्तिवास का उल्लेख किया है। अतः निश्चित है कि कृत्तिवास का समय चैतन्य से पहले का है। ‡ वे गोस्वामी तुलसीदास से लगभग एक शताब्दी पूर्ववर्ती ठहरते हैं। इस दृष्टि से आधुनिक भारतीय भाषाओं में लिखित रामकथाओं में कवीश्वर कृत्तिवास की रामायण अग्रगण्य है ।

कृत्तिवास की रामायण में आख्यानों और वर्णनों की प्रचुरता अपनी निजी रोचकता और सांस्कृतिक विशेषताओं से सम्पन्न है। यहीं पर यह कह देना आवश्यक है कि रामचरितमानस के समान ही कृत्तिवासकृत रामायण लोककंठों में बगीय क्षेत्रों मे गूँजती है। यह बात बँगला के आदिम कवीश्वर का सांस्कृतिक महत्व स्पष्टतया सिद्ध करती है ।

इस महत्व से सपन्न ग्रन्थ का केवल बँगला-भाषी क्षेत्र में सीमित रहना उचित न था । इसी से प्रेरित होकर इसके अनुवाद करने का प्रयत्न हुआ । कृत्तिवासीय रामायण सप्तकाण्ड के अन्य भाषाओं में अनुवाद के प्रयत्न तो मुझे ज्ञात नहीं हैं, परन्तु इसके लिए एक महत्वपूर्ण प्रयत्न सुप्रसिद्ध साहित्यिक और न्यायाधीश स्वर्गीय बाबू कालीप्रसन्नसिंह के द्वारा किया गया था।

यह सन् १९१८ ई० की बात है जबकि इस प्रकार के अनुवादों का केवल साहित्यिक महत्व था और शुद्ध साहित्यिक अभिरुचि और निष्ठा रखनेवाले लेखक और प्रकाशक अपनी उदारता और साहित्य-प्रेम से प्रेरित होकर ही ऐसे कार्य करते थे। तब हिन्दी भाषा को आज का गौरव प्राप्त न हुआ था। अत उसमें अन्

---

† कवीश्वर कृत्तिवास के जन्मकाल के सबध मे विभिन्न विद्वानो के भिन्न-भिन्न मत हैं— प्रफुल्लचन्द्र वद्योपाध्याय १३५५ ई० त्रैलोक्यनाथ भट्टाचार्य १३९० ई०, नगेन्द्रनाथ वसु १४०८-१४२० ई०, डा० दीनेशचन्द्र सेन-१४४० ई० के आसपास मानते हैं। पर इस सब मे मतैक्य नही है।

‡ ऐसा प्रतीत होता है कि चैतन्य महाप्रभु प्रेरित भक्ति एव कीर्तन का प्रचार व प्रसार, उस समय के समस्त बगाल प्रान्त में पूर्ववर्ती 'कृत्तिवास रामायण' के गायन मे आप्लावित और विभोर जन-समुदाय की अभिरुचि उस ओर जाग्रत रहने से ही, घर घर मे व्याप्त हो गया। —अनुवादक

भाषाओं के ग्रन्थों का अनुवाद केवल साहित्यिक गौरव से ही संपन्न था। परन्तु आज इस प्रकार के अनुवाद-कार्यों की अनेक दृष्टियों से आवश्यकता है। आज हिन्दी, भारत राष्ट्र की राष्ट्र-भाषा है। अन्तर्प्रान्तीय आदान-प्रदान की माध्यम के रूप में वह स्वीकृत हो गई है। अतः ऐसी दशा में विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं के साहित्यिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक तथा अन्य ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी मे होना एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। इस प्रकार के अनुवादो से हम विभिन्न प्रदेशों में व्याप्त भारतीय सांस्कृतिक एकता और विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त करते हैं, और अपने को एक दूसरे के अधिक निकट अनुभव करते हैं। अतः जब आज से ४०-४५ वर्ष पूर्व दासता के युग में ऐसे कार्य सम्पन्न किये गये तो आज तो और भी द्रुतगति से इस प्रकार के कार्य होने चाहिए।

इसी भावना से प्रेरित होकर कृत्तिवासकृत बँगला रामायण का श्री प्रभाकर साहित्यालोक लखनऊ से प्रकाशित यह अनुवाद लखनऊ नगर-निवासी पंडित नन्दकुमार अवस्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। बँगला में कृत्तिवास रामायण के मुद्रित और हस्तलिखित अनेक उपलब्ध संस्करणों मे प्राप्त संक्षेप और विस्तार को देखने से प्रतीत होता है कि कहीं-कही प्रक्षिप्त अंश भी है। विस्तृत संस्करणो मे कहीं-कहीं शृंगारिक वर्णन ऐसे मिलते हैं जो नित्यपाठ के लिए अनुपयुक्त समझकर हटा दिये गये हैं। पाठों में भी संशोधन कर आधुनिकता लाने का प्रयत्न अनेक विद्वान् बंगाली संपादकों और लेखकों द्वारा हुआ है। ऐसी दशा में बहुसंस्करणशील इस ग्रन्थ के विविध अनुवादों में भी अंतर मिलना असंभव नहीं। यह अन्तर स्वर्गीय बाबू कालीप्रसन्नसिंह जी और श्री पं० नन्दकुमार जी के अनुवादों को मिलाने पर भी देखने को मिल सकता है, जिनमें प्रथम अधिक स्वतंत्र और द्वितीय अधिक प्रामाणिक है।

मेरा अपना विचार है कि अनुवाद-कार्य मे और विशेषकर पद्यानुवाद में शब्दशः अनुवाद करने का प्रयत्न अधिक रोचक और उपयुक्त नहीं होता। भाव और वर्णन के सौन्दर्य को अक्षुण्ण बनाने के हेतु अनुवादक अनुवाद्य ग्रन्थ की शब्दावली और वाक्यविधान के पीछे नहीं पड़ता, फिर भी उसका यह पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि कोई भी भाव, जहाँ तक हो सके, छूटने न पावे। भावों को छन्द और अलंकार की शैली का बन्धन ही काफी कठिन है, फिर यदि उसके मार्ग की लीकों को शब्द और वाक्य-रचना भी निर्देशित करने लगेंगे, तब तो फिर गाड़ी लीक-लीक ही चलेगी और उसमें भाव-सौन्दर्य का निर्वाह बड़ा कठिन हो जायगा। परन्तु, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अनुवादक इतनी स्वतंत्रता ग्रहण कर लेता है कि जो भाव और प्रसंग मूल ग्रन्थ मे नहीं हैं उनकी भी सयोजना कर देता है। जो प्रसंग उसे अधिक रुचिकर लगता है, उसे वह बहुत विस्तार दे देता है और जो कम रुचता है उसे अति संक्षिप्त कर देता है, यहाँ तक कि कभी-कभी छोड़ भी देता है। अनुवाद के नाम पर इस प्रकार के भी प्रयत्न देखने को मिलते हैं। ऐसे कार्य कहाँ तक अनुवाद कहे जा सकते हैं, यह एक प्रश्न है ?

इस संबंध में प्रस्तुत अनुवाद-कार्य, जो श्री नन्दकुमारजी द्वारा संपन्न हुआ है, एक अधिक संयत प्रयत्न है। इसमें मूल से अधिक कोई प्रसंग जोड़े नहीं गये, साथ ही यह भी ध्यान रखा गया है कि मूल में प्राप्त भाव और प्रसंगों में से कोई छूटने न पायें। प्रस्तुत अनुवाद और स्व० कालीप्रसन्न सिंह जी के अनुवाद को मिलाने पर ऐसा लगता है कि सिंह जी के संस्करण में अनुवादक ने कृत्तिवास द्वारा वर्णित वृत्तान्तों मे ही अपने को सीमित न रखकर अन्य आधारभूत ग्रन्थों में प्राप्त विवरणों को अपने अनुवाद में बढ़ा दिया है। इस समय प्राप्त और प्रामाणिक माने जानेवाले जो संस्करण हैं उनसे मिलाने पर ऐसा लगता है कि भाव, वर्णन, प्रसंग, क्रम आदि सभी क्षेत्रों में स्व० कालीप्रसन्नजी के अनुवाद में स्वच्छन्दता ग्रहण की गई है और अनुवाद मे अधिक स्वतंत्र ग्रन्थ जैसा लगने लगता है। पर यह बात प्रस्तुत अवस्थीजी के अनुवाद के संबंध में नहीं कही जा सकती।

कृत्तिवास की रामायण वाल्मीकीय रामायण का अनुवादमात्र नहीं है और न पूर्णतया उसको आधार बनाकर ही यह लिखी गई है। रामचरितमानस के समान ही विविध संस्कृतग्रन्थों का यथाप्रसंग आधार ग्रहण किया गया है। इस प्रकार कृत्तिवास के स्रोत-ग्रन्थों में रामायण, श्री मद्भागवत, मूल रामायण, अद्भुत रामायण, अध्यात्म रामायण, मार्कण्डेयपुराण, कालिकापुराण तथा अन्य पुराण और उपपुराण ग्रन्थ हैं जिनका यथास्थान उपयोग कवीश्वर ने किया है। इन समस्त आधारों से आख्यानों की भूमिका देकर रामकथा का स्वरूप कृत्तिवास ने खड़ा किया है। इस प्रकार पौराणिक प्रभाव इस रामायण पर काफी मात्रा में परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृत्तिवासीय रामायण का अनुवाद, अनुवाद की सीमाओं और मर्यादाओं का पालन करते हुए किया गया है और प्रायः मूल के अनुरूप ही है। अनेक स्थानों पर वर्णन बड़े रोचक और प्रवाहपूर्ण हैं। उदाहरणार्थ एक चित्रण यहाँ पर दिया जा रहा है जिसका सरस प्रवाह मूल से भी अधिक मधुर और रमणीय है। विश्वामित्र के उपवन का प्रकृतिचित्रण तथा कुमार 'रोहित' का निश्शंक और सरल बाल-स्वरूप देखिये:—

> गेंदा गुलदावदी सुहावन। गुलमेंहदी गुलाब मनभावन ॥
> बेला बकुलकुसुम चहुँ फूला। हरसिंगार कुँवर मन झूला ॥
> शेफालिका सुकेसर प्यारी। चम्पा जवा विरंजित क्यारी ॥
> पारिजात किंशुक कहुँ तोरें। कहुँ वल्लरी सुमन झकझोरें ॥
> कहुँ मल्लिका जुही मदभीनी। कलिका कछुक कुँवर चुनि लीनी ॥

प्रस्तुत ग्रन्थ में कहीं-कहीं ढूँढ़ने पर ही नगण्य संक्षेप और विस्तार देखने को मिल सकते हैं। सर्ग, काण्ड और छन्दों आदि का प्रयोग भी मूल कृत्तिवासीय रामायण के अनुसरण पर ही इसमें किया गया है। प्रस्तुत मूल में काण्डों का विभाजन, प्रसंगों के संकेत और कहीं-कहीं शीर्षक आदि दिये हैं। ठीक वही परिपाटी प्रस्तुत हिन्दी-अनुवाद में भी अपनायी गयी है। और इस प्रकार कृत्तिवास द्वारा

प्रयुक्त बँगला के पयार, त्रिपदी, लाचाडी आदि के लिए इस अनुवाद में दोहा, चौपाई, चवपैया आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। मूल के अनुरूप ही अनुवाद में भी विविध छन्दों के जाल से मुक्त रहने का प्रयत्न किया गया है। इससे कथा का वर्णन प्रवाहपूर्ण और सरस हो उठा है।

अनुवाद की भाषा रामचरितमानस के अनुकरण पर अवधी ही रखी गई है। अवधी में संस्कृत के शब्दों का समावेश है और आवश्यकतानुसार ग्रामीण बोलचाल के शब्दों को भी अपनाया गया है। भाषा की इस नीति के कारण जहाँ एक ओर अनुवाद सरल और सुबोध हो गया है, वहाँ कहीं-कहीं ग्राम्य शब्द अलग भी जान पड़ने लगे हैं। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार की त्रुटियों का मार्जन आगामी अन्य संस्करणों में कर दिया जायेगा।

प्रस्तुत अनुवाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें केवल हिन्दी-अनुवाद मात्र ही नहीं है, वरन् अनुवाद की पंक्तियों के साथ-साथ अनुवाद्य ग्रन्थ की मूल पंक्तियाँ भी दे दी गई हैं। मेरी समझ में किसी भी महत्वपूर्ण कृति के अनुवाद में यह पद्धति बड़ी रोचक और उपयोगी है। यह पद्धति विशेष रूप से उन लोगों के लिए सतोपकारी है जो दोनों ही भाषाओं को जानते हैं। बँगला मूल देवनागरी में सरलता पूर्वक दिया जा सकता है। जहाँ तक मुझे ध्यान है इस प्रकार मूल के साथ इस ग्रन्थ के अनुवाद का यह प्रथम सराहनीय प्रयास है और इसके लिए लेखक बधाई का पात्र है। उसका परिश्रम श्लाघनीय है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनुवादक का यह प्रयत्न उसकी निष्ठा, लगन, दृढ़ता और परिश्रम का परिणाम है। यह मैं जानता हूँ कि श्री नन्दकुमारजी अवस्थी साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति हैं और उनका प्रधान ध्येय साहित्य और राष्ट्रभाषा की सेवा का ही है, जिसके लिए उन्होंने यह बृहत् संकल्प किया है। अभी आदिकाण्ड ही प्रथम जिल्द में सामने आ रहा है, परन्तु द्वितीय खंड में अधिक काण्ड आयेंगे और इस प्रकार जहाँ तक मेरी सूचना है, कृत्तिवासी रामायण का सम्पूर्ण प्रामाणिक अनुवाद पहली बार ही हिंदी में उपलब्ध होगा। अवस्थीजी के अनुवाद लगभग तैयार हैं, केवल मुद्रण की प्रतीक्षा है। मुझे विश्वास है कि वे सभी शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। साथ ही यह मेरी दृढ़ आशा भी है कि वे आगे भी इस प्रकार के साहित्य प्रकाशन के कार्यों द्वारा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता को दृढ़ करने का कार्य करते रहेंगे।

भगीरथ मिश्र
रीडर हिन्दी-विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय

१० जून, १९५९ ई०

विषय-सूची

आवरण-चित्र परिचय

(ऐरावत-दर्प-चूर्ण—पृष्ठ ७०)

दिलीपनन्दन भगीरथ की अतुल तपस्या के फलस्वरूप पुण्यसलिला गंगाभागीरथी ब्रह्मलोक से चलकर कुमार भगीरथ की अनुगामिनी होते हुए अकस्मात् धतूरे के फूल के सदृश सुमेरु पर्वत के एक विकट गह्वर में फँसकर बारह वर्ष तक भटकती रहीं।

अपने पूर्वजों (सगर-वंश) के उद्धार के लिए आकुल और आतुर भगीरथ की विनती पर गंगा ने पन्थ-अवरोध की विवशता बताते हुए, ऐरावत को लाकर पर्वत के गह्वर को भेदकर मार्ग निकालने के सुझाव को रखा।

भगीरथ ने इन्द्र से आज्ञा ले, ऐरावत से, विशाल दन्तों द्वारा पर्वत-भेदन की प्रार्थना की। गर्व के वशीभूत मदांध ऐरावत ने अपने पास गंगा के एक रात्रि निवास करने की शर्त पर कार्य स्वीकार किया।

हताश भगीरथ के लौटने पर गजेन्द्र का निन्दनीय प्रस्ताव जानकर, भागीरथी ने एक रात्रि छोड़ सात रात्रि ऐरावत के समीप रहना स्वीकार किया, यदि वह गंगा के वेग में अपने को स्थिर रख सके।

झूमते हुए मत्त दन्तीपति ने सुमेरु गह्वर में विकराल दन्तप्रहार से चार स्थानों पर छिद्र किये, जिनसे वसु, भद्रा, श्वेता और अलकनन्दा नाम से चार धाराएँ वह चलीं। धरागामिनी धारा के प्रचण्ड प्रवाह मे मदांध ऐरावत का विशाल शरीर डूबने-उतराने लगा। नेत्र, मुख और सूँड़ में जल भर गया। मन की हीन भावना को त्याग, 'त्राहिमाम्' कहते हुए गंगामाता के चरणों में गिरकर ऐरावत ने निस्तार पाया और भाग खड़ा हुआ।

गंगा की महिमा से मुग्ध भगीरथ, पुनः शंखघोष करते हुए, माता मदांकिनी सहित, कैलाश की ओर चले।

आवरण-चित्र परिचय

(ऐरावत-दर्प-चूर्ण—पृष्ठ ७०)

दिलीपनन्दन भगीरथ की अतुल तपस्या के फलस्वरूप पुण्यसलिला गंगाभागीरथी ब्रह्मलोक से चलकर कुमार भगीरथ की अनुगामिनी होते हुए अकस्मात् धतूरे के फूल के सदृश सुमेरु पर्वत के एक विकट गह्वर में फँसकर बारह वर्ष तक भटकती रहीं।

अपने पूर्वजों (सगर-वंश) के उद्धार के लिए आकुल और आतुर भगीरथ की विनती पर गंगा ने पन्थ-अवरोध की विवशता बताते हुए, ऐरावत को लाकर पर्वत के गह्वर को भेदकर मार्ग निकालने के सुझाव को रखा।

भगीरथ ने इन्द्र से आज्ञा ले, ऐरावत से, विशाल दन्तों द्वारा पर्वत-भेदन की प्रार्थना की। गर्व के वशीभूत मदांध ऐरावत ने अपने पास गंगा के एक रात्रि निवास करने की शर्त पर कार्य स्वीकार किया।

हताश भगीरथ के लौटने पर गजेन्द्र का निन्दनीय प्रस्ताव जानकर, भागीरथी ने एक रात्रि छोड़ सात रात्रि ऐरावत के समीप रहना स्वीकार किया, यदि वह गंगा के वेग में अपने को स्थिर रख सके।

झूमते हुए मत्त दन्तीपति ने सुमेरु गह्वर में विकराल दन्तप्रहार से चार स्थानों पर छिद्र किये, जिनसे वसु, भद्रा, श्वेता और अलकनन्दा नाम से चार धाराएँ बह चलीं। धरागामिनी धारा के प्रचण्ड प्रवाह में मदांध ऐरावत का विशाल शरीर डूबने-उतराने लगा। नेत्र, मुख और सूँड में जल भर गया। मन की हीन भावना को त्याग, 'त्राहिमाम्' कहते हुए गंगामाता के चरणों में गिरकर ऐरावत ने निस्तार पाया और भाग खड़ा हुआ।

गंगा की महिमा से मुग्ध भगीरथ, पुनः शंखघोष करते हुए, माता मंदाकिनी सहित, कैलाश की ओर चले।

शुद्धि-पत्र

पाठकों से सानुरोध निवेदन है कि पुस्तक हाथ में लेते ही सर्वप्रथम अशुद्धियों को लेखनी से सुधार लें ताकि पाठ विरस न हो:—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१६	रघुत्तमम्	रघूत्तमम्
२३	६	तवहु	तवहुँ
२५	३	तव	तब
३७	१३	सहर्पि	सहर्ष
४१	७	देखों	देखौं
८३	५	वसन दिक	वसनादिक
८७	६	अश्वमेध	अश्वमेध
८७	१२	अनॅद	आनॅद
११५	१	टानी	ठानी
११७	६	वर्पा	वर्षा
१२७	२	निस्तार[3]	निस्तार[1]
१२७	३	अवधदुलार	अवधदुलार[3]
१३४	१२	पयत	पियत
१३६	११	सवरन	सुवरन
१३७	६	नर्भदा	नर्मदा
१४१	२४	३ हाथों मे	४ हाथों मे
१४१	२५	४ दाढी-मूछ।	५ दाढ़ी-मूछ।
१४३	८	जाइ	जोइ
१४३	२५	नर्घन	निर्घन
१४८	४	चक्रवान	चकवान
१५०	८	अनल	अनल[4]
१६५	३	त्र स	त्रास
१७५	८	सवारी	सॅवारी
१८०	११	अर्घ्य	अर्घ्य
१६०	४	किम	किमि
२००	११	अनाहर	अनाहार
२०३	१०	विचारे	विचारे
२११	१	हकारा	हुंकारा
२१३	१०	हात	होत
२२०	१	मुनिराड	मुनिराई
२२०	२	जाही	जाहीं

श्रीगणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल सहित)

मङ्गलाचरण

श्लोक—यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ १ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ २ ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥ ३ ॥

कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिः प्रभो।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥

(ग्रन्थ-परिचय)

दोहा—विघ्नविनाशन गजवदन, ऋद्धि-सिद्धि की खानि।
मंगलवाणी भारती, जय भगवती भवानि ॥ १ ॥

रामचरित - अमरित - सलिल, पाप - नसावनहार।
वाल्मीकि मुनि आदिकवि, कीन्हेउ जग विस्तार ॥ २ ॥

त्रिविध भाव भाषा भरे, धर्म अर्थ अरु काम।
मुक्ति, नीति अरु प्रीति के, अनुपम छन्द ललाम ॥ ३ ॥
सोइ पुनीत विरदावली, रघुवर काव्य अनन्त।
युग-युग सों गावत रहे, मुनि मनीषि अरु सन्त ॥ ४ ॥
कालिदास वाणीवरद, अमर गिरा-अवतस।
बुधजन काव्य-विनोद हित, रचेउ ललित रघुवंस ॥ ५ ॥
देवनागरी-वाटिका, मानस-पुहुप विकास।
सुरभित भारत भूमि चहुँ, धनि-धनि तुलसीदास ॥ ६ ॥
सजल स्यामला बंग की, उर्वर भूमि पुनीत।
जहँ चैतन्य-रवीन्द्र सम, जन्मे जन-नवनीत ॥ ७ ॥
भक्ति-काव्य के स्रोत जहँ, प्रगटे चण्डीदास।
तहाँ सरस धारा वहो, 'रामायण कृतिवास' ॥ ८ ॥
कोकिल-कूजित सुधामय, अनुपम काव्य सुवास।
रचेउ, धन्य! तुम धन्य मुनि! महासन्त कृतिवास ॥ ९ ॥
भारतीय भाषा-प्रमुख, सकल रसन की खानि।
देवनागरी माहिं सोइ, रचहुँ जोरि जुग पानि ॥ १० ॥
भाव रहित, भाषा विरस, कतहुँ न काव्य प्रवीन।
इत-उत के सत्संग सों विवस, प्रेरना लीन ॥ ११ ॥
कान्यकुब्ज-द्विज-गगन बिच, अपर प्रभाकर भास।
जनमि, 'प्रभाकर' प्रवर क्रिय, कुल-उपमन्यु प्रकास ॥ १२ ॥
विदित 'अवस्थी' आस्पद, बीते बरही साख।
विक्रम चौंसठ, शत-उनिस, पाँच कृष्ण वैशाख ॥ १३ ॥
रानीकटरा—लखनऊ, संज्ञा 'नन्दकुमार'।
तनय-दयाशकर, जनम, मम परिचय विस्तार ॥ १४ ॥
निर्गुण-सगुण अनन्त छवि, जड-जङ्गम जगरूप।
बन्दि सकल, रचना करहुँ 'कृत्तिवास'-अनुरूप ॥ १५ ॥
जतन भगीरथ, अल्प बल, तबौ लगी यह साध।
गुनी-सन्त-सज्जन सकल, छमहिं मोर अपराध ॥ १६ ॥

आदि काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद)

नारायण चार अंश जन्म प्रकाश

सुखद सकल लोकन अति पावन * धेनु-लोक वैकुण्ठ सुहावन
विटप कल्पतरु अचरज नयना * मन-वाञ्छित अनन्त फल दयना
चन्द्र-सूर्य जहँ सतत[1] प्रकासा * भुवन दिव्य जगदीश निवासा
नेतपाट[2] युत सुभग सिंहासन * नारायण विराज वीरासन
एक अंस प्रभु अस मन लाई * चारि अंस प्रगटैं रघुराई
राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन * यहि विधि चतुर्मूर्ति मधुसूदन

(बँगला मूल)

श्लोक—रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं ।
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ॥
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्त्तिम् ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥
दक्षिणे लक्ष्मणोधन्वी वामतो जानकी शुभा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं नमामि रघूत्तमम् ॥
रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

नारायणेर चारि अंशे जन्म प्रकाश

गोलोक वैकुण्ठपुरी सबार उपर * लक्ष्मीसह तथाय आछेन गदाधर
तथाय अद्भुत वृक्ष देखिते सुचारु * जाहा चाइ ताहा पाइ नाम कल्पतरु
दिवानिशि तथा चंद्र सूर्य्येर प्रकाश * तार तले आछे दिव्य विचित्र आवास
नेतपाट सिंहासन उपरेते तुली * वीरासने वसिया आछेन वनमाली
मने मने प्रभुर हइल अभिलाष * एक अंश चारि अंश हइते प्रकाश
श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण * एक अंशे चारि अंश हैला नारायण

१ निरन्तर । २ प्राचीन वस्त्र, अलौकिक ।

रमा रूप सीता अभिरामा * कर जोरे कपि करहिं प्रनामा
चँवर भरत सत्रुघ्न डुलावत * कनक छत्र सौमित्रहिं भावत
यहि छवि प्रभु बैकुण्ठ विराजा * पहुँचे तहँ नारद मुनिराजा
भक्ति सने श्रीहरि-गुण गावत * वीणा मंजुल तार बजावत
पंचायतन सरूप निहारी * सिथिल गात मोचत दृग वारी
चकित रूप अद्भुत नव हेरी * नारद डगर[1] लीन शिव केरी
त्रिकालज्ञ शिव अन्तर्यामी * हरिहैं सकल कुतूहल स्वामी
पंथ प्रथम भेंटे चतुरानन * लखि विरंचि हुलसे मुनिपावन
तिन सन करि सब कथा प्रकासा * लै विधि चले शिखर कैलासा
उमा सहित सोहत जहँ शंकर * बन्देउ तिन्हैं सहित विधि मुनिवर

कस विरंचि ? कस तपोधन ? मुनि अस पुलकित गात ।
हरपि शंभु पूछेउ कवन हेतु आगमन तात ॥१॥

सुनि ब्रह्मा मृदु गिरा उचारी * सुनहु कुतूहल अति त्रिपुरारी
परमधाम गोलोक सुहावन * परमेश्वर त्रिभुवनपति पावन

लक्ष्मीमूर्त्ति सीतादेवी बसेछेन बामे * स्वर्णछत्र धरेछेन लक्ष्मण श्रीरामे
चामर ढुलाय तारे भरत शत्रुघ्न * जोड हाते स्तव करे पवन-नन्दन
एइरूपे बैकुण्ठे आछेन गदाधर * हेनकाले चलिला नारद मुनिवर
वीणा यन्त्र हाते करि हरिगुण गान * उत्तरिल गिया मुनि प्रभु विद्यमान
रूप देखि विह्वल नारद चान धीरे * बसन तितिल तार नयनेर नीरे
हेनरूप केन धरिलेन नारायण * इहा जिज्ञासिब गिया यथा पंचानन
भावी भूत वर्त्तमान शिव भाल जाने * ए कथा कहिन गिया महेशेर स्थाने
एतेक भाविया यात्रा करे मुनिवर * उत्तरिला प्रथमेते ब्रह्मार गोचर
विधातारे लये ज्ञान कैलास शिखरे * शिव के वन्दिया परे वन्दिल दुर्गारे
निरखिया दुइजने तुष्ट महेश्वर * जिज्ञासा करेन तबे तोंदेर गोचर
कह ब्रह्मा कह हे नारद तपोधन * दोंहे आनन्दित अद्य देखि कि कारण
बलेन विरिञ्चि शुन देव भोलानाथ * देखिलाम गोलोके अपूर्व्व जगन्नाथ

---

[1] मार्ग ।

तिनकर चारि अंश कर रूपा * नव प्रगटेउ कस आज अनूपा
विधि[1] सन सुनि सब कहेउ त्रिलोचन * लखेउ जु छवि, तुम पाप विमोचन
गये बरस सो साठि हजारा * सोइ सरूप, प्रभु लै अवतारा
निसिचर नाह प्रचण्ड दशानन * तेहि विनासि भुवि-भार उतारन
अवधपुरी अति रम्य विशाला * सूर्यवंश दशरथ महिपाला
तिन कहँ तीनि नारि छवि-अयनी * तिन सुभघरी सुमङ्गल-दयिनी
चारि अंश प्रगटहिं मधुसूदन * राम भरत लछिमन रिपुसूदन
राम, सत्यपितु पालन हेतू * गवनहिं वन सिय-लखन समेतू
सियहिं उधारि[2] वधहिं खल रावन * सीतासुत लव-कुश मनभावन
गोवध आदि अधम जे पापा * राम नाम मेटै संतापा
राम नाम भवसागर तारन * मुक्तिदेन पातकी उबारन
हँसि विधि कही सुनहु वृषकेतू[3] * अवनि[4] कहहु अस को अघहेतू
करहु प्रतीति,[6] शंभु कह बानी * भूतल[7] एक अधम अज्ञानी

देखिलाम पूर्व्वेते केवल नारायण * चारि अंश देखि एवे किसेर कारण
ब्रह्मा वाक्य शुनिया कहेन कृत्तिवास * सेइरूप इहकाले हइवे प्रकाश
ये रूपे आछेन हरि गोलोक भितर * जन्म निते आछे षाटि सहस्र वत्सर
रावण राक्षस हवे पृथिवीमण्डले * ताहाके वधिते जन्म लेवेन भूतले
दशरथ घरे जन्मिवेन चारिजन * श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न
एक अंश नारायण चारि अंश ह'ये * तिन गर्भे जन्मिवेन शुभक्षण पेये
जानकीसहित राम लइया लक्ष्मण * पितृसत्य पालनार्थे जाइवेन वन
सीता उद्धारिवे राम मारिया रावण * लव कुश नामे हवे सीतार नन्दन
मनुष्य गोहत्या आदि जत पाप करे * एक बार रामनामे सर्व्व पापे तरे
महापापी ह'ये यदि राम नाम लय * संसार समुद्रे तार मुक्ति लाभ हय
हासिया वलेन ब्रह्मा शुन त्रिलोचन * पृथिवीते हेन पापी आछे कोन जन
धूर्ज्जटि वलेन मम वाक्ये देह मन * मध्यपथे महापापी आछे एक जन

---

१ ब्रह्मा । २ उद्धार करके । ३ शंकर । ४ पृथ्वी । ५ पाप का रूप । ६ विश्वास ।
७ पृथ्वी पर ।

रामम‍न्त्र तेहि दीजिय जाई * तासु प्रभाव मुक्ति जग पाई

को अस नर ? सोचन लगे, विधि नारद धरि ध्यान ।

'रत्नाकर' मुनि च्यवन-सुत, है पातकी महान ॥२॥

लूटै वधै पथिक वनचारी * दस्युवृत्ति, रुचि पापाचारी
मुनि-विधि[1] चले संत के भेखा * विटप चढ़े रत्नाकर देखा
पथिक घात ताकै मग ओरा * विफल आजु दिन बीतेउ मोरा
हरषेउ निरखि पाप अनुगामी * लूटौं वसन, हतौं दोउ स्वामी
लौहदण्ड लै सो तेहि मारा * तासु विफल विधि कीन्ह प्रहारा
मायावस, कर अस्त्र न उठई * सठ कौतुक मन चिंतन करई
पूँछेउ सहित सनेह विधाता * को तुम कवन प्रयोजन ताता
लूटहुँ वसन हरहुँ तव प्राना * मम नितनेम न तुम अनुमाना
मम वध किये कतक धन पावै * कवन लोभ नित पाप कमावै
सौ रिपु हने जु पातक अहही * एक धेनु-वध सोइ नर लहही

तारे गिया रामनाम देह एक बार * तबे से नितान्त मुक्त हइबे संसार
विधाता नारद ताँरा भावेन दुजन * पृथिवीते महापापी आछे से केमन
च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर * दस्युवृत्ति करे सेइ वनेर भितर
विरिञ्चि नारद दोंहे संन्यासी हइया * रत्नाकर काछे दोंहे मिलिल आसिया
विधातार माया हैल रत्नाकर प्रति * सेइ दिन सेइ पथे कारो नाहि गति
उच्चवृक्षे चड़िया से चतुर्दिके चाय * ब्रह्मा नारदेरे पथे देखिबारे पाय
भावे मुनि रत्नाकर लुकाइया वने * संन्यासी मारिया वस्त्र लइब एक्षणे
विधाता नारदे लये जान सेइ पथे * लोहार मुद्गर तोले ब्रह्मारे वधिते
ब्रह्मार मायाते तार मुद्गर ना चले * मायाते मुद्गर बद्ध तार करतले
ना पारे मारिते दस्यु भावे मने मन * ब्रह्मा जिज्ञासेन बापू तुमि कोन जन
रत्नाकर बले तुमि ना चिन आमारे * लइब तोमार वस्त्र मारिया तोमारे
ब्रह्मा बले मारि मोरे कत पाबे धन * करियाछ जत पाप कहिब एखन
शत शत्रु मारिले जतेक पाप हय * एक गो वधिले तत पापेर उदय

---

[1] नारद और ब्रह्मा।

सुनु सठ शत गोवधहिं समाना * लिये एक अबला कर प्राना
शत नारी सम विप्र-विनासा * टारे टरहि न सो अघ-त्रासा[1]
एक ब्रह्मचारी वध करई * शत द्विज हनै, न अन्तर परई
एते पाप बरन बहुरासी * अगनित पाप बधे संन्यासी
विचरैं जहाँ संत बनवासी * चारि कोस महि सो जनु कासी
सुनि सब सीख तबहु मन भावै * तौ, पातक मनमौजि कमावै

छद्मभेस विधि-बैन सुनि, जड़ कीन्हेउ परिहास।
तुम सम केतक सन्त मुनि, नित उठि करौं विनास ॥३॥

कह मुनि, यदि मम-वध तव प्रीती * मारहु अवनि विलोकि पुनीती[2]
पिपीलिका[3] जहँ कीट-पतंगा * जुरैं न लोभ सुगंध-प्रसङ्गा
गदा घात मम गात निपाता * कुचिलैं कीट कवन सिर वाता
हे हतबुद्धि कुफल इन केरे * भागीदार कौन अघ तेरे
लूट-पाट क्रय-विक्रय जेता * कहेउ दस्यु पुनि दर्प ससेता
बिलसहिं मातु-पिता अरु गृहनी * भागीदार सकल मम करनी
कह विरञ्चि तव मति बौरानी * ते तव पाप-युक्त ! कस जानी ?

एक शत धेनु वध जेइ जन करे * तत पाप हय जदि एक नारी मारे
एक शत नारी हत्या करे जेइ जन * तत पाप हय एक मारिले ब्राह्मण
एक शत ब्रह्म बधे जत पाप हय * एक ब्रह्मचारी बधे तत पापोदय
ब्रह्मचारी मारिले पातक हय राशि * संख्यानाई कत पाप मारिले संन्यासी
जेइ पथ दिया गति करेन संन्यासी * आड़ेदीर्घे चारिक्रोश सम पुरीकाशी
से पाप करिते जदि थाके तव मन * करह ए पाप सब कहिनु एखन
शुनिया कहेन दस्यु रत्नाकर हासि * मारियाछि तोमाहेन कतेक संन्यासी
ब्रह्मा बलिलेन जदि ना छाड़िबे मोरे * भाल स्थल देखिया हे बधह आमारे
जथा कीट पतङ्गादि पिपिलिकागन्धे * लोभे ना आइसे मृत खाइते आनन्दे
मारिबे दण्डेर बाड़ि पड़िब भूमिते * पिपीलिका मरिबेक आमार चापेते
ब्रह्मा बलिलेन पाप कर कार लागि * तोमार ए पातकेर केबा हबे भागी

---

१ पाप का दुःखमय भोग। २ पवित्र। ३ चीटी।

पातक, तव पुरुपार्थ विशेषा * करै-भरै सो जग यहु लेखा
नहिं प्रतीति तौ जाहु निकेतू * जो परिजन साभी तव हेतू
तौ पुनि लौटि करहु वध मोरा * तरु ढिंग वैठि, लखहुँ मग तोरा
भाई जुगुति,[1] दस्यु मन चिन्तय * रहै कि भागि जाय मुनि, संसय
दै भरोस तेहिं पठयि विधाता * लावहु मत पत्नी-पितु-माता
कछु पग बढ़ै, लखै पुनि तरुतर * करत जहाँ विश्राम संतवर
प्रथम जाय पितु सन रत्नाकर * कहा, सुनहु मम विनय गुनागर
हरहुँ द्रव्य नित करि नरघाता * सेवहुँ सकल स्वपरिजन ताता
यहि विधि सुत के जे अपकर्मा * भागीदार अहौ, पितु धर्मा

जनक छोभ, सुनि सुत वयन, बोले जड़ मतिहीन !
पुत्र-पाप पितु लहै, अस, शास्त्र-मंत्र को दीन ॥४॥

रत्नाकर बले जत ल'ये जाइ धन * मातापिता पत्नी आमि खाइ चारिजन
जिज्ञासा करिया तुमि आइस निश्चय * तोमार पापेर भागी तारा जदि हय
जेवा किछु वेचि किनि खाइ चारिजने * आमार पापेर भागी सकले ए स्थाने
शुनिया हासिया ब्रह्मा कहिलेन तवे * तोमार पापेर भागी तारा केन हवे
करियाछ जत पाप आपनार काय * आपनि करिले पाप आपनार दाय
नितान्त आमारे वध कर तवे तुमि * एइ वृक्ष तलेते वसिया थाकि आमि
हरिष विषादे दस्यु लागिल भाषिते * बुझिलाम एइ युक्ति कर पलाइते
ब्रह्मा बले सत्यकरि ना पालाव आमि * माता पिता दारा सुते पुछे एस तुमि
अत.पर जाय दस्यु फिरिफिरि चाय * भावे बुझि भांडाइया संन्यासी पलाय
प्रथमे पितार काछे करे निवेदन * आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

रामनामे रत्नाकरेर पापक्षय

मनुष्य मारिया आमि जत धन आनि * आमार पापेर भागी हओ किना तुमि
पुत्रेर वचन शुनि कहिले च्यवन * हेन कथा तोमाय वलिल कोन जन
कोन शास्त्रे शुनियाछ के कहे तोमारे * पुत्र-कृत पाप केन लागिवे पितारे

---

[1] युक्ति।

पिता सुवन कहुँ सुत पितु-रूपा * जगत-चक्र यहि भाँति अनूपा
तव शिशुकाल कठिन श्रम धारी * पोषण किय पितु-धर्म विचारी
अनुचित-उचित जु मैं तव कीन्हा * ताकर कुफल न तो कहँ दीन्हा
जरठ भयउँ, शिशु-सम असमर्था * सब विधि अब तैं युवक समर्था
पितु समान पालन करु मोरा * जनक रूप तैं, मैं शिशु तोरा
सो पालन मिस, करु नित हिंसा * कस अपराध मोर अवतंसा
सुनत जनक[1] कर यह खर[2] ... न * सीस नवाय दुखित अज्ञानी
अति विनम्र वरनेउ ढिग-जननी * पापमयी निज दैनिक करनी[3]
बाँटहु मातु मोर कछु पापा * नतरु मिटै किमि मम संतापा
सहेउँ कलेस गर्भ दस मासा * मम पोषन तव धर्म प्रकासा
सोइ पालन तैं कृत पसुवेसू * तव पातक मोहिं किमि लवलेसू[4]
लोचन लचे दस्यु मन पीरा * साहस जोरि गयौ तिय[5] तीरा
हिंसा-वृत्ति मम नित्य कमाई * विलसहु सुमुखि सकल सुख पाई

अज्ञान बालक तोरे कि कहिब कथा * कभु पिता पुत्र हय पुत्र हय पिता
जखन बालक छिले पिता छिनु आमि * एखन बालक आमि पिता हैले तुमि
जखन बालक छिले ना छिल यौवन * बहुदु:ख करि तोमाय करेछि पालन
जत करियाछि पाप आपनि संसारे * से सब पापेर भाग ना लागे तोमारे
एबे पिता हइयाछ पुत्रतुल्य आमि * कोनरूपे आमारे पुषिबे नित्य तुमि
मनुष्य मारिते तोमा बले कोन जन * तोमार पापेर भागी हब कि कारण
शुनिया बापेर कथा हेंट माथा करे * काँदिते काँदिते कहे मायेर गोचरे
सत्य करि आमारे गो कहिबे जननी * आमार पापेर भागी हबे कि आपनि
जननी कहिछे क्रुद्धा हइया अपार * एक दिवसेर धार के शोधे आमार
दश मास गर्भे धरि पुषेछि तोमाय * तब कत पाप पुत्र ना लागे आमाय
शुनिया मायेर वाक्य माथा हेंट कैल * पत्नीर निकटे गिया सकल कहिल
जिज्ञासि तोमारे प्रिये सत्य करि कओ * आमार पापेर भागी हओ किना हओ

---

१ पिता । २ खरी, कटु सत्य । ३ नित्य कर्म । ४ तनिक भी लगाव । ५ पत्नी ।

तौ पुनि पाप बटावहु मोरे * सुनि तिय विनय कीन्ह कर जोरे
जेहि सुभ घड़ी गहेउ मम हाथा * मम पालन माथे तव नाथा
पोषन-भरन हेत नरघाता * केहि आदेश करहु नित ताता

पाप-पुन्य सुख-दुख महौं, आजीवन पति संग ।
पालन हित पातक करहु, लगहि न मोरे अंग ॥५॥

धीरज छूट विकल रत्नाकर * किमि अब तरहुँ विषम भवसागर
नरघाती पातकी अपावन * अहह वृथा बीतेउ मम जीवन
मुद्गर-लौह हन्यो सिर माहीं * गिरेउ अचेत च्यवनसुत ताहीं
चलेउ सँभरि पुनि दृग भरि आँसू * विटप तरे जहँ मुनिन निवासू
करि दण्डवत जोरि जुग पानी * करहु सनाथ दास निज जानी
पूछेउँ सबन तीय-पितु-माता * कोउ न अंस-अघ[1] लेइ विधाता
दिव्य ज्ञान जो मुनि मों पावौं * सफल जनम करि, पाप नसावौं
सर[2] नहाइ करि अग पुनीता * आवहु अस विधि कही सप्रीता

शुनिया स्वामीर वाक्य कहिछे रमणि * निवेदन करि प्रभु शुन गुणमणि
विधाता करिछे मोरे अर्द्धाङ्गेर भागी * अन्य पाप निते पारि ए पाप तेयागि
जखन करिले तुमि आमारे ग्रहण * सर्वदा करिबे मम रक्षण पोषण
आर जत पाप पुण्य भाग लागे मोरे * पोषणार्थे पापभाग ना लागे आमारे
मनुष्य मारिते केबा बलिल तोमाय * एइमात्र जानि आमि पालिबे आमाय
शुनिया भार्य्यार कथा रत्नाकर डरे * केमने तरिब आमि ए पाप सागरे
डुबिनु पापेते आमि कि हइबे गति * काँदिते लागिलदस्यु स्मरियादुष्कृति
लोहार मुद्गर निज माथाय मारिया * पड़िल भूमेते तबे अचेतन हैया
उठिया मुनिर पुत्र भाविल अन्तरे * सेइ महाजन यदि मोरे कृपा करे
एइ भावि उभयेर निकटेते गिया * कहिल ब्रह्मार पाय दण्डवत् हैया
एके-एके जिज्ञासिनु आमि सबाकारे * मम पापभागी केह नाहिक संसारे
आपनि करिया कृपा दिले दिव्यज्ञान * ए सकल पापे किसे हब परित्राण
कहिलेन पितामह मुनिर कुमारे * करिया आइस स्नान तुमि सरोवरे

---

१ पाप का भाग । २ सरोवर ।

रत्नाकर सरवर ढिग गयेऊ * जलचर विकल, शुष्क जल भयेऊ
अगम सलिल नित, सो जलहीना * अधम दीठि[1] मम सो कस कीना
दस्यु गलानि, मनै बहु त्रासा * बरनेउ कथा लौटि विधि पासा
बीतेउ पाप, च्यवनसुत तारन * नारद सो मत करि चतुरानन
नीर कमण्डल ते सिर डारी * महामंत्र मुनि देन विचारी
ब्रह्मा निकट आइ तेहि काना * 'राम' नाम कर दिय वरदाना
करत पाप नित, जड़ भइ रसना * 'राम नाम' निकसत तेहि मुख ना
लखि कौतुक विरञ्चि चितलागी * किमि कहि सकै राम हतभागी

मारत जन बीतेउ जनम, 'मरा' शब्द अनुकूल।
तेहि पलटे सक 'राम' कह, अस सोच्यो जगमूल[2] ॥६॥

मृतकहिं कहत कौन विधि नागर[3] * 'मडा-मडा' बोलेउ रत्नाकर
'मडा' न कहु, जपु 'मरा' निरन्तर * होई 'राम' उदय उर-अन्तर[4]
काठ सुखान विटप[5] दिखराई * ककस[6] कहत ? पूछत मुनिराई

शुनिया चलिल दस्यु सरोवर पाड * शुकाइया गेल जल दृष्टिमात्र तार
शुष्क स्थले मरे मीन मकर कुम्भीर * कहिल ब्रह्मार काछे ना पाइया नीर
छिल ये अगाध जल एइ सरोवरे * मम दृष्टिमात्र गेल शुकाये अन्तरे
शुनिया कहेन ब्रह्मा सङ्गी तपोधने * हइयाछे पूर्ण पाप तरिबे केमने
कमण्डलु जल छिल दिलेन माथाय * महामन्त्र मुनि तारे करिबारे जाय
निकटे आसिया ब्रह्मा कहे तार काने * एक बार राम-नाम बल रे वदने
पापे जड जिह्वा राम बलिते ना पारे * कहिल आमार मुखे ओ कथा ना स्फुरे
शुनिया ब्रह्मार बड चिन्ता हैल मने * उच्चारिबे राम-नाम ए मुखे केमने
मकार कहिले अग्रे रा कहिले शेषे * तबे वा पापीर मुखे रामनाम आसे
ब्रह्मा बलिलेन तारे उपाय चिन्तिया * मनुष्य मरिले बापू डाक कि बलिया
शुनिया ब्रह्मार कथा बले रत्नाकर * मृत मनुष्येरे मडा बले सब नर
मडा नय मरा बलि जप अविराम * तब मुखे बाहिरिबे तबे रामनाम
शुष्क काष्ठ देखिलेन वृक्षेर उपरे * अङ्गुलि ठारिया ब्रह्मा देखान ताहारे

---

१ दृष्टि, नजर। २ ब्रह्मा। ३ समझदार। ४ हृदय के भीतर। ५ सूखा वृक्ष। ६ किस प्रकार।

करि अनुमान, जतन बहु कीना * 'मरा' काठ, मुनिसुत कहि लीना
'मरा-मरा' तेहिं शब्द सुहावा * सगुन राम मानहुँ सो पावा
पुलकित रोम, नैन स्रव नीरा * रटनि एक, नहिं चेत सरीरा
उलटै जापु जपत अविरामा * पलटि भयो सो रामै-रामा
अनल पाय जिमि भसम कपासा * राम नाम सब पातक नासा
राम-नाम लखि अमित प्रभावा * चकित विरञ्चि[1] मोद अति पावा

ब्रह्मा द्वारा रत्नाकर का वाल्मीकि नाम तथा रामायण रचने का वरदान

बोले, सुनहु तपोधन ज्ञानी * सदा वचन-शिव अमिट बखानी
रत्नाकर समाधि लवलीना * वत्सर साठि सहस जप कीना
एक नाम, इक थल, एकासन * अडिग जपत तन चुनेउ कीटगन
विरहित मांस अस्थि अवसेसा * माटी जमि जिमि पिण्ड विशेसा
कण्ट कॉस कुस जमत ढूह पर * तेहि बिच राम नाम निसिवासर
बीते साठि सहस जब वत्सर * कमलासन[1] हेरेउ रत्नाकर
धरती ऊँचि, जापु सुनि परही * मानुप-तन न विधिहिं कहुँ लखही

बहुक्षणे रत्नाकर करि अनुमान * बलिल अनेक कष्टे मरा काष्ठखान
मरा-मरा बलिते आइल राम नाम * पाइल सकल पापे दस्यु परित्राण
तुलाराशि जेमन अग्निते भस्म हय * एक बार राम नामे सर्व्व पाप क्षय
नामेर महिमा देखि ब्रह्मार तरास * आदि काण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

ब्रह्मा कर्त्तृक रत्नाकरेर वाल्मीकि नाम ओ रामायण रचना करणेर वरदान

ब्रह्मा कह शुनह नारद तपोधन * जे कहिल मिथ्या नहे शिवेर वचन
रामनाम ब्रह्मा स्थाने पेये रत्नाकर * सेइ नाम जपे षाटि हाजार वत्सर
एक नाम जपे एक स्थाने एकासने * सर्वाङ्ग खाइल बल्मीकेर कीटगणे
मांस खाइया पिण्ड करिल मोसर * हइल कण्टक-कुश ताहार उपर
खाइल सकल मांस अस्थिमात्र थाके * बल्मीकेर मध्ये शुनि राम नाम डाके
ब्रह्मार मुहूर्त्त षाट हाजार वत्सर * पुन. आइलेन ब्रह्मा जथा मुनिवर
सेखाने आसिया ब्रह्मा चारिदिके चाय * मनुष्य नाहिक किन्तु रामनाम हय

ब्रह्मा ।

पिण्ड बीच मुनिसुत जपत, जानि विधाता लीन्ह ।
सात दिवस बरसैं जलद, इन्द्रहि आयसु दीन्ह ॥७॥

अविरल[1] जल मृत्तिका[2] बहाई * शुभ्र अस्थि-तन विधि दरसाई
सुनि विधि-टेर चेतना जागी * दौरि दण्डवत किय अनुरागी
कियो मुक्त मोहिं, दै हरि नामा * पुलकित पुनि पुनि करत प्रनामा
रत्नाकर तजि नाम विधाता * वाल्मीकि[3] जग किय विख्याता
तैं सुत सात काण्ड सुखकारी * राम-रुचिर-रचना अधिकारी
राम नाम किय तोहिं अति पावन * रचहु चरित सोइ गाइ सुहावन
विद्याहीन न पिंगल-ज्ञाना * केहि विधि रचिहौं राम-पुराना
वाल्मीकि कर सविनय बानी * सुनि, प्रबोधि, बोले विधि ज्ञानी
सरस्वती तव गिरा निवासा * सहज काव्य तहँ होइ प्रकासा
जो बरनै तैं छन्द ललामा * सोइ जग जनमि, करैं श्रीरामा
दै वर, गमन कियो विधि, देशा * वाल्मीकि हिय हरष विशेषा

राम नाम शुने मात्र पिन्डेर भितर * जानिल इहार मध्ये आछे मुनिवर
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा डाकि पुरन्दरे * सात दिन वृष्टि कर पिन्डेर उपरे
वृष्टिते गलिया गेल मृत्तिका सकल * देखिल केवल अस्थि आछे अविकल
सृष्टिकर्त्ता करिलेन ताहारे आह्वान * पाइया चैतन्य मुनि उठिया दौंडान
ब्रह्मारे कहिल मुनि करिया प्रणाम * मोरे मुक्त कैला तुमि दिया राम नाम
ब्रह्मा बले तव नाम रत्नाकर छिल * आजि ह'ते तव नाम वाल्मीकि हइल
वल्मीकेते छिला जेइ सेइ ए विधान * सात काण्ड कर गिया रामेर पुराण
जेइ राम नाम हैते हइला पवित्र * सेइ ग्रन्थ रच गिया रामेर चरित्र
जोड हाते बले मुनि ब्रह्मा विद्यमान * केमन हइबे ग्रन्थ केमन पुराण
केमन कविताछन्द आमि नाहि जानि * शुनिया विधाता तारे कहिलेन वाणी
सरस्वती रहिबेन तोमार जिह्वाय * हइबे कविता राशि तोमार कथाय
श्लोकछन्दे पुराण करिबे तुमि जाहा * जन्मिया श्रीरामचन्द्र करिबेन ताहा
एत बलि ब्रह्मा गेल आपन भवन * आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

[1] लगातार। [2] मिट्टी। [3] वल्मीक अर्थात् दीमकों से व्याप्त मिट्टी के ढेर से निकलने के कारण ब्रह्मा ने रत्नाकर को वाल्मीकि नाम दिया।

नारद द्वारा वाल्मीकि को रामायण की रचना का आभास देना

वाल्मीकि एकदा विटप तर * जपत राम, तहँ सुखद सरोवर
एक क्रौञ्च पच्छिन की जोरी * विलसति जहाँ निपट मदभोरी
व्याध-बान-हत खग निस्संका * आकुल गिरा धरनि, मुनि अंका
'अहह राम!' मुनि वचन उचारा * मुग्धकाल पच्छी किन मारा
बिन अपराध कीन खग हिंसा * अस कुकर्म! मम रहत नृसंसा

नरक वास पावै अधम, शाप दियो भरि शोक।
शाप देत बानी प्रगट, छन्दबद्ध श्लोक ॥ ८ ॥

जो न होत मुनि कहँ यहु शोका * तौ कस प्रगटत पुण्यश्लोका
'मा निषाद'[१] पद अमित अनन्दा * मुनि लिखि लियो चतुष्पद छंदा
मर्म न विदित, चकित निज वचना * तब लौं भरद्वाज आगमना
दोउ गुरु-शिष्य मनन-आसीना[२] * सुनी उतै नारद-मधुबीना
वाल्मीकि मुनि काज सँवारन * नारद कहँ पठयो चतुरानन

नारदकर्त्तृक वाल्मीकि के रामायण रचनार आभास प्रदान

एक दिन से वाल्मीकि सरोवर कूले * राम नाम जपे वसि सुखे वृक्ष मूले
क्रौञ्चक्रौञ्चीवसि तथा आछेवृक्षतले * एक व्याध सेइ पक्षी विन्धिलेक नले
विन्धिलेक सेइ पक्षी शृङ्गारेर काले * व्याकुल हइया पडे वाल्मीकिर कोले
रामे स्मरि बले मुनि काणोदियाहात * जीवहत्या कैलि पापी आमार साक्षात्
शृङ्गारे मारिलि पाखी बडइ कुकर्म्म * पापिष्ठ नारकि तुइ नाहि तोर धर्म्म
बिना अपराधे हिंसा कर पक्षीजाति * बुझिलाम तोमार नरके हबे स्थिति
एतेक बलिया मुनि शाप दिल ताके * एइ शोके एक श्लोक निःसरिल मुखे
शोक हैते श्लोकेर हइल उपादान * मा निषाद बलि तार हय उपाख्यान
चारि पद छन्द मुनि लिखिलेन हाते * लिखिया आपनि मूल ना पारे बुझिते
भरद्वाज सन्निधाने करिला गमन * गुरु शिष्य बसिया आछेन दुइजन
ब्रह्मा पाठाइया दिल तथा नारदेरे * वाल्मीकिरे उपदेश करिबार तरे

---

१ अनुवाद अनुष्टुप छंद का प्रथम चरण जिसमें राम का पुण्य चरित्र वाल्मीकीय रामायण में आरम्भ हुआ है। यह पद अकस्मात् उनके मुख से आहत पक्षी को देखकर निकल पड़ा। २ विचार करने में लीन।

करि वन्दना, विनय रस पागे * रचना धरी देवमुनि[1] आगे
नारद ताकर मर्म बुझावा * वालमीकि मन अति सुख पावा
रामचरित बरनौ यहि छदा * मानवरूप सच्चिदानन्दा
रामभक्त, सब विधि सब लायक * बरनौ तात ! चरित रघुनायक
सूर्यवंश दसरथहि निकेतन * राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन
तीन गर्भ, जन्मैं चारिउ जन * यहि विधि चतुर्मूर्ति नारायन
मिथिला जनक जनमि वैदेही * चाप भञ्जि हरि ब्याही तेही
पितु-आयसु धरि कृपानिकेता * वन गवने सिय-लखन समेता
तहँ सिय-हरन कियो दशग्रीवा * पुनि मित्रता सुकपि सुग्रीवा
वालि-हतन सुग्रीवहिं राजू * खोज्यो सिय, कपि सकल समाजू
भुजा बीस वधि लङ्क दसानन * लौटि अवधपुरि कीन्हेउ सासन

बरनौ रावन-दिग्विजय, कथा अगस्त्य ललाम ।
पञ्चमास कर गर्भ सिय, पुनि सोइ त्यागेउ राम ॥६॥

जेखाने वालमीकि मुनि भावेन वसिया * सेखाने नारद मुनि उत्तरिल गिया
नारद देखिया मुनि सम्भ्रमे उठिल * दण्डवत् करि वसिते आसन दिल
सेइ श्लोक शुनाइल मुनि नारदेरे * नारद करिया अर्थ बुझाइल तारे
एइ श्लोक छन्दे तुमि कर रामायण * उपदेश कहि जानि तुमि से भाजन
सूर्य्यवंशे दशरथ हवे नरपति * रावण वधिते जन्मिलेन लक्ष्मीपति
श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण * तिन गर्भे जन्मिवेन एई चारि जन
सीता देवी जन्मिवेन जनकेर घरे * धनुर्भङ्ग पणे तॉर विवाह तत्परे
पितार आज्ञाय राम जाइवेन वन * सङ्गे ते जावेन तार जानकी-लक्ष्मण
सीतारे हरिया लवे लङ्कार रावण * सुग्रीव सहित राम करिवे मिलन
वालि के मारिया तारे दिवे राज्य भार * सुग्रीव करिया दिवे सीतार उद्धार
दशमुण्ड बिश हात मारिया रावण * अयोध्याय राजा हइवेन नारायण
करिवेन अगस्त्य रावण दिग्विजय * पुनरपि सीता के वर्जिवे महाशय

---

१ नारद ।

गोपग्राम सियकर, तप-उपवन * लव कुश जनम जानकीनन्दन
रामायण वेदादि पुराना * सिखवहु तिनहिं अस्त्र विधि नाना
ग्यारह सहस वर्ष छिति पालन * सुतहिं राज, प्रभु स्वर्ग सिधारन
गावहु चरित जो मुनि गुन-सीला * करिहैं जनमि राम नर-लीला
देवलोक नारद पगु धारा * चन्द्रवंश पुनि इमि विस्तारा

चन्द्रवंश का वृत्तान्त

सागर-मथन 'चन्द्र' आलोका * 'बुध' शशिसुवन विदित त्रयलोका
बुध 'पुरुरवा' नाम कर ताता * तेहि सुत 'सतावर्त' विख्याता
सतावर्त के 'स्वर्ग' कहाये * 'श्वेत' नाम सुत-स्वर्ग सुहाये
श्वेत-पुत्र निमि नाम कहावा * जिन गाथा मुनि देवन गावा
मथ्यो सवन निमि केर शरीरा * तेहि प्रगट्यो 'मिथि' सुत अतिवीरा
जिन यश मिथिला वसी उजागर * 'सीरध्वज' 'कुशध्वज' तिन कोंडर[1]
जग-कल्यान हेतु कछु साधन * सोचन लगे तवै चतुरानन
जनक-गेह लक्ष्मी अवतारा * 'सीता' रूप प्रगट संसारा

पञ्चमास गर्भवती सीतारे गोपने * लक्ष्मण राखिवे लये तव तपोवने
कुश लव नामे हवे सीतार नन्दन * उभये शिखावे तुमि वेद रामायण
एगार सहस्र वर्ष पालिवेन च्छिति * पुत्रे राज्य दिया स्वर्गे करिवेन गति
जन्म हैते कहिलाम स्वर्ग आरोहण * करिवेन जन्मि इहा प्रभु नारायण
एत वलि नारद गेलेन स्वर्गवास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

चन्द्रवंशेर उपाख्यान

सागर मन्थने चन्द्र हइल उत्पन्न * हइल चन्द्रेर पुत्र बुध अति धन्य
पुरुरवा नामे हइल ताँहार नन्दन * ताँहार पुत्र शतावर्त्त जाने सर्वजन
स्वर्गनामे ताँहार हइल एक सुत * हइल ताँहार पुत्र श्वेतनाम युत
नामेते हइल निमि ताँहार नन्दन * निमिके प्रशंसा करे जत देवगण
मथने मिलिया तॉर मथिल शरीर * जन्मिल ताहाते पुत्र मिथि नामे वीर
तेंह स्थापिल एइ मिथिला नगर * सीरध्वज कुशध्वज ताँहार कोंडर
सृष्टिरक्षा हेतु धाता चिन्तिल अन्तरे * करिल लक्ष्मीर जन्म जनकेर घरे

---

[1] [illegible]

वरनेउ चन्द्रवंश कृतिवासा * सूर्यवंश कर वहुरि प्रकासा

सूर्यवंश का वृत्तान्त और मान्धाता का जन्म

आदिपुरुष जो अलख 'निरञ्जन' * 'शिव' 'विधि' 'विष्णु' प्रगट ताहीसन
सुवन तीन, पुनि एक नन्दिनी * सबन धरेउ मिलि नाम 'कन्दिनी'

जरत्कारु अवतंस-मुनि, तिन सन रचेउ विवाह।
नारद, भगिनी कन्दिनी, सहित समोद उछाह ॥१०॥

तिन कर सुता 'भानु' जिहि नामा * ऋषि 'जमदग्नि' केरि सो वामा
जिन घर एक अंश अवतारा * जनमे विष्णु विदित संसारा
बीजपात तहँ किय चतुरानन * प्रगटे मुनि 'मरीच' सोइ कारन
सुत-मरीच 'कश्यप' विख्याता * कश्यप-सुवन 'सूर्य' सुखदाता
सूर्य-तनय 'मनु' नाम कहाये * तिन अतिरूप 'सुपेन' सुहाये
अंश-सुपेन 'प्रसन्न' भुआला * तेहि 'युवनाश्व' अवध महिपाला
सुता 'कालनिधि' 'कंदक' नृपवर * वरेउ ताहि युवनाश्व तपागर

कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुन्दर * चन्द्रवंश रचना करिला कविवर

सूर्यवंशेर उपाख्यान ओ मान्धातार जन्म

आदि पुरुषेर नाम हैला निरञ्जन * ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइला तनया एक जानि * सकले ताँहार नाम राखिल कन्दिनी
जगत्कारु मुनिपुत्रे से नारद आनि * ताँहारे विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सवे गाय वाजाय नारद मुनि वेणु * ताहाते जन्मिल कन्या नाम हैल भानु
ताँहारे विवाह दिल जामदग्न्य वरे * एक अंशे विष्णु जन्मिवेन तार घरे
ब्रह्मार काछेते ताँर पड़िलेक बीज * ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर नन्दन कश्यप नाम धरे * ताँर पुत्र सूर्य्य इहा विदित संसारे
सूर्य्येर हइल पुत्र मनु नाम ताँर * सुपेण ताँहार पुत्र रूपे चमत्कार
प्रसन्न ताँहार पुत्र अति से सुठाम * हइल ताँहार पुत्र युवनाश्व नाम
युवनाश्व हइल राजा अयोध्या नगरे * विवाह करिते गेल कन्दकेर घरे
कालनिमि नामे कन्या कन्दक राजार * विवाह करिल युवनाश्व गुणाधार

किन्तु तासु सन, करिय न संगा ※ तजि सँकोच पितु कहेउ प्रसंगा
क्रुद्ध निरखि तनया-संतापा ※ जामातहिं दीन्हेउ अभिशापा
तप सों लौटि इतै गृह आई ※ विनय द्विजन युवनाश्व सुनाई
संतति-वर पावहुँ द्विजदाया ※ सुनि हँसि कहेउ विप्र समुदाया
दरस तें न पत्नी कर कीना ※ सुत-कामना कौन विधि लीना
तदपि यज्ञ-पुंसवन[1] गृहीता ※ पियै रानि सोइ वारि पुनीता
इमि सतेज सुत इक उत्पन्ना ※ सविधि याग नृप किय संपन्ना
जल पुंसवन यतन धरि लीना ※ नृप युवनाश्व शयन तब कीना
अर्ध निसा गत लागि पिपासा ※ आकुल नृपति सहत नहिं त्रासा

स्वसुर शाप, भावी प्रबल, जो जल-यज्ञ महान।
धरेउ यतनयुत रानि हित, कर लीन्हेउ सो पान ॥११॥

निसा विगत, रवि-वैभव जागा ※ विप्रन नीर-पुंसवन मांगा
तब राजन निसि-कथा बुझाई ※ सुनि सखेद कह द्विज-समुदाई

विवाह करिल मात्र सम्भोग ना करे ※ लज्जा घुचाइया कन्या बलिल बापेरे
विशेष जानिया से कन्दक महीपति ※ अभिशाप करिलेक जामातार प्रति
तपस्या करिया जबे आइल भूपति ※ प्रणति करिया द्विजे मागिल सन्तति
आशीर्व्वाद कर मम हउक नन्दन ※ शुनिया ईषत् हासि कहे द्विजगण
पत्नीसह तोमार नाहिक दरशन ※ केमने बलिब तब हउक नन्दन
एक युक्ति कर राजा यदि लय मन ※ यज्ञ कर ताहे तब हइबे नन्दन
सम जल कराइबे राणी के भक्षण ※ हइबे तोमार पुत्र अति विचक्षण
यत्न करि जल राजा राखे निज घरे ※ शयन करिल राजा खाटेर उपरे
जखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर ※ जल आन बलि राजा हइल कातर
तृष्णाय पीड़ित राजा आकुल हइया ※ पुंसवन जल छिल सुखेते टालिल
प्रभाते प्रकाश हैल सूर्य्येर किरण ※ जल आन बलि डाके यतेक ब्राह्मण
राजा बले द्विजगण करि निवेदन ※ रात्रिकाले जल आमि करेछि भक्षण
एकथा शुनिया बले जत महामति ※ रात्रिकाले जल खेले हबे गर्भवती

[1] पुत्रेष्टि यज्ञ।

यज्ञ-सलिल कर अमिट प्रभाऊ * धारौ गर्भ, न संसय राऊ
पूरन गर्भ विगत दस मासा * उदर फारि इक कुँवर प्रकासा
अति वेदना, तजे नृप प्राना * मुनि विरञ्चि आदिक जे नाना
नामकरन कीन्हेउ 'मान्धाता' * सोइ सुत अवधभूप विख्याता
दानशील अस पुन्य गुणागर * सप्त द्वीप लौं नाम उजागर

सूर्यवंश निर्वंश और अयोध्या में हारीत का अभिषेक

तनय तासु 'मुचकुन्द' सुहाये * हर्षित होत युद्ध के पाये
भूतल भेदि चक्र जिन स्यन्दन * सप्तसिंधु किय, सोइ 'पृथु'नन्दन
पुनि 'इच्छ्वाकु' समर सुविशारद * जिन सारथि वशिष्ठ अरु नारद
'सतावर्त' भय ताकर ताता * 'आर्यावर्त' तासु प्रख्याता
तिनके 'भरत' अमित बलधारन * 'भारत' नाम ख्याति जेहि कारन
'भूधर' भरत केर अधिकारी * 'खाण्ड' प्रकट तेहि सुत धनुधारी
'दण्ड' सुवन तेहि पापाचारी * जेहि व्यभिचार दुखित पुरनारी
पुरजन नृपहिं निवेदन करहीं * तव सुत हेत अयोध्या तजहीं

श्वशुरेर अभिशाप ताहारे लागिल * युवनाश्व महाराज गर्भ जे धरिल
दशमास गर्भ पूर्ण हइल राजार * बाहिर हइल पेट चिरिया कुमार
नृपति त्यजिल प्राण पेये बड व्यथा * ब्रह्मा आदि पुत्र नाम राखिल मान्धाता
अयोध्या नगरे राजा हइल मान्धाता * सप्तद्वीप अधिपति पुण्यशील दाता
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुठाम * आदिकाण्ड गान मान्धतार उपाख्यान

सूर्य्यवंश निर्व्वंश एवं अयोध्याय हारीतचेर अभिषेक

मान्धातार तनय हइल मुचुकुन्द * समर पाइले जार हृदये आनन्द
ताँहार तनय नामे पृथु नृपवर * जाँर रथचक्रे सप्त हइल सागर
ताँर पुत्र हइल इच्वाकु नरपति * वशिष्ठ नारदे कैल रथेर सारथि
शतावर्त्त नामे ताँर हइल कुमार * आर्य्यावर्त्त नामे पुत्र हइल ताँहार
भरत ताहार पुत्र अति बलवान * जाहा हैते उपजित भारत पुराण
जन्मिल ताहार पुत्र नामेते भूधर * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अति धनुर्धर
खाण्डेर हइल पुत्र दण्ड नाम धरे * प्रजार कामिनी कन्या बलात्कार करे
कहिल जतेक प्रजा, राजार गोचर * तब पुत्र हेतु छाड़ि अयोध्या नगर

किन्तु तासु सन, करिय न संगा * तजि सँकोच पितु कहेउ प्रसंगा
क्रुद्ध निरखि तनया-संतापा * जामातहिं दीन्हेउ अभिशापा
तप सों लौटि इतै गृह आई * विनय द्विजन युवनाश्व सुनाई
संतति-वर पावहुँ द्विजदाया * सुनि हँसि कहेउ विप्र समुदाया
दरस तैं न पत्नी कर कीना * सुत-कामना कौन विधि लीना
तदपि यज्ञ-पुंसवन[1] गृहीता * पियै रानि सोइ वारि पुनीता
इमि सतेज सुत इक उत्पन्ना * सविधि याग नृप किय संपन्ना
जल पुंसवन यतन धरि लीना * नृप युवनाश्व शयन तब कीना
अर्ध निसा गत लागि पिपासा * आकुल नृपति सहत नहिं त्रासा

श्वशुर शाप, भावी प्रबल, जो जल-यज्ञ महान।
धरेउ यतनयुत रानि हित, कर लीन्हेउ सो पान ॥११॥

निसा विगत, रवि-वैभव जागा * विप्रन नीर-पुंसवन मांगा
तब राजन निमि-कथा बुझाई * सुनि सखेद कह द्विज-समुदाई

विवाह करिल मात्र सम्भोग ना करे * लज्जा घुचाइया कन्या बलिल बापेरे
विशेष जानिया से कन्दक महीपति * अभिशाप करिलेक जामातार प्रति
तपस्या करिया जबे आइल भूपति * प्रणति करिया द्विजे मॅागिल सन्तति
आशीर्व्वाद कर मम हउक नन्दन * शुनिया ईषत् हासि कहे द्विजगण
पत्नीसह तोमार नाहिक दरशन * केमने बलिब तव हउक नन्दन
एक युक्ति कर राजा यदि लय मन * यज्ञ कर ताहे तव हइबे नन्दन
यज्ञजल कराइबे राणी के भक्षण * हइबे तोमार पुत्र अति विचक्षण
यज्ञ करि जल राजा राखे निज घरे * शयन करिल राजा खाटेर उपरे
जखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर * जल आन बलि राजा हइल कातर
तृष्णाय पीड़ित राजा आकुल हइया * पुंसवन जल छिल सुखेते टालिल
प्रभाते प्रकाश हैल सूर्य्येर किरण * जल आन बलि डाके यतेक ब्राह्मण
राजा बले द्विजगण करि निवेदन * रात्रिकाले जल आमि करेछि भक्षण
एक था शुनिया बले जत महामति * रात्रिकाले जल खेले हबे गर्भवती

[1] पुत्रेष्टि यज्ञ।

यज्ञ-सलिल कर अमिट प्रभाऊ * धारौ गर्भ, न संसय राऊ
पूरन गर्भ विगत दस मासा * उदर फारि इक कुँवर प्रकासा
अति वेदना, तजे नृप प्राना * मुनि विरञ्चि आदिक जे नाना
नामकरन कीन्हेउ 'मान्धाता' * सोइ सुत अवधभूप विख्याता
दानशील अस पुन्य गुणागर * सप्त द्वीप लौं नाम उजागर

सूर्यवंश निर्वंश और अयोध्या में हारीत का अभिषेक

तनय तासु 'मुचकुन्द' सुहाये * हर्षित होत युद्ध के पाये
भूतल भेदि चक्र जिन स्यन्दन * सप्तसिंधु किए, सोइ 'पृथु'नन्दन
पुनि 'इक्ष्वाकु' समर सुविशारद * जिन सारथि वशिष्ठ अरु नारद
'सतावर्त' भय ताकर ताता * 'आर्यावर्त' तासु प्रख्याता
तिनके 'भरत' अमित वलधारन * 'भारत' नाम ख्याति जेहि कारन
'भूधर' भरत केर अधिकारी * 'खाण्ड' प्रकट तेहि सुत धनुधारी
'दण्ड' सुवन तेहि पापाचारी * जेहि व्यभिचार दुखित पुरनारी
पुरजन नृपहिं निवेदन करहीं * तव सुत हेत अयोध्या तजहीं

श्वशुरेर अभिशाप ताहारे लागिल * युवनाश्व महाराज गर्भ जे धरिल
दशमास गर्भ पूर्ण हइल राजार * वाहिर हइल पेट चिरिया कुमार
नृपति त्यजिल प्राण पेये बड़ व्यथा * ब्रह्मा आदि पुत्र नाम राखिल मान्धाता
अयोध्या नगरे राजा हइल मान्धाता * सप्तद्वीप अधिपति पुण्यशील दाता
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुठाम * आदिकाण्ड गान मान्धतार उपाख्यान

सूर्य्यवंश निर्व्वंश एव अयोध्याय हारीतवेर अभिषेक

मान्धातार तनय हइल मुचुकुन्द * समर पाइले जार हृदये आनन्द
ताँहार तनय नामे पृथु नृपवर * जाँर रथचक्रे सप्त हइल सागर
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति * वशिष्ठ नारदे कैल रथेर सारथि
शतावर्त्त नामे ताँर हइल कुमार * आर्य्यावर्त्त नामे पुत्र हइल ताँहार
भरत ताहार पुत्र अति वलवान * जाहा हैते उपजित भारत पुराण
जन्मिल ताहार पुत्र नामेते भूधर * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अति धनुर्धर
खाण्डेर हइल पुत्र दण्ड नाम धरे * प्रजार कामिनी कन्या वलात्कार करे
कहिल जतेक प्रजा, राजार गोचर * तव पुत्र हेतु छाड़ि अयोध्या नगर

मन अति छोह खाण्ड नरनाहा * सुवन दण्ड कर रचेउ विवाहा
नगर तजन वन गमन कर, आयसु नृप पुनि कीन्ह ।
करि प्रवेश कानन सघन, दण्ड नगर तजि दीन्ह ॥१२॥
नगर एक तहँ दण्ड वसावा * 'दण्डारण्य' नाम सोइ पावा
तहँ मुनिप्रवर 'शुक्र' कर वासा * नृप नित पठन जाय तिन पासा
एक दिवस तपहित मुनि गयऊ * गुरगृह दण्ड उपस्थित भयऊ
तोरत सुमन सुतामुनि 'अब्जा' * लखि नृप दण्ड, काम मन उपजा
कामातुरहिं कहेउ मुनिबाला * उचित न, तैं पितु-शिष्य भुआला
तदपि वरन मोहिं जो मन चहहू * प्रकट पिता सन आयसु लहहू
रुचै न मोहिं तव सीख-प्रसंगा * यहि छन केलि करहु मम संगा
करि वाटिका विवस मुनि-ललना * कुमति तृप्त निज कीन वासना
क्षत-विक्षत अरु नख आघाता * अब्जा कर कौमार्य निपाता
तप निवृत्त, मुनि आश्रम आये * आसन सलिल सुता सों पाये
दिवस क्लांत मुनि, सुता-सरूपा * निरखि क्षुब्ध, पूछेउ करि कोपा

एकथा शुनिया खाण्ड विषादित मन * पुत्रेर विवाह राजा दिल सेई क्षण
परे पाठाइल राजा दण्डेरे कानने * प्रवेश करिल दण्ड सेइ महावने
कानन मध्येते गिया दण्ड नृपवर * वसाइल दण्डारण्य नामेते नगर
ताहाते वसति करे शुक्र मुनिवर * पड़िवारे दण्ड नित्य जाय ताँर घर
शुक्र गेल एकदिन तपस्या करिते * दण्ड राजा हेन काले गेलेन पड़िते
शुक्रकन्या अब्जा जाय पुष्प आहरणे * दण्ड तारे वले मोरे तोष आलिङ्गने
अब्जा वले शुन राजा कहि तव ठाँई * पितृ शिष्य तुमित सम्बन्धे हओ भाई
करिते विवाह यदि लय तव मन * पितृ विद्यमाने तवे कर निवेदन
राजा वले ए कथाय स्थिर नहे मन * विभा हवे पाछे आगे देह आलिङ्गन
गुरुकन्या वलि राजा ना करे विचार * पुष्पवाटिकाते तारे करे बलात्कार
प्रथम युवक राजा युवती मिलन * नखाघाते रक्तपात हैल सेइ क्षण
तपस्या करिया मुनि शुक्र एल घरे * आसन सलिल अब्जा दिल मुनिवरे
दिनान्ते अशुक्त मुनि पुड़े कलेवर * कन्यारे देखिया मुनि कुपित अन्तर

कस शरीर शृंगार सहीता * सकुचि निवेदन किय भयभीता
'दण्ड' शिष्य तव सूने आवा * कियो विवस, मम धर्म नसावा
कुपित शुक्र नृप तुरत बुलावा * पोथिन सहित पढ़न मनु आवा
विद्यादान जो मोसन लीना * गुरु-दक्षिणा भली विधि दीना
दण्ड भस्म सों[1] राजु पुनीता * होय, शाप दिय क्रोध अतीता

भयो अवधपुर नृपति बिन, भानुवंश निर्वंस ।
मुनि-शापित असमय तजेउ, जीवन, दण्ड नृशंस ॥१३॥

मुनि वशिष्ठ-माथे सब सासन * करैं प्रजा कर सुतसम पालन
जप तप नेम ब्राह्मण धर्मा * छूटे सकल राज्य के कर्मा[2]
अति चिन्तित सोचत मुनि ज्ञानी * जेहि छिन दण्ड बुद्धि बौरानी
ऋतुवंती अब्जा तेहि काला * निश्चय धरेउ गर्भ मुनिबाला
शुक्र बुलाय सुगिरा उचारी * तव दौहित्र राज्य अधिकारी
कुपित शुक्र तहँ साज सजावा * अब्जा अवध सहर्षि पठावा

मुनि बले अब्जाकन्या देखि ए केमन * तोमार सर्व्वाङ्गे देखि शृङ्गार लक्षण
लज्जा तेयागिया कन्या कहे ताँर पाश * तव शिष्य दण्डराजा कैल जाति नाश
शुनिया ए हेन कथा क्रोधे मुनिवर * दण्डक बलिया तबे डाकिल सत्वर
पुथि काँखेकरि दण्ड आसे पढ़िबारे * देखिया कुपित मुनि कहिल ताँहारे
पढ़ाइया तोमारे यदि दियाछि चेतन * ताहार दक्षिणा भाल दिले हे एखन
कोपदृष्टे चाहिल तखन महा ऋषि * राज्य शुद्ध हइल से दण्ड भस्मराशि
अयोध्याते दण्डराजा त्यजिल जीवन * निर्व्वंश हइल सूर्य्यवंशेर राजन
अयोध्याते हैल राजा वशिष्ठ ब्राह्मण * पुत्रेर समान करि पाले प्रजागण
मुनि बले जप तप सब नष्ट हैल * मिछा राज्य करि मम जन्म गोडाइल
ध्यान करि जानिल से वशिष्ठ ब्राह्मण * अब्जार हइबेक एक उत्तम नन्दन
जेइकाले अब्जाकन्या ऋतुमती छिल * दण्ड राजा बलात्कार तखन करिल
ध्याने जानि वशिष्ठ कहेन शुक्र प्रति * शीघ्र पाठाइया देह राजा हबे नाति
शुनि शुक्र मुनि तबे हैल हृष्ट मन * कन्या पाठाइबार सज्जा करिल तखन

---

१ कुमार्गी दण्ड के नष्ट होने से राज्य पवित्र हो, ऐसा शाप । २ राजकाज के कारण ।

मुनितनया किय अवध निवासा * प्रसवि कियो सुत मञ्जु प्रकासा
नाम तासु 'हारीत' बखाना * बढत नित्य शशिकला समाना
अन्नप्रासन किय षटमासा * गुरु असीस मन अमित हुलासा
वर्ष एक गत, मुनी प्रवीना * सिंहासन सुत किय आसीना
वयस[1] अल्प, वैधव्य सरूपा * निरखि मातु आकुल सुतभूपा
नृप हरीत पूँछत इमि बानी * कहेउ जननि निज करुन कहानी
तव पितु सन नहिं सविधि विवाहू * बल प्रयोग बरबस नरनाहू
मुनि-सूने[2] मम चरित विनासा * मम-पितु-शाप तासु तन नासा
आख्यान-दण्डक यहि रूपा * कृत्तिवास किय बरनि अनूपा

राजा हरिश्चन्द्र का उपाख्यान

भल हारीत प्रजा प्रतिपालत * तासु तनय 'हरिबीज' बखानत

परनारी-हारी सदा, पुरजन विकल अनन्य ।
ताके सुत 'हरिचन्द' नृप, ख्याति चराचर धन्य ॥१४॥

नृप तन कियो जाह्नवी अर्पन * 'हरिश्चन्द्र' कहँ राज्य समर्पन

अञ्जा के पाठाय शुक्र अयोध्या नगर * अञ्जार हइल एक अपूर्व्व कोङर
हरषे हइल तॉर नाम जे हारीत * मुनि तारे आशीष करिल जथोचित
दिने दिने बाड़िल जेमन शशधर * छय मास मध्ये अन्न दिल मुनिवर
एक वर्ष हैल जेइ राजार कोङर * बसाइल निया सिंहासनेर उपर
हारीत बलेन माता करि निवेदन * अल्पकाले विधवा हइले कि कारण
एइ कथा शुनि राणी कहिल निश्चय * तोमार बापेर सङ्गे विवाह ना हय
तव पिता आमारे करिल बलात्कार * मम पिता कैल तव पितार संहार
कृत्तिवास पण्डितेर रामायण गान * आदिकाण्डे गाइल दण्डक उपाख्यान

राजा हरिश्चन्द्रेर उपाख्यान

हारीतेर पुत्र हरिबीज नाम धरे * राजा हैल हरिबीज अयोध्या नगरे
परवधू हरि हरिबीज राज्य करे * तॉर पुत्र हरिश्चन्द्र ख्यात चराचरे
हरिश्चन्द्रे समर्पण करि सर्व्व देश * स्वरूपे गङ्गाते राजा करिल प्रवेश

---

१ उम्र । २ मुनि की अनुपस्थिति में ।

सत्य-रूप हरिचन्द भुआला * पितु सम प्रजा सतत प्रतिपाला
सोमदत्त नृप तनया 'शैव्या' * कियो विवाह सुन्दरी भव्या
अनुपम तेहि रुहदास कुमारा * सब विधि मोद भूप परिवारा
सत्य-सुयश तिन पुन्य विलोका * इन्द्रादिक अचरज सुरलोका
सुरपति इक दिन सभा विराजा * पचकन्यान नृत्य तहँ छाजा
नृत्य मुग्ध नर्तकी तरंगा * नाचति भयो ताल कहुँ भंगा
कोह,[1] चूकि लखि, सुरपति व्यापा * दीन पंचकन्यन अभिशापा
यौवनमत्त बन्दिगृह जाहीं * विश्वामित्र तपोवन माहीं
रूपसि कहैं विकल भरि लोचन * नाथ होय किमि शाप बिमोचन
पुन्यनरेस अवध हरिचन्दा * तिन कर छुये कटैं तब फन्दा
चुनैं सुमन नित तोरैं डारी * तरु उपवन शापित सुकुमारी
निरखि तपोवन डारि निपाता * कह शिष्यन सह कौशिक बाता
विटप-अंग जड़मति जेहिं भंगा * जड़वत बँधै लता के संगा

पितृ मृत्यु परे हरिश्चन्द्र हैल राजा * पुत्रेर समान पाले अयोध्यार प्रजा
सोमदत्त राजकन्या तॉर नाम शैव्या * विवाह करिल हरिश्चन्द्र अति भव्या
पाइया सुन्दरी जाया अन्तरे उल्लास * हइल ताहार पुत्र नाम रुहिदास
सुखे राज्य करे हरिश्चन्द्र महीपति * इन्द्रेरे लइया किछु शुनह सम्प्रति
एक दिन सभाते बसिल सुरपति * पञ्चकन्या नृत्य करे प्रथम युवती
नाचिते नाचिते अति बाड़िल तरङ्ग * एक बार करिलेक तारा ताल भङ्ग
देखिया करिल कोप देव पुरन्दर * अभिशाप दिल पञ्चकन्यार उपर
यौवन गर्व्विता तोरा ह'येछिस मने * बद्ध हये थाक विश्वामित्र तपोवने
चरणे धरेया तारा करेन क्रन्दन * कतकाले बल हबे शाप विमोचन
इन्द्र बले बन्दीरूपे थाक तपोवने * हबे मुक्त राजा हरिश्चन्द्र परशने
नित्य से रूपसी पुष्प करे आहरण * डाल भाङ्गे फूल तोले के करे बारण
शिष्यसह विश्वामित्र गेल तपोवने * डाल भाङ्गा गाछ सब देखिल नयने
एमन करेया डाल भाङ्गे जेइ जन * आइले लागिबे कालि लतार बन्धन

1 क्रोध

भोर होत पुनि सोइ अतिरूपा * किसिलय[1] तोरन चलीं अनूपा
छुवतै चपकि लता सन लागी * मुनि के शाप न वचीं अभागी
अपराधिनि तरुवद्ध लखि, करि भर्त्सन[2] अति रीस।
किय पयान निज आश्रम, विश्वामित्र मुनीस ॥१५॥
मृगया हेत फिरत तहँ भूपा * कानन हरिश्चन्द्र यशरूपा
भेंट कुरंग[3] न, सिथिल -सरीरा * डोलत मग-मारग अनधीरा
सोइ, तरु तरे लियो विश्रामा * कियो गोहार निरखि सुरवामा[4]
क्रन्दन[5] सुनत छुयो तरु जैसे * कन्या पंच मुक्त भईं तैसे
लख्यो भूप सोइ अचरज नयना * कीन ससेन राज्य निज गमना
भोर गाधिसुत उपवन आये * लखि न नवेलिन[6] मन अकुलाये
जेहि अपराध छुटे तिन बंधन * होय नष्ट कह गाधिय नन्दन
हरिश्चन्द्र-कर[7] तिन कर त्राना * धरत ध्यान कैतुक मुनि जाना
तुरत चले कौशिक तन ज्वाला * सत्यसंघ जहँ अवध भुआला

एत बलि शाप तारे दिल मुनिवरे * आइल प्रभाते कन्या पुष्प तुलिवारे
जेइ काले कन्या आसि डाले भर दिल * लतार बन्धन हाते अमनि लागिल
प्रभाते आसिया विश्वामित्र तपोधने * कन्या देखि भावित लागिल रुष्ट मने
अनेक प्रकारे तारे करिया भर्त्सन * यथास्थाने मुनिवर करिल गमन
हेन काले तथा हरिश्चन्द्र यशोधन * मृगया करिते करिलेन आगमन
मृग ना पाइया अति व्याकुलित मन * क्लान्त हन नाना स्थाने करिया भ्रमण
मनस्ताप पाइया बसिल तरु तले * कन्या डाके उच्चै:स्वरे हरिश्चन्द्र बले
क्रन्दन शुनिया राजा गेल तपोवने * स्पर्श मात्र मुक्त हये गेल पञ्चजने
आश्चर्य देखिया हरिश्चन्द्र यशोधन * सैन्यसह निज राज्ये करिल गमन
प्रात:काले आइलेन गाधीर नन्दन * कन्यागणे ना देखे दु:खित हैल मन
आमि जे बान्धिनु मुक्त कैल कोन्‌जन * सर्व्वनाश हैल तार संशय जीवन
ध्यान करि जानिलेन गाधीर नन्दन * हरिश्चन्द्र छाड़ाइया दिल कन्यागण
क्रोध करि मुनि तवे चलिल सत्वर * उत्तरिला गिया मुनि राजार गोचर

१ पुष्प। २ फटकार। ३ हिरन। ४ देव पचकन्याएं। ५ रोना। ६ सुन्दरियां। ७ हाथ।

आदर-विनय सहित दै आसन * कह नृप, धाम कियो मुनि पावन
जीवन सफल नाथ मम आजू * धन्य! धन्य! कौशिक ऋषिराजू
सुनु नृप, अग्निपुञ्ज मुनि कहेऊ * मम वन्दिनी मुक्त किमि करेऊ
कह नृप, असत न कहौं तपोधन * करुन टेर[1] सुनि काटेउँ बंधन
दान-पुन्य नित द्विज-परितोषू * क्रम मोहिं नाथ! अकारन रोषू
रे नृप! अहंकार तोहिं छावा * दान-पुन्य . यश मोहिं सुनावा
बहु अभिलाष, करौं कछु याचन * कस समरथ, देखौं तैं राजन

सफल धर्म, गृह आजु मम, पुलकित कह अवनीस।
स्वयं दान मोसन गहैं, विश्वामित्र मुनीस ॥१६॥

तन मन धन जो कछु अवसेसा * अर्पन सकल नाथ-आदेसा
मुनि तव मान वचन प्रतिपाला * राखौं अटल कहेउ महिपाला
व्याध फन्द मृग फसहिं अबूझा[2] * मुनि-प्रपञ्च तिमि नृपहिं न सूझा
प्रन-पालन हरिचन्द स्वभाऊ * साखी[3] देव, कहत मुनिराऊ

मुनिरे देखिया राजा कैल अभ्यर्थन * एस एस वलि दिल वसिते आसन
सफल भवन मोर सफल जीवन * मोर गृहे आइलेन गाधीर नन्दन
ज्वलन्त अनल जेन वले तपोधन * बाँधिनु ये कन्यागणे छाड़ कि कारण
राजा वले कन्या मोरे कैल आमन्त्रण * मिथ्या ना वलिव प्रभु करेछि मोचन
दान पुण्य करि प्रभु तुषि ये ब्राह्मण * आमा प्रति क्रोध केन कर अकारण
ए कथा शुनिया कहे गाधीर कुमार * दान पुण्य कर वले कर अहङ्कार
करिवे कि दान तुमि देखि तव मन * आमारे किञ्चित् दान देहत राजन
राजा वले गृहधर्म्म सफल जीवन * मोर दान लवे प्रभु गाधीर नन्दन
याहा चाह ताहा दिव ना करिव आन * नाना दाने गोसाईं राखिव तव मान
मुनि वले दान देह यद्यपि राजन * करह अग्रेते तुमि सत्य निवन्धन
राजा वले सत्य सत्य ना करिव आन * ए सत्य लङ्घिले नाहि पाव परित्राण
भूपति करिल सत्य ना बुझिया छन्द * मृग वन्दी हैल येन ना देखिया फान्द
मुनि वले देखह सकल देवगण * राजा करिवेन निज सत्येर पालन

---

१ पुकार। २ धोखे में। ३ गवाह।

जो कछु देन, नृपति ! मन आनौ * तौ दै अवनि सकल, सुख मानौ
हरपि भूप लै किञ्चित माटी * कृत संकल्प दान-परिपाटी
श्रद्धायुत भूदान अनूपा * स्वस्ति ! स्वस्ति ! कहि लिय तपरूपा
कह मुनि सुनु कुल-भानु-विभूपन * विन दच्छिना दान नहिं पूरन
कोप-अधिप कह कृपा-निकेता * कोटि सप्त सुवरन मुनि हेता
स्वर कठोर कह कौशिक बानी * दानवीर कस मति बौरानी
धरनि दिये अब तैं न नरेसा * धन सेवक न राजु अवसेसा
सुनत मर्म, नृप मन सुधि आई * निज करनी निज सर्व नसाई
प्रन किमि सधै महीप विचारा * उत मुनि किय पुनि वाक् प्रहारा
दान-धर्म कर दर्प घनेरा * तजि महि अन्त लखौ कहुँ डेरा
सुहृदन कह, मुनि विनय विचारहु * कछुक धरनि हरिचन्दहिं छाड़हु
जहँ निज तन नृप करैं निवासू * धरा छाँड़ि कित मानव वासू

सूची अग्र न महि तजौ, कह सकोपि मुनि बैन ।
महि-तटस्थ वाराणसी, सो अकेल नृप अैन ॥१७॥

मुनि बले दिवे यदि करेछ अन्तरे * राजन पृथिवी दान करह आमारे
दानेर करिल राजा अति परिपाटी * आनिलेक हाते करि तिन तोला माटी
भू-दान करिल हरिश्चन्द्र श्रद्धायुत * स्वस्ति स्वस्ति बलिया लइल गाधीसुत
मुनि बले दान दिला पाइनु एखन * दानेर दक्षिणा राजा देहत काञ्चन
राजा बले दक्षिणाते ना करिह घृणा * दानेर दक्षिणा दिब सात कोटि सोना
मुनि बले विलम्बे नाहिक प्रयोजन * सात कोटि काञ्चन करह समर्पण
भूपति करेन आज्ञा भाण्डारीर प्रति * आमारे आनिया देह स्वर्ण शीघ्रगति
दृढ़ करि बले मुनि गाधीर कुमार * भाण्डारी उपरे तव किबा अधिकार
सकल पृथिवी दान करिले आमारे * भाण्डारी काहार धन दिवेक तोमारे
शुनिया भावित राजाछाड़िलनिश्वास * करिलाम आपना आपनि सर्व्वनाश
मुनि बले भूपति मजिले अहङ्कारे * पृथिवी छाड़िया तुमि याह स्थानान्तरे
पात्र मित्र सबे बले करि जोड़ पाणि * हरिश्चन्द्र भूपे दिते पल्ली एक खानि
सूच्यग्र खनने यत उठे वसुमती * उहाके ना देय विश्वामित्र महामति

काशीवास सहित परिवारा ❋ तजैं राज तिय सहित कुमारा
शैव्या, रोहितास अरु राजन ❋ तज्यो अवध, धरि मुनि अनुसासन
तब लौं मुनि पुनि गर्जन कीन्हा ❋ सप्तकोटि सुवरन नहिं दीन्हा
विवस भूप सविनय कह वानी ❋ सात दिवस ठहरौ मुनिज्ञानी
यहि विच सुवरन-भार उतारन ❋ कहि काशी-पथ किय पग धारन
बीते दिवस, सोन कहँ मोरा ? ❋ गाधि-सुवन[1] कह वचन कठोरा
नृप ससोच किमि उवरहिं भारा ❋ सहगामिनि सह करत विचारा
हाट बेंचि मोहि आनहु काञ्चन ❋ यहि विधि करौ नाथ ! प्रन पालन
नृप पुकारि कह सुनु पुरवासी ❋ लेहु जु लेन चहौ कोउ दासी
भद्र विप्र इक फिरत बजारा ❋ परी कान हरिचन्द-पुकारा
हे नर रतन ! उचित तुम कहहू ❋ कतक[2] मोल दासी कर चहहू
कह नृप, नहिं प्रवञ्च[3] द्विजराई ❋ चारि कोटि सेविका विकाई

पात्र मित्र बले शुन गाधीर तनय ❋ कोथाय बसिबे हरिश्चन्द्र निराश्रय
एत शुनि क्रोध करि बले महाऋषि ❋ पृथिवीर बहिर्भाग आछे वाराणसी
शैव्या नारी आर निज पुत्र रुहिदास ❋ तिन जन याउक करिते काशीवास
विश्वामित्र कथा शुनि सूर्य्यवंशधन ❋ दारा पुत्र सह काशी करिल गमन
मुनि बले शुन राजा आमार वचन ❋ दिया जाह सात कोटि आमारे काञ्चन
राजा बलेन गोसाइँ ना करिबेन घृणा ❋ सात दिन परे दिब सात कोटि सोना
सात दिन पथे राजा हाँटिया चलिल ❋ पथ आगुलिया मुनि कहिते लागिल
मम कथा शुन हरिश्चन्द्र यशोधन ❋ आगे देह सात कोटि आमारे काञ्चन
शैव्यार सहित राजा करिल मन्त्रणा ❋ कि दिया शोधिब आमि ब्राह्मणेरसोना
शैव्या बले शुन प्रभु निवेदि तोमारे ❋ करह विक्रय मोरे हाटेर माझारे
स्त्री लइया चले राजा हाटेर भितरे ❋ दासी के किनिबे बलि डाके उचै:स्वरे
एक विप्र छिल से पण्डित साधुजन ❋ छिल तार एकटि दासीर प्रयोजन
ब्राह्मण बलेन ओहे पुरुषरतन ❋ लइबे दासीर मूल्य कतेक काञ्चन
राजाबले नाहिजानि मिथ्या प्रवञ्चना ❋ ए दासीर मूल्य चाइ चारि कोटि सोना

---

१ विश्वामित्र । २ कितना । ३ ठगई, मोलतोल ।

जो कछु देन, नृपति ! मन आनौ * तौ दै अवनि सकल, सुख मानौ
हरषि भूप लै किञ्चित माटी * कृत संकल्प दान-परिपाटी
श्रद्धायुत भूदान अनूपा * स्वस्ति ! स्वस्ति ! कहि लिय तपरूपा
कह मुनि सुनु कुल-भानु-विभूषन * विन दच्छिना दान नहिं पूरन
कोष-अधिप कह कृपा-निकेता * कोटि सप्त सुवरन मुनि हेता
स्वर कठोर कह कौशिक बानी * दानवीर कस मति बौरानी
धरनि दिये अब तैं न नरेसा * धन सेवक न राजु अवसेसा
सुनत मर्म, नृप मन सुधि आई * निज करनी निज सर्व नसाई
प्रन किमि सधै महीप विचारा * उत मुनि किय पुनि वाक् प्रहारा
दान-धर्म कर दर्प घनेरा * तजि महि अन्त लखौ कहुँ डेरा
सुहृदन कह, मुनि विनय विचारहु * कछुक धरनि हरिचन्दहिं छाड़हु
जहँ निज तन नृप करैं निवासू * धरा छाँड़ि कित मानव वासू

सूची अग्र न महि तजौं, कह सकोपि मुनि बैन ।
महि-तटस्थ वाराणसी, सो अकेल नृप ऐन ॥१७॥

मुनि बले दिबे यदि करेछ अन्तरे * राजन पृथिवी दान करह आमारे
दानेर करिल राजा अति परिपाटी * आनिलेक हाते करि तिन तोला माटी
भू-दान करिल हरिश्चन्द्र श्रद्धायुत * स्वस्ति स्वस्ति बलिया लइल गाधीसुत
मुनि बले दान दिला पाइनु एखन * दानेर दक्षिणा राजा देहत काञ्चन
राजा बले दक्षिणाते ना करिह घृणा * दानेर दक्षिणा दिब सात कोटि सोना
मुनि बले विलम्बे नाहिक प्रयोजन * सात कोटि काञ्चन करह समर्पण
भूपति करेन आज्ञा भाण्डारीर प्रति * आमारे आनिया देह स्वर्ण शीघ्रगति
दृढ़ करि बले मुनि गाधीर कुमार * भाण्डारी उपरे तव किबा अधिकार
सकल पृथिवी दान करिले आमारे * भाण्डारी काहार धन दिबेक तोमारे
शुनिया भावित राजाछाड़िलनिश्वास * करिलाम आपना आपनि सर्व्वनाश
मुनि बले भूपति मजिले अहङ्कारे * पृथिवी छाड़िया तुमि याह स्थानान्तरे
पात्र मित्र सबे बले करि जोड़ पाणि * हरिश्चन्द्र भूपे दिते पल्ली एक खानि
सूच्यग्र खनने यत उठे वसुमती * उहाके ना देय विश्वामित्र महामति

काशीवास सहित परिवारा ❋ तजैं राज तिय सहित कुमारा
शैव्या, रोहितास अरु राजन ❋ तज्यो अवध, धरि मुनि अनुसासन
तब लौं मुनि पुनि गर्जन कीन्हा ❋ सप्तकोटि सुवरन नहिं दीन्हा
विवस भूप सविनय कह बानी ❋ सात दिवस ठहरौ मुनिज्ञानी
यहि बिच सुवरन-भार उतारन ❋ कहि काशी-पथ किय पग धारन
बीते दिवस, सोन कहँ मोरा ? ❋ गाधि-सुवन[1] कह वचन कठोरा
नृप ससोच किमि उबरहिं भारा ❋ सहगामिनि सह करत विचारा
हाट बेंचि मोहि आनहु काञ्चन ❋ यहि बिधि करौ नाथ ! प्रन पालन
नृप पुकारि कह सुनु पुरवासी ❋ लेहु जु लेन चहौ कोउ दासी
भद्र विप्र इक फिरत बजारा ❋ परी कान हरिचन्द-पुकारा
हे नर रतन ! उचित तुम कहहू ❋ कतक[2] मोल दासी कर चहहू
कह नृप, नहिं प्रवञ्च[3] द्विजराई ❋ चारि कोटि सेविका बिकाई

पात्र मित्र बले शुन गाधीर तनय ❋ कोथाय वसिबे हरिश्चन्द्र निराश्रय
एत शुनि क्रोध करि बले महाक्षपे ❋ पृथिवीर बहिर्भाग आछे वाराणसी
शैव्या नारी आर निज पुत्र रुहिदास ❋ तिन जन याउक करिते काशीवास
विश्वामित्र कथा शुनि सूर्य्यवंशधन ❋ दारा पुत्र सह काशी करिल गमन
मुनि बले शुन राजा आमार वचन ❋ दिया जाह सात कोटि आमारे काञ्चन
राजा बलेन गोसाइं ना करिवेन घृणा ❋ सात दिन परे दिब सात कोटि सोना
सात दिन पथे राजा हाँटिया चलिल ❋ पथ आगुलिया मुनि कहिते लागिल
मम कथा शुन हरिश्चन्द्र यशोधन ❋ आगे देह सात कोटि आमारे काञ्चन
शैव्यार सहित राजा करिल मन्त्रणा ❋ कि दिया शोधिब आमि ब्राह्मणेर सोना
शैव्या बले शुन प्रभु निवेदि तोमारे ❋ करह विक्रय मोरे हाटेर माझारे
स्त्री लइया चले राजा हाटेर भितरे ❋ दासी के किनिबे बलि डाके उच्चैःस्वरे
एक विप्र छिल से पण्डित साधुजन ❋ छिल तार एकटि दासीर प्रयोजन
ब्राह्मण बलेन ओहे पुरुषरतन ❋ लइबे दासीर मूल्य कतेक काञ्चन
राजाबले नाहिजानि मिथ्या प्रवञ्चना ❋ ए दासीर मूल्य चाह चारि कोटि सोना

---

१ विश्वामित्र । २ कितना । ३ ठगई, मोलतोल ।

हर्षि विप्र सोइ दीन्हेउ सुवरन * लै शैव्या पुनि चलेउ निकेतन
अञ्चल धरि रुहिदास कुमारा * मातहिं तजत न, रुदन अपारा
छोड़-छोड़ कहि लकुटि दिखावै * द्विज हियहीन सुवन विलगावै[1]
वटु[2] ! दामन विन सुत लै लीजै * रानी कहत अनुग्रह कीजै

दुइ जीवन भोजन-वसन, नहिं वाउरि[3] वस केरि ।
विप्र-वचन ढारस कछुक, वहुरि रानि किय टेरि ॥१८॥

प्रभु निज भाग इतर[4] नहिं चाहौं * सुवन सहित, सोइ विच निर्वाहौं
प्रति दिन सेर अन्न अधिकाई * सुलभ न, कहि गमने द्विजराई
चारि कोटि सुवरन जो लहेऊ * मुनि ढिग नृपति उपस्थित भयऊ
कस मम करत अवज्ञा राजन * चारि कोटि दिखरावत काञ्चन
रत्ती सात होय नहिं अल्पा * सप्त कोटि पूरन संकल्पा
आकुल हृदय माथ धरि हाथा * हाटहिं चले अयोध्यानाथा
कासी पुरवासी सुनि लीजै * सेवक चहौ तो मोहिं लै लीजै

शुनिया ए कथा विप्र स्वीकार करिल * चारिकोटि स्वर्ण दिया शैव्यारे किनिल
दासी निया द्विज जाय आपनार वास * मायेर कापड़ धरि कान्दे रुहिदास
अञ्चले धरिया पुत्र जाय गड़ागडि * छाड़ छाड वलि विप्र देखाइल वाडि
शैव्या बले गोसाइँ गो करि निवेदन * विना पणे किन एवे आमार नन्दन
शुनिया कहिल विप्र हइला वातुल * दुजनार तरे कोथा पाइव तण्डुल
शैव्या बले मुनि अन्न दिवाये आमाके * ताहाइ भक्षण कराइव ए बालके
ब्राह्मण वलेन क्रोधे हइया वातुल * दिन प्रति सेर पाइवे तण्डुल
दासी किनि विप्र जाय आपनार स्थाने * अर्थ लये गेल राजा मुनि विद्यमाने
अत्यल्प देखिया स्वर्ण कहे तपोधन * अल्पज्ञान कर हरिश्चन्द्र हे राजन
सातकोटि लव नहे कम सात रति * विश्वामित्रे अवज्ञा ना कर महासति
ए कथा शुनिया महा प्रमाद भाविल * शिरे हात दिया राजा हाटे चलि गेल
हाट खानि वैसे वाराणसीर गोचरे * तृण वाँन्धि सान्धाइल हाटेर भितरे
नफर किनिवे वलि डाके उचै.स्वरे * कालू नामे हाडि एक छिल से नगरे

१ अलग करे । २ ब्रह्मन् । ३ पगली । ४ अलावा ।

कालू नाम श्वपच[1] तहँ आवा * दास लेन कै रुचि दिखरावा
राखौ सुअर-यूथ मन भावै * तौ मोहिं जन! निज मोल बतावै
जो आदेस, करौं चितलाई * बूझौ मोल तो नहिं चतुराई
तीन कोटि सुवरन मोहिं दीजै * कह नृप मोहिं चाकर करि लीजै
नहिं विलंब सोइ दाम चुकाये * यहि विधि सात कोटि मुनि पाये
गाधितनय उत अवध विरामा * डोम इतै पूछत नृप नामा
जननी-जनक नाम जो दीन्हा * 'हरिश्चन्द्र' कहि जग मोहिं चीन्हा
हरिचन्दा, हरि, हरे, पुकारैं * जेहि जस प्रीति सो नाम उचारैं
'हरिश्चन्द्र' सों करि 'हरिदासा' * कालू गमन चहेउ निज वासा

प्रभु उछिष्ट[2] भोजन करौं, देव न यह अरदास[3]।
विनय सुनत बोलेउ श्वपच, धरौ ध्यान हरिदास ॥१६॥

शूकरगन मम पालहु नीके * आवैं मृतक, घाट सुरसरि के
मरघट-कर तिन सों नित लेहू * बिन, शव-दाह करन जनि देहू

से बले आमार कर्म्म आछेत नफरे * चाहि एक नफर से राखिबे शूकरे
ए कथा शुनिया राजा बलिछे वचन * आमि या बलिब ताहा करिबे पालन
कालू बले शुन ओहे पुरुपरतन * आपनार मूल्य लवे कतेक काञ्चन
राजा बले नाहिजानि मिथ्याव्यवहार * स्वर्ण लव तिन कोटि मूल्य आपनार
एकथा शुनिया कालू विलम्ब ना कैल * तिन कोटि स्वर्ण दिया नफर किनिल
सात कोटि सोना नियादिया मुनिवरे * धन पेये गेल मुनि अयोध्या नगरे
कालू बले शुन ओहे पुरुपरतन * कि नाम तोमार कह काहार नन्दन
करिया प्रबन्ध राजा कहिते लागिल * हरिश्चन्द्र नाम बाप मायेते राखिल
कत वा डाकिबे हरिश्चन्द्र नाम धरे * बलिओ कखन हरि कखन वा हरे
लइया नफर कालू जाय निज वास * हरिश्चन्द्र घुचाइल हैल हरिदास
हरिदास बले प्रभु करि निवेदन * खाइते उच्छिष्ट मोरे ना दिबे कखन
कालू बले हरिदास शुनह वचन * वाराणसी पुरे राख शूकरेर गण
वाराणसी तीरे जत मड़ा दाह हय * पञ्चाश काहन लह प्रत्येक मडाय

---

१ चाण्डाल। २ जूठा, अपवित्र। ३ विनती।

वन बिहरत सुत, भीति न अंगा * तोरत किंशुक रंग बिरंगा
गेंदा गुलदाउदी सुहावन * गुलमेंहदी गुलाब मन भावन
बेला बकुल कुसुम चहुँ फूला * हरसिंगार कुअँर मन भूला
शेफालिका सुकेसर प्यारी * चम्पा जवा बिरञ्जित क्यारी
पारिजात किंशुक कहुं तोरैं * कहुँ वल्लरी सुमन झकझोरैं
कहुँ मल्लिका जुही मद भीनी * कलिका कछुक कुअँर चुनि लीनी
डाली विविध प्रसून सजावा * पुनि श्रीफल ढिग रोहित आवा

छुअत डार मुनि-शाप बस, डस्यो सर्प विकराल।
अबुध[1] धरनि स्रव[2] रक्त मुख, तन विष बाढ़ी ज्वाल ॥२१॥

दिन गत अर्ध, न सुत तब आवा * देवार्चन किमि सुमन अभावा !
सपन-ससंक रानि हिय लर्जत * द्विज समुझाय चली सुत खोजत
चहुँ दिसि दीठि पुकारत उपवन * तरुतर लखि अचेत निज नन्दन
खाय पछार अवनि गिरि माता * जिमि समूल कदली[3] भुइँ पाता
निरखत छवि मुख बिलखत धरनी * सुत कित गमन कियो तजि जननी

रुहिदास प्रवेशिल कुसुम कानने * नाना जाति पुष्प तुले याहालय मने
जाती यूथी मल्लिका से तुलिल रञ्जन * शेफालिका पारिजात शिउलि काञ्चन
अशोक किंशुक जवा आतसी केशर * आकन्द गोलाप तोले बकुल टगर
अवशेषे श्रीफले आकड़ि लागाइल * आछिल डालेते शाप बुकेते दंशिल
सर्व्वाङ्गे ते शिशुर वेड़िल विषज्वाला * भूमिते पड़िल शिशु मुखे भाङ्गे लाला
हइल आकाशे बेला द्वितीय प्रहर * तबु से राजार पुत्र ना आइल घर
विलम्ब देखिया तारे कहिछे ब्राह्मण * एखन ना एले कबे हबे देवार्च्चन
शैव्या बले प्रभु एइ करि निवेदन * आपनि देखिया आसि कोथा से नन्दन
तनये देखिते शैव्या करिल गमन * विश्वामित्र तपोवने दिल दरशन
बालकेरे चाहिया बेड़ान तपोवने * देखे वृन्द आड़े पड़े आपन नन्दने
पुत्र के देखिया शैव्या पड़िल भूतले * येमन कलार गाछ भाङ्गे डाले मूले
पुत्र कोले करि शैव्या करिछे क्रन्दन * कोथा गेल मम पुत्र रुहित नन्दन

१ बेहोश। २ बहने लगा। ३ केला।

धर्म करत दारुन दुख डारा * हे प्रभु ! अनल करौं तन छारा
लिये अंक सुत, भरत उसासा[1] * विलपत रानि गई द्विज पासा
केहि विधि प्रान बचैं मम नन्दन * दासी तोर अकारथ क्रन्दन
सर्पदंश घातक तेहि प्राना * मृतक पुरुष किमि जीवन दाना
धैर्य, सती ! करु धीरज धारन * भावी अमिट, न सकौं उबारन
काशीघाट दाह मृत देहू * बहु प्रबोधि, द्विज रहेउ स्वगेहू
मरघट चली रानि शव अंका * डोलत जहँ हरिदास निशंका
लिये बाँस अरु श्वपच सरूपा * मृतक देखि पहुँचे ढिग भूपा
जौं लौं कर नहि घाट चुकावौ * नारी जनि तुम चिता लगावौ
विधि मोहिं विवस अधम गति दीना * मरघट नियम विनय तोहि कीना
मम अधिकार प्रथम दै दीजै * नतरु दाह कहुँ अन्तै कीजै

घाट-अधिप अनुमति मिलै, अर्ध वस्त्र तन फारि ।
चुकवौं कर तब, रानि कह, कातर गिरा उचारि ॥२२॥

धर्म्म करिबारे दुःख दिल नारायण * अग्निते पुड़िया आजि त्यजिब जीवन
पुत्र कोलेकरि शैव्याछाड़िल निश्वास * काँदिते काँदिते गेल ब्राह्मणेर पाश
निवेदन करि शुन सकल ब्राह्मणे * कह ए अधीन पुत्र बाँचिबे केमने
शुनिया प्रबोध वाक्य कहे द्विजगण * सर्पेर दंशने प्राण छाड़िल नन्दन
मरिले मानुष कभु बाँचे कि कखन * सम्बर सम्बर सती सम्बर क्रन्दन
वाराणसी पुरे तुमि मड़ा लये याह * काष्ठ चिता करि एइ मृत देह दाह
मड़ा लैया गेल शैव्या कातर अन्तरे * एकाकी रहिल द्विज आपनार घरे
मड़ा लैया गेल शैव्या वाराणसी वास * हातेते मुद्गर करि आसे हरिदास
हरिदास बले आमि मड़ा दाह करि * मड़ा प्रति लइ पञ्चाश काहन कड़ि
सत्यकथा एइ तोमाय कहिनु निश्चय * तोमारे बलिनु याहा मिथ्या नाहि हय
अन्येर घाटेते लैया पोड़ाओ कुमार * विधाता करिल मोरे हाड़िर आचार
शैव्या बले गोसाईं बलिते भय बासि * विधाता करिल मोरे ब्राह्मणेर दासी
आज्ञा कर यदि मोरे घाटेर पाटनी * दिब आमिचिरिया ये वस्त्र अर्द्ध खानि

१ दुःख भरी साँसें लेना ।

विप्रगेह दासी कर कामा * कटैं दिवस, सवविधि विधि[1] वामा
तापर अहह दुसह दुख आई * उतरेउ मम सिर गाय वजाई
पुनि-पुनि 'हरिश्चन्द्र' कर नामा * करत उच्च लै रोदन भामा
अहौ कितै तुम अवधनरेसू * तव सुत गमन आजु यम-देसू
धर्मयज्ञ कै आहुति पूरन * प्रानहीन लखि सुअन विसूरन[2]
सुनत नाम निज, रानि विलापा * पूर्ववृत्त[3] हरिचन्दहिं जागा
धरि धीरज शैव्या-ढिग आई * परिचय दै, वहु विधि समुझाई
सुनि सकोपि वोलत अकुलानी * कल लौं अवधभूप-महरानी
मरघट-डोम करैं परिहासा * हाय विरञ्चि पलट कस पासा
पुनि नृप कहत सुनौ प्रिय रानी * व्यथा-विवम सव कथा भुलानी
सोमदत्त-तनया जो शैव्या * अवध-भूप मैं वरेउँ सुभव्या
रोहित जनम लियेउ युवराजू * कौशिक हरन कियो पुनि राजू
नृप-ललाट इक चिन्ह विशेखी * संशय मिटेउ रानि सोइ देखी

एतेक शुनिया तवे शैव्यार वचन * हातेते मुद्गर लैया आइसे राजन
पडिल्लेन पुत्र लैया शैव्या स्थालान्तरे * हरिश्चन्द्रवलिया सेकान्दे उच्चै.स्वरे
प्रभु हरिश्चन्द्र राजा गेल कोथाकारे * आसिया देखह मृत आपन कुमारे
धर्म तरे देख नाथ कि दशा हयेछे * पराण पुतलि पुत्र छाडिया गियाछे
हरिश्चन्द्र वलि शैव्या कान्दे विद्यमान * तखन राजार हैल सेइ पूर्वज्ञान
हरिश्चन्द्र वले राणी ना कर क्रन्दन * आमि सेइ हरिश्चन्द्र देखह लक्षण
शैव्या वले हरि हरि कपाले ए छिल * आमार रूपेर मोहे पाटनी पडिल
अयोध्याय छिलाम ये राजार रमणी * एवे परिहास करे घाटेर पाटनी
हरिदास वले प्रिये वलि तव ठाँइ * पासरिले सकलि किछुइ मने नाइ
सोमदत्त राजकन्या शैव्या तव नाम * तोमारे विवाह प्रिये आमि करिलाम
रुहिदास नामे तव हइल नन्दन * मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन
ए कथा शुनिया राणी देखिते लागिल * कपाले निशान छिल तखन चिनिल

१ भाग्य। २ विसूरना दुखो की याद करके कलपना। ३ पहले का हाल।

उपजा मोह, नृपति तजि धीरा * रोहित-तन लखि शिथिल शरीरा
हे सुत ! हे कुमार ! हे ताता ! * कितैं गमन किय तजि पितु-माता
सत मारग, दिय दुख नारायन * अनल भेंटि तन, मिटवौं कारन

सुवन सहित चन्दन-चिता, सजि बैठे पितु-मात ।
अनल देत प्रगटे तवै, धर्मराज साक्षात ॥२३॥

अगिनि नृपति जनि करौ प्रवेसा * पद्मपाणि रोहित तन परसा
खोले दृग, विष दूर कुमारा * पुनि रविकुल वाटिका वहारा
कालू आय कहत सुनु राजन * मुक्त वध तव, सोन न याचन[1]
सोइ धन विप्र विलय किय आई * दीन सोन, मो मैं भरपाई
मम कल्यान न, द्विज धन लीने * शैव्या-कर कंकण तेहि दीने
विश्वामित्र मुनीश विचारा * विनसेउ जप-तप-जोग-अचारा
वृथा प्रपञ्च राज कर लीना * भेंटि नृपति, मुनि आयसु दीना
साधु-साधु नृप गमनौ आजू * करौ सनाथ अवधपुर राजू

पुत्र कोले करि राजा करिछे क्रन्दन * कोथा फेले गेले वापू रहित नन्दन
ए धर्म्म करिते दुःख दिल नारायण * अग्निते पुड़िया आजि त्यजिव जीवन
तखनि चन्दन काष्ठे साजाइल चिता * मध्येते राखिल पुत्र पाशे माता-पिता
ये काले ज्वलन्त अग्नि दिवेन चिताने * हेन काले धर्म्मराज कहेन साक्षाते
अग्निते पुड़िया केन त्यजिवे जीवन * आमि वाँचाइया दिव तोमार नन्दन
पद्महस्त परशेन बालकेर गाय * विषज्वाला दूरे गेल चक्षु मेलि चाय
हेन काले कालू आसि राजारे सम्भाषे * तोमाय आमार स्वर्ण दाय नाहि आसे
ब्राह्मण आसिया वले राजार सदने * तोमाते आमाते दाय घुचिल काञ्चने
राजा वले गोसाईं गो करि निवेदन * ब्रह्मस्व लइव वल किसेर कारण
राणीर हातेते स्वर्ण कङ्कण ये छिल * ताहा दिया राजा तार दाय घुचाइल
मुनि भावे तप जप सव नष्ट कैनु * मिथ्या राज्य करिया हे जन्म काटाइनु
ये खाने आछेन हरिश्चन्द्र यशोधन * सेइ खाने मुनि आसि दिलो दरशन
मुनि वले शुन हरिश्चन्द्र महीपति * आपनार राज्ये तुमि याह शीघ्र गति

१ मूल्य मे दिया सुवरन भर पाया ।

सपरिवार महिपति पग धारा * गाधितनय मन मोद अपारा
छूटे विपति-घन उघरेउ चन्दा * सुखी भानुकुल पुरजन वृन्दा
राजसूय विधिवत करि पूरन * राजतिलक दै रोहित नन्दन
श्वान बिडाल प्रजागन केते * भूपति-सह पयान जिन चेते[1]
सतन[2] स्वर्ग तिन लै पगु धारा * सत्य-धर्म कर बजेउ नगारा
नारायण वैकुण्ठ विराजा * हरिश्चन्द्र कर निरखि समाजा
नृप के तप आधार, कुवर्गा[3] * जुरैं न कहुँ मेटैं छवि स्वर्गा
कहेउ सकोप गदाधर नारद * नृप-संकल्प करौ मुनि गारद[4]

प्रभु आयसु, सोई दिसि चले, वीणापाणि मुनीस ।
गति अबाध[5] रथ लखेउ नभ, बढ़त कोशलाधीस ॥२४॥

करि प्रणाम बरनेउ निज अर्था * कह मुनि, नृप किमि भयेउ समर्था
जोरि समाज सतन गोलोका * के सुकर्म अस पुण्यश्लोका ?
उपजी कुमति सुबुद्धि नसावा * सत पर विजय रजोगुन पावा
वापी कूप तडाग सुकरनी * निज मुख नृप नारद सन बरनी

राजा बले गोसाईं शुनह निवेदन * केमन करिला राज्य कह तपोधन
स्त्री-पुत्र लइया राजा करिल गमन * प्रसन्न मानस मुनि प्रफुल्ल वदन
अयोध्याय राजा आसि दिल दरशन * राजसूय यज्ञ राजा करिल तखन
राज्यभार पुत्रेरे करिया समर्पण * हरिश्चन्द्र परलोके करिला गमन
पुरीर सहित चले वैकुण्ठ भुवने * कुक्कुर विडाल आदि ये छिल ये खाने
देव गदाधर ताहे कुपिल अन्तरे * कहिलेन डाकिया नारद मुनिवरे
स्वर्ग नष्ट करे हरिश्चन्द्र नृपवर * ए कथा शुनिया मुनि चलिला सत्वर
वीणा बाजाइया याय महातपोधन * देखे रथे स्वर्गे राजा करिछे गमन
मुनि प्रणमिया राजा स्वर्ग याइ बले * मुनि कन याओ राजा कोन पुण्य फले
सुबुद्धि राजा के तबे कुबुद्धि घटिल * आपनार पुण्य सब कहिते लागिल

---

१ चाहना की । २ सदेह । ३ राजा के तप के बल पर अनधिकारी लोग भी । ४ मटियामेट । ५ विना रोक टोक ।

हाट बाट फल विटप लगाये * यज्ञ दान व्रत-सत्य निभाये
कौशिक राज सकल करि अर्पन * काया बेंचि चुकाये सुबरन
जस-जस सुयश भूप निज गावा * तस स्यन्दन[1] लखि नीचे आवा
रथ कर पतन, पतन नृप केरा * लखी चूक, हिय[2] छोभ घनेरा
होत ज्ञान, रथ पुनि टिकि गयऊ * सरग[3]-धरनि बिच स्थिर भयऊ
कटक सहित नृप भोजन-बसना * देवन मिलि कीन्ही अस रचना
जोरत अन्न मोद मन लेहीं * खरचत ताहि प्रान तजि देहीं
खेत धान्य भरि धरैं कोठारा * खाई भूप-कटक सोइ सारा
लोभी बसन संजूतहिं जेता * आवै सकल कटक के हेता
अन्न-वस्त्र जेते सुख साधन * यहि विधि सकल जुटाये देवन
हरिश्चन्द्र कै पुन्य कहानी * कृत्तिवास यहि भाँति बखानी

सगर-वंश का उपाख्यान

इत रुहिदास सम्हारेउ सासन * पितु सम करत प्रजा प्रतिपालन

पुण्यकथा येइ राजा कहिते लागिल * कहिते कहिते रथ नामिया पड़िल
नामिल राजार रथ दुःखित अन्तर * भाल मन्द नाहि बले हइल कातर
स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण * राजार कटक किबा करिबे भक्षण
ये शस्य सञ्चय करे ना करिया व्यय * हरिश्चन्द्र राजार कटक ताहा लय
क्षेत्र हइते से शस्य आनिया फेलाय * हरिश्चन्द्र राजार कटके ताहा खाय
भूतन वसन राखे करिया यतन * राजार कटके परे सेइ से वसन
ए नियम करिल सकल देवगण * अर्द्धपथे हरिश्चन्द्र रहिल तखन
स्वर्गे नाहि गेल राजा मर्त्त्य ना पाइल * हरिश्चन्द्र राजा मध्य पथे ते रहिल
कृत्तिवास पण्डित कवित्व विचक्षण * आदि काण्डे गान हरिश्चन्द्र विवरण

सगरवंशेर उपाख्यान

अतः पर हइलेन रुहिदास राजा * पुत्र तुल्य पालन करेन सब प्रजा

---

१ रथ । २ हृदय मे । ३ स्वर्ग ।

रोहित-नन्दन 'सगर' नृप चहुँ दिसि जासु बखान ।
तासु रुचिर गाथा सुने, खिनसैं पाप महान ॥२५॥

संततिहीन सगर अति शोका * वंशहीन-मुख लखहिं न लोका
मन अति छोभ, गमन किय कानन * बहु दिन कियो शंभु-आराधन
आसुतोष सब विधि परितोषू * कहु नरपति, तोहिं कौन कलेशू
नाथ ! तनय बिन निसिदिन त्रासा * 'सुत अनेक' लहि मिटै पिपासा
भोलानाथ बिहँसि वर दीना * सुत सठ सहस एक पितु कीना
लै वर, सगर गमन किय धामा * केशिनि-सुमति युगुल तेहिं भामा
गर्भवती भईं शिव-वर पाई * गत दस मास प्रसव नियराई
सुत असमञ्ज केशिनी-नन्दन * अतुलित छवि मनोज-मन-रञ्जन
सुमति उठी वेदना कराला * चर्म-उल्व[1] प्रसवित तेहि काला
सगर उल्व लखि, क्रोध प्रकासा * 'भङ्गड' कहि, किय शिव-उपहासा

ताहार नन्दन से सगर नाम धरे * सगर हइल राजा अयोध्या नगरे
मन दिया शुन सगरेर विवरण * ये कथा शुनिले हय पाप विमोचन
अपुत्रक राजा राज्य करे मनो दुःख * प्राते नाहि देखे लोक अपुत्रेर मुख
दुःखेते सगर राजा करिल गमन * बहु काल करिल शिवेर आराधन
सन्तुष्ट हइया शिव बलेन सगरे * वर माँगि लह राजा या चाह अन्तरे
सगर बलेन पुत्र बिना बड़ दुःख * वर देह देखि आमि बहु पुत्र सुख
हासिया दिलेन वर भोला महेश्वर * पुत्र षाटि हाजार हइबे तव घर
वर पेये आसिलेन सगर नृपति * शिव वरे दुइ नारी हैल गर्भवती
केशिनी-सुमती तार दुइ स्त्रीर नाम * दिने दिने गर्भ दोंहा बाड़े अनुपम
दश मास गर्भ हैल प्रसव समय * केशिनी प्रसव कैल सुन्दर तनय
तनये देखिल येन अभिनव राम * असमञ्ज बलिया थुइल तार नाम
सुमतीर गर्भ-व्यथा हइल यखन * चर्म्मेर अलाबू एक प्रसवे तखन
देखिया अलाबू राजा कुपित अन्तरे * भाङ्गड़ बलिया गालि दिलेन शिवेरे

---

१ चमडे की झिल्ली थैली के समान जिसमे गर्भ रहता है ।

तोरत उत्न बुद्धि चक्रानी * तिल मम साठि सहस लखि प्रानी
मोहक रूप, सगर सुख पावा * क्षीर कलस सठ सहस मँगावा
दुग्धपुष्ट ते नर-तन पावत * साठि सहस नृपसुत हुंकारत
सुत-समूह, दिय शाप बिसाई[1] * विनमहु अल्प अवस्था पाई
बढत बढत बीते षट मासा * डगरत सुत लखि सगर हुलासा
चुटकी जब-जब भूप बजावैं * चहुँ दिसि बसिलि अंक चढ़ि आवैं

द्वादश बयस किशोर गन, सबन बिवाहेउ भूप ।
'अंशुमान' असमञ्ज-सुत, प्रगटे धर्म स्वरूप ॥२६॥

एकाधिक-सठ-सहस कुमारा * नाति एक, नृप मोद अपारा
विगत जन्म जिन जोग नसावा * सोइ असमञ्ज जनम पुनि पावा
असत जगत, सत ब्रह्म सनातन * छूटै राजपाश किमि ? चिंतन
उबवौं[2] सबन विविध दै त्रासा * तौ पितु तजैं, मिटै जगपासा

कोपे लाउ भाङ्गिया करिल खानखान * षाटि हाजार पुत्र हैल तिल प्रमाण
उसिगिमि करे सब देखिते रूपस * षाटि हाजार आने राजा दुग्धेर कलस
खाइते खाइते दुग्ध नव रूप धरे * षाटि हाजार पुत्रेर सगर हाँकारे
षाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन बिसाई * अचिरे मरिबि तोरा नहि बिचिराई
दिने दिने बाड़े सेइ सगर नन्दन * छय मास वयस्क हइल पुत्र गण
जबे सगर राजा हाते मारे तुड़ि * षाटिहाजारकोलेआसे दियाहामागुड़ि
यखन हइल तारा द्वादश वछर * सकलेर परिणय दिलेन सगर
षाइट हाजारेर षाइट हाजार नारी * सुखे राज्य करे राजा अयोध्या नगरी
ज्येष्ठ पुत्र असमञ्ज धर्म्मपरायण * अंशुमान नामे तॉर हइल नन्दन
षाइट हाजार तनय एक मात्र नाति * देखिया सगर राजा आनन्दित अति
असमञ्ज सदाई भावेन मनेमन * संसार अनित्य सत्य देव नारायण
असार संसारे केन बद्ध हये मरि * निमते बसिया आमि भजिब श्रीहरि
भाविल संसारे आमि ना थाकिब आर * अनुचित कर्म्म सब करे दुराचार

---

१ इन्द्र—पृथ्वी के पचासवीं राजाजी ने सदैव सगदिन इन्द्र ने नगर की प्रताप-वृद्धि देख शाप दिया । २ उबाऊँ, पीड़ित करूँ ।

पुर बालक मारग जे खेलत * पकरत तिन्हैं बाँधि जल बोरत
भरैं नीर नारी सर तीरा * तोरत घट, पुरजन अति पीरा
नित प्रति घरन लगावै आगी * नृप सन कहेउ प्रजा दुख पागी
सुवन-चरित सुनि मन अति त्रासा * सुत असमंज दीन वनवासा
हर्षित गमन कियो सोइ कानन * जग बंधन, भल मिटे अपावन
अंशुमान सुत तासु[1] धर्मधर * इतर सुवन सह सुखित भूप वर
कछुक सगर-सुत सरग विराजहिं * कछुक कियो तैंनाथ पतालहिं
डोलति धरा धरनिधर काँपैं * सगर-सुवन यहि विधि चहुँ व्यापैं

राजा सगर का अश्वमेध-यज्ञ आरम्भ और वंश-नाश

अश्वमेध शुचि यज्ञ उछाहा[2] * उपजेउ एक दिवस नरनाहा
सो सुभ घड़ी कियो आरंभन * कहेउ बुलाय सकल नृपनन्दन
सजै अवधपुर यज्ञ तुरंगा * साठि सहस्र सहोदर संगा

यतेक बालक खेला खेलाय नगरे * हाते गले बान्धि सकलेरे फेले नीरे
यत नारीगण जल भरिबारे आसि * आछाड़िया भाङ्गे सब जलेर कलसी
अग्नि दिया पोड़ाय सकल प्रजाघर * कहिल सकल प्रजा राजार गोचर
पुत्रेर चरित्र शुनि लागिल तरास * असमञ्ज पुत्रे राजा दिल वनवास
वने गिया असमञ्ज हरषित मन * ससारेर वन्धन छेदिल नारायण
असमञ्जे पाठाइया वनेर भितरे * अपर सन्तान लये सुखे राज्य करे
कृत्तिवास पण्डितेर मुखे सरस्वती * अमृत समान कैल आदिकाण्ड पूथि

सगरेर अश्वमेध यज्ञारम्भ ओ वंशनाशेर विवरण

एक दिन सगर भाविया मने मने * अश्वमेध यज्ञ करे अयोध्या भवने
कत पुत्रे राखे राजा स्वर्गेर उपर * कतेक राखिल लये पाताल भितर
पृथिवीर राजा यत मम नामे काँपे * मम वंशजात यत तिन लोके व्यापे
एतेक भाविया यज्ञ कैल आरम्भन * तुरङ्ग राखिते दिल यतेक नन्दन
वापेर आगेते तारा करिल उत्तर * घोड़ा सह याब षाटि हाजार सोदर

---

१ केशिनी से उत्पन्न कुमार असमञ्ज के पुत्र अंशुमान । २ उत्साह, उमंग ।

लौटै तुरग जीति दिग्देसा * पूरन तबहिं याग अवधेसा

मम विवाद सुरपति सदा, परैं कतक भय व्याध।
मेटि तिनहिं रविकुल सुभट, हय[1] आनहु निर्बाध[2] ॥२७॥

सागर कटक तरंग अनन्ता * उमड़त लखि सुरपति मन चिन्ता
जुगुति विरञ्चि! रचौ केहि भाँती * सगर-तुरग[3] हरि जुड़वौं छाती
मध्य दिवस तम निसि सम छावा * तकि अवमर हय इन्द्र चुरावा
बाँधेउ ताहि पताल शचीसा[4] * योगलीन जहँ कपिल मुनीसा
मिटेउ अंध पुनि भानु अलोका * कटक न सुतगन बाजि[5] विलोका
हेरत फिरे सकल भूमण्डल * मिलेउ न हय पुनि चले रसातल
लै कुदारि सठसहस कुमारा * कोस-कोस महि करत प्रहारा
हुमकि हनैं भल चोट कुदारी[6] * लागै कूर्म-पृष्ठ[7] महि फारी
चारि दण्ड लखि चारिउ सागर * पहुँचे पुनि पताल बल-आगर

पुत्र वाक्य शुनिया सगर बले ताय * आनिते पारिले घोड़ा यज्ञ हवे साय
इन्द्रेर सहित मोर हइल विवाद * एइ यज्ञे शत शत हइवे प्रमाद
यज्ञाश्व राखिते याय सगर-नन्दन * शुनिया हइल इन्द्र बड भीत मन
वासव बलेन ब्रह्मा कोन् युक्ति करि * विरिञ्चि बलेन तुमि घोड़ा कर चुरि
दिने दुइ प्रहरे हइल निशाप्राय * घोड़ा चुरि करि इन्द्र पाताले पलाय
तपस्या करेन मुनि कपिल ये खाने * घोड़ा लये राखिल ताहार विद्यमाने
योगेते आछेन मुनि केह नाहि काछे * इन्द्र घोड़ा बान्धिया गेलेन तार पाछे
अन्धकार वृष्टि सब घुचिल यखन * घोड़ा हाराइल बले सगर-नन्दन
चाहिया ना पाइलेक पृथिवी मण्डले * पृथिवी खुँजिया तारा चलिल पाताले
भाइ षाटि हाजार कोदालि हाते धरे * एक क्रोश एकेक कोदालि पारसरे
क्रोध करि येइ धरे कोदालिर मुष्टे * एक चोटे भेजाय पाताले कूर्म्मपृष्ठे
चारि दण्डे खुँड़िलेक चारि ये सागर * सागर खुँड़िया गेल पाताल भितर

---

१ घोड़ा। २ बे रोक टोक। ३ सगर का यज्ञ के लिये छोड़ा अश्व। ४ शचिपति इन्द्र। ५ घोड़ा। ६ कुदाल, खोदने का एक औजार। ७ भूमि को धारण करनेवाले कच्छप की पीठ पर।

दिसि पावक[1] बाँधा बट-छाहीं * उपवन-कपिल तुरग लखि ताहीं
करत कुलाहल कहि कटु वचना * घोर-चोर[2] किमि ध्यान निमग्ना
हनेउ कुदार-बेंट मुनि अंगा * लागत भयो ध्यान मुनि भंगा
अनल-नयन ऋषि झरैं अँगारा * पल बिच साठि सहस भे छारा

कपिल ऋषि द्वारा सगर-वंश के उद्धार का उपाय कथन

फिरे न अश्व सहित नृपनन्दन * बीतेउ बरस, यज्ञ नहिं पूरन
अंशुमान असमञ्ज-कुमारा * सगर-सुतन खोजन पग धारा
नृप आयसु सो रथ आरूढा * अवनि सकल मग-मारग ढूँढा
खनित[3] लखेउ चहुँ धरातल, प्रविशे भेदि पताल ।
प्राची दिसि कर महोदधि[4], दर्शन कियो विशाल ॥२८॥
नीलम बरन नील गज सुन्दर * दसनन धरा धरे तहँ भूधर
वन्दन करि पूछेउ युवराजू * कियेउ सँकेत पन्थ गजराजू
अश्व-चोर[6] सों रहेउ सचेतू * सोइ पथ चले भानु-कुल-केतू

पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्यखाने * घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
डाकाडाकि करिया कहिल सब ताँई * घोड़ा चोरे देखिते पाइनु एक भाई
मुनिर गायेते मारे कांदालिर पाशि * ध्यान भङ्ग हइया चाहेन महाऋषि
क्रोधेते नयने अग्नि झरे राशिराशि * पुड़े षाटि हाजार हैल भस्म राशि
एककाले क्षय हैल सगरनन्दन * आदि काण्डे गान कृत्तिवास विचक्षण

कपिल ऋषि कर्त्तृक सगर-वंश उद्धारेर उपाय कथन

एक वर्षे न हैल यज्ञ अवशेष * तुरङ्ग लइया पुत्र ना आइल देश
श्री असमञ्जेर पुत्र नाम अंशुमान * पुत्रेर करिते तत्व ताहारे पाठान
राज-आज्ञा पाइया चड़िया निज रथ * एके एके पृथिवीते खुँजे नाना पथे
ये पथे प्रवेश करे देखे खानखान * सेइ पथ दिया तबे पाताले साँधन
आगेते देखिल पूर्व्व दिकेर सागर * देखे नील वर्ण हस्ती परम सुन्दर
धरेछे पृथिवी येन दशन उपरे * प्रणाम करिया तारे बलिछे सत्वरे
हस्ती बले एइ पथे याह अंशुमान * छोड़ाचोर निकटे हइबे सावधान

---

१ आग्नेय कोण । २ घोडा हरण करनेवाला । ३ खुदी हुई । ४ पूर्व । ५ महासागर ।
६ यह व्यंग्य कपिल मुनि को ओर सकेत है ।

सागर पुनि उत्तर दिशि सोहा * दिग्गज श्वेत निरखि मन मोहा
धवल रूप हे अवनि-अधारा[1] * लखे जात कहुँ सगरकुमारा
रविकुल-तुरग मिलै याही पथ * बढ़ेउ कुअँर उपजेउ पुरुषारथ
पच्छिम दिसा पयोधि तरंगा * दन्ती[2] जहँ सेन्दुर सम अंगा
रक्त बरन अरु दन्त कराला * टिकी जहाँ मेदिनी[3] विशाला
लचत माथ जिन, डोलत धरनी * अनुपम कथा दिग्गजन बरनी
पूरुब-दखिन कोन हय-बंधन * किये समीप कपिल मुनि दर्शन
हे मुनीस ! पूछा करि वन्दन * देखे कतौ सगर के नन्दन
कपिल-अनल सुनि बंस-विनासा * अंशुमान मृदु बचन प्रकासा
सुत असमञ्ज, सगर-अवतंसा * कियो छार प्रभु, ते मम बंसा
तिन सद्गति कछु कहौ उपाऊ * महिमा अमित छमौ मुनिराऊ
ब्रह्म कोप थिर नहिं अति काला * हरपि कहेउ मुनि सुनो भुवाला

पूर्व्व हते चलिलेन उत्तर सागर * श्वेत वर्ण एक हस्ती देखिलो सुन्दर
अंशुमान ताँहारे लागिल शुधाइते * ए पथे सगर-पुत्रे देखेछ याइते
शुनिया ताहार कथा लागिल कहिते * पाइबेन घोड़ा याह एइ एइ पथे
तथा यदि ना पाइले घोड़ार दर्शन * पश्चिम सागरे गिया दिल दरशन
रक्तवर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर * मेदिनी से धरियाछे दशन उपर
से सब हस्तीर शुन अपूर्व्व कथन * मस्तक नाड़िले हय मेदिनी कम्पन
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्य खाने * घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
दण्डवत् हइया ताँरे लागिल कहिते * ए पथे सगरपुत्रे देखेछ याइते
महाऋषि कपिल ये बलिल तखन * मम कोपानले भस्म हैल सर्व्वजन
शुनियाइ अंशुमान युड़िल स्तवन * सेइ बंशे तपोधन आमार जनम
असमञ्ज पुत्र आमि सगरेर नाति * तोमार महिमा बले काहार शकति
अंशुमान बलिलेन शुन महामति * केमने हइबे मोर बंशेर सद्गति
ब्राह्मणेर कोपे नाहि थाके एक तिल * प्रसन्न हइया तारे कहेन कपिल

---

१ दिग्गज । २ दिग्गज, हाथी । ३ पृथ्वी ।

जो शुचि गंग वहै भुवि लोका * लहैं पितर-तव सद्गति-लोका[1]
कहँ उद्गम, कहँ वसत सो, मिलै दरस किमि गंग ?
विनय मानि वरनेउ कपिल, सुरसरि-जनम प्रसंग ॥२६॥

गंगा का जन्म और मर्त्यलोक में सगर का गंगा के लाने का उपाय-कथन
तथा भगीरथ का जन्म

परमधाम त्रिभुवनपति रूपा * सुर मुनि सहित विराज अनूपा
अमियमूरि श्री आनँदकन्दा * निरखत शिव-हिय उदित अनन्दा
ताण्डव नर्त ताल विधि नाना * आनन पाँच, सकल हरिगाना
डमरू डिमि-डिमि जीव जगावै * सिंगी पुनि हरि-नेह लगावै
अनुपम गान भाव-तल्लीना * मुदित सकल मुनि-देवन कीना
लक्ष्मी सहित द्रवित[2] नारायण * सरसित द्रव लखि भक्तिपरायण
सरसि प्रेम-द्रव सोइ प्रभु अंगा * प्रगटीं पतितपावनी गंगा
नीर कमण्डल भरि सोइ पावन * आदर सहित धरेउ चतुरानन

मर्त्त्यलोके यदि वहे प्रवाह गङ्गार * तवे से तोमार वंश हइवे उद्धार
विनयेते अंशुमान कहे तॉर प्रति * कोथाय जन्मिल गङ्गा कोथाय वसति
कोथा गेले पाइव से गङ्गा दरशन * कह मुनि शुनि सेइ गङ्गार जनम
गङ्गार जन्मेर कथा करेन प्रकाश * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

गङ्गार जन्म विवरण ओ मर्त्त्यलोके सगरेर गङ्गा आनयनेर उपाय-कथन
एव भगीरथेर जन्म

एक दिन गोलोके वसिया नारायण * चतुर्द्दिके आर यत देव-ऋषिगण
सभा माझे त्रिलोचन गान पञ्चमुखे * देवऋषि स्वर्गवासी पुलकित देखे
शिङ्गा वले श्रीराम डम्बुरे वले हरि * पञ्चमुखे स्तुतिगान देव त्रिपुरारि
लक्ष्मी सह वसिया आछेन महाशय * शुनिया से गान हइलेन द्रवमय
द्रवमय हइलेन निजे नारायण * पतितपावनी गङ्गा ताहाते जनम
सेइ जल कमण्डुले भरिया आदरे * राखिलेन तुलिया विधाता निजघरे

---

१ मोक्षप्राप्त लोगो का लोक। २ प्रेम मे पिघलना।

सलिल पुनीत धरनि सोइ आवै ※ सगरवंश सद्‌गति तब पावै
सुत तव-पितर बनावन करनी ※ मम-वर[1], सुरसरि प्रगटैं धरनी
अंशुमान लै तुरग सिधाये ※ दुखित अवध भूपति ढिग आये
साठि सहस्र सुनि सहज विनासा ※ धरत न धीर सगर अति त्रासा
जन्मत विपुल वंस, भय पाई ※ दीन विनास-शाप सुरराई
सोइ चरितार्थ, यज्ञ भइ भंगा ※ अब किमि अवनि अवतरन गंगा
सुरसरि बिन न तरैं सुत-लोका ※ करैं विलाप भूप अति शोका
अंशुमान करि राज समर्पन ※ चले सगर मन्दाकिनि आनन

सकल जतन-जप-तप विफल, दरस न सुरसरि दीन ।
शोकाकुल नित गलत तन, स्वर्ग गमन नृप कीन ॥३०॥

अंशुमान इत अवध नरेसू ※ सुत 'दिलीप' करि अर्पन देसू
सद्‌गति पितर लहैं सोइ कारन ※ सुरसरि हेत कीन तप धारन
सहस वर्ष दम, बिन आहारा ※ सफल न तप, नृप स्वर्ग सिधारा

सेइ गङ्गा यदि पार आनिते भूपति ※ तबे से सगर-वंश पाइवे सद्‌गति
अंशुमान तोमारे दिलाम एइ वर ※ तव वंश हेतु गङ्गा हवेन गोचर
घोड़ा लैया अंशुमान अयोध्यातेयाय ※ विवरण बले आसि सगरेर पाय
कपिलेर स्थाने पाइलाम अश्वधने ※ तॉर कोपाग्निते भस्म हैल सर्व्वजने
शुनिया सगर राजा शोकाकुल मन ※ पुत्रशोके निरवधि करेन क्रन्दन
षाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन विशाइ ※ अल्पकाले मरिल ना हइल चिराइ
अशुचि हइल यज्ञ ना हइल साय ※ कि मते पावेन मुक्ति भावेन उपाय
स्वर्गेते आछेन गङ्गा करि कि प्रकार ※ ताहा विना किसे हवे वंशेर उद्धार
अंशुमाने राज्य राजा करि समर्पण ※ गङ्गारे आनिते राजा करिल गमन
गङ्गा ना पाइया राजा नित्य बाड़े शोक ※ मरिया सगर राजा गेल ब्रह्मलोक
अंशुमान राज्य करे अयोध्यानगरे ※ तॉर पुत्र हइल दिलीप नाम धरे
पुत्रे राज्य दिया गेल गङ्गा आनिवारे ※ तप करे दश हाजार वर्ष अनाहारे

---

१ मेरे वरदान से ।

युगुल रानि तजि, सतति हीना * नृप दिलीप पुंनि पितुपथ[१] लीना
जलाहार कहुँ निर्जल घोरा * तप विरञ्चि कर कीन कठोरा
अयुत वर्ष सुरसरि नहिं आना * ब्रह्मलोक नृप कीन पयाना
निरखि भानुकुल वंस-विहीना * इन्द्रादिक मिलि चिन्तन कीना
सुनी अवध प्रभु कर अवतारा * सो किमि इतै न वंस-अधारा
देवन सोचि जतन मन लावा * गौरीपति कहँ अवध पठावा
विधवा युगुल वसति जहँ रानी * वृषभ-अरूढ[२] शंभु वरदानी
'पुत्रवती भव कोउ एक नारी' * अलख जगाय कहत त्रिपुरारी
जीवन विधुर चकित दोउ भामा * किमि अमीप, सुत होय ललामा ?
रति-रत होहिं परस्पर रानी * जन्मै सुत न असत मम वानी
गमन शंभु इत नारि-दिलीपा * आयसु धरि नित रहहिं समीपा
युगुल रहैं दम्पति सम तरुणी * लहेउ काल ऋतु तिन एक रमणी

गङ्गा ना पाइया गेल स्वर्गेर उपर * ताहारे देखिया तुष्ट देव पुरन्दर
अपुत्रक राजा दुःख भावेन अन्तरे * दुइ नारि थुये गेल अयोध्यानगरे
चलिल दिलीप राजा गङ्गा आनिबारे * कठोर तपस्या करे थाकि अनाहारे
कभु जलाहार करे कभु अनाहार * अयुत वत्सर सेवा करिल ब्रह्मार
तथापि ना पाय गङ्गा ना हय अशोक * मरिल दिलीप राजा गेल ब्रह्मलोक
अराजक हैल राज्य अयोध्यानगर * स्वर्गेते चिन्तित ब्रह्मा आर पुरन्दर
शुनियाछि जन्मिवेन विष्णु सूर्य्यकुले * केमने वाड़िवे वंश निम्मूर्ल हइले
भाविया सकल देव युक्ति करि मने * अयोध्याय पाठाइल प्रभु त्रिलोचने
दिलीपेर दुइ जाया आछिलेन वासे * वृष आरोहणे शिव गेलेन सकाशे
कहिलेन दोंहाकार प्रति त्रिपुरारि * मम वरे पुत्रवती हवे एक नारी
दुइ नारी कहे शुनि शिवेर वचन * आमरा विधवा किसे हइवे नन्दन
शङ्कर वलेन दुइजने कर रति * मम वरे एकेर हइवे सुसन्तति
एइ वर दिया गेल देव त्रिपुरारि * स्नान करि गेल दुइ दिलीपेर नारी
सम्प्रीतिते आछिलेन से दुइ युवती * कत दिने एकजन हैल ऋतुमती

---

२ पिता-पितामह के अनुसार ही गगा हेत तप को गये । १ नन्दी पर सवार ।

शंभु प्रसाद गर्भ धरि रानी ॥ गत दस मास प्रसव नियरानी

मांसपिण्ड कौतुक जनम, अस्थिहीन असमर्थ ।

लोक हँसी, रानी दुखित, शिव दिय संतति व्यर्थ[1] ॥२१॥

चलीं अंक-शिशु सरयू तीरा ॥ तजहिं पंगु बिन-अस्थि सरीरा

सोइ छन मुनि वशिष्ठ धरि ध्याना ॥ कौतुक सकल तपोधन जाना

आयसु पथ सोवाय सुत देहू ॥ पथिक-दया तजि गमनहु गेहू

अष्टावक्र, हेतु स्नाना ॥ व्यथित-अंग तेहि पंथ पयाना

पंगु अचञ्चल सुवन-सरीरा ॥ लखि अस मन सोचत मुनि धीरा

मम तन विषम, नकल यदि करई ॥ विनसै, ब्रह्मकोप सुत परई

जो वस्तुतः लुञ्ज, मम दाया ॥ मदनमुग्ध छवि पावै काया[2]

दोंहाते जानिल यदि दोंहार सन्दर्भ ॥ दोंहे केलि करिते एकेर हैल गर्भ

दश मास हैल गर्भ प्रसव समय ॥ मांसपिण्ड मात्र पुत्र हइल उदय

पुत्र कोले करिया काँदेन दुइजन ॥ हेन पुत्र वर केन दिल त्रिलोचन

अस्थि नाइ मांसपिण्ड चलिते ना पारे ॥ देखिया हासिवे लोक सकल संसारे

कोले करि निल ताहा चूपड़ि भितरे ॥ सरयूर तीरे गेल फेलिवार तरे

हेन काले देखिलेन वशिष्ठ तपोधन ॥ ध्यानेते जानिल तार सकल लक्षन

मुनि वले थुये जाओ पथे शोयाइया ॥ करुणा करिवे केह आतुर देखिया

पुत्रे पथे शोयाइया दोंहे गेल वासे ॥ स्नान करिवारे अष्टावक्र मुनि आसे

आट ठाँइ वाका मुनि गमने कातर ॥ वालक तेमनि करे पथेर उपर

एक दृष्टे अष्टावक्र तार पाने चाय ॥ मनेभावे आमारे ए देखिया भेङाय

आमारे देखिया यदि करे उपहास ॥ मम ब्रह्मशापे हवे शरीर विनाश

यदि तव देह हय स्वभावे एमन ॥ मम वरे हओ तुमि मदनमोहन

---

१ शम्भुप्रसाद से रानी के गर्भ से अस्थिहीन लुण्ड-मुण्ड मांसपिण्ड का प्रसव देख रानी हर्ष लुप्त हो गया और निराशा तथा लोक परिहास की आशंका से दुःखित हो उठी।

२ मार्ग में छोड़ दिये गये मांसपिण्ड को दूर से जाते हुए अष्टावक्र मुनि ने देखकर कल्पना की कि यदि यह कोई प्राणी मेरे विकृत शरीर की नकल या हँसी उड़ा रहा है तो नष्ट हो जाय और यदि सचमुच असमर्थ है तो कामदेव के समान छविमयी काया को प्राप्त हो।

अष्टावक्र विष्णु सम समरथ * जिन वर-शाप न होय अकारथ
चमत्कार-मुनि, रविकुलनन्दन * चपल सतेज लगेउ मग धावन
सुनत टेरि रानी दोउ आईं * तनय-सरूप निरखि हरषाईं
आशिष देयं देव, मुनि, समरथ * सुवन-दिलीप नाम भागीरथ

भगीरथ द्वारा मर्त्यलोक में गंगा का लाना

पचयें वर्ष भगीरथ नन्दन * गुरु वशिष्ठ गृह विद्यारंभन
कुअँर संग बालकन विवादा * 'जारज'[1] कहि इक शिशु प्रतिवादा
दुखित भगीरथ, उतर न आवा * मन गलानि लोचन जल छावा
तजि चटसार[2] कोपगृह शयना * मौन कुमार न निकसत बयना
प्रहर द्वितीय दिवस चढ़ि आवा * आकुल जननि न सुत गृह आवा

सिंह वन्य पशु घात कहुँ, विलपैं मुनि सन मात ।
मुनि प्रबोध, किय गमन दोउ, लखेउ कोपगृह तात ॥३२॥

अष्टावक्र मुनि सेइ विष्णुर समान * यारे वर शाप देन कभु नहे आन
अष्टावक्र मुनिर महिमा चमत्कार * दौड़ाइया उठिल से राजार कुमार
ध्याने जानिलेन अष्टावक्र तपोधन * धन्य महापुरुष ए दिलीप नन्दन
उभय राणी के डाकि आने मुनिवर * पुत्र लये हरषित दोंहे गेल घर
आसिया सकल मुनि करिल कल्याण * भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम
महाकवि कृत्तिवास पण्डित परम * आदिकाण्ड गान भगीरथेर जनम

भगीरथ कर्त्तृक मर्त्ये गंगा-आनयन

पाँच वत्सरेर हैल हाते खड़ि दिल * वशिष्ठेर बाड़ि पड़िबारे पाठाइल
बालके-बालके द्वन्द्व यखन बाड़िल * जारज बलिया गालि एक शिशु दिल
मने भगीरथ दुःखी ना दिल उत्तर * विषादे आइल शिशु आपनार घर
सर्व्वदा अस्थिर हय सजल नयन * शयन मन्दिरे शिशु करिल शयन
आकाशे हइल बेला द्वितीय प्रहर * माता बले पुत्र केन ना आइल घर
शावक हाराये येन फुकारे बाघिनी * मुनि काछे कान्दि कय दिलीप कामिनी
वशिष्ठ बलेन माता ना कर क्रन्दन * रोपेर मन्दिरे पुत्रे पावे दरशन

---

१ उपपति से उत्पन्न बालक । २ पाठशाला ।

चूमि माथ अञ्चल मुख पोछत * भरि सुअंक ममता सों बोलत
कहु केहि धनपति करौं भिखारी * बन्दिमुक्ति, कै रोग दुखारी
तौ शत वैद्य करैं उपचारा * गरभारि कह मृदु वचन कुमारा
कछु अभिलाप न रोग सरीरा * लाञ्छन लगत, मातु मोहिं पीरा
आश्रम कछु बालकन विवादा * कहि 'जारज' मोहिं शिशु प्रतिवादा
केहि कुल जनम, नाम पितु कहहू * बरनि, जननि मम संसय हरहू
सुनि सुत-बिथा रानि अति कातर * कथा सत्य सुनु वंस उजागर
साठि सहस सुत सगर अधीसा * नसे कोप परि कपिल मुनीसा
तजि सुरपुर, छिति गंग पधारहिं * तौ तब पितर सगरसुत तारहिं
प्रवर[1] तीनि तब किय आराधन * सके न करि सुरसरि आवाहन
तव पितु गमन स्वर्ग सुतहीना * नृप-बनितन महेश वर दीना
युगुल रानि कृत दंपति जीवन * यहि विधि जनम भगीरथ नन्दन
तैं सुत भानुवंश उजियारा * सुनि अति पुलक दिलीप-कुमारा

आसि राणी भगीरथे कोले करि निल * निजेर आँचले तार मुख मुछाइल
बलिते लागिल भगीरथेर जननी * कोन दुःखे दुःखी तुमि कह यादुमणि
कारे बाड़ाइब कारे करिब काङ्गाल * बन्दी मुक्ति करि यदि थाके बन्दीशाल
कोन रोगेरोगी तुमि अमित नाजानि * एइक्षणे करि सुस्थ शत वैद्य आनि
भगीरथ बले माता कर अवधान * रोग दुःख नहे आजि पाइ अपमान
विरोध बाधिल एक बालकेर सने * जारज बलिया गालि दिल से ब्राह्मणे
कोन वंशजात आमि काहार नन्दन * इहार वृत्तान्त कथा कह विवरण
पुत्रेर हइले दुःख माये लागे व्यथा * पुत्रे सम्बोधिया मात कहे सत्य कथा
सगरेर छिल पाटि हाजार तनय * कपिल मुनिर शापे हैल भसममय
गङ्गा स्वर्ग हैते यदि आइलेनक्षिति * तबे से सगरवंश पाइबे निष्कृति
क्रमे तिन पुरुष करिल आराधना * तबु गङ्गा आनिते नारिल कोन जना
दिलीप तोमार पिता गेल स्वर्गपुरे * पाइलाम तोमा पुत्र महेशेर वरे
भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम * सूर्य्यवंशे जन्म तब अयोध्याय धाम

१ पूर्वज।

सुर-सलिला किमि सहज प्रयत्ना * सुलभ न विना भगीरथ-यत्ना[1]
जप-तप-जोग पितरगन हेता * लौटौं महि, जाह्नवी समेता
सुनि हठ-तनय विकल दोउ माता * हटकहिं, यहि छन जाहु न ताता

सुनेउ न, मातन वंदि सुत, गमनेउ मुदित उमंग।
गुरु वशिष्ठ लै दीच्छा, फरके दच्छिन अंग ॥३३॥

अनाहार पुनि हेतु-पुरंदर[2] * सहस सात जपि वर्ष निरंतर
सदा मंत्रवस सुरगन रीती * प्रगटि इन्द्र कह वचन सप्रीती
को पितु धन्य, कौन कुलकेतू ? * मांगु मांगु वाञ्छित हिय हेतू
तनय-दिलीप भानु-कुल-नन्दन * वन्दहुँ सुरगनपति जगवन्दन
पितर सहस सठ सगर-कुमारा * कपिल-शाप विनसे जरि छारा
मंदाकिनि जो प्रभु सों पावौं * तिन सद्गति सुरपुरहिं पठावौं

शुनिया मायेर कथा भगीरथ हासे * हासिया कहिल कथा जननीर पाशे
सूर्य्यवंशे भूपतिरा निर्ब्बोधेर प्राय * अल्प श्रमे गङ्गा देवी केकोथाय पाय
यदि आमि धरि भगीरथ अभिधान * गङ्गा आनि करिव सगर वंश त्राण
काँदिया कहिछे भगीरथेर जननी * तपस्याय एक्षणे ना याह वंशमणि
मायेर वचने भगीरथ ना रहिल * वशिष्ठेर स्थाने मन्त्रदीक्षा से करिल
यात्राकाले करे राजा मायेर स्मरण * दक्षिण लोचन तार करिछे स्पन्दन
मायेर चरणे आसि करिल प्रणति * प्रथमे सेविते गेल देव सुरपति
इन्द्रमन्त्र अनाहारे जपे निरन्तर * इन्द्रसेवा करे सात हाजार वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर * वासव एलेन तथा दिते तारे वर
कोन वंशे जन्म तव काहार तनय * वर मागि लह या अभीष्ट तव हय
करिया प्रणाम इन्द्रे वलिल वचन * सूर्य्यवंशे जात आमि दिलीप-नन्दन
सगरेर छिल षाटि सहस्र तनय * कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
आछेन स्वर्गेते गङ्गा देव सुरपति * ताहे मम वंशेर ये हइवे सद्गति
इन्द्र बले वलि शुन दिलीपकुमार * आमा हैते दरशन ना पावे गङ्गार

---

१ अकथ और अथक परिश्रम। २ इन्द्र के लिये।

सुनहु सुवन, कह सहसविलोचन ※ गंग हेतु पूजहु त्रैलोचन
जो कछु विघन परैं तव काजा ※ मिटिहैं मम सहाय युवराजा !
इन्द्र प्रनम्य, चलेउ कैलासा ※ तप अनन्य किय शंभु-निवासा
आक[1] धतूर बिल्वदल[2] चन्दन ※ अनाहार कहुँ अजल शिवार्चन
अडिग सहस दस वर्ष कठोरा ※ कह पशुपति ते सफल किशोरा
भाव अनन्य गदाधर रूपा ※ परम तत्व सेवहु सुतभूपा
मम वर सफल साधना तोरी ※ सुरसरि मिलै अमिय मय भूरी
चलेउ बन्दि शिव, जहँ श्रीकन्ता ※ जपत निरंतर तहँ भगवन्ता
शिशिर[3] शरीर सलिल[4] बिच थापै ※ ग्रीषम रुद्र पञ्चगिन तापै
यहि विधि विगत वर्ष चालीसा ※ भक्त-विवस प्रगटे जगदीसा

निष्ठा, भक्ति, अनन्य तप, जतन-भगीरथ, तात ।
सफल, माँगु वरु वाञ्छित, बोले करुनानाथ ॥३४॥

सहस साठि जे सगर-कुमारा ※ ते मम पितर कपिल किय छारा

आनिबेक गङ्गा यदि आमि देइ नर ※ एक भावे पूज गिया देव महेश्वर
गङ्गारे आनिते पथे विघ्न यदि घटे ※ आमि ता करिव मुक्त कहि अकपटे
इन्द्रेर चरणे राजा करिल प्रणति ※ कैलासे सेविते गेल देव पशुपति
ओकड़ा धुतूरा ये आकन्द विल्वपात ※ इहातेइ तुष्ट हन त्रिदेवेर नाथ
कभु अनाहारे कभु निराहार करे ※ दृढ़ तप करे दश हाजार वत्सरे
महेश बलेन शुन राजार नन्दन ※ अनाहारे ए तपस्या कर कि कारण
गङ्गारे आनिवे तुमि आमि दिव वर ※ एक भावे सेव गिया देव गदाधर
शिवेर चरणे पुनः करिया प्रणति ※ गोलोके चलिया गेल यथा लक्ष्मीपति
भगीरथ प्रतिदिन कोटी मन्त्र जपे ※ तप करे ग्रीष्मकाले रौद्रेर उत्तापे
शीत चारि मास थाके जलेर भितर ※ ए मते करिल तप चल्लिश वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर ※ आसिया कहेन हरि तारे निते वर
तपस्या तोमार मोरे लागे चमत्कार ※ माग इष्ट वर दिव राजार कुमार
भगीरथ बले प्रभु करि निवेदन ※ सगरेर छिल षाटि हाजार नन्दन

---

१ मदार । २ बेलपत्र । ३ शीत ऋतु में । ४ जल ।

हे प्रभु ! मुक्तिदान तिन दीजै * सुलभ गगनवाहिनि[1] मोहिं कीजै
प्रभु हँसि कहेउ जो गंग पुनीता * ज्ञान न मोहिं, सो अगम अतीता
होहुँ विफल जो कृपानिधाना * पदपंकज तव त्यागहुँ प्राना
कह हरि, सुरसरि हित तजि सोकू * चलौ संग मम सुत विधिलोकू[2]
सदन-विरञ्चि वारि रह जेता * हरन कियेउ सो कृपानिकेता
प्रभुहिं दरसि विधि सविनय आसन * दै पुनि चहेउ नीर पद परसन
लखि निकेत-वासन[3] जलहीना * सञ्चित गंग-कमण्डल लीना
हरिपद परसेउ करि आवाहन * कह 'अंह्रिजा' गंग सोइ कारन
कहेउ विष्णु गमनौ लै संगा * सुत सोइ पतितपावनी गंगा
गो-द्विज-घात अधम जे पापा * कुस परसत विनसत संतापा
अकथ पुन्य सुरसरि स्नाना * पितर मुक्ति-हित करौ पयाना
गमनौ छिति, हे धवल-तरंगा ! * तारौ वेगि सगर नृप-अंगा[4]

कपिलेर शापेते हइल भस्ममय * पाइले गङ्गारे तारा मुक्त तवे हय
कहिलेन सहास्य वदने चक्रपाणि * गङ्गार महिमा वापू आमि किवा जानि
भगीरथ वले गङ्गा नाहि दिवे दान * तव पादपद्मेते त्यजिव आमि प्राण
शुनिया ताहारे हरि करेन आश्वास * ब्रह्मलोके आछे गङ्गा चल तॉर पाश
छिल ब्रह्मलोकेते सामान्य यत जल * माया करि हरिलेक हरि से सकल
ब्रह्मार सदने प्रभु दिल दरशन * सम्भ्रमे उठिया ब्रह्मा दिलेन आसन
पाद्य दिते यान ब्रह्मा घरे नाहि जल * जलहीन पात्र मात्र आछे अविकल
कमण्डलु मध्ये गङ्गा पडे तॉर मने * आस्तेआस्ते गिया ब्रह्मा आनेन यतने
गङ्गाजले विष्णुपद करेन स्खालन * अंह्रिजा वलिया नाम एइ से कारण
भगीरथ राजारे वलेन चिन्तामणि * लये जाह एइ गङ्गा पतितपावनी
ब्रह्महत्या गोहत्या प्रभृति पाप करे * कुशाग्रे यदि परशे सव पाप तरे
कतेक स्नानेते पुण्य वलिते ना पारि * वंशेर उद्धार कर लैया गङ्गावारि
श्रीहरि वलेन गङ्गा करह प्रस्थान * अविलम्वे मुक्त कर सगर-सन्तान

---

१ गगा । २ ब्रह्मलोक । ३ घर के बरतन । ४ वश, पुत्र ।

मंदाकिनि आयसु धरि सीसा * कहु मम विनय सुनौ जगदीसा
पापी अधम वसत वहु धरनी * अपैं मोहिं मलिन निज करनी
लहै मुक्ति सुरपुर मम संगति * कहौ उपाय नाथ ! मम सद्गति

सुकृत-रूप वैष्णव अखिल, जिन विच रमौं अनन्य ।
दरस-परस-स्नान तिन, करै देवि तोहिँ धन्य ॥३५॥

गंग बोध दै केकी-पंखा[1] * दीन भगीरथ अनुपम शंखा
जेहि पथ शंखनाद सुत करई * सोइ मारग सलिला[2] अनुसरई
कह विरञ्चि हे पुण्य कुमारा * तव प्रयास त्रैलोक्य उवारा
मम रथ वैठि समर्थ भगीरथ * मारग चलहु वनावत वीरथ
शंखनाद, स्यन्दन जस वढ़ई * तव अनुगमन गंग तस करई
मंदाकिनि सुरलोक प्रवाहू * अमरपुरी जन अमित उछाहू
करि स्नान भानु-कुल-अंसहिं[3] * अछत[4] दूर्वा-दल लै पूजहिँ
स्वर्गलोक सव सुरसरि नामा * मंदाकिनि कहि करहिं प्रनामा

कहिलेन एत यदि प्रभु जगन्नाथ * काँदिया वलेन गङ्गा प्रभुर साक्षात्
पृथिवीते कत शत आछे पापीगण * आसिया आमाते पाप करिवे अर्पण
ताहारा हइया मुक्त याइवे स्वर्गेते * मुक्त हव आमि प्रभु काहार स्पर्शेते
श्रीहरि वलेन यत वैष्णव अखिले * ताँहारा करिवे स्नान तोमार सलिले
करि आमि वैष्णवेर संगति वासाना * वैष्णवेर संगे तुमि हवे पूतमना
कहिया गंगाके एइ वाक्य जगतपति * शङ्ख दिया वलिलेन भगीरथ प्रति
याह तुमि आगे आगे शङ्ख वाजाइया * यावेन पश्चाते गंगा तोमारे देखिया
विरिञ्चि वलेन राजा तुमि पुण्यवान * तोमा हैते तिनलोक पावे परित्राण
आमार ए रथ तुमि लह भगीरथ * चड़िया आगेते तुमि याह एइ रथ
रथ चड़ि यान आगे शङ्ख वाजाइया * चलिलेन गंगा तार पाछु गोड़ाइया
स्वर्गवासी आसि करे गंगाजले स्नान * भगीरथेर माथाय देय दूर्व्वाधान
आदिकाण्ड कृत्तिवास करिल वाखान * स्वर्गेते गंगार हैल मन्दाकिनी नाम

---

१ मयूर पंखधारी भगवान । २ गंगा । ३ भानुकुल में उत्पन्न भगीरथ । ४ अक्षत ।

ऐरावत का अहङ्कार चूर्ण और चार धाराओं मे गगा का मृत्युलोक में आगमन

तजि विधिलोक भगीरथ संगा * पहुँची सैल-मेरु ढिग गंगा
योजन साठि सहस्र उतंगा * सहस बतीस मूल गिरि शृंगा
सुमन धतूर सरिस तेहि रूपा * ता बिच गह्वर गहन अनूपा
द्वादश वर्ष भ्रमण तहँ कीन्हा * गह्वर-पथ सुरसरि नहिं चीन्हा
स्तुति करत जोरि जुग पानी * बिलमति कितै गंग महरानी
तव बिन वंस न मोर उधारा * अनुनय करत दिलीप-कुमारा
तात सुमेरु पंथ अवरोधा * सफल करौं किमि तव अनुरोधा
ऐरावत मतंग जो आवै * दन्त चीरि गिरि पंथ बनावै
सोइ निकास मम होय प्रवाहा * चले भगीरथ जहँ सुरनाहा

ब्रह्मलोक सों अवतरी, करि पुनीत सुरधाम।
जिमि सुमेरु गह्वर रुकी, धारा गंग ललाम ॥३६॥

गाथा सकल इन्द्र सन बरनी * केहि विधि प्रगति करै जगतरनी
ऐरावत पठवौ मम संगा * पर्वत फोरि देय पथ गंगा

एरावतेर अहङ्कार चूर्ण ओ चारि धाराय गङ्गार मर्त्ये आगमन

ब्रह्मलोके ह'ते गंगा आने भगीरथ * आनिया मिलेन गंगा सुमेरु पर्व्वत
सुमेरुर चूड़ा षाटि सहस्र योजन * बत्रिश सहस्र तार गोड़ाय पत्तन
एइ आदि कहिलाम एइ तार मूल * सुमेरु पर्व्वत येन धूतुरार फूल
तार मध्ये आछे एक दारुण गह्वर * भ्रमेन ताहाते गंगा द्वादश वत्सर
गंगार ना पाय देखा नाहि कोन पथ * जोडहाते स्तुति करे राजा भगीरथ
सुमेरुते हइल तोमार अवतार * ना करिले गङ्गा मम वंशेर उद्धार
गङ्गा बलिलेन शुन वाछा भगीरथ * याब आमि कोन दिके नाहि पाई पथ
ऐरावत हस्ती यदि आनिबारे पार * तवे से पर्व्वत हैते पाइ ये निस्तार
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते * तवे त बाहिर हइ आमि सेइ पथे
गंगार चरणे राजा करिया प्रणति * आरबार गेल यथा देव सुरपति
प्रणाम करिया बन्दे जोड़ करि हात * कहिते लागिल कथा इन्द्रेर साक्षात्
ब्रह्मलोक हइते आसिया कोन मते * पडिया आछेन गङ्गा सुमेरु पर्व्वते
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते * तवे त बाहिर हन गङ्गा सेइ पथे

इन्द्रायसु चलि अधिपमतंगा[1] ※ पहुँचेउ जहाँ हेमगिरि शृंगा
अहंकार कुञ्जर मन आवा ※ मलिन भाव तब सुतहिं जनावा
मम ढिग गंग एक निसि वासा ※ तौ गिरि भञ्जि मिटावौं त्रासा
विकल भगीरथ सुनि गजवानी ※ द्रवित नैन काया कुम्हिलानी
सुख न चैन; कित उदधि मतंगा[2] ※ करुनमई पूछत इमि गंगा
सुरपति दया न संसय माता ※ तदपि गजेन्द्र मलिन जिमि बाता
कही, सो वरनौं किमि, अति हीना ※ सुरसरि बूझि मर्म सब लीना
सुरपुर सुख उन्माद विशेसा ※ दन्तीपति सन कहेउ सँदेसा
साधि लेय मम वेग तरंगा ※ सात रैन[3] निवसौ तेहि संगा
सुनत मोद ऐरावत लीना ※ दन्तप्रहार चारि ढिग[4] कीना
कनकसैल[5] फूटी चौधारा ※ भद्रा नाम उतर पग धारा

शुनिया चलिल इन्द्र चापि ऐरावते ※ आसिया मिलिल सेइ सुमेरु पर्व्वते
ऐरावतेर अन्तरे हइल अहङ्कार ※ कहगे गङ्गा के गिया संवाद आमार
गङ्गा यदि एक रात्रि बञ्चे मम सने ※ अव्याहति दिव तबे बन्धन खण्डने
यखन कहिल एइ कथा ऐरावत ※ म्लान मुखे माथा हेंट करे भगीरथ
मुखे नाहि वाक्य सरे चक्षे वहे जल ※ दुरु दुरु हिया करे अन्तर विकल
दशा देखि दयामयी जिज्ञासेन ताय ※ कि हेतु एमन दशा घटिल तोमाय
पारिले कि ऐरावत आनिते हेथाय ※ कोन दुःखे काँद बापु कहत आमाय
भगीरथ कहे माता करि निवेदन ※ सुरमणि मनवाञ्छा करिल पूरण
ऐरावत ये कहिल आमार गोचरे ※ पुत्र हये जननीरे बलिब कि करे
गङ्गा बलिलेन तार बुझिलाम तत्त्व ※ राजभोगे ऐरावत हइयाछे मत्त
यद्यपि आछाड़ खेउ से सहिने पारे ※ तार घरे सप्त रात्रि रब बल तारे
भगीरथ एइ कथा कहे हस्तीवरे ※ शुनिया गङ्गार कथा आपना पासरे
चारिखान करिया पर्व्वत चिरे दाँते ※ चारि धारा हैल गङ्गा सुमेरु कायाते
वसु भद्रा श्वेत आर अलकानन्दाआर ※ पड़िलेन पर्व्वत हइते चारि धार

---

१ गजपति ऐरावत । २ चारों दिशाओं के सागरों के दिग्गजों के शिरोमणि । ३ रात्रि ।
४ स्थान । ५ सुदर्शपर्वत ।

वसु प्रवही प्राची दिसि सागर * पच्छिम जलधि श्वेत लिय डागर
बही अवनि शुचि अलकानन्दा * सुत-दिलीप[1] हिय अमित अनन्दा
इत गज विकल प्रवाह प्रचण्डा * जल चहुँ भरेउ श्रवण मुख शुण्डा[2]
मातु मातु कहि, धरनि गिरि, प्रान याचना कीन ।
दलित दर्प इमि दन्तपति, सुरपुर मारग लीन ॥३७॥

महादेव के द्वारा गंगा का वेग धारण

सहित कुँअर सुरसरि तजि मेरू * चलि कैलास वास शिव केरू
गिरि उतंग[3] सों पात-प्रहारा[4] * डगमग धरनि सहत नहिं भारा
विवस बहेउ जलवेग पताला * लखि दिलीप-सुत हाल बेहाला
करहु रसातल मातु प्रवेसा * विन गति पितर सहहिं मम क्लेसा
को मम वेग सकै छिति धारी * सेवहु सुत समरथ त्रिपुरारी
रोपहिं[5] शम्भु जो मम जलभारा * तव हित अवनि[6] लेहुँ अवतारा

वसु नामे गङ्गा हर पूर्व्वेर सागरे * भद्रा नामे सुरधुनी चलिला उत्तरे
श्वेत नामे चलिलेन पश्चिम सागरे * गेलेन अलकानन्दा पृथिवी उपरे
मारिलेन एक ढेउ ऐरावतोपरे * गेल जल नाक मुखे हाँसफाँस करे
मारिलेन आर ढेउ प्राय गत प्राण * हस्ती बले गङ्गामाता कर परित्राण
मा बलिया हस्ती यदि दाँते खड़ करे * राखिलेन आर ढेउ पर्व्वत उपरे
ऐरावत पलाइल पाइया तरास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

महादेव कर्त्तृक गंगार वेग धारण

भगीरथ सुमेरु हइते गङ्गा निया * कैलास पर्व्वते परे मिलिल आसिया
कैलास हइते पड़े पृथिवी उपरे * वसुमती ताँर भारे टलमल करे
वेगवती हये गङ्गा चले रसातले * दौड़ाइया भगीरथ जोड़ हाते बले
पातालेते हइल तोमार आगुसार * केमने हइबे मम वंशेर उद्धार
गंगा बलिलेन बापू शुनह वचन * धरित्री आमार वेग ना सबे कखन
शिव यदि आसिया वहेन जलधार * तबे पारि क्षितिते हइते अवतार

---

१ भगीरथ । २ सूंड । ३ ऊँचे । ४ धार के प्रपात की चोट । ५ रोकें । ६ पृथ्वी ।

कियो भगीरथ गंग प्रनामा * वर्ष अराधन किय शिव धामा
शिव प्रसन्न पूछत तप-हेना * बरनी बिथा भानु-कुल-केता
सुरसरि-धार सहति नहिं धरनी * नाथ शीश रोपहु जगतरनी
सुनि शिव नाचत पुलकित अंगा * उमा सुनहु जग प्रगटति गंगा
जटाजूट शिरपञ्च कराला * तहँ प्रवही शुचि धार मराला
द्वादश वर्ष न मारग पावा * केस-महेस विपुल भ्रम छावा
कौतुक लखेउ भानुकुलनन्दन * किय बहोरि गौरीपति वन्दन
शंकर जटा चीरि पथ दीन्हा * सोइ थल 'हरद्वार' जग चीन्हा
जहँ स्नान दान जन करहीं * पुन्य अमित विधि बरनि न सकहीं
बिलग धार एक बही पताला * भोगवती तेहि नाम बिशाला

संग भगीरथ पुनि चली, बही त्रिवेनी तीर ।
गंगा-यमुना-सरस्वति, संगम जहँ शुचि नीर ॥३८॥

গংগার চরণে পুনঃ করিয়া প্রণতি * আরবার গেল যথা দেব পশুপতি
এক বর্ষ করিল শিবের আরাধন * বলেন মহেশ পুনঃ এলে কি কারণ
ভগীরথ বলে গংগা দিল নারায়ণ * পৃথিবী ধরিতে বেগ না পারে কখন
তুমি যদি আসি শিরে ধর জলধার * পৃথিবীতে হয় তবে গংগা অবতার
গৌরীর সহিত তবে নাচে ত্রিলোচন * তোমা হৈতে পাব আজি গংগা দরশন
পাতিলেন পঞ্চানন পঞ্চশির সুখে * পতিত পাবনী গংগা পড়েন কৌতুকে
শিবের মাথায় জটা বড ভয়ঙ্কর * বেড়ান জটার মধ্যে দ্বাদশ বৎসর
ভগীরথ বলেন মা এ কি ব্যবহার * আমার কেমনে হবে বংশের উদ্ধার
গঙ্গা বলিলেন বাপু শুন ভগীরথ * জটা হৈতে বাহির হইতে নাহি পথ
ভোলানাথ বলিয়া ডাকেন জোড় হাতে * ধ্যান ভঙ্গ হইয়া চাহেন বিশ্বনাথে
মহেশ চিরিয়া জটা দিলেন গঙ্গার * সেই স্থানে তীর্থ যে হইল হরিদ্বার
যেই নর স্নান দান করে হরিদ্বারে * তার পুণ্য সীমা ব্রহ্মা কহিতে না পারে
এক ধারা গেল গঙ্গা পাতাল মণ্ডলে * ভোগবতী ব'লে নাম হৈল রসাতলে
পশ্চাতে চলেন গঙ্গা ভগীরথ আগে * আসি গঙ্গা মিলিলেন ত্রিবেণীর ভাগে
বহিল যমুনা গংগা আর সরস্বতী * নামেতে ত্রিবেণী তিন ধারা যুক্তগতি

तीरथराज प्रयाग सुहावन * मकर-नहान स्वर्ग-पथ पावन
शंख घोष रविकुल-सुत आगे * वारानसी भाग पुनि जागे
काशी-थल जहँ शुचि सुरधारा * महिमा चित दै सुनहु अपारा
एक दिवस द्विज वधेउ त्रिलोचन * पातक तासु लखात न मोचन
गौरि गनेश षडानन चिंता * किमि अघ-मुक्त होयँ भगवन्ता
ब्रह्मघात किमि उतरइ माथा * उमा कही शिव सन, हे नाथा!
बिहँसि कहेउ शिव, लखु मन्दाकिनि * वसति अवनि जो पाप-विनाशिनि
उमा, उमापति वृष असवारी * सुरसरि ढिग यात्रा सँवारी
कुस परसत सो विनसेउ पापा * कहत शंभु लखु गंग प्रतापा
पञ्चक्रोस सीमित करि धामा * वारानसी छेत्र सरनामा
जहँ तन तजे लहै शिवलोका * मिटैं सकल भव दारुन सोका
दिवस एक तहँ विलमि विरामा * सुरसरि सहित कुँअर तजि धामा
शंखघोष; पुनि पथ गहि लीना * सोइ सुरधनी, अनुगमन कीना

প্রয়াগে মকরে যেই নর স্নান করে * মুক্ত হ'য়ে সর্ব্বপাপে যায় স্বর্গপুরে
ভগীরথ আগে যায় শঙ্খ বাজাইয়া * বারাণসী পুরে গংগা উত্তরিল গিয়া
মন দিয়া শুন বারাণসীর আখ্যান * বারাণসী তীর্থ যাহে হইল নির্ম্মাণ
কাটিলেন এক কালে হর দ্বিজ মাথা * ব্রহ্মহত্যা পাপ তার না হয় অন্যথা
চাপিলেক ব্রহ্মহত্যা গিরিশের কাঁধে * কার্ত্তিক গণেশ আর কাত্যায়নী কাঁদে
গৌরী কন কেন বা কাটিলে বিপ্রমাথা * ব্রহ্মবধ হইলে কে করিবে অন্যথা
গৌরীর শুনিয়া কথা শিব হাসি ভাষে * পৃথিবীতে গেল গংগা কত পাপ নাশে
বৃষভে চাপিয়া তবে শঙ্করী শঙ্কর * দাঁড়াইল সুরধনী তীরেতে সত্বর
কুশাগ্রে করিয়া হর কৈল পরশন * ব্রহ্মহত্যা পাপ তাঁর হৈল বিমোচন
বলেন ধূর্জ্জটী দেখ পরীক্ষা গংগার * পঞ্চ ক্রোশ যুড়ি হর দেন গণ্ডী তার
সেই পঞ্চক্রোশ তীর্থ নাম বারাণসী * তাহাতে ছাড়িলে তনু শিবলোকে বসি
এক রাত্রি গংগা তথা করি অবস্থান * করিলেন ভগীরথ সহিত প্রস্থান
ভগীরথ আগে যান শঙ্খ বাজাইয়া * জহ্নুর নিকটে গিয়া মিলিল আসিয়া

पर्नकुटी विच-पंथ सुहाई ❋ जहँ तप करत जह्नु मुनिराई
भइ जलमगन कुटी, मुनि ध्याना ❋ भयेउ भंग किय सुरसरि पाना
तव लौं दीठि भगीरथ डारी ❋ लुप्त गंग, जनि कतौ[1] निहारी
वट तर जह्नु मुनीस लखि, पूँछी अवध नरेस।
कस कौतुक? संसय अतिव, मेटहु मोर कलेस ॥२६॥
उचित न केहु विधि गंग-अचारा[2] ❋ नासेउ मम आश्रम निज धारा
सुरसरि पान कीन मोइ कारन ❋ लावहु टेरि विधातहिं राजन्![3]
सुनत महीप व्याप अति त्रासा ❋ दोउ कर विनय करत मुनि पासा

काण्डार मुनि का वैकुण्ठ गमन

तुम विधि, विष्णु, तुमहिं त्रैलोचन ❋ तव महिमा-गुन जानत को जन
सगर-तनय जे साठि हजारा ❋ कपिल-अनल विनसे जरि छारा
उदरमुक्त मुनि सुरसरि करहीं ❋ पितर मोर तौ सद्गति लहहीं

पाता लता कृत जह्नु मुनिर कुटीर ❋ गंगास्रोते भेसे याय प्लावि दुइ तीर
चक्षु मेलिलेक मुनि भाङ्गिलेक ध्यान ❋ गण्डुष करिया सब जल करे पान
कत दूरे गिया भगीरथ फिरे चाय ❋ कोथा गेल गङ्गादेवी देखिते ना पाय
अकस्मात् गङ्गादेवी गेल कोन खाने ❋ देखे मुनि वटतले वसियाछे ध्याने
जह्नु रे जिज्ञासे भगीरथ जोड़ हात ❋ गङ्गा मोर केवा निल पथे अकस्मात्
वलिलेन मुनि शुन राजा भगीरथ ❋ आनिते गङ्गारे तव नाहि छिल पथ
मम घर भाङ्गे गङ्गा केमन आचार ❋ गिया कह भगीरथ निकटे ब्रह्मार
आनगिया देखि ब्रह्मा मम किवा करे ❋ गण्डुष करिया गङ्गा रेखेछि उदरे
मुनिर वचन शुनि लागिल तरास ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

काण्डार मुनिर वैकुण्ठे गमन

जोड़ हाते भगीरथ करेन स्तवन ❋ तुमि ब्रह्मा तुमि विष्णु तुमि त्रिलोचन
तोमार महिमा गुण जाने कोनजन ❋ मनुष्य शरीरे तव कि जानि स्तवन
सगर राजार षाटि हाजार तनय ❋ कपिलेर शापेते हइल भस्ममय
तोमार उदरेते गङ्गार अवतार ❋ आमार वंशेर किसे हइवे उद्धार

---

१ किसी भी जगह । २ आचरण व्यवहार । ३ यह वचन है ।

ब्रह्मकोप नहिं थिर अतिकाला * मुदित जह्नु कह सुनु महिपाला
पुनि मुख निसरि गंगजल आवै * तौ उच्छिष्ट ! निरादर पावै
दच्छिन जानु चीरि मुनि ज्ञानी * प्रगट कीन इमि सुरसरि रानी
नाम जाह्नवी भगवति लोका * लहत हरहिं भव-तन-मन सोका
मुनि काण्डार शापवश जाना * नहिं त्रिभुवन पातकी समाना
बसत पापरत गनिका धामा * मोह-काम कर फन्द ललामा
कानन काठ लेन सो गयऊ * तहँ मुनि-प्रान व्याघ्र हरि लयऊ
लै यमदूत चले यमलोका * मांसपिण्ड केहरि[1] अवलोका[2]
अस्थि अरण्य[3] शेष जहँ डारी * तहाँ उतर दिसि गंग पधारी
पुन्य सलिल वन कियो प्रकासा * उड़ेउ अस्थि लै काक अकासा

निरखि चील्ह एक लोभवस, अभिरी वायस[4] संग।
अस्थि हेत सुरसरि उपर, जूझत दुहु विहंग ॥४०॥

तजी अस्थि वायस भय पाई * दैव-योग सुरधनी[5] समाई

ब्राह्मणेर कोप नाहि थाकये कखन * कृपाते वलेन तारे जह्नु तपोधन
मुख हइते बाहिर करिले गङ्गाजल * उच्छिष्ट बलिया तवे घुषिवे सकल
चिरिल दक्षिण जानु सेइ क्षणे मुनि * जानु दिया बाहिर हइल सुरधनी
छिलेन किञ्चित् काल जह्नुर उदरे * जाह्नवी बलिया ख्यात हइल ससारे
गंगामाता शुनि शापभ्रष्ट सेइ खाने * उत्तर बाहिनी हैया यान सेइ खाने
काण्डार नामेते मुनि छिल एक जन * तार तुल्य पापी नाइ ए तिन भुवन
जन्मावधि सेइ मुनि वेश्या सेवा करे * तार वशीभूता हैया थाके तार घरे
काष्ठ काटिवारे गियाछिल से कानन * धरिया व्याघ्रेते तार वधिल जीवन
यमदूत आसि तारे करिया वन्धन * लइया चलिल तारे यमेर भवन
व्याघ्रेते सकल मास गेल त खाइया * वनेर मध्येते अस्थि रहिल पड़िया
काकेते लइया याय गङ्गा मध्य दिया * हेन काले सञ्चान से काकेरे देखिया
याय पक्षी महावेगे काके खेदाइया * गंगा दिया याय काक भये पलाइया
दुइजने तारा तथा जड़ाजड़ि करे * दैवयोगे अस्थि सेइ गंगा नीरे पड़े

---

१ सिंह। २ देखा। ३ वन। ४ कौआ। ५ गंगा।

परसत जल काण्डार अपावन * चौभुजरूप भयेउ सो पावन
गयेउ लोक जहँ हरि अभिरामा * यमकिंकर भाजे यमधामा
रोय कथा यमराज बुझाई * मुनि पातकी बन्दि जिमि लाई
तासु पापमय जीवन बरना * लहेउ अन्त सो किमि हरि चरना
दुसह लाज नहिं काज हमारा * सुनि यम चकित स्वर्ग पग धारा
गहि पद पंकज विष्णु पुनीता * यम बरनी जिमि भई अनीता[1]
कान्डार पातकी अपावन * अधम विदित सो जग मनभावन
पापिन पर यम चिर-अधिकारू * प्रभु छीनेउ सो किमि अविचारू
पाप-पुन्य कर एकहि भोगू * तौ यम-शासन कर किन योगू
हँसि हरि कही सुनहु यमराया * रहत गंग किमि पातक-छाया
महिमा अक्षय अमित शुचि धारा * जतक[2] दूर ताकर विस्तारा
दण्डपाणि कह, यम नहिं जाई * अधम परसि जल शुभ गति पाई
करि शवदाह अस्थि जल-शयना * चौभुज जीव लहै मम अयना[3]

करिल यखन अस्थि गंगा परशन * चतुर्भुज हइया से चलिल ब्राह्मण
हेन काले नारायण वैकुण्ठे थाकिया * काड़िया निलेन यमदूतेरे मारिया
काँदिते काँदिते मन यमेर किङ्कर * जिज्ञासा करिते गेल यमेर गोचर
विषय छाड़िनु प्रभु आर नाहि काज * आजि बड़ यमराज पाइलाम लाज
काण्डार नामेते पापी त्रिभुवने जाने * वैकुण्ठे ताहारे हरि निलेन कि ज्ञाने
यमराज रोषे शुनि दूत याहा भाषे * जिज्ञासा करिते गेल श्रीहरिर पाशे
काँदिते लागिल यम धरि प्रभु पाय * विषय छाड़िनु नाहि विषयेर दाय
पापीर उपरे मोर चिर अधिकार * आजि केन ताहार हइल अविचार
काण्डार ब्राह्मण पापी विदित संसारे * आनिलेन कोन गुणे वैकुण्ठे ताहारे
शुनिया यमेर कथा हरि हासि कय * गंगा यथा तथा कभु पाप नाहि रय
गंगार महिमा कत कि बलिते जानि * मन दिया शुन तबे कहि दण्डपाणि
यत दूरे याइबेक गंगार बातास * आमार दोहाई यदि याओ तार पाश
पुड़े मरे अस्थि लैया फेले गंगोदके * चतुर्भुज हैया येन[1] आसिबे गोलोके

---

१ नीति से भिन्न । २ जितनी । ३ धाम ।

बसै तीर गंगोदक पाना * प्रानी सो मम रूप समाना
बरजौ दूत, न तहँ पग डारैं * ते मम जन, मम आन[1] विचारैं

यम-प्रबोध इमि, उत सुखद, महिमा जासु अपार।
गौड़ देश पावन करत, वही गंग शुचि धार ॥४१॥

सगर-वंश उद्धार

पूरुब दिशा पद्म मुनि धामा * लीक लीन जाह्नवी ललामा
मम अकाज पूरुब दिसि जाये * विनय भगीरथ मातु सुनाये
चली फेरि शुचि प्रबल तरंगा * भागीरथी भगीरथ संगा
वही धार इक तजि जग तरनी * पद्मावती[2] पद्म[3] अनुसरनी
गंग दीन पद्महिं पुनि शापा * तासु नीर जनि मेटइ पापा
प्रथम कछुक पुनि भैरव[4] वाहिनि * पुनि भई मातु उदधि-अनुगामिनि
मंदाकिनि कर दरस पुनीता * करैं शंखध्वनि देव सप्रीता
शंखघोष, मज्जन जे करहीं * अयुत वर्ष सुरपुर नर लहहीं

गंगातीरे थाकि गंगाजल करे पान * से शरीर जान तुमि आमार समान
निषेध करह यत दूतेरे तोमार * यदि यात्रो सेइ स्थाने दोहाइ आमार
शुनिया प्रभुर कथा शमनेर त्रास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

सगर-वंश उद्धार

काण्डारेर प्रति गंगा मुक्तिपद दिया * गौड़ेर निकटे गंगा मिलिल आसिया
पद्म नामे एक मुनि पूर्व्वमुखे याय * भगीरथ भावि गंगा पश्चात् गोडाय
जोड़हात करिया बलेन भगीरथ * पूर्व्व दिक याइते आमार नाहि पथ
पद्ममुनि लये गेल नाम पद्मावती * भगीरथ सङ्गे चलिल भागीरथी
शापवाणी सुरधनी दिलेन पद्मारे * मुक्ति केह तव नीरे पावे ना संसारे
एक वार गेल गङ्गा भैरव वाहिनी * आरबार फिरिलेन सागरगामिनी
अजय गंगार जल हइल दर्शन * शङ्खध्वनि करेन यतेक देवगण
शङ्खध्वनि घटे येवा नर स्नान करे * अयुत वत्सर सेइ थाके स्वर्गघरे

---

१ मर्यादा, लीक। २ बगाल मे प्रसिद्ध नदी। ३ पद्म मुनि। ४ पवित्र स्थान।

कीन्ह समोद इन्द्र अस्नाना ※ इन्द्रेश्वर० प्रसिद्ध अस्थाना
इन्द्रेश्वर जो घाट सुपावन ※ स्वर्गदैन सब पाप नसावन
द्रुतगति[1] चली सरित[2] जगमाया ※ 'मेढ़ा' चढ़ि भेंटे द्विज राया
मेढ़ातला० नाम सोइ कारन ※ थल प्रसिद्ध पातकी उबारन
मुदित महीप चले कछु आगे ※ भाग तबै 'नदिया'[3] के जागे
सप्तद्वीप० बिच श्रेष्ठ सुठामा ※ नवद्वीप० सुरसरि विश्रामा
रैन निवसि पुनि सप्तग्रामा० ※ पहुँचो शुचि प्रयाग सम धामा
दछिन महेश० गंग पगु धारा ※ परमत अगनित घाट-बिहारा
तव संगति कत[4] वर्ष गत, कतक[5] दूर तव देश।
कहहु भगीरथ भस्म कहँ, सन्तति सगर नरेस? ॥४२॥
दछिन-पुरुब बिच देश सुहावन ※ जहाँ कपिल मुनि आश्रम पावन
भस्म-पितर मम तहँ अनुमाना ※ जननी कथन सुनेउँ अस काना

निमिषेते आइलेन नाम इन्द्रेश्वर ※ गंगा लये भगीरथ चलिल सत्वर
गंगाजले यथा इन्द्र करिलेन स्नान ※ इन्द्रेश्वर बलि नाम हइल से स्थान
इन्द्रेश्वर घाटे येवा नर स्नान करे ※ सर्व्वपापे मुक्त हये जाय स्वर्गपुरे
चलिलेन गंगा माता करि बड़ त्वरा ※ मेढ़ातला नाम स्थाने यान सरिद्वरा
मेढ़ाय चड़िया वृद्ध आइल ब्राह्मण ※ मेढ़ातला बलि नाम एइ से कारण
गंगारे लइया यान आनन्दित हैया ※ आसिया मिलिला गंगा तीर्थ ये नदीया
सप्तद्वीप मध्ये सार नवद्वीप ग्राम ※ एक रात्रि गंगा तथा करिल विश्राम
रथे चड़ि भगीरथ यान आगुयान ※ आसिया मिलिल गंगा सप्तग्राम स्थान
सप्तग्राम तीर्थ जान प्रयाग समान ※ सेखान हइते गंगा करेन प्रयाण
आकना महेश गंगा दक्षिण करिया ※ विहारोडेर घाटे गंगा उत्तरिल गिया
गंगा बलिलेन बापू शुन भगीरथ ※ कत दूरे तोमार देशेर आछे पथ
भ्रमितेछि कत वर्ष तोमार संहति ※ कोथा आछे भस्ममय सगर-सन्तति
भगीरथ बले पड़े मने ये आमार ※ पूर्व्व ओ दक्षिण दिक मध्यस्थाने तार
येइखाने आछिल कपिल महामुनि ※ सेइ स्थाने मम वंश मातृ मुखे शुनि

१ तीव्र गति से। २ सरिता नदी। ३ नवद्वीप। ४ कितने। ५ कितनी।
० शून्य चिह्नित बङ्गाल के भागीरथी तट पर स्थित पुनीत स्थानों के नाम हैं।

सुनत शतमुखी होइ सुरधारा * वही, त्वार जहँ सगर-कुमारा
परसि गंग चौभुज तनु पाये * सगर-तनय सुरपुरहिं सिधाये
बसेउ सुवन इक जल-अधिकारी * शेष धाम हरि मंगलकारी
वंस-मुक्ति धनि सफल मनोरथ * प्रनवति पुनि पुनि गंग भगीरथ
जाहु देस सुत वंस-उजागर * मैं अब मिलौं भेंटि उर सागर
'गंगासागर' तीर्थ महाना * संगम करहिं दान अस्नाना
अमित पुन्य, पातक सब छीना * लहहिं स्वर्ग हरिपद आधीना
सुरसरि अवनि भगीरथ लाई * मुक्ति-देनि जग पाप नसाई

गंगा-प्रार्थना

आई सुचि सलिल मातु सन्तन सुखकारी।
सुरधनी गंगा नाम, प्रगटी सो धरा धाम,
तीनि भुवन जासु नाम, मंगल जयकारी ॥ आई०॥
सुरनर मुनि तारिनि जो, पाप ताप हारिनि जो,
संकट निवारिनि जो, कलियुग अवतारी ॥ आई०॥

एइ कथा येखाने गंगारे राजा बले * हइलेन शतमुखी गंगा सेइ स्थले
आछिल सगर-वंश भस्मराशि हैया * वैकुण्ठे चलिल सबे गंगाजल पाइया
हस्त तुलि गंगा भगीरथेरे देखान * ओई तव वंश देख स्वर्गवासे यान
एक जन रहिल जलेर अधिकारी * आर सब गेल स्वर्गे चतुर्भुजधारी
वंश मुक्ति हइल देखिया भगीरथ * गंगा के प्रणाम करि पूर्ण मनोरथ
गंगा बले देशे याओ राजार नन्दन * सागरेर संगे आमि करिगे मिलन
महातीर्थ हइल से सागर संगम * ताहाते यतेक पुण्य नाहि व्यतिक्रम
गंगासागरे ये नर करे स्नान दान * सर्व्वपापे मुक्त ह'ये स्वर्गे पाय स्थान
गंगा आनि लोक मुक्त कैल भगीरथ * कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व महत्

गङ्गार महिमा

सुरधनी गंगा नामे, आइलेन धरा धामे,
ए तिन भुवने प्रतिकार।
सुर नर निस्तारिणी, पाप ताप निवारिणी,
कलियुगे हन अवतार॥

ধন্য ধন্য বসুন্ধরা, সুরসরি নিত যহাঁ সরী,
ধনি ধনি হে হংসকরী, ভব-তম উজিয়ারী ।।আঈ০।।
যোজন সত পূত ধার, গংগে গংগে পুকার,
দরসি পরসি পুন্যধারি, হরপুর অধিকারী ।।আঈ০।।
কূজন তহঁ পংছিবৃন্দ, বরনৌ কিমি সো অনন্দ,
বিলসত ফল-ফূল-কংদ, পিয়ত সুধা বারী ।।আঈ০।।
নৃপন কে জে সুআল, বারে কুঞ্জর বিসাল,
তেঊ লখি হৈ নিহাল সগন মোদ ভারী ।।আঈ০।।
সেতুবংধ, নীলাচল, দ্বারিকা, বদরিকা থল,
কাসী, মথুরাদি বিমল নগরী সুচি সারী ।।আঈ০।।
তীরথ মনভাবন জে, বিষ্ণু সরিস পাবন জে,
অতি মহান তাহূ তে সুরসরি মহতারী ।।আঈ০।।

ধন্য ধন্য বসুমতী, যাহাতে গঙ্গার গতি,
ধন্য ধন্য কলিযুগ সার ।
শতেক যোজন থাকে, গঙ্গা গঙ্গা বলি ডাকে,
শুনে যমে লাগে চমৎকার ।
পক্ষিগণ থাকে যত, গঙ্গাতীরে কত কত,
করে সদা গঙ্গাজল পান ।
দূরে রাজ চক্রবর্ত্তী, যার আছে কোটী হর্ম্মী,
সেহ নহে পক্ষীর সমান ।।
কাশী গয়া নীলাচল, দ্বারকা মথুরা স্থল,
রামেশ্বর বদরীকাশ্রম ।
এ সব অনেক তীর্থ, বিষ্ণুর সম মহত্ত্ব,
সর্ব্ব তীর্থ গঙ্গা সর্ব্বোত্তম ।।

सौदास राजा का उपाख्यान

बीते वर्ष सहस्र सठ, सुरसरि लाये भूप।
पहुँचि अवध पुनि प्रजागन, पालत सुत अनुरूप ॥४३॥

लहि 'सौदास' जनम युवराजू * मुदित नृपति सह अवध समाजू
सासन सौंपि सुवन नृप धीरा * बसे भगीरथ सुरसरि तीरा
बीते दिवस, काटे भवफंदा * लहेउ सरित-तट मुकुति अनन्दा
करि सौदास श्राद्ध पितु तर्पन * बहु विधि दान द्विजन करि अर्पन
पावन चरित तासु सुनि ध्याना * तन सुचि होइ, मिटहिं अघ नाना
दिवस एक मृगया[1] कर साजा * हेरत चहुँ वन-वन मृग राजा
दनुज एक तहँ भामिनि साथा * उतरेउ जहाँ भानुकुल नाथा
तजि निसिचर तन व्याघ्र सरूपा * करत केलि तहँ माया रूपा
लखि सार्दूल[2] हनेउ नृप बाना * मुग्धकाल पसु त्यागेउ प्राना
हनेउ केलिरत पति केहि दोषा * विकल कहेउ निसिचरी सरोषा

सौदास राजार उपाख्यान

गङ्गाहेतु गेल षाटि हाजार वत्सर * पुनर्ब्बार गेल राजा अयोध्या नगर
राजा हैया करिलेन प्रजार पालन * हइल सौदास नामे ताहार नन्दन
अयोध्याते करिलेन राजत्व सौदास * भगीरथ करिलेन गङ्गातीरे वास
किछु काल भगीरथ भागीरथी तटे * थाकिलेन मुक्त ह'ये संसार सङ्कटे
करिलेन राजार श्राद्धतर्पण सौदास * ब्राह्मणेरे दिल दान यत यार आश
मन दिया शुन राजा सौदास चरित्र * शुनिले ये पापक्षय शरीर पवित्र
एक दिन गेल राजा मृगया कारण * मृग लागि फिरे राजा जुड़े सारा वन
आइल राक्षस एक सङ्गे जाया निया * सौदासेर काछे उत्तरिल से आसिया
छाड़िया राक्षसरूप व्याघ्ररूप धरे * दुइ जने प्रभासेर तीरे केलि करे
हेन काले सौदास से शार्दूल देखिया * शृङ्गारेर काले तीरे मारिल विन्धिया
सेइ काले राक्षसी राजार प्रति कय * विना दोषे स्वामी मार शृङ्गार समय

१ शिकार। २ सिंह।

दारुन कोप ब्रह्म कर शापा ※ परहु फन्द भुगतहु नृप पापा
करि कुभाष निशिचरी सिधारी ※ चले नगर तन भूप दुखारी
गुरु प्रिय परिजन सुहृद बुलाई ※ मुनि वशिष्ठ सन कथा सुनाई
अश्वमेध नर पातक मोचन ※ शास्त्र वचन इमि कहत तपोधन
सोइ सौदास याग संपन्ना ※ सुरभि दान वसन दिक अन्ना
द्विज गृह गमन, तोष भूपाला ※ इत चिन्तित निसिचरी कराला

वचन अकारथ मोर कस, तजेउ दानवी रूप ।
पुनि वशिष्ठ सम रूप धरि, प्रगटी सम्मुख भूप ॥४४॥

सामिप[1] नृपति करावहु भोजन ※ मुनि अदेश[2] सुनि कहेउ यशोधन
अर्जित[3] अश्वमांस मन लावहु ※ करि स्नान-ध्यान गुरु आवहु
तौलौं तासु रुचिर परिपाका ※ होइ, कहत रवि-वंश-पताका
तजि निशिचरी छद्म गुरु-वेषा ※ पुनि गृहपाक विप्र धरि वेषा
भूपति अबुध दनुज छल कीन्हा ※ रधि[4] मांस मानव धरि दीन्हा

परिणामे जानिबे हइबे यत पाप ※ महापाप भुञ्जिबे हइबे ब्रह्मशाप
एतेक बलिया ये राक्षसी गेल वन ※ मनोदुःखे घरे राजा करिल गमन
पात्रमित्रगणे राजा करिल आह्वान ※ वशिष्ठ मुनिरे आगे करिल सम्मान
मुनिरे कहिल राजा सब विवरण ※ एइ पाप केमने हइबे विमोचन
पुरोहित वशिष्ठ अनुज्ञा प्रमाणे ※ अश्वमेध करिलेन शास्त्रेर विधाने
यज्ञ पूर्ण दिल राजा दक्षिणा यतन ※ विदाय हइया तबे गेल सर्व्वजन
हेन काले से राक्षसी भावे मने मन ※ मम वाक्य व्यर्थ हबे जानिल कारण
आपन राक्षसरूप दूरे तेयागिया ※ वशिष्ठ मुनिर रूप धरिया आसिया
सौदास राजार काछे कहिल वचन ※ मोरे मांस भोजन कराओ यशोधन
राजा बले अश्व मांस करि आहरण ※ खाइबारे सेइ मांस गेल तब मन
स्नान संध्या करिया आइस महामुनि ※ एइ मांस कराइब रन्धन एखनि
वशिष्ठेर रूप से दूरे ते तेयागिया ※ प्राचीन विप्रेर वेश धरिया आसिया
मनुष्येर मांस लैया करिल रन्धन ※ वशिष्ठके डाके राजा करिते भोजन

१ मांसयुक्त । २ आदेश, आज्ञा । ३ प्राप्त किया हुआ (अश्व-मेध यज्ञ द्वारा) । ४ पकाकर ।

इत, नृप गुरु सन्मानि बुलावा * छल न जात, दोउ परे भुलावा
परसि मांस मानुष त्रिप वोई * मायाविनी लोप भइ सोई
कुपित वशिष्ठ निरखि अपमाना * दीन्ह शाप, रे शठ! यजमाना
योनि ब्रह्मराक्षस क्रूर पाई * चकित भूप मुनि गति दुखदाई
मैं निर्दोष शाप किमि दीन्हा * लै जल मुनिहिं भस्म चह कीन्हा
धरत ध्यान, मुनि, कौतुक जाना * जिमि निसिचरी रचेउ छल जाना
इत सौदास-रानि दमयती * 'भावी प्रबल' कहत मतवती
उदय दनुज बध फल शुभकेतू * तनहु न शाप-नीर गुरु हेतू
क्रोध शमन, सोचत मन राऊ * अभिमंत्रित जल अमिट प्रभाऊ
छिति पताल सुर-लोक निवासी * सलिल-परस तिन सकल विनासी
धुधुले पाँव निज जल तजि जारे * जग कल्मापपाद विस्तारे

पूछत विकल नरेस, बहुरि धाय गुरुचरन धरि।
ब्रह्मराक्षस वेस, तजे कब लौं पावहुँ मुकुति ॥४५॥

यजमान वाक्य मुनि लङ्घिते ना पारे * हइलेन उपस्थित रन्धन आगारे
वसिलेन मुनि तबे करिते भोजन * राक्षसी मनुष्य मांस दिल ततक्षण
थाल कोले थुइया राक्षसी गेल घरे * देखिया मुनिर क्रोध बाड़िल अन्तरे
मनुष्येर मांस दिया कर उपहास * तुमि ब्रह्मराक्षस ये हओ हे सौदास
एत यदि श्री वशिष्ठ मुनि शाप दिल * मुनिरे शापिते राजा हाते जल निल
नहि आमि दोषी शाप दिला अकारणे * एइ जले भस्म करि शोड़ाव एक्षणे
राक्षसी राजार शाप शुनिया तखनि * घर हैते पलाइल चलिल आपनि
ध्यान करि जानिल वशिष्ठ तपोधन * राक्षसी आसिया मांस नागिल भोजन
मुनिके दिवारे शाप राजा जल निल * तारे दमयन्ती नारी निषेध करिल
क्रोध सम्बरिया राजा भावे मने मन * कोन स्थाने एइ जल थुइब एखन
स्वर्गे यदि थुइ तबे मरे देवगण * यदि फेलि नागपुरे नागेर मरण
पृथिवी ते फेलिले शस्य सब जाय * सेइ जल फेले राजा आपनार पाय
राजार पुड़िये गेल दुखानि चरण * राजार कल्मापपद नाम से कारण
वशिष्ठ बलेन शाप दिनु नृपवर * राक्षस हइया थाक एगारे वत्सर
लोटाय धरिया राजा वशिष्ठ चरण * कत दिने हबे मम शाप विमोचन

कह वशिष्ठ नृपवर सुरु धीरा ※ ग्यारह वर्ष विगत गत पीरा
दरस गंग पावहु तेहि काला ※ मिटहि शाप तजि योनि कराला
नलराजेन भयेउ नरेसा ※ द्विजन भच्छि भरमन दिग्देसा
शाप-अवधि बीती जेहि काला ※ त्रिन अहार दिन तीनि भुआला
शिथिल, विलसि[1] जहँ सुधल प्रभासा ※ विटप मूल किय कछुक निवासा
क्षुधित[2] भूप लखि रहेउ सुवासा ※ तेहि तरु बस दैत्य कर बासा
पूँछत दैत्य कवन तें प्रानी ※ कस मम विटप वास अजानी
क्षुधा ज्वाल अति उदर कराला ※ भच्छहुँ तोहिं इमि कहेउ भुआला
राक्षस-दैत्य युगुल भटखेरा[3] ※ मल्लयुद्ध षट मास घनेरा
कोउ न न्यून, नहिं मानत हारी ※ पुनि भे सुह्रद दोउ तजि रारी
निज सुख-दुख दोउ करउँ प्रकासा ※ शाप वशिष्ठ वरन सौदासा
सखा सुनहु, कह दैत्य मलीना ※ मम ... वरदत्त ...नाम प्रवीना[4]
गुरुगृह वेद पढ़ेउँ बहु काला ※ तासु दक्षिना वचन न पाला

मुनि बले पाबे यबे गंगा दरशन ※ तबे तोमार पाप हइबे मोचन
सौदास नृपति नलराजन हइया ※ देशे देशे फिरे ब्राह्मणे खाइया
एगार वत्सर पूर्ण हइल यखन ※ तिन दिन आहार ना मिलिल तखन
उत्तरिल गिया राजा प्रभासेर कूले ※ असशक्त हइया बसिल वृक्षमूले
क्षुधाय अज्ञान राजा वृक्ष ये नेहारे ※ एक ब्रह्मदैत्य आछे सेइ वृक्षडाले
ब्रह्मदैत्य बले तोरे तुमि केबा हेथा ※ मम स्थाने तुमि किसे आसियाछ कोथा
शुनिया ताहार कथा सौदास ताकिल ※ ब्रह्मदैत्य देखि एथा राक्षसे आइल
ब्रह्मदैत्य राक्षसे विवाद दुइजने ※ छय मास मल्लयुद्ध करिछे एमन
दुइजन युद्ध सम न्यून नहे केह ※ मित्रता करिया परस्पर करे स्नेह
सर्व्व दुःख दुइजन कहे परस्पर ※ वशिष्ठ शापेर कथा कहेन सौदास
ब्रह्मदैत्य बले मित्र शुन विवरण ※ वरदत्त नाम आमि छिलाम ब्राह्मण
बहुकाल वेद पड़िलाम गुरुघरे ※ चाहिला दक्षिणा गुरु आमार गोचरे

१ ... । २ भूखा । ३ ... । ४ ... ।
... ।

लखि उपहास, शाप गुरु दीन्हा * योनि अधम निशिचरि-गति कीन्हा
पुनि गुरु द्रवित[1] कहेउ, द्विजनन्दन * परसि गंग छुटिहैं तव बन्धन
भयेउ चेत, भल कह मौदासा * चलहिं सखा दोउ गंग निवासा

मंदाकिनि स्नान करि, गंग कलश धरि सीस।
तेहिं मारग आवत लखे, भार्गव महा मुनीस ॥४६॥

मुनिवर ! दै कछु सुरसरि वारी * दया करहु दोउ शाप निवारी
बिन जल-अर्घ प्रथम शिवशीसा * इतर हेतु किमि, कहत मुनीसा
आदि न शेष तासु सम रूपा * गंग सलिल सब भाँति अनूपा
अनुचित मुनि, न सोह यह बानी * भार्गव सुनत कथा सब जानी
चीन्हेउ नृपति भगीरथ नन्दन * कुश सन कीन्ह गंग जल सरसन
विगत पाप तजि अधम सरीरा * निज-निज पंथ चले तजि पीरा
लहेउ स्वर्ग पुनि गंग प्रभावा * कृत्तिवास यस विमल सुनावा

करिलाम उपहास गुरुर वचने * गुरु बले ब्रह्मदैत्य हओ एइ क्षणे
यखन गङ्गार जल पावे दरशन * तखन पाइले मुक्ति ब्राह्मण नन्दन
सौदास बलेन मित्र चिताइले मोरे * तेंइ से गङ्गार तत्र दुइजने करे
गङ्गा स्नान करि यान भार्गव महर्षि * माथाय करिया गङ्गाजलेर कलसी
हेन काले दोंहे बले आगुलिया ताय * गङ्गाजल बिन्दुमात्र दाओ दुजनाय
लागिलेन कहिते भार्गव तपोधन * अग्रभाग शिवेर ता दिव ना कखन
दोंहे कहे मुनि तत्र नाहि विद्यालेश * गङ्गाजले नाहि हय अग्र अवशेष
जानिलेन तखन भार्गव तपोधन * महाजन बटे भगरिथेर नन्दन
कुशाग्र करिया गङ्गाजल दिल ताय * ब्रह्महत्या आदि पाप एड़िया पलाय
छिलेन सौदास ब्रह्मराक्षस हइया * वैकुण्ठे चलिया गेल गङ्गाजल पाइया
ब्रह्मदैत्य आर ब्रह्मराक्षस सत्वरे * दुइजने मुक्ति हैया गेल निजघरे
गङ्गार महिमा कथा अनन्ता ये शुनि * आदिकाण्ड रचे कृत्तिवास महागुणि

---

१ दया से पिघलकर।

दिलीप का अश्वमेध यज्ञ

नृप सौदास बाम सुरधामा * तनय 'सुदास' तासु कर नामा
विपुल वर्ष शासन सुखदाई * सुत 'दिलीप' शासन पुनि पाई
प्रबल प्रताप दिलीप[1] प्रकासा * सुत सम पालि प्रजा दुखनासा
तनय एक 'रघु' नाम बखाना * जनक[2] सरिस विक्रम बलवाना
रघु-बल अतुल निरखि नरनाहा * अश्वमेध कर उठेउ उछाहा[3]
छाँड़िउ यज्ञ तुरंग महीपा * जहँ-तहँ जात, सुदूर, समीपा
तुरग जीति लौटउ दिग्देसा * सफल याग तब, कहत नरेसा
रघु युवराज दिलीप प्रनामी * सुभटन सहित बाजि[4] अनुगामी
सफल याग, सुरपुर अधिकारी * होय दिलीप, इन्द्र भय भारी
हे विरञ्चि ! कस करिय ? विधि कहेउ, अश्व हरि लेहु ।
विफल दिलीप उछाह करि, सुरपति अनँद लेहु ॥८७॥

दिलीपेर अश्वमेध यज्ञ

सौदास गेलेन आयु शेषे स्वर्गस्थले * हइलेन सुदास भूपति भूमण्डले
सुदास करेन राज्य अनेक वत्सर * दिलीप हइल राजा राज्येर उपर
दिलीपेर नन्दन हइल रघुराजा * पुत्रेर समान पाले पृथिवीर प्रजा
एतेक दिलीप राजा महाबलवान * तद्रूप हइल पुत्र पितार समान
पुत्रेर विक्रम देखि भावे मने मन * अश्वमेध यज्ञ करिलेन आरम्भन
घोड़ा राखिबारे नियोजिलेन रघुरे * येखाने सेखाने यावे निकटे कि दूरे
घोड़ा दिया दिलीप कहिल तार ठाँइ * यज्ञ पूर्ण काले येन एइ घोड़ा पाइ
घोड़ा राखिबारे रघु करिल पयान * सङ्गेते चलिल तुल्य योद्धा बलवान
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि * अश्वमेध करि राजा लबे स्वर्गपुरी
किसे निवारण हय बल कृपा करि * विरिञ्चि बलेन तार घोड़ा लओ हरि
अश्व विना राजा यज्ञ करिते ना पारे * चलिलेन इन्द्र घोड़ा चुरि करिबारे

१ सूर्यवंश में एक ही परम्परा में सौदास के पिता और उन्हीं सौदास के प्रपौत्र, दोनों का नाम 'दिलीप' कृत्तिवासी रामायण में उल्लिखित है, जो भ्रम-जनक है। मालूम नहीं किसी पुराण में ऐसा ही वर्णन है, अथवा अन्य कृत्तिवास के बाद यह लिखने-छपने की भूल है।
२ पिता । ३ उत्साह । ४ घोड़ा ।

राजा रघु की दान-कीर्ति

पुन्य दिलीप विश्व चहुँ छाजा * रघुहिं राजु दै स्वर्ग विराजा
करि पितु श्राद्ध द्विजन हित अर्पन * अखिल कोष किय शेष[1] यशोधन
असन-वसन[2] हित द्रव्य न लहहीं * माटी बासन[3] नृप बैपरहीं
सुनहु कथा, कश्यप मुनि गेहा * बसत शिष्य वरदत्त सनेहा
दिवस अनेक अध्ययन कीना * चौसठ कला भयेउ सुप्रवीना
विदा काल नत प्रणवत माथा * गुरु-दच्छिणा देहुँ का नाथा
अधिक न कोटि चतुर्दस सुवरन[4] * दै मोहिं उरिन होहु द्विजनन्दन
चकित अमित सुनि सुवरन भारा * लहौं सु किमि ? मन सोच कुमारा
पुन्यवान रघु अवध प्रतापा * तिन पहँ माँगि मेटु संतापा

सुनत सीख गुरु सन, अवधि[5] सात दिवस पुनि लीन्ह ।
किय पयान, हिय थिर न, द्विज दरस अवधपुर कीन्ह ॥४६॥

विप्र निसेध[6] न रघुपुर कतहूँ * अन्तःपुर प्रविसेउ, नृप जहहूँ

रघु राजार दान-कीर्ति

दिलीप राजत्व करे अयुत वत्सर * पुत्रे राज्य दिया गेल अमर नगर
पितृ श्राद्ध करिलेन रघु यशोधन * ब्राह्मणेरे दिल राजा यत छिल धन
अद्य भक्ष्य रघुराजा नाहि धन घरे * मृत्तिकार पात्रे राजा जलपान करे
वरदत्त नामे एक मुनिर नन्दन * कश्यप मुनिर ठाँइ करे अध्ययन
गुरुगृहे वसति करिल बहु दिन * चतु:षष्टि विद्याते से हइल प्रवीण
गुरुरे दच्छिणा दिते कहिल ताँहारे * कि दच्छिणा दिव गुरु आदेश आमारे
गुरु बले अल्प मागि कर विवेचना * चौषट्टी विद्यार देह चौद्द कोटि सोना
द्विज कहिलेन एइ असम्भव कथा * मने भावे एतेक सुवर्ण पाब कोथा
सबे बले रघुराजा बड़ पुण्यवान * ताँर ठाँइ आनि गिया मागि स्वर्णदान
सात दिवसेर तरे समय चाहिल * गुरु के कहिया शिष्य विदाय हइल
सात पाँच भाविया से निज आकिञ्चन * अयोध्यानगरे आसि दिल दरशन
ब्राह्मणे निषेध नाहि दुयारे रघुर * उत्तरिल गिया सेइ राज अंत:पुर

१ समाप्त । २ भोजन-वस्त्र । ३ बर्तन । ४ सुवर्ण मुद्रा । ५ मोहलत । ६ रोकटोक ।

दै द्विज वास, टेरि पुनि राजन * अवध प्रजा जे रहेउ महाजन
सुवरन चौदह कोटि जुटावहु * दसगुन तासु प्रात पुनि पावहु

एक कोटि लौं कनक प्रभु, नगर न तब अवसेस।
विवस प्रजा वानी-विनय, सुनि अनमने[1] नरेस ॥५०॥

तेहि अवसर नारद मुनि आये * आसन अर्घ वन्दना पाये
हे नृपमणि ! कस वदन मलीना * रघु द्विज-कथा निवेदन कीना
चहत आजु द्विज, सो किमि लहहीं * मुदित देवरिषि रघु सन कहहीं
पठइ सन्देस कुबेर भुआला * लहहु बैठि गृह धन यहि काला
नारद गमन, इतै रघुराजा * सजे अवधपुर बाजे बाजा
सुभट अमात्य[2] स्वसैन बुलावा * सजेउ कटक, दुंदुभी बजावा
सुनेउ कुबेर घोष कैलासा * तासु दूत[3] नित अवध निवासा
पूँछत चहुँ, कित कटक सम्हारा ? * मद-कुबेर भञ्जन पग धारा

एत बलि ब्राह्मणे राखिल निज घरे * आपनि जिज्ञासा करे साधु सदागरे
चौद्दकोटि सोना धार येवा दिते पारे * चौद्दश कोटि कालि शुधिब ताहारे
जोड हात करिया कहिछे प्रजागण * तोमार नगरे नाइ एक कोटि धन
हेंट माथा करि राजा भाविल विपद * हेन काले तथा मुनि आइल नारद
पाद्य अर्घ्य दिल राजा बसिते आसन * मुनि बले केन राजा विरस वदन
राजा बले महाशय शुन बलि कथा * ब्राह्मण चाहिल धन आजि पाब कोथा
लागिलेन हासिते नारद महामुनि * इहार उपाय कहि शुनह आपनि
बल कालि कुबेरे करिब सम्भाषण * घरे ते बसिया पावे यत चाह धन
तार परे गेलेन नारद तपोधन * अयोध्या नगरे राजा बाजाय बाजन
आज्ञा करिलेन राजा पात्र मित्रगणे * सबे साज जाइब कुबेर सम्भाषणे
कटक साजिल बाजे दुन्दुभि बाजन * कैलासे कुबेर ताहा करेन श्रवण
कुवेरेर दूत छिल अयोध्या-भुवने * जिज्ञासा करिल सब पात्र मित्रगणे
पात्र सब बले कि बेडाओ शुधाइया * प्रमाद पड़िबे कालि कुबेरे लइया

---

१ चिन्तित। २ मन्त्रिगण। ३ राजदूत, एम्बेसेडर—सेना के प्राचीन काल में एम्बेसडर की व्यवस्था की झलक कृत्तिवासी रामायण में अनूठी है।

सुनत दूत कैलाश सिधायेउ * तहँ नारद कुबेर ढिग[1] पायेउ
चढ़ेउ साजि दल रघु नरनाहा * अस अचेत धनपति[2] न निवाहा
चौदह कोटि हेम[3] संकल्पा * परवस नृप न कनक पुर स्वल्पा
सुमति दूत, सिख मानि मुनीसा * सुवरन अमित दीन धनईसा
कनक सहित चर[4] अवध सिधावा * रघु प्रताप-जस चहुँ दिसि छावा
भेंट कुबेर लीन सन्मानी * द्विज हित सकल देन मनमानी
काल हाथ धरि, मुख 'हरि' भाषा * रत्ती अधिक न मम अभिलाषा
चौदह कोटि लीन गिनि कञ्चन * सो लदवाइ चलेउ द्विजनन्दन

कनक-राशि-युत शिष्य लखि, गुरु अति अचरज लीन।
पुण्य रूप रघु दान-यश, विरद[5] शिष्य बहु कीन ॥५१॥

गहन अरण्य[6] वास मुनि संका * हरैं प्रान-धन दस्यु[7] निसंका
इन्द्र समीप अमानत[8] धरहीं * यज्ञकाल सोइ लै वैदरहीं
गुरु आयसु[9] द्विज द्रव्य असेसा * सहित चलेउ जहँ बसत सुरेसा

शुनिया चलिल दूत धाइया अमनि * कैलासे नारद गिया कहेन तखनि
कि कर कुबेर तुमि निश्चिन्त वसिया * तोमार उपरे रघु आसिछे साजिया
सुवर्ण नाहिक रघु राजार भाण्डारे * चौदकोटि स्वर्ण विप्र चेयेछे ताँहारे
एत यदि वलिल नारद महामुनि * कुबेर वलेन आमि पाठाब एखुनि
स्वहस्ते कुबेर धन दिलेन गणिया * दूत गिया भाण्डारेते दिल फेलाइया
विनय कहेन रघु ब्राह्मण कुमारे * भाण्डार सहित स्वर्ण दिलाम तोमारे
श्रीविष्णु वलिया मुनि स्पर्शे दुइ कान * चौद्दकोटि मात्र लब ना लइब आन
चौद्दकोटि स्वर्ण तारे दिलेन गणिया * शत शत जने बोझा दिलेन बान्धिया
शिष्येरे आनिते देखि चौद्दकोटि सोना * गुरु वले एत धन दिल कोन जना
शिष्य वले रघु राजा बड़ पुण्यवान * करिलेन तिनि चौद्द कोटि स्वर्ण दान
मुनि वले थाकि आमि गहन कानने * धन हरि दस्युगण वधिबे जीवने
एइ धन राख ल'ये इन्द्रेर भाण्डारे * यज्ञकाले धन आनि देय ये आमारे
काञ्चन लइया गेल इन्द्रेर सदने * सम्भ्रमे उठिल इन्द्र देखिया ब्राह्मणे

---

१ समीप। २ धन के स्वामी, कुबेर। ३ स्वर्ण। ४ दूत, धावन। ५ प्रशंसा। ६ गहरा जंगल। ७ डाकू। ८ धरोहर। ९ आज्ञा।

बटु[1] सन्मानि भेंटि सुरनाथा * सुनी सकल पुनि सुवरन-गाथा
विप्र-सुवन दच्छिना पुरावा * पुष्कल[2] हेम[3] अवध जिमि आवा
सरिस कलपतरु रघु दिय दाना * दस्यु-त्रास सोइ तव ढिग आना
श्रवन हाथ धरि कहि पुनि 'रामा' * सम्मुख मम न लेहु रघु नामा
रैन न नींद, तासु भय पाई * खेतन अवध रखावहुँ जाई[4]
इतर धरौ कहुँ धन हे ब्रह्मन ! * नतरु निपातै रघु मम जीवन
सुनि वरदत्त वचन सुरनाहा * गुरु-आश्रम-पथ पुनि अवगाहा[5]
मुनि आयसु बहोरि सोइ कञ्चन * राखेउ ढिग कुबेर द्विजनन्दन
विहँसि कही धनपति कैलासा * जासु द्रव्य, आयो सोइ पासा
सुयश भूप रघु त्रिभुवन छावा * कृत्तिवास शुचि गाइ सुनावा

राजा अज का विवाह और दशरथ का जन्म

वर्ष सहस दस रघु किय राजू * मनमोहन 'अज' पुनि युवराजू

द्विज बले गुरु पाठाइलेन आमारे * रघुराजा स्वर्णदान दिल भारे भारे
राखह भाण्डारे महामुनिर से धन * एत बलि धन तथा राखेन ब्राह्मण
वासव बलेन बापू सत्य कह कथा * उञ्छवृत्ति करि सोना पाइलेन कोथा
द्विज बले दक्षिणा चाहिल स्वर्ण गुरु * आमारे दिलेन रघुराजा कल्पतरु
राम राम बलि इन्द्र काने दिल हात * रघुनाम ना करिओ आमार साक्षात्
निशाते ना याइ निद्रा रघुर भयेते * अयोध्या नगरे सदा भ्रमि क्षेते क्षेते
स्थानान्तरे निया प्रभु राख एइ धन * धनेर कारण रघु बधिबे जीवन
धन लैया वरदत्त गेल गुरुपाशे * गुरु बले राख निया पर्व्वत कैलासे
निजधन देखिया कुबेर मने हासे * गियाछे जाहार धन एल तार पाशे
रघु भूपतिर यश त्रिभुवन घोषे * रचिलेन आदिकाण्ड कवि कृत्तिवासे

अज राजार विवाह ओ दशरथेर जन्म

रघुराज्य करे दश हाजार वत्सर * अज नामे ताँहार तनय मनोहर

---

१ ब्राह्मण । २ ढेर का ढेर । ३ सुवर्ण । ४ दिलीप के अश्वमेघ यज्ञ के अवसर पर इन्द्र को बाँधकर रघु ने अयोध्या के राज्य मे वृष्टि और खेती की सुरक्षा की व्यवस्था का वचन ले लिया था । यह कथा पहले आ चुकी है । ५ ग्रहण किया ।

यौवन पग छवि सुत अवलोका * सौंपि राजु रघु गे सुरलोका
अज समान नहि इतर भुआला * पितु सम प्रजा करै प्रतिपाला
रति लजाय, रूपसि परम, इन्दुमती जेहि नाम।
माथुर-नृप तनया सुभग, अति लावण्य ललाम ॥५२॥
इच्छावर विवाह मन लीना * सकुच न नेक, प्रकट पितु कीना
सुता-स्वयंवर भूप उछाहा * नेउते चहुँ नरपति नरनाहा
पाय निमंत्रण माथुर देसा * चले सुभट वहु अवनि नरेसा
तजेउ न अवसर, तजि तजि धामा * जुरे सकल वल-रूप-ललामा
अवधभूप अज सभा विराजा * मनो वृन्द-पशु छवि मृगराजा
पौत्र-दिलीप, सुवन-रघु नाहर * एक छत्र छिति तपत गुनागर
सजी स्वयंवर सभा विमाला * विनय कीन लखि नृपन भुआला
मम गृह सुता दान हित एका * आनहुँ सभा, सुनौ सविवेका
जासु कण्ठ अर्पित वरमाला * सोइ मम अतिथि गहै कर वाला

देखिया पुत्रेर राजा प्रथम यौवन * पुत्रे राज्य दिया गेल वैकुण्ठ-भुवन
अजेर समान राजा नाहिक संसारे * पुत्रेर समान राजा पालेन सवारे
माथुर राजार कन्या इन्दुमती नाम * परमा सुन्दरी सेइ लावण्येर धाम
इच्छावरी हइते कन्यार गेल मन * कहिल पितार अग्रे ना करि गोपन
स्वयम्वरा हइते आमार आछे मन * सकल राजारे आन करि निमंत्रण
यत यत महाराज एइ धरा वासे * माथरेर निमंत्रणे सवे येन आसे
प्रथम यौवन सवे देखिते सुन्दर * सकले आइसे केह ना रहिल घर
अयोध्या हइते हैल अजेर गमन * सभामध्ये अज गिया वसिल तखन
पशुर मध्येते येन पशिल केशरी * वसिल सकल राजा अज मध्य करि
रघुर तनय अज दिलीपेर पौत्र * पृथिवीमण्डले जाँर एकदण्ड छत्र
वसिल करिया सभा यत राजगण * तखन माथर राजा करे निवेदन
एक कन्या दानयोग्या आछे मम घरे * आज्ञा कर सेइ कन्या आनि स्वयम्वरे
परिणामे द्वन्द्व येन ना हय घटन * तवे शीघ्र आनि कन्या एइ निवेदन
मम कन्या वरमाल्य दिवेन जाँहारे * सवारे विदाय दिया राखिव ताँहारे

विदा शेष नृप लै घर जाहीं * रारि-द्वन्द अवसर कछु नाहीं
राजन उजुर[1] न, आतुर वचना * सभा वेगि आनौ नृप ललना
सजी इन्दुमति वेनि[2] सँवारी * श्रुत कुण्डल कज्जल दृग डारी
ससि सम विमल, सुकुंकुम भाला[3] * पैज सिंगार विविध गर माला
जगमग छवि अति सुघर सुहावन * पुतरी कनक रची चतुरानन
सह सहचरिन चली गजगामिनि * मद मतंग सकुचत लखि भामिनि
चितवति इन्दुमती जेहि भूपा * सुधि न रहत लखि वदन अनूपा

पाय चेत,[4] निकसत वचन, जासु गरे वरमाल।
देय सुमुखि, सोइ सफल तन, सोइ धनि-धन्य भुआल ॥५३॥

कोउ कह मोहिं निरखत मृग अयनी * कोउ कह चहति मोहिं पिक-वयनी
जेहि नृप तजै बढ़ै पग वाला * रोवत धरनी लोटि वेहाला[5]
कस कुत्सित मम रूप निहारी * सुमुखि तजेसि मोहिं सोक मँझारी
पैज-पैज[6] तजि नृपन विलोकत * सुता बढ़ी जहँ रघुसुत सोहत

भाल भाल वलिल सकल राजगण * शीघ्र इन्दुमती आन करिया साजन
केश आँचड़िया तार बान्धिल कुन्तल * विविध पुष्पेर माला करे झलमल
कपाले सिन्दूर दिल नयने कज्जल * चन्द्रेर समान रूप अतीव विमल
सुचित्र विचित्र परे पायेते पाशुलि * विधाता गड़ेछे येन कनक पुतुलि
सहचरीगण सङ्गे चलिल घेरिया * मत्त गजपति रामा चलिल साजिया
जेइ जन करे इन्दुमती निरीक्षण * रूपेर मोहेते हरे ताहार चेतन
चेतन पाइया उठि वले नृपगण * ए कन्या ये पाइबे तार सार्थक जीवन
केह वले कन्या मोरे करे निरीक्षण * केह कहे कन्यार आमाते आछे मन
यारे पाछु करि कन्या करिल गमन * भूमेते पड़िया सेइ जुड़िल रोदन
कन्या कि कुत्सित रूप देखिल आमारे * आमारे छाड़िया सेइ भजिबे काहारे
एके एके देखिया यतेक राजगण * अजेर निकटे आसि दिल दरशन

---

१ उज्र, आपत्ति। २ वेणी, चोटी। ३ मस्तक। ४ होश। ५ खराब हालत मे। ६ पग-पग पर।

दारिद जिमि बहुअन सुख पावा ✻ हुलसि मालवर अज पहिरावा
इन्दुमती पुलकित गृह जाई ✻ चला व्यथित नृपयूथ लजाई
कानन बटुरि[1] मंत्रना करहीं ✻ केहि विधि प्रान भूप अज हरहीं
इत-उत बन लुकान[2] सब तहहीं ✻ अजहि निपाति इन्दुमति लहहीं
सुतादान माथुर इत कीना ✻ हय, गज, रथ, संपति बहु दीना
दिवस तीन आतिथि सन्माना ✻ अज-दंपति पुनि अवध पयाना
चला वेगि रथ, लै दोउ संगा ✻ कटक साथ अगनित चतुरंगा
अज सोवत, रथ बन-पथ आवा ✻ नृपगन घेरि पंथ किय धावा
मारु मारु बोलत चहुँ ओरा ✻ इन्दुमती संकट लखि घोरा
बचै कंत[3] किमि संसय लागी ✻ रुदन सुनत अज निद्रा त्यागी
अरिगर्जन न भीत[4] रनबंका ✻ निरखत तिय-मुख मलिन निसंका
अहह नाथ ! शत-शत भट योधा ✻ चहुँ दिसि पंथ घेरि अवरोधा

धन पेले हृष्ट येन दरिद्रेर मति ✻ गले माल्य दिया बले तुमि मम पति
वरमाल्य दिया यदि कन्या गेल घर ✻ यत राजा पलाइल लज्जायं कातर
बनेते बसिया सवे ह'ये एकमति ✻ वधिते अजेर प्राण करिल युकति
एखाणे सबाइ थाकि बने लुकाइया ✻ अजे मारि इन्दुमती लइव काड़िया
लुकाइया बने तारा रहे स्थाने स्थान ✻ हेथाय माथर राजा करे कन्यादान
कन्यादान करे राजा करिया कौतुक ✻ नानारत्न हस्ती अश्व दिलेन यौतुक
तिन दिन छिल राजा माथरेर घरे ✻ तारपर यान राजा अयोध्या नगरे
इन्दुमती सह रथे करे आरोहण ✻ कत सेना संगे रंगे चले अगणन
निद्राय कातर राजा चलितेछे रथ ✻ सेइकाले राजगण आगुलिल पथ
मार मार बलि सवे आगुलिल तथा ✻ इन्दुमती देखिया करिल हेंट माथा
केमने बाँचाब स्वामी कान्दे इन्दुमती ✻ से क्रन्दने जागिलेन अज महारथी
राजगण डाके ताहे भीत नहे मन ✻ मलिन देखिल इन्दुमतीर वदन
इन्दुमती बले नाथ कि भाव एखन ✻ देखना तोमारे घेरिलेक नृपगण

---

१ इकट्ठा होकर। २ छिप गये। ३ पति। ४ भयभीत।

हरन मोर, वध स्वामि तव, अधमन मिलि मत कीन ।
महारथी रघु-तनय सुनि, भामिनि धीरज दीन ॥५४॥

सुमुखि ! सोच तजि होहु अनन्दा * सायक एक हनौं अरि-वृन्दा
गहौं इतर सर सत्रु-सँहारन * तौ रघु आन, अस्त्र धिक् धारन
चढ़ेउ चाप, स्यन्दन अज सोहा * खल नृपगन मन उपजेउ छोहा[1]
छत्रप विपुल ! सो तृण करि जाना * अज गंधर्वबान सधाना
व्यापे तीन कोटि गधर्वा * अभिरे नृपति परस्पर सर्वा
सर अमोघ[2] जनि आनि उपाऊ * सकल मरे कटि जे नरराऊ
सहित प्रिया पुनि चलि नरनाहा * आये अवध अतीव उछाहा[3]
अज-तन प्रान इन्दुमति ताकर[4] * धारेउ गर्भ विगत कछु वासर
गत दस मास प्रसव शिशु कीना * शशि जिमि जनमि अवनि छवि दीना
काम सरिस गुन रूप निहारी * दशरथ नाम तनय कर धारी
दशरथ विरद वरनि नहिं जाई * जाके सुवन राम रघुराई
दशरथ जनम कथा सुखकरनी * कृत्तिवास मञ्जुल इमि वरनी

शत शत राजा आछे पथ आगुलिया * आमारे काड़िया लवे तोमारे मारिया
अज वले प्रसन्न करह प्रिये मुख * एकबाणे सबे मारि देखह कौतुक
एक बाण विना यदि दुइ बाण मारि * रघुर दोहाई तवे वृथा अस्त्र धरि
एत वलि धनु लैया रथे दाण्डाइल * अजे देखि राजगण भावितेलागिल
शत शत भूपतिरे करि तृण ज्ञान * एड़िलेन अज से गन्धर्व्व नामे बाण
एक बाणे हइल गन्धर्व्व तिन कोटि * आपना आपनि मरे करि काटाकाटि
गन्धर्व्व बाणेते रण नाहिं जाय आँटा * एक बाणे राजगण सबे गेल काटा
सेइ सब राजगणे युद्धेते मारिया * अयोध्याते गेल अज इन्दुमती निया
अज राजा तनु तार प्राण इन्दुमती * हइलेन किछु काल परे गर्भवती
दश मास गर्भ हैल प्रसव समय * हइल तनय येन चन्द्रेर उदय
रूपे गुणे देखि येन अभिनव काम * दशरथ वलिया राखिल तार नाम
आमि दशरथेर कि कैव गुण ग्राम * यार पुत्र हइलेन आपनि श्रीराम
कृत्तिवास पण्डित कवित्वे विचक्षण * गान दशरथेर उत्पत्ति विवरण

---

१ क्षोभ । २ अचूक । ३ उमग । ४ अज और इन्दुमती दोनो परस्पर जीवन-प्राण थे ।

दशरथ का राज्याभिषेक

किंशुकवन, जहँ द्वादस मासा * सुत सोवाय दोउ मगन विलासा
इत रत-केलि हास-परिहासा * उत नारद कहुँ गमन अकासा
पारिजात माला खसि[1] वीना * गिरत रानि-तन परसन[2] कीना
छुवत माल सो तजेउ सरीरा * विलखत अज, दृग नीर, अधीरा
रुदन अकथ, विलपत अतिव, मिटत न हिय संताप ।
पारिजात पुनि परसि तहँ, तजेउ प्रान नृप आप ।।५५।।
नर्त-नर्तकी सुरपुर वासी * भये साप वस धरनि-निवासी
चले युगुल पुनि सुरपुर वासा * तजि दसरथ सुत द्वादस मासा
जनक-जननि विरहित शिशु देखी * मुनि वशिष्ठ हिय सोच विशेषी
पञ्च वर्ष सिखयेउ गृह राखी * सविधि शास्त्र सुतहित अभिलाषी
पितु पद[3] गहि, गुरु आयसु माना * परशुराम किय आयुध[4] दाना

दशरथेर राज्याभिषेक

एक वर्ष वयस्क यखन दशरथ * पुत्रे शोयाइया दोंहे साधे मनोरथ
पुष्पवने क्रीड़ा करे हास्य परिहास * नारद चलिया यान उपर आकाश
पारिजात माला छिल ताँहार वीणाय * वातासे उड़िया पड़े इन्दुमती गाय
पारिजात यखन हइल परशन * इन्दुमती छाड़िलेन तखनि जीवन
प्राण छाड़ि इन्दुमती गेल स्वर्गधाम * काँदे अज नयनेते वारि अविराम
कत वा कहिव सेइ राजार विलाप * ना पारे सहिते इन्दुमतीर सन्ताप
सेइ पारिजात मारे आपनार गाय * दुइजने मुक्त हये स्वर्गपुरे जाय
नर्त्तक नर्त्तकी छिल दोंहे स्वर्गपुरे * शाप भ्रष्टे जन्मिया छिलेन भूमि परे
दुइ जन यखन गेलेन स्वर्ग पथ * एक वर्ष वयस्क तखन दशरथ
पिता माता अल्प काले मरिल दुजन * देखिया चिन्तित ये वशिष्ठ तपोधन
लेया गेल सेइ पुत्र आपनार घरे * पड़ाइल नाना शास्त्र शास्त्र-अनुसारे
पञ्चवर्ष हइलेन वयस्क यखन * लइलेन आपनि पैतृक सिंहासन
भृगुराम मुनि तारे अस्त्र दिल दान * शिखाइल यत्न करि शब्दभेदी बाण

१ खिसककर । २ स्पर्श । ३ पिता का स्थान, राजसिंहासन । ४ अस्त्र ।

शब्दवेध किय अस्त्र-प्रवीना * वयस पञ्चदश नृप पग दीना
लोकपाल पितु सरिस धनुर्धर * तपत राजु जिमि प्रबल पुरंदर

दशरथ के साथ कौशल्या का विवाह

सूर्यवंश दशरथ महराजा * सकल प्रशंस सर्वगुन साजा
अधिप महीपन के, नरनाहा * वर्स तीस नहिं रचेउ विवाहा
सो सुभ घड़ी अवधि सजि आई * कोशलपुर नृप कोशलराई
सुता तासु कौशल्या नामा * सोच 'वयस'[1] लखि बढत ललामा
प्रोहित द्विज बटोरि पुनि राजन * कौशल्या-वर जोगु विचारन
गवनहिं विप्र अवध तत्काला * विनवहिं मम संवाद भुवाला
तुम समान वर धरनि न दूना * हरषि जासु कर देहुँ तनूना[2]
लै संवाद चले द्विजराई * सत्वर[3] अवधपुरी नियराई
लखि सोइ, दसरथ कीन प्रनामा * दै असीस प्रगटत द्विज नामा

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर * पुत्र तुल्य पाले प्रजा महा धनुर्द्धर
राजार वयस हैल पनर वत्सर * आदि कोण्डे रचे कृत्तिवास कविवर

दशरथेर सहित कौशल्यार विवाह

दशरथ महाराज जन्म सूर्यवंशे * सर्व्व गुणेश्वर राजा सकले प्रशंसे
राज चक्रवर्ती राजा सवार उपर * विवाह ना हय वय. त्रिंशत् वत्सर
दैवेर घटने हैल राजार निर्ब्बन्ध * हेन काले घटे तॉर विवाह सम्बन्ध
कौशलेर राजा कौशल दण्डधर * कौशल्या नामेते कन्या आछे तॉर घर
कौशल्यार रूप राजा देखिया मूर्च्छित * कारे कन्या दिव वलि राजा सुचिन्तित
पुरोहित ब्राह्मणेरे कहिल सत्वर * दशरथे आनिवारे याह द्विजवर
आमार संवाद कह राजार गोचरे * कौशल्या नामेते कन्या दिव तॉर करे
तॉहा विना कौशल्यार वर नाहि आन * सुखी हव दशरथे करे कन्यादान
संवाद लइया विप्र चलिल सत्वर * शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्या नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम * आशीष करिया कहे आपनार नाम

---

१ उम्र। २ कन्या। ३ शीघ्र ही।

मैं द्विज-कोसलनाथ, सुता तासु अति रूपसी।
देन चहत तव हाथ, सो पठयेउ संवाद नृप ॥५६॥

नहिं तव रूप आन[1] दिग्देसा * तुमहिं वरन नृप चाउ[2] विसेसा
करौ अनुग्रह कोसलदेसू * सुनत वचन द्विज, अवध-नरेसू
बोलि सचिव सुहृदन मत कीना * निज-सूने[3] सासन तिन दीना
स्यन्दन साजि सारथी आना * सैन-सहित किय नृपति पयाना
नाचति विद्याधरी समाजा * तुरही, भेरि, झाँझ, बहु बाजा
सहस पचास मृदंग बजावा * तीनि कोटि सिंगी-रव[4] छावा
शंख कोटि अरु घण्टा जाला * अगनित बजत भरंग रसाला
डफ, महनाइ, सुढोल दमामा * तबल घोष जयटोल ललामा
घन सम गर्जत नाद कराला * महाप्रलय, छिति-व्योम[5] बिहाला[6]
तुमुल[7]-विराट बजत चहुँ बाजा * आयो कोशल, अवध-समाजा

कोशल देशेते घर राज पुरोहित * तोमारे लइते राजा करे नियोजित
परमा सुन्दरी कन्या आछे तॉर घरे * कौशल्या नामेते कन्या दिवेन तोमारे
तव तुल्य रूप आर नाहि कोन देशे * तोमारे दिवेन तिनि मनेर आवेशे
राजार संवाद एइ जानानु तोमारे * विवाह करेते चल कोशल आगारे
एतेक शुनिया राजा सवाद वचन * पात्र वर्ग लैया राजा करेन मन्त्रण
यावत् विवाह करि नाहि आमि घरे * तावत् पालह राज्य अयोध्या-नगरे
रथ लैया योगाइल रथेर सारथि * सेनागण संगे राजा चले शीघ्रगति
नाना वाद्य वाजे नाचे विद्याधरीगण * तुरी भेरी झॉझरी ता ना जाय गणन
पाखोयाज पञ्चाश सहस्र परिमाण * तिन कोटि शिङ्गा वाजे अति खरशान
वाजे तिन कोटि शङ्ख आर घण्टाजाल * भोरङ्ग सहस्रकोटि शुनिते रसाल
सहस्र सानाई वाजे डम्फ कोटि कोटि * तिन सहस्र दामामा घन पड़े काटि
तबल विशाल वाद्य वाजे जय ढोल * महा प्रलयेर काले येन गण्डगोल
वाद्यभाण्ड महाभाण्ड करिल प्रचुर * रथ वेगे गेल राजा कोशलेर पुर

१ दूसरा। २ चाहना। ३ अपनी अनुपस्थिति में। ४ शोर। ५ पृथ्वी-आकाश सर्वत्र। ६ हलचल पूर्ण। ७ घोर कोलाहल।

दसरथ गर डोलत वरमाला * लखे लाजवश सौम भुवाला
वरै आनि किमि सुता सयानी * निज-निज गेह चले कहि बानी
कैकय नृप किय कन्यादाना * बहु मनि रतन द्रव्य सन्माना
दासी निपुन मंथरा साथा * लै कैकई अयोध्यानाथा
चले वेगि पुनि साजि तुरंगा * सैन सहित नृप प्रमुदित अंगा

राजा दशरथ के साथ सुमित्रा का विवाह और राजा के सदा स्त्री से लिप्त रहने के कारण राज्य पर शनिदृष्टि तथा उसके निवारणार्थ इन्द्र पर चढ़ाई

कौशल्या-कैकइ युग[1] भामा * क्रीड़ा-रत महीप अविरामा
नृप सुमित्र सिंहल-अधिकारी * सुता सुमित्रा छवि उजियारी
कहँ वर लहौं सुजोग कुमारी * मन सुमित्र नित करै विचारी
सारभौम दशरथ जग जाना * दनुज-गँधर्व जासु भय माना
द्विज बुलाय दिय नृप आदेसा * आनहु दसरथ अवध-नरेसा

धन पाइले तुष्ट येन दरिद्रेर मति * गले माल्य दिया बले तुमि हओ पति
दशरथ भूपतिर गले माल्य दोले * लज्जाय नृपतिगण माथा नाहि तोले
राजगण बले कन्या बड़ विचक्षण * दशरथ थाकिते वरिबे कोन जन
राजगण परस्पर करिया सम्मान * विदाय हइया गेल निज निज स्थान
कन्यादान करे राजा परम कौतुके * मन्थरा नामेते चेरी दिलेन यौतुके
माणिक मुकुता राजा पाइया विस्तर * अश्ववेगे निज देशे चलिल सत्वर
कैकेयी लइया राजा आसे निज देशे * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवासे

राजा दशरथेर सहित सुमित्रार विवाह ओ राजार सर्व्वदा स्त्री ससर्गे थाकाते राज्ये शनिर दृष्टि ओ अनावृष्टि निवारण जन्य इन्द्रेर निकट रणयात्रा

कौशल्या कैकेयी एइ सपत्नी उभय * उभये लइया क्रीड़ा करे महाशय
सिंहल राज्येते से सुमित्र महीपति * सुमित्रा तनया तॉर अति रूपवती
कन्यारे देखिया राजा भावे मने मन * कन्या योग्य वर कोथा पाइब एखन
राज चक्रवर्ती दशरथ लोके जाने * राक्षस गन्धर्व्व कॉपे यॉर नाम शुने
ब्राह्मण डाकिया राजा कहिल सत्वर * दशरथे आन गिया अयोध्यानगर

[1] दो।

हरषि विप्र नृप आयसु माना * कीन अवध दिसि वेगि पयाना
अज सुत निरखि विप्र सन्माना * दे असीस, सो करत बखाना
सिंहलपति-प्रोहित, सोइ[1] काजा * आयेउँ लेन हेत महराजा
सुता सुमित्रा परमा रूपा * सिंहल करत अलोक[2] अनूपा
मञ्जुल छवि अतुलित दिग्देसा * हरषि देन तोहिं चहत नरेसा
अकथ रूप सुनि प्रमुदित दसरथ * वरौ सुमुखि अविलंब मनोरथ

सजे भूप आखेट-मिस[3], वनिता-युगुल[4] अजान।
बाजन बाजे, सदल बल, सिंहल कियो पयान ॥५६॥

नृप-आगम सिंहलपति जानी * पाद अर्घ्य बहु विधि सन्मानी
दसरथ रूप सराहत लोगू * राजसुता विधि[5] वर दिय योगू
नंदीमुख आदिक सुभ कर्मा * हरषि दोऊ पालत कुलधर्मा
दम्पति दीठि[6] परस्पर डारी * दोउ छवि वसुन्धरा उजियारी
सय्या सुमन साँझि किय सयना * अलसभरे नृप झपके नयना

राजार आज्ञाय द्विज चलिल हरिषे * शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्यार देशे
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम * आशीष करिया द्विज कहे निज नाम
सिंहल देशेर आमि राज पुरोहित * तोमारे लइते राजा आमि उपस्थित
राजकन्या सुमित्रा से परमा सुन्दरी * तॉर रूपे आलो करे सिंहल नगरी
समरूप राजकन्या नाहि कोन देशे * तोमारे दिवेन राजा परम हरिषे
शुनिया कन्यार कथा हृष्ट दशरथ * हइते सुमित्रा पति हैल मनोरथ
कौशल्या कैकेयी पाछे जाने दुइजन * मृगयार छले राजा करिल गमन
नाना वाद्ये दशरथ चले कुतूहले * उत्तरिल गिया राजा नगर सिंहले
वार्त्ता शुनि हरषित सिंहलेर राजा * पाद्य अर्घ्य दिया तॉर करिलेन पूजा
देखि दशरथेर लावण्य मनोहर * लोक बले विधि दिल कन्यायोग्य वर
नान्दीमुख करि दोंहे विशेष हरिषे * दुइजने वृद्धि श्राद्ध करे अवशेषे
गोधूलिते दुइजने शुभदृष्टि करे * दोंहाकार रूपे आलो वसुमती करे
कुसुमशय्याय राजा शयन करिल * निद्रार अलसे प्राय अचेतन हैल

---

१ उन्हीं के। २ आलोक, प्रकाश। ३ शिकार के बहाने। ४ दोनो रानी (कौशल्या कैकेई)। ५ विधाता। ६ दृष्टि।

भोर भूप उठि शय्या त्यागी * दिये नेग परजन अनुरागी
यौतुक[1] लहेउ भूप मनमाना * प्रमुदित दीन विविध बहु दाना
दोउ नरेस किय बागबिदाई * सतिय चढ़े रथ कोमलराई
छवि नववधू निरखि नहिं धीरा * काम-अनल नृप अबुध सरीरा
स्यन्दन-उपर रमन युग करहीं * कालरात्रि अनुचित अनुमरहीं
कालनिसा परसत जो नारी * परति नारि दुर्भाग विचारी
आनि[2] सुमित्रा अवध, नरेसा * अन्त:पुर किय पुलकि प्रवेसा
कौशल्या-कैकयि दोउ भामा * सोचैं लखि छवि रूप ललामा
संकर पूजि गौरि मन गावैं * मंगल नित सौमित्रि मनावैं
रानि तीन विलसत महिपाला * सुख सासन बीतेउ अतिकाला
सुत कर मुख न लखेउ नरनाहू * किय सत सप्त पचास विवाहू

बहु वनितान निकेत नृप, जिनहिँ प्रमुख पद दीन।
कौशल्या, कैकय सुता, अरु सुमित्रजा तीन ॥६०॥

शय्या छाडि उठे दशरथ नृपवर * शय्यार उत्थान कौड़ि दिलेन विस्तर
बासिबिया सेइ स्थाने कैल दशरथ * यौतुक पाइल बहुधन मनोमत
बिदाय हइल राजा राजार साक्षाते * सुमित्रा सहित राजा चड़े निज रथे
सुमित्रार रूपे राजा मदने मोहित * अधैर्य्य हइया राजा हइल मूर्च्छित
विलम्ब ना सहे आर करे इच्छाचार * रथेर उपरे राजा करेन शृङ्गार
बासि बिया परदिन हय कालराति * स्त्री पुरुष एक ठाँइ ना थाके संहति
कालरात्रे ये नारी के करे परशन * से स्त्री दुर्भागा हय ना हय खण्डन
सुमित्रा लइया राजा आनि निज देशे * अन्त पुरे प्रवेशिल परम हरिषे
कौशल्या कैकेयी तारा राणी दुइजन * सुमित्रार रूप देखि भावे मने मन
निरबधि सेवे तारा पार्व्वती शङ्कर * सुमित्रा दुर्भागा ह'क एइ मागे वर
तिन रानी लैया राजा आछे कुतूहले * सुखे राज्य करे बहुकाल भूमण्डले
पुत्रहीन महाराज मने दु:ख दाह * करिलेन सात शत पञ्चाश विवाह
सात शत पञ्चाशेर मुख्य तिन राणि * कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सतिनी

---

१ दहेज । २ लाकर ।

तिन, छवि अतुल सुमित्रा न्यारी ॥ जगमग करत अयोध्या सारी
कालनिमा अपराध, विचारी[1] ॥ तबहुँ, भई मन-भूप उतारी[2]
प्राणाधिक कैकई सनेहा ॥ बसते भूप निसिदिन सोइ गेहा
तीनिहुँ भाग सराह न जाई ॥ सबन गर्भ जन्मे हरि[3] आई
मगन भूप इत सुख-संभोगू ॥ अनावृष्टि उत अवध कुयोगू
वृष,-रोहिणी दीठि शनि डारी[*] ॥ पावस[4] हरन अमंगल कारी
भोग विलास नारि संभाषण ॥ रत;[5] पुर विपति न अवगत[6] राजन
सोइ अवसर नारद मुनि आये ॥ आसन भूप पूजि बैठाये
सुनौ मुकुटमणि आगम-हेतू ॥ कहौं कथा, सुनि होहु सचेतू
इन्द्र वृष्टि पोषत संसारा ॥ तब पुर जल बिन सोक मँझारा
तैं कामिनि मन रत निसिबासर ॥ भोगत नरक प्रजा दुखसागर

तार मध्ये सुमित्रा ये परमा सुन्दरी ॥ तोँर रूपे आलो करे अयोध्या नगरी
हेन स्त्री दुर्भागा हैल राजार विषाद ॥ कालरात्रि दोष हैल एतेक प्रमाद
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे ॥ दिवारात्रि दशरथ तारे लैया थाके
ए तिनेर भाग्य कत वर्णिब सम्प्रति ॥ या सबार गर्भे जन्म लबेन श्रीपति
सतत थाकेन राजा सुखेर सागरे ॥ दैवे अनावृष्टि हैल अयोध्या-नगरे
रोहिणी वृषेते हैल शनिर गमन ॥ ते कारणे वृष्टि नाहि हय वरिषण
कौतुके थाकेन राजा भार्य्या सम्भाषणे ॥ राज्येते प्रमाद हैल इहा नाहि जाने
सकल अयोध्या राज्ये हइल आपद ॥ हेन काले आइलेन तथाय नारद
पाद्य अर्घ्य देन राजा वसिते आसन ॥ मुनिर करिया पूजा वसिल राजन
नारद बलेन नृप करि निवेदन ॥ आइलाम तोमारे करिते विज्ञापन
इन्द्रेर वृष्टिते बाँचे सकल संसार ॥ तव राज्ये अनावृष्टि दुःख सबाकार
कामिनी लइया राजा करितेछ सुख ॥ नरके पड़िला प्रजागण पाय दुःख

---

१ बेचारी, दीन । २ उपेक्षित, मनउतरी । ३ गमादिक चार बन्धुओं में प्रगट होनेवाले नारायण । ४ वर्षा । ५ लीन । ६ भिज्ञ, जानकार ।

* वृष राशि स्थित रोहिणी नक्षत्र पर शनिश्चर की दृष्टि पडने पर अकाल योग होता है, यह ग्रथकार का कथन है ।

किय न अकाज काहु मुनि ज्ञानी * निन्दति प्रजा बुद्धि बौरानी
पुरजन भोगत दुख निज कर्मा * लेपति किमि मम अंग अधर्मा
वर्षा छीन हेतु सुनु ताता * वृष-रोहिणी दृष्टि शनि पाता
सोइ कारन तव प्रजा दुखारी * चले नृपहिं कहि वीनाधारी
आवा चेत, साजि रथ राजा * चले लेन सुधि प्रजा-समाजा

लखे उतर[1], आकुल सकल, जलचर, खग, पसु वन्य[2]।
नदी, ताल, नद, बड़े सर, जलबिन शुष्क अरन्य[3] ॥६१॥

साँझ भई तरु-तर नृप वासा * शाखा, शुक-सारिका निवासा
कछु निसि बीति नींद भइ भगा * कह विहंग इमि सोक-प्रसंगा
कह सारिका, वास बहुकाला * गत नित करत उपास[4] कराला
रविकुल-राजु न दुख कहुँ लेसा[5] * सो कस पाप ? दुसह दुखदेसा
चौदह वर्ष असन[6]-जल हीना * पावस रहित, न फल तरु दीना
सर सरिता, नद वारि विहीना * नृप पुरजन-हित चित तजि दीना

राजा बले कारे आमि नाहि करि दंड * कि कारणे मन्द मोरे बल राज्यखण्ड
दुःख पाय प्रजागण निज कर्म्मफले * कोन दोषे प्रजागण मोरे मन्द बले
नारद बलेन शुन नृप चूडामणि * रोहिणी नक्षत्रे दृष्टि दिया गेल शनि
एइ हेतु अनावृष्टि हइल राज्येते * प्रजागण दुःख पाय एइ कारणेते
एत बलि करिलेन नारद गमन * रथे चढि राज्य देखि वेड़ान राजन
गेलेन उत्तर दिके गहन कानन * जलजन्तु देखे राजा पशु पक्षिगण
नद नदी देखे राजा ताहे नाहि जल * दीघि सरोवर देखे शुष्क से सकल
वेला अवसाने राजा बसे वृक्षतले * शारी शुक पाखी आछे सेइ वृक्षडाले
शेष रात्रि हइल पक्षीर निद्रा भाङ्गे * पक्षिणी कहिल कथा पक्षिराज सङ्गे
बहुकाल हइल मोरा एइ वनवासी * आर कत पाब कष्ट नित्य उपवासी
सूर्यवंश राज्ये कभु दुःख नाहि जानि * चौद्द वर्ष अनाहार नाहि पाइ पानि
अनावृष्टि कारणे वृक्षेते नाहि फल * नदनदी सरोवर ताहे नाहि जल

१ उत्तर दिशा। २ जंगली। ३ जंगल। ४ लंघन, फाका। ५ लवलेश, जरा भी। ६ भोजन।

नारि-लिप्त निसि दिवस नरेसा * क्षुधा असह, शुक चलौ विदेसा
प्रिया ! सुनौ, कह शुक मृदु बानी * सीख न तव मैं रुचिकर जानी
सतयुग सों वन बसत मप्रीती * पीढ़ी मम पचास इत बीती
हमहि[1] न दुख, दुख सब जग छावा * निरखि विषाद स्वयं नृप पावा
जेहि थल जनम, मरन सोइ देसा * तब सिख उचित न त्याग स्वदेसा
कह सारिका सुनौ शुक बाता * पापराज बसि प्रान निपाता
श्वास रुद्ध जलबिन गत प्राना * चलि तट सिंधु करैं जलपाना
युगुल पच्छि जिमि व्यथा बखाना * सुनि दसरथ तरुतर निज काना
असत[2] न कहेउ तपोधन बानी * खग निन्दति प्रतच्छ दर्सानी
इन्द्र लबार,[3] बचन थिर नाहीं * कहनि-करनि[4] प्रतिकूल दिखाहीं

बाँधि इन्द्र राखे अवध, रघु पितु जनक स्वधाम ।
कटे फन्द दीने वचन, पावस सतत ललाम ॥६२॥

पकरि इन्द्र पुनि, धरि जनि लाऔ * तौ दसरथ-अजसुत न कहावौं

भूपति पालिते राज्य चेष्टा नाहि करे * रात्रि दिन स्त्री लइया थाके अन्तःपुरे
कष्ट पाइ आर कत थाकि अनाहारे * अतएव चल प्रभु जाइ स्थानान्तरे
पक्षीराज बले प्रिये शुन मोर वाणी * तोमार वचने कि छाडिब अरण्यानी
सत्ययुग हैते मोर एइ वने वास * गोंयाइनु एइ वने पुरुष पञ्चाश
मोर दुःख नहे दुःख हयेछे संसारे * एइ दुःखे आछे राजा दुःखित अन्तरे
एइ खाने जन्म मोर एखाने मरण * तोर बोले छाड़िते नारिब एइ वन
पक्षिणी बलये पक्षी शुन विवरण * पातकीर राज्ये थाकि हाराबे जीवन
जल विना श्वासगत व्याकुलित प्राण * समुद्रेर तीरे गिया करि जलपान
एइ कथावार्त्ता तारा कहे दुइजने * वृक्ष तले थाकि ताहा दशरथ शुने
राजा बले नारदेर वचन प्रत्यक्ष * पक्षी मोरे निन्दा करे पेये उपलक्ष
बुझिलाम इन्द्रराज बड़इ चतुर * मुखे एक कहे से अन्तरे करे दूर
मम पितामह सेइ रघुनाम धरे * इन्द्रे आनि खाटाइल अयोध्यानगरे
तबे आजि हय मम दशरथ नाम * इन्द्रे रे बान्धिया आनि यदि निज धाम

---

१ केवल हम पर ही । २ मिथ्या । ३ झूठा, बकवादी । ४ कहने और करने मे ।

रजनी विगत, प्रभात अलोका * दुखित भूप, दोउ विहँग विलोका
कह शुक सुनु सारिका अपावन * अधम पच्छि, किमि निन्दति राजन
सुनेउ सकल दसरथ निज काना * सब्दवेध सर हरहिँ पराना
प्रान-मोह खग मन अति त्रासा * लिये डिम्ब[1] उड़ि चले अकासा
भुज उटाय नृप विहग बुलावा * पुनि प्रबोधि मृदु वचन सुनावा
अन्त न जाहु तजौ भय-संका * सुख मन मानि बसौ तरु-अंका[2]
दोस न लेस[3] तोर खगरानी * लहेउँ चेत[4] सुनि तव मतवानी
कटहल-आमादिक जे, कानन * खगन-अधीन कीन ते राजन
चले हेलि स्यन्दन सुरलोका * सभा अमरगन[5] भूप विलोका
रन हुंकार गर्जि महराजा * कहौ अमरगन कित सुरराजा
पुनि-पुनि समर हेत ललकारा * पूछेउ देव क्रोध कस धारा
तुम सन रारि[6] न सुरपति भावा[7] * अनावृष्टि, नृप, जोगु सुनावा
चौदह वर्ष अवध जल नाहीं * उपज न अन्न जीव बिलखाहीं

रजनी प्रभात करे राजा मनोदु:खे * प्रभात हइले राजा दुई पत्ती देखे
पत्ती बले पापिनी पत्तिणी शुन वाणी * राजारे निन्दिला केन हइया पत्तिणी
से सकल दशरथ शुनियाछे काने * शब्दभेदी बाणे राजा मारिबे पराणे
पत्तीर पराण फाटे एतेक बलिया * डिम्ब लये ठोंटेते आकाशे उठे गिया
पत्ती पलाइया जाय पाइया तरास * ऊर्द्ध बाहु करि राजा करेन आश्वास
दशरथ बले पत्ती ना पालाओ डरे * फिरिया आसिया बैस वासार उपरे
स्त्री वाक्ये अपराध नाहिक तोमार * तोमार वचने ज्ञान हइल आमार
एइ वने यत आम्र काँठालेर भार * आजि हैते दिलाम तोमारे अधिकार
पत्ती सम्बोधिया राजा राखि वासा घरे * आपनि गेलेन परे इन्द्रेर नगरे
स्वर्गेते पाइया राजा देवेर समाजे * कोथा इन्द्र बलिया डाकेन देवराजे
तर्जन करेन दशरथ महाराज * रणं देहि रणं देहि कोथा सुरराज
देवेरा बलेन राजा क्रोध कि कारण * तव सङ्गे वासव ना करिवेक रण
भूपति बलेन मम राज्ये नाहि वृष्टि * अनावृष्टि हेतु मोर नष्ट हैल सृष्टि

---

१ अण्डे-बच्चे । २ वृक्ष की गोद मे । ३ जरा भी । ४ होश । ५ देवताओ की । ६ झगडा । ७ पसद ।

विनसत सृष्टि विकल जलहीना * नर, पसु, पच्छि, विटप, जलमीना
पावस विन, नित सहत कलेसा * सकल करत अपमान नरेसा

कै सुवृष्टि वरसैं जलद, अवध चराचर लोक।
हरषैं, नतरु[2], न दोष मोहिं, लहौं जीति सुरलोक ॥६३॥

चले अमरगन जहँ सुरनाथा * सविधि वरन किय दसरथ-गाथा
काज कौन? सुरपुरी प्रवेसा * मनुज न भय! किमि? कहेउ सुरेसा
अहंकार तजि सुनौ पुरंदर[3] * नहिं निस्तार[4] भूप सन सङ्गर[5]
शव्दवेध संधान प्रवीना * इत रन मनहुँ प्रान उत दीना
मिटै न जव लौं नृप मन-तापा * तिन सन करौ मधुर संलापा
सुरन-सीख सुरपति हिय आनी * पाद अर्घ्य दसरथ सन्मानी
भूपति कहेउ, सुनहु सहसानन * मम पुर अनावृष्टि केहि कारन
नृप रोहिणी दीठि शनि डारी * कारन अजल[6] कहेउ असुरारी
करौ निवारन तासु नरेसू * महावृष्टि सरसै तव देसू

मम राज्ये वृष्टि नाहि हय कोन काजे * अनावृष्टि हेतु यत प्रजागण मजे
चौद्द वर्ष अनावृष्टि नाहि हय धान * प्रजागण दुःखे मोरे करे अपमान
सुवृष्टि करिया सृष्टि राखुन सम्प्रति * नतुवा जिनिया लव ए अमरावती
एतेक शुनिया यान यत देवगण * इन्द्रके कहेन तॉर सव विवरण
वासव वलेन राजा एलो कि कारणे * मनुष्य हइया निन्दे शङ्का नाहि मने
देवेरा वलेन इन्द्र त्यज अहङ्कार * राजार युद्धे ते कार' नाहिक निस्तार
शव्दभेदी वाण राजा शव्द मात्रे हाने * तार सने युद्ध करि मरिवे आपने
यावत् मनेते राजा नाहि पाय ताप * राजार सहित कर मधुर आलाप
देवतार वाक्य इन्द्र नाहि करे आन * पाद्य अर्घ्य दिया तॉर करेन सम्मान
करिलेन दशरथ करि सम्वोधन * मम राज्ये अनावृष्टि हय कि कारण
वासव वलेन राजा शुन एक चिते * पड़िल शनिर दृष्टि रोहिणी नक्षत्रे
छाड़ाइते पार यदि रोहिणीते दृष्टि * हइवे तोमार देशे तवे महावृष्टि

---

१ या तो। २ नहीं तो। ३ इन्द्र। ४ पार पाना। ५ समर, युद्ध। ६ वर्षा का अभाव।

पाय प्रथम कुदीठ निस्तारा * सकेउ जो नृप आगम यहि वारा
सारभौम रविकुल-मणि राजन * जन्मैं तव निकेत नारायन
धर्मरूप ! सोइ हेत नृप, मम मक दीठे निवार[1] ।
नतरु[2] दीठ-शनि परत छन, सकल होत जरि छार ।।६५।।
तासों मोरि कुदीठ निवारी * आवौ भृति घूमे पछारी
सुनौ कथा, धरि ध्यान, पुरातन * जिमि गनेस पायउ गज-आनन
सुनेउ जनम-सुत गौरि-निकेता * जुरे सकल सुर दरसन हेता
देव-समाज न शनि अवलोका * कहत, न रवि-सुत, देवि ! विलोका
उमा दूत पठयेउ मम वामा * आयसु पाय चलेउँ कैलासा
परत दीठि मम सुवन-गिरीसा[3] * लखेउ सवन उत शिशु विन सीसा
देव अवाक् शंभु मन चिन्ता * पारवती उर ताप अनन्ता
जस के तस, न सभा कोउ त्यागी * मम सुत सीस हरन को भागी[4]
कहत अमरगन हे जग-जननी * असुभ दीठि शनि कै यह करनी

शनि बले दशरथ आइले आवार * तुमि से आमार दृष्टे पाइले निस्तार
दशरथ तुमि सूर्य्यवंशेर भूषण * लवेन तोमार घरे जन्म नारायण
राज-चक्रवर्ती तुमि धर्म अवतार * ते कारणे मोर दृष्टे पाइले निस्तार
मुदिया नयन शनि दशरथे बले * सम्मुख छाड़िया तुमि एस पृष्ठमूले
कोपदृष्टे सुदृष्टे याहार पाने चाइ * शरीरेर काज थाक हैया जाय छाइ
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन * येमते शिवेर पुत्र हैल गजानन
जन्मिलेन गणपति गौरीर नन्दन * देखिते गेलेन तथा यत देवगण
देवगण बले देवी तोमार आदेशे * आइल सकल देव शनि ना आइसे
दूत पाठाइया दिल आमार गोचर * देखिते गेलाम पुत्र कैलास शिखर
शुभ दृष्टे गिया येइ मुखपाने चाइ * सवे बले गणेशेर मुण्ड देखि नाइ
ता देखिया देवगण हइल विस्मित * पार्व्वतीर मनोदु:खे महेश चिन्तित
पार्व्वती बलेन हेथा आछे देवगण * आमार पुत्रेर मुण्ड निल कोन जन
देवगण बलेन शुनह विश्वमाता * शनिर दृष्टिते भस्म गणेशेर माथा

---

१ वच निकलना । २ नही तो । ३ शिव के पुत्र गणेश । ४ जिम्मेदार ।

सुनि सकोपि शनि-वध मन ठानी * लै त्रिशूल हुंकरीं भवानी
चहुँ, शनि फिरत, न आश्रय पावा * सुरन बीच लुकि, प्रान बचावा
चण्डि-कोप, कर शूल कराला * निरखि देवगन हाल-बिहाला
विनवैं, अगम, अकथ तव दाया * आदिशक्ति, जगगति, जगमाया
शनि कुदीठ भव सीस विहीना * कौतुक वर माता तव दीना
सोइ वर, वरदायिनि विपरीता[1] * शनिवध उचित न मातु प्रतीता
स्वयं सिर्जि पुनि ताहि निपाती * तासु त्रान जगती केहि भाँती

विनय गौरि सन कीन विधि[2], शनिवध कतहुँ न हेत।
धरौ धीर, गनपति वदन[3], सिरजौं, करौं सचेत[4] ॥६६॥

चलेउ पवन विधि आयसु पाई * लखेउ अबुध सोवत गजराई[5]
उतर-सीस[6] जल गंग अघाना[7] * निरखि मरुत[8] अवसर मनमाना
काटि भाल-गज आनि बहोरी * नर-तन, मुख-कुञ्जर इमि जोरी

देवतार वाक्य शुनि रुषिया भवानी * आमारे वधिते यान लये शूलपाणि
पलाइया याइ आमि स्थान नाहि पाइ * देवतार आडालेते तखनइ लुकाइ
शूल हस्ते आइलेन देवी महाकोपे * पार्व्वतीर कोप देखि देवगण काँपे
सकल देवतागण करिछे स्तवन * आपनि सृजिया शनि मार कि कारण
तुमि आद्याशक्ति माता जगतेर गति * तोमार महिमा बले काहार शकति
आपनि दियाछ वर परम कौतुके * शनि यारे देखे तार माया नाहि थाके
पाइया तोमार वर तोमाते परीक्षा * तुमि यदि मार तारे के करिबे रक्षा
शनिके मारह केन विधाता बलेन * स्थिर हओ जीयाइब तोमार नन्दन
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा तबे पवनेरे * मुण्ड काटि आन येबा उत्तर शियरे
गङ्गा नीर खाइया इंद्रेर ऐरावत * उत्तर शियरे शुयेछिल निद्रागत
काटिया ताहार मुण्ड आनिल पवन * रक्तमांसे जीयाइल हैल गजानन
शरीर नरेर मत वदन करीर * देखिया हइल बड दुःख पार्व्वतीर

१ शनि को स्वयं भगवती से यह वरदान प्राप्त था कि उनकी दृष्टि में आते ही वस्तु नष्ट हो जाय। अब उसका प्रयोग उन्हीं के पुत्र पर हो जाने से, उन्हें अपने ही दिये वर के विपरीत, शनि पर कोप न करना चाहिये। इस प्रकार विनम्र देवताओं ने निवेदन किया। २ ब्रह्मा। ३ मुख। ४ प्राणयुक्त। ५ ऐरावत। ६ उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर। ७ तृप्त। ८ पवन, वायु।

रूप विहंगम तनय त्रिलोका * कस गजनदन ? गौरि मन सोका
आनि-देव-सुत-छबि मन मोहा * निज नन्दन निरखत मन छोहा
विधि विधान दै, पुनि समभावा * तव सुत आदि - पूज-पद पावा
तजि गजवदन, इतर सुत धावैं * धर्म, लोक - परलोक नसावैं
ऐरावत इत सीस विहीना * निरखि अपार इन्द्र दुख कीना
उच्चैः श्रवा - दन्तिपति हीना * किमि सुरपति सुर-राज विहीना
अनिल[1] बहोरि विरञ्चि पठावा * श्वेत मतग[2] पछिम सिर पावा※
जोरेउ ताहि गजेन्द्र सरीरा * गजपति जियत, इन्द्र गत पीरा
बन्दि गौरि, पुनि सहित मतंगा * सुरपति चले सुरन लै संगा
गनपति जनम कथा शनि बरनी * दसरथ सुनौ दृगन मम करनी
तैं मानव पुनि-पुनि पग धारा * किमि संभव कुदृष्टि निस्तारा
मैं रविसुत, तैं रविकुल जाया * मोइ कारन निवरेउ[3] नृपराया

सकल देवेर पुत्र देखिते सुन्दर * गजमुख बसिबेक ताहार भितर
विरिञ्चि बलेन करि गणेशेरे राजा * आगे गणेशेर पूजा पिछे अन्य पूजा
गणेश थाकिते येवा अन्य देवे पूजे * पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सब काजे
ऐरावत मुखे जीयाइल लम्बोदर * हस्तीर शोके कान्दि कहे पुरन्दर
उच्चैःश्रवा घोडा आर ऐरावत हाती * ए सब सम्पदे मम नाम सुरपति
आज्ञा करिलेन चतुर्म्मुख पवनेरे * मुण्ड काटि आन येवा पश्चिम शियरे
पश्चिम शियरे शुये श्वेत हस्ती यथा * पवन काटिया आनि दिल तार माथा
प्राण पेये ऐरावत गेल निज घरे * हेलाय आलस्य नाइ पश्चिम शियरे
देवीरे प्रणाम करि गेल देवगणे * गणेशेर जन्म शनि कहिल राजने
शुभदृष्टे कोपदृष्टे यार पाने चाइ * आमार दृष्टिते केह रक्षा पावे नाइ
मनुष्य हइया तुमि एस बार बार * सूर्य्यवंशे जन्म हेतु पाइले निस्तार
सूर्य्यवंश जात आमि सूर्य्येर कुमार * एक वंशे जन्म तेंइ पाइले निस्तार

---

१ पवन । २ हाथी । ३ बच सके हो ।

※ श्वेत हस्ती के पश्चिम दिशा की ओर शिर रखकर सोने पर शिरच्छेद होने के कारण पश्चिम की ओर शिर करके सोना वर्जित है ।

जो जानौं तव आगम हेतू * पूरन करौं भानु-कुल-केतू

तव लोचन रोहिनि ग्रसित, विकल धरा, जल-हीन।
भूप-मनोरथ जानि शनि, मुक्त रोहिणी कीन ॥६७॥

तजि विषाद गृह जाहु नरेसू * पावस[1] अतुल झरइ तव देसू
तव यश भूप त्रिलोक प्रकासी * जब जहँ रोहिनि गृह वृष रासी
तहाँ न शनि आगम सोइ काला * लहि रविसुत[2]-वर, तोप[3] भुवाला
दसरथ चले जहाँ सुरराजा * तहँ विराज विच देव समाजा
गाथा, शनि-प्रसाद जिमि पावा * सकल सुरपतिहिं भूप सुनावा
बोले वचन देव मन हर्षा * सात दिवस अविरल[4] जल वर्षा
घन वरसैं तव धाम नरेसा * यथाकाल पावस तव देसा
पाय मनोरथ इमि नृपराई * चले अवध मन मुद अधिकाई

दशरथ के द्वारा अन्धमुनि के पुत्र का वध

पुनि, 'आवर्त्त', 'द्रोण' अरु 'पुष्कर' * घन 'संवर्त्त' चारि जे जलधर&

कि कारणे आसियाछ तुमि मोर पाश * वर चाह तोमार पूराव अभिलाष
तखन वलेन दशरथ यशोधन * रोहिणीते तव दृष्टि नहे वरिषण
शनि वले आजि हैते छाडिव रोहिणी * अविलम्बे देशे चलि जाओ नृपमणि
आजि हैते तव राज्ये हवे वरिषण * घोषिवे तोमार यश ए तिन भुवन
रोहिणी वृषभ राशि हवे येइ जन * सेइ राज्ये हवे ना आमार आगमन
हइया सन्तुष्ट नृपे शनि दिल वर * चलिलेन राजा इन्द्र निकटे सत्वर
सभाते वसिया इन्द्र सह देवगणे * दशरथ वसिलेन ताँर एकासने
कहिलेन से सव वृत्तान्त पुरन्दरे * शनिके प्रसन्न करिलेन ये प्रकारे
शुनिया राजार कथा देवगण भाषे * एक्षणे हइवे वृष्टि याओ तुमि देशे
सात दिन वृष्टि सात झड न करिव * तोमार राज्येते जल यथाकाले दिव
विदाय हइया राजा गेलेन स्वदेशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

दशरथ कर्त्तृक अन्धमुनिर पुत्र-वध

अनुज्ञा करिल इन्द्र चारि जलधरे * सात दिन वृष्टि करे अयोध्या-नगरे

---

१ वर्षा। २ शनिश्चर। ३ तृप्ति। ४ लगातार।

& इन नामों वाले चार बादलों को अयोध्या में जल बरसाने की आज्ञा इन्द्र ने दी।

दिवस उपास[1] न किय जलपाना * असन[2] - नीर दै राखहु प्राना
दोउन गोहार[3], भूप मन त्रासा * संसय - वस न जात तिन पासा

राजा दशरथ को अन्धक मुनि का शाप

आगे बढ़त, हटत पिछलाहीं * सुत लखि मौन, अंध घबराहीं
जनक - जननि सन कस उपहासा * जोतिहीन - हिय जोति प्रकासा
धरत ध्यान कौतुक[4] मुनि देखा * धुनेउ सीस कर, रुदन बिसेषा
दसरथ ! तव - सायक सुत घाला * शव समीप आनौ नरपाला
"सुवन - विछोह[5] प्रान तव जाहीं * इतर शाप मुख निकसत नाहीं
पुत्र - शोक दारुन अनुतापा * भोगौ नृप, इमि अंध विलापा
तजब प्रान दोउ"; सुनि नरराई * शाप सरिस - वरदान[6] सुहाई
सत द्विज - वचन फलवती मंसा[7] * मरौं भले, निरखौं अवतंसा
विष्णु - तुल्य मुनि मोहिं प्रतीता * अमिट वचन तव, हर्ष अतीता

कालिकार उपवासी करिब पारण * फल जल दिया बापू राखह जीवन
दुइ जने डाक छाड़े राजार तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथेर प्रति अन्धकेर अभिशाप

देखि दुइ अन्धे राजा सन्देह अन्तरे * याइते नारेन अग्रे पाछु यान धीरे
कहिल अन्धक मुनि करिया विश्वाम * किवा माता-पिता सने कर उपहास
देखिते ना पाय मुनि वसिलेक ध्याने * सकल वृत्तान्त मुनि क्षणेकेते जाने
चक्षु भासे नीरे करे कराघात शिरे * वने राजा मारियाछे पुत्रे एक तीरे
मुनि बले एस दशरथ नरपते * मृत पुत्र आनिले आमाके देखाइते
आर किवा दशरथ शापिव तोमाके * एइ मत तोर प्राण जावे पुत्रशोके
पुत्रशोके मरिव आमरा दुइ प्राणी * पुत्रशोक ये यन्त्रणा जानिवे आपनि
मुनि शाप दिल यदि राजार उपरे * दशरथ कहिछेन प्रफुल्ल अन्तरे
शुभमस्तु मुनिवाक्य ना हइवे आन * देखिया पुत्रेर मुख जाय जावे प्राण
तोमा मुनि देखि येन विष्णुर समान * तोमार वचन सत्य होक नहे आन
तव शापे मुनि मम हरिष अन्तर * शाप नहे आमार हइल पुत्र-वर

---

१ लघन, उपवास । २ भोजन । ३ पुकार । ४ आश्चर्य । ५ वियोग । ६ वरदान के समान । ७ मनोकामना ।

सुत-वियोग किमि वर-सरिस ? लखेउ अंध धरि ध्यान ।
नृप-निकेत[1] जन्मैं स्वयं, कृपासिंधु भगवान ॥७१॥

मम वर[2] सत्य, गेह[3] तव भूपा * चारि अंस हरि जनम अनूपा
पुनि सोइ वचन शाप होइ लागी * पुत्र - विछोह मरौ तन त्यागी
ग्यारह वर्ष विलसि सुत चारी * सुत-सूने[4] तन तजौ दुखारी
द्विज कर शाप अकारथ नाहीं * लोचन तजेउँ कोप - मुनि माहीं
पूरुब[5] शाप - कथा मम राई * सुनौ, नैन जिमि जोति गँवाई
श्लीपद - पग त्रिजटा मुनि आये * पितु निकेत मम अलख जगाये[6]
पाद अर्घ्य पितु आसन दीना * कस द्विजनाथ आगमन कीना ?
भिक्षा हेतु, दिवस उपवासी * मुनिवर, मोहिं भोजन अभिलासी
विधिवत असन[7] अतिथि पितु दीना * सविनय विदा तपोधन कीना
कहेउ तात[8], हे सुत अनुसरहू * मुनि-पद वंदि दण्डवत करहू
पग स्थूल, घृणा, लखि जागी * लेउँ तासु रज किमि अनुरागी

अन्ध बले दशरथ वञ्चित सन्ताने * पुत्रशोके शाप दिनु वर करि माने
ध्यान करि जानिल अन्धक तपोधन * इहार घरेते जन्मिवेन नारायण
याह राजा तोमारे दिलाम आमि वर * चारि पुत्र तोमार हवेन गदाधर
मम शापे पुत्रशोके तोमार मरण * पुत्र हैल एकादश वत्सर जीवन
व्यर्थ नाहि हय कभु मुनिर वचन * मुनिर शापेते अन्ध आमार लोचन
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन * ये शापे हइल मम अन्ध ए लोचन
त्रिजटा मुनिर दुइ चरण डागर * मागिते आइल भिक्षा मम पितृघर
मुनिरे देखिया पिता उठिल तखन * पाद्यअर्घ्य देन तारे वसिते आसन
जिज्ञासा करेन ताँरे केन आगमन * मुनि बले आइलाम भिक्षार कारण
गतकल्य हते आमि आछि उपवासी * भोजन कराह मोरे तुम महाऋषि
अतिथि बलिया पिता करान भोजन * विदाय हइया मुनि यान तपोवन
पिता आसि आमारे कहेन सेइ काले * दण्डवत् करह मुनिर पद तले
गोदा पा देखिया तॉर घृणा हैल मने * एमन पायेर धूला लइब केमने

---

१ घर । २ वरदान । ३ गृह । ४ न होने पर । ५ पूर्व जन्म की । ६ परमात्मा के नाम पर याचना करना । ७ भोजन । ८ पिता ।

नयन मूँदि रज सीस चढ़ावा * 'एवमस्तु'[1] मुनि वचन सुनावा
कथन महर्षि अमिट फल दीना * भये अंध दृग जोति-विहीना
सोइ अपराध, दीठि-तिय लीना * गमन तपोधन कानन कीना
असिस[2] समान, शाप अनुकूला[3] * नृप तव गेह जनम जगमूला
सुफल सत्य पालन नरराई * रचौ यज्ञ ऋषि 'शृंग' बुलाई

श्रीफल पायेउँ बन फिरत, तव अर्पन नरनाथ।
चरु[4] दीन्हे फल दिव्य सों, प्रगटैं दीनानाथ ॥७२॥

करुन बैन पुनि अन्धक भाषा * लावहु सुत शव, कित नृप राखा ?
दसरथ धरी आनि मृत काया * लोटत छिति बिलखत मुनिराया
नैन विहीन, न निरखत देहीं * परसत कर, सुअंक भरि लेहीं
बहु तप किये, लहेउँ तोहिं ताता * जनक - जननि पालक तव घाता
पुरवत फल-जल क्षुधा-पिपासा * अंधक-नयन, अंधि कर आसा
गुरुनिन्दा कुतर्क अघमूला[5] * दधि-तन्दुल न असन प्रतिकूला[6]

लइलाम नयन मुदिया पद - धूलि * आशीर्वाद दिल मुनि एवमस्तु बलि
व्यर्थ ना हइल सेइ मुनिर वचन * इहाते हइल अन्ध आमार लोचन
सेइमत करिलेक आमार गृहिणी * दोंहारे करिया अन्ध घरे गेल मुनि
आमार शापेते राजा पाइले प्रमाण * शापे वर हइल हइबे पुत्रवान
एइ सत्य दशरथ करिबे पालन * ऋष्यशृङ्ग आनि कर यज्ञ आरम्भन
श्रीफल पेयेछि आमि भ्रमिते कानन * एइ फल करिलाम तोमारे अर्पण
एइ फले जन्मिबेन देव चक्रपाणि * चरुर भितरे एइ फल दिओ तुमि
पुनश्च कहेन मुनि तारे मृदु स्वरे * कोथा आछे सिन्धुपुत्र आनि देह मोरे
मृतपुत्र दशरथ दिलेन आनिया * पुत्र कोले करि मुनि कान्दे लोटाइया
नयन विहीन मुनि देखिते ना पाय * कोलेते करिया हस्त शरीरे बुलाय
जन्मिला ये पुत्र तुमि तपेर सञ्चारे * तोमार मरणे मृत्यु घटिल आमारे
अन्धेर नयन तुमि हये छिला जानि * फल दिते क्षुधाय तृष्णाय दिते पाणि
गुरुनिन्दा नाहि करि नहे सन्ध्यावाद * दधिर संयोगे रात्रे नाहि खाइ भात

१ ऐसा ही हो। २ आशीर्वाद। ३ माफिक। ४ यज्ञ के हवन के लिये तैयार किया अन्न या खीर। ५ पाप की जड। ६ दही-भात जैसे उलटे भोजन।

कत्रौं न मन दिय पाप-अचारा * निधन[1] अकाल सुवन कस डारा
कैधौं[2] बिगरि पुरातन करनी * सुत-बिछोह भोगत पितु जननी
'नारायण' कहि, सन्तति-सोका * तजि तन, मुनि गमनेउ हरिलोका
जीवन दुसह, सती पतिहीना * अन्धकि अन्ध-अनुगमन कीना
दसरथ लै पुनि, मृतक सरीरा * चन्दन अगरु चिता के तीरा
आस-पास पितु जननि सोवाये * बीच 'सिंधु'-शव भूपति लाये
उतर शीस-शव अनल लगाई * परसि नीर सर, अस्थि बहाई
लिये कंध मुनि-घातक पापा * गये अवध नृप, हिय संतापा
चले बहोरि वशिष्ठ निकेता * भेंट न, गुरु गमने तप-हेता
आश्रम, वामदेव गुरुनन्दन[3] * सकल कथा भूपति किय बरनन

मुनिकुमार-बध पाप सन, उबरौं कौन उपाय ?
गुरुनन्दन ! आयसु करौ, जासों पाप नसाय ॥ ७३ ॥

बध अकाल,[4] नृप पाप महाना * यज्ञ-दान कीने नहिं त्राना
शास्त्र पुरान मनीषि विचारी * वालमीकि जिन मंत्र उबारी[5]

पूर्व्वजन्मे कार कि करेछि विघटन * गुरुनिन्दा करेछि हरेछि स्थाप्यधन
एतेक बलिया मुनि नारायण डाके * नारायण मन्त्र जपि मरे पुत्रशोके
पतिव्रता नाहि जीये पतिर मरणे * अन्धकी छाड़िल प्राण अन्धकेर सने
तिन मृत ल'ये राजा गेल सरो रे * अगुरु चन्दन काष्ठ आनिल सादरे
करिलेन चिता राजा उत्तर शियरे * तिनजने शोयाइल ताहार उपरे
दुइजन दुइदिके पुत्र मध्यखाने * शोयाइल तिन जने वेष्टित आगुने
चिता प्रज्वालिया सेइ सरोवर तीरे * कान्दिया फेरेन राजा अयोध्यानगरे
मुनि हत्या करि राजा अजेर नन्दन * अमनि कान्दिया गेल वशिष्ठेर वन
गियाछेन वशिष्ठ तपस्या करिवारे * वामदेव पुत्र ताँर आछेन आगारे
सकल वृत्तान्त राजा कहिलेन ताँरे * मुनिहत्या करियाछि वनेर भितरे
प्रायश्चित्त इहार कराओ महाशय * कि रूपे हइव मुक्त किसे पाप क्षय
मुनि वले अकालेते नाहि यज्ञदान * एइ पापे केमने पाइवे परित्राण
विचार करये मुनि आगम पुराण * वालमीकि ये मंत्र जपि पाइलेन त्राण

१ मृत्यु । २ या, फिर । ३ वशिष्ठ के पुत्र । ४ आयुष्काल विना पूरा हुए । ५ उद्धार किया ।

राम नाम त्रय बार कहावा * सकल पाप सोइ नाम नसावा
पाप-छीन, गृह भूप सिधाये * साँझ वशिष्ठ तपोवन आये
फलाहार, सुस्थिर, मन मोदा * सुत-पितु रत दोउ वाग्-विनोदा
वामदेव पुनि अवसर पाई * कथा भूप-आगमन सुनाई
सुवन अंधमुनि सिन्धु बखाना * सब्दवेध दसरथ संधाना
अबुझ घात द्विज, नृप अतिदीना * नसै पाप किमि, याचन कीना
याग, दान, तप, यतन न भावा * तीनि बार नृप 'राम' कहावा
तपत तैल उफनत लहि बारी[1] * अनल-कोप मुनि गिरा उचारी
रसना[2] 'राम' एक पद लाई * कोटि घात-द्विज पाप नसाई
सो त्रय बार भूप मुख आनी * कस मम तनय ? निपट अज्ञानी
तजि वन, अधम श्वपच गति जाई * पितु-पग मुनिज[3] धरे अकुलाई
कहौ तात ! किमि शाप विमोचन ? * थिर न रोष वहु, कहेउ तपोधन
दसरथ अनघ[4] मंत्र दिय नामा * जनमैं अवध धाम सोइ रामा

तिन बार बलाइल सेइ राम-नाम * पाइलेन भूपति से पापेर विराम
राजा मुक्त हइया गेलेन निज घर * आइलेन संध्याय वशिष्ठ मुनिवर
फलमूल भक्षणे मुनिर सुस्थ मन * पिता पुत्रे कथा वार्ता कन दुइजन
पितारे कहेन वामदेव नीतिक्रमे * दशरथ आसिया छिलेन ए आश्रमे
अंधक मुनिर पुत्र सिन्धु बले यारे * मारिलेन राजा शब्दभेदि शरे तॉरे
दीनभावे कहिलेन राजा ए वचन * मुनिहत्या पाप मोर कर विमोचन
योगयाग स्नान दान नाहि करालाम * तिन बार राजा के बलानु रामनाम
जल फेलाइया येन दिल तप्त तैले * कुपिया वशिष्ठ मुनि पुत्र प्रति बले
एक रामनामे कोटी ब्रह्महत्या हरे * तिन बार रामनाम बलालि राजारे
मोर पुत्र हैया तोर अज्ञान विशाल * दूर हरे वामदेव हबिरे चण्डाल
लोटाइया धरिल से पितार चरण * केमने हइब मुक्त कह विवरण
ना थाके मुनिर मने कोप बहुक्षण * बलिलेन ताहारे वशिष्ठ तपोधन
येइ रामनाम तुमि बलाले राजारे * तिनि जन्मिबेन दशरथेर आगारे

---

१ उबलते तेल में जल पड़ने पर उफान आने के समान। २ जीभ। ३ मुनिपुत्र। ४ निष्पाप।

सुरसरि मग रघुनाथ विलोकी * परसहु पद-पंकज पथ रोकी
वामदेव, पितु सीख सुनि, श्वपच-योनि निस्तार[3]।
लियेउ जनम गुह-गेह, नित जोहत[2] अवधदुलार ॥७४॥

सम्बर असुर का वध

तपत इन्द्र सम दसरथ वीरा * संबर-असुर उतै सुर पीरा
वैजयन्ति अमरावति जीती * बसत न तहँ सुरवृन्द सभीती
यतन सोधि कछु कहौ विधाता * कह सुरेस, किमि दनुज निपाता
जो आनहु दसरथ रनबंका * सोइ कर[4] संबर-मरन न संका
स्वयं इन्द्र किय अवध पयाना * आसन-अर्घ्य भूप सन्माना
सुनौ अवधपति! सुरगन त्रासा * सुरपुर संबर दैत्य प्रकासा
जीति स्वर्ग, संकट मोहि डारी * तुम मम सुहृद सकौ सो टारी
तव सहाय, बध निसिचरनाथा * तव प्रसाद सुर होयँ सनाथा
सुरपति विदा, बजे रनबाजा * संबर-हित दसरथ दल साजा

गङ्गास्नाने रघुनाथ यावेन यखन * आगुलिओ पथ तुमि रामेर तखन
ताँहार चरणपद्म करिह स्पर्शन * तखनि हइवे मुक्त चण्डाल जनम
वनिलेन एइ रूप वशिष्ठ महामुनि * गुहक चण्डाल हैया रहिलेन तिनि
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व विचक्षण * आदिकाण्डे गाहिलेन अंधकोपाख्यान

सम्बर असुर वध

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर * हइल असुर स्वर्गे नामेते सम्बर
हइल सम्बर सर्व्व देवतार अरि * जिनिल अमरावती वैजयंतीपुरी
तार भये स्वर्गे देव रहिते ना पारे * महेन्द्र बलेन ब्रह्मा बाँचि कि प्रकारे
ब्रह्मा बलिलेन आन राजा दशरथे * असुर सम्बर मरिबेक ताँर हाते
आपनि आइल इन्द्र अयोध्या नगरे * पाद्य अर्घ्ये दशरथ पूजे पुरन्दरे
इन्द्र बले दशरथ तुमि मोर मित * ठेकेछि सङ्कटे रक्षा कर एइ हित
असुर सम्बर नामे तारे आमि हारि * खेदाड़िया देवगणे निल स्वर्गपुरी
आमार सहाय हैया यदि कर रण * तोमार प्रसादे तबे बाँचे देवगण
एतेक बलिया इन्द्र गेलेन स्वर्गेते * सम्बर मारिते तबे साजे दशरथे

---

१ मोक्ष पाने के लिये। २ रास्ता देखना। ३ अयोध्या के लाडले राम। ४ उन्हीं के हाथों।

साजु-साजु—चहुँ दिसि रणरंगा * मत्त-मतंग समीर-तुरंगा
मुद्गर मूषल कसत कमाना * स्यन्दन शूर सजत धनुबाना
ओर-छोर नहिं कटक अनन्ता * कटक धूरि नभ छुवत दिगन्ता
शिरस्त्राण[1] कञ्चुकि[2] हरि-मण्डा[3] * नृप साजे कर सर-कोदण्डा[4]
दिव्य तुरग सारथि रथ साजा * चलेउ पवनगति भूप-समाजा
चढ़े अवधपति संबर कारन * डगमग त्रिभुवन धीर न धारन
कौतुक चली अनी चतुरंगा * गज पैदर रथ-रथी तुरंगा

अमरावति उतरेउ कटक, दसरथ अवधमहीप।
निरखि सैन कोपेउ अतुल, संबर दनुज-अधीप ॥ ७५ ॥

बिन्धि सरीर, बान झर लाये * असुर, सैन सों नृप बिलगाये[5]
नृप असैन, सर कोपि चलावा * दानव-दल हनि विपुल नसावा
आयुध विविध वुन्द झरि लाई * गगन पाटि सर, पथ न लखाई

साज साज बलिया पड़िया गेल साड़ा * राहुत माहुत साजाइल हाथी घोड़ा
मुद्गर मूषल केह बान्धिल कामान * धानुकि साजिल रथे लये धनुर्व्वान
साजिछे कटक सब नाहि दिशपाश * कटकेर पदधूलि लागिल आकाश
गायेते परिल सोना माथाय टोपर * धनुर्व्वाण हाते राजा चलिल सत्वर
दिव्य अश्व योगाइल रथेर सारथि * रथे चड़ि दशरथ चले शीघ्र गति
सम्बरे जिनिते राजा करिल गमन * दशरथे देखिया काँपिल त्रिभुवन
चतुर्दोले चड़ि राजा चले कुतुहले * रथ रथी पदाति तुरंग हाती चले
उत्तरिल गिया राजा इन्द्रेर नगरी * देखिया राजार साजे क्रोधे देवअरि
दशरथे बाणे विंधे करिया जर्ज्जर * भंग दिल सेना राजा रहे एकेश्वर
कोपे काँपे दशरथ पूरिल सन्धान * अस्त्राघाते दैत्यसेना त्यजिल पराण
नाना अस्त्र वर्षण करेन दशरथ * छाइल अमरावती पवनेर रथ
सम्बरेर सेनागण समरे प्रखर * भूपतिर सेना विन्धे करिल जर्ज्जर
लक्षलक्ष बाण पूरे सम्बरेर सेना * पड़िलेक स्वर्गपुरी छाइया झञ्झना

---

१ फौजी टोप। २ कवच। ३ सुवर्ण से मढ़ा हुआ। ४ धनुष-वाण। ५ दशरथ को उनकी सेना से अलग कर दिया।

समर चटक दानव दल बीरा ※ अवध-भटन किय बिद्ध सरीरा
लख-लख अस्त्र, असुर बरसाये ※ सुरपुर नभ रञ्जित, चहुँ छाये
सर-गंधर्व भूप संधाना ※ अतुल अस्त्र त्रिभुवन नहिं जाना
सर उपजे त्रिकोटि गंधर्वा ※ मरहिं परस्पर कटि रिपु सर्वा
निसिचर सर निसिचर तकि मारी[1] ※ सकल दनुज एक बान सँहारी
राकम रुधिर-नदी उतराहीं ※ त्राहि-त्राहि संवर-दल माहीं
दसरथ रन बिछांय रिपु दीना ※ बचेउ दनुजपति सैनविहीना
तकि तकि बानवृष्टि दोउ करहीं ※ सरन पाटि सुरपुर दोउ लरहीं
सरमण्डित नभ, तम चहुँ ओरा ※ अलख[2] दैत्य गर्जन-रव घोरा
शब्दबेध परवीन बिशेखा ※ तिमिर-अलोप दनुज नहिं देखा
भावी प्रबल काल तेहिं घेरा ※ कछुक दूरि किय सोर घनेरा
शब्द ताकि नृप खैंचेउ चापा ※ सायक चलेउ अगिनि सम तापा
गिरेउ धरनि कटि संबर-माथा ※ कौतुक असुरघात नर-हाथा !

पड़िल गन्धर्व्व अस्त्र भूपतिर मने ※ एमत अस्त्रेर शिक्षा नाहि त्रिभुवने
एकबाणे प्रसवे गन्धर्व्व तिन कोटी ※ आपना आपनि रिपु करे काटाकाटि
आपना आपनि करे बाण बरिषण ※ एक बाणे पड़िलो सकल सेनागण
सम्बरेर सेना देय रक्ते साँतार ※ त्राहि त्राहि डाक छाड़ि करे हाहाकार
पड़िल सकल सेना दैत्य एकेश्वर ※ दशरथ बाणे सेना पड़िल विस्तर
दुइजने बाणवृष्टि करे झाँकि-झाँकि ※ उभयेर बाणेते अमरावती ढाके
हइल अमरावती बाणे अन्धकार ※ दैत्येर रणेते राजा ना देखि निस्तार
शब्दभेदी दशरथ शब्द शुने हाने ※ देखिते ना पाय दैत्य थाके कोनखाने
कालप्राप्ति दानवेर निकट मरण ※ दूरे थाकि दशरथे करिछे तर्ज्जन
सम्बरेर पेये शब्द राजा पूरे बाण ※ छुटिल राजार बाण-अग्निर समान
एड़िलेक बाण राजा तार शुने कथा ※ काटि पाड़े दशरथ सम्बरेर माथा
नर हैया मारिलेक असुर सम्बर ※ देव सह सुखे राज्य पाले पुरन्दर

---

१ गधर्व-बाण के प्रभाव से राक्षस स्वयं एक दूसरे को मारने लगे २ अदृश्य

सुरन सहित सुरपति सरग, बोलत हिय हर्षाय ।
माँगहु वर मनवाञ्छित, नृप ! तुम भयेउ सहाय ।। ७६ ।।

आनि न वर चाहौं सहँसानन * मेटौ पाप अन्धसुत-मारन
कहेउ इन्द्र हँसि, गवनहु देसा * सो अघ[1] तोहिं न लेस अवसेसा
अन्धक-कथा कुतूहल बरनी * जनक तासु द्विज, सूदिन जननी*

संवर के साथ युद्ध करने में हुए घावों को अच्छा कर देने पर
राजा का कैकेयी को वर देने की प्रतिज्ञा

मिटेउ छोभ सुनि, नृप गृह आये * सुहृद तात परिजनन सुहाये
प्रथम सर्व प्रिय कैकयि-धामा * अनुसुत सुखद लीन विश्रामा
अस्त्र-सजीवनि कला प्रवीना * कैकयि छत-सरीर[2] चित दीना
जल अभिमंत्रि भूप तन डारी * सुखद सकल सोइ व्यथा निवारी
सिथिल-गात पुनि जीवन आवा * कैकयि-जतन प्रान नृप पावा
तव समान प्रिय मोहिं न आनू[3] * मनवाञ्छित माँगहु वरदानू

इन्द्र बले दशरथ रक्षा कैले मोरे * वर माग दिव याहा प्रार्थना अन्तरे
दशरथ बले इन्द्र देह एइ वर * येन मुनिहत्या नाहि थाके ममोपर
शुनिया राजार कथा इन्द्रदेव हासे * से पाप तोमाते आर नाहि जाओ देशे
अन्धक मुनिर कथा अपूर्व्व काहिनी * ब्राह्मण ताँहार पिता शूद्राणी जननी
एतेक शुनिया दशरथ आसे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

सम्वर-सह युद्धे क्षत हओयाय कैकेयीर आरोग्य करिते राजार वर दिबार अङ्गीकार

पात्र मित्रगणे राजा दिलेन मेलानि * अन्तःपुरे दशरथ चलिल अमनि
सबार अधिक भालवासे कैकेयीरे * सेइ हेतु आगे गेल कैकेयीर घरे
अस्त्र सञ्जीवनी विद्या जानेन कैकेयी * देखिल राजार तनु अस्त्र-क्षतमयी
मन्त्र पड़ि जल दिल भूपतिर गाय * ज्वाला व्यथा गेल दूरे शरीर जुड़ाय
मृतदेहे येन पुनः आइल जीवन * सुस्थ ह'ये दशरथ बलेन तखन
हे कैकेयी प्राणरक्षा करिले आमार * तोमार समान प्रिये केह नाहि आर

---

१ पाप । २ घायल शरीर । ३ अन्य ।

* 'ब्राह्मण पर श्रद्धा' का यह अतिरेक है । शूद्रा से जन्मे अन्धमुनि का भी श्राप दशरथ को भोगना पड़ा—व्यर्थ नहीं हुआ । (हिन्दीकार)

नहिं अदेय, पूरन भण्डारू * धन सम्पदा अमित आगारू
नाम मंथरा, कैकयि केरी * कूवर भार पृष्ठ, सोइ चेरी
कूवर कुटिल बुद्धि कै रासी * कहेउ बोलाय, रानि, सोइ दासी
मुदित भुआल वचन वर दीना * मम हित कुमति कहौ परवीना
वचन-बद्ध भूपति करि लेहु * अवसर परे माँगि वर लेहू
दासि-वचन कैकयी प्रमाना * पुलकि भूप-ढिग कीन पयाना
नाथ आज वर मोहि न हेता * देहु वचन इमि कृपानिकेता

करौं विनय अवसर परे, मन-उपजी अभिलाप।
तब लौं वर सञ्चित रहैं, नरपति-वचन न माप ॥ ७७ ॥

सुमुखि! चहौ तब अवसर लागी * पुरवौं वचन प्रान लौं त्यागी
व्याध-फन्द मृग फसत अजाना * निरखि समाज-देव हरषाना
सोइ पितु-वर पालन वन जाई * कह विधि रावन-वध रघुराई
दसरथ-राज अनन्द घनेरा * सुख प्रतिपाल प्रजागन केरा

वर मागि लह येवा अभीष्ट तोमार * कोन धन भाण्डारेते नाहिक आमार
एत यदि बलिलेन राजा दशरथ * कैकेयी कुँजीके कहे वाक्य अभिमत
महाराज आमारे चाहेन दिते वर * किवा वर मागि लव ताँहार गोचर
पृष्ठे भार कुँजेर नाड़िते नारे देही * कुंज नहे ताहार से बुद्धिर चुपड़ि
कुँजी बले एक्षणे नाहिक प्रयोजन * इच्छा हवे जवे वर बलिव तखन
कैकेयी कुँजीर वाक्य ना करिल आन * हासिया कहिल राणी राजा विद्यमान
महाराज आजि वर नाहि प्रयोजन * यखन घटिवे कार्य्य मागिव तखन
आमार सत्यते बन्दी रहिले गोसाइ * प्रयोजन अनुसारे वर येन पाइ
नृपति बलेन दिव याह चावे दान * आछुक अन्येर काज दिव निज प्राण
कैकेयीर कपटे अमरगण हासे * ना जानिया मृग येन बन्दी हैल फासे
ए सत्य पालिते राम याइवेन वन * विरिञ्चि बलेन तवे मरिवे रावण
राज्य करे दशरथ हरिषत मन * करेन पुत्रेर मत प्रजार पालन
यखन या हवे ताहा दैवे सब करे * हइल राजार व्रण नखेर भितरे
कृत्तिवास कहे कथा अमृत समान * राम-नाम विना तार मुखे नाहि आन

दशरथ का नखव्रण अच्छा करने पर कैकेयी को दुबारा वर देने की प्रतिज्ञा

रिद्धि-सिद्धि भरपूर भुआला * नखव्रन[1] विथा उपज एक काला
कातर अतित्र दुसह व्रनपीरा * कहेउ बोलाय सुहृदगन तीरा
यहि कलेस मम मरन समीपा * लखत भानुकुल रहित - महीपा
तर्गहि सुवन-धन्वंतरि, नामा * 'पद्माकर' किय नृपहिं प्रनामा
मिटै व्यथा, नहिं संसय राऊ * वरनउँ ताकर युगुल उपाऊ
घृनारहित शामुक[2] रसपाना * करँइ स्वयं साधन हित - प्राना
नतरु आनि जन कोउ नृप हेता * नखव्रन-रक्त पूय, रस, जेता
मुख सन चूसि हरै नृपपीरा * कैकइ सुनेउ, वसत नित तीरा
पति विषाद, सो सतत[3] निहारी * अहिनिमि[4] सेये करत उपचारी
तिय-गति कतौं न पति विन, नाथा * चूसौं मुखव्रन, होउँ सनाथा
मम अधिकार, भूप मम - धामा * नखव्रन मुख धरि पुलकित वामा
रानि - सुधामुख परसत पीरा * विगत व्यथा, नृप स्वस्थ सरीरा

दशरथेर व्रण आरोग्य करिते कैकेयी के पुनर्व्वार वर दिते अङ्गीकार

व्रणेर व्यथाय राजा हइल कातर * पात्र मित्र आनि राजा वलिल सत्वर
ए व्यथाय बुझि मम निकट मरण * सूर्य्यवंशे राजा हय नाहि कोन जन
धन्वन्तरि पुत्र एक पद्माकर नाम * आसिया राजार काछे करिल प्रणाम
कहिलेन शुन राजा पाइवे निस्तार * दुइ मते आछये इहार प्रतिकार
शामुकेर भोल खाओ ना करिया घृणा * नहे नखद्वारे चुम्व दिक एकजना
रक्त पूये भरितेछे नखेर दुयारे * ताहाते चुम्वन दिते कोनजन पारे
कैकेयी राजार काछे दिवानिशि थाके * राजा यत दुःख पाय कैकेयी ता देखे
राजार शुश्रूषा राणी करे रात्रिदिने * कहिल कैकेयी राणी राजा विद्यमाने
स्वामी विना स्त्रीलोकेर अन्यनाहिगति * व्रणे मुखदिव यदि पाओ अव्याहति
यार घरे थाके राजा तार दाय लागे * कैकेयी चुषिल गिया दशरथ आगे
पाकिया आछिल सेइ नखेर वरण * मुखेर अमृत लागि गलिल तखन
सुस्थ हइलेन राजा व्यथा गेल दूरे * रक्त पूय फेलि देह वले कैकेयीरे

---

१ नाखून का घाव, विपहरी। २ घोंघा। ३ सदैव। ४ दिनरात।

" रुधिर-पूय तजि, सुमुखि ! लिय पान कपूर सुवास।
अन्य रानि तै, माँगु वर, मनवाञ्छित अभिलास ॥ ७८ ॥

दोउ वर धरहु अमानत[1] राई ※ याचहु सोइ पुनि अवसर पाई
दसरथ विहँसि अनुमती दीना ※ कृत्तिवास कृत गान प्रवीना

राजा दशरथ को पुत्र के लिए शृंगी ऋषि को बुलाकर यज्ञ करने की चिंता
तथा उक्त मुनि की उत्पत्ति-कथा

बहु वत्सर राजन-अधिराजू ※ एक छत्र सुरपति सम साजू
एक दिवस नृप सभा विराजा ※ परिजन सुहृद सगोत समाजा
मुनि अमात्य चहुँ सचिव सुहाये ※ सर्वाधिप वशिष्ठ तहँ आये
भूपति तहँ हिय-छोभ प्रकासा ※ गत अतिकाल, न सन्तति आसा
तर्पन, पिण्ड न गति-परलोका ※ बाद वंसरवि अस्त विलोका
नवम सहस मम आयु बितीता ※ तबहुँ न दरस तनय कर कीता
शाप-अंध[3] वर सरिस बताई ※ होय याग ऋषि शृंग बुलाई

कर्पूर ताम्बूल प्रिये करह भक्षण ※ वर लह याहा चाह दिब एइक्षण
कैकेयी बलेन शुनि राजार वचन ※ यखन मागिब वर दिओ हे तखन
दुइ बारे दुइ वर थाक तव ठाँइ ※ पश्चाते मागिब वर एखन ना चाइ
शुनिया राणीर कथा दशरथ हासे ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

दशरथ पुत्रेर जन्य ऋष्यशृङ्ग के आनिया यज्ञ करणेर चिन्ता ओ
उक्त मुनिर उत्पत्तिर-काहिनी।

राज्य करे दशरथ अनेक वत्सर ※ एकछत्र महाराज येन पुरन्दर
पात्र मित्र भाइ बन्धु सबाकारे आनि ※ वशिष्ठादि आइलेन यत महामुनि
सभा करि वसे राजा अमात्य सहिते ※ अति खेद करि राजा लागिल कहिते
इहकाले ना हइल आमार सन्तति ※ परकाले कि रूपे पाइब अव्याहिति
सन्तति थाकिले करे श्राद्धादि तर्पण ※ आमार मरणे वंशे नाहि एक जन
नवम हाजार वर्ष वयस हइल ※ एतकाले तबू मम पुत्र ना जन्मिल
वर दियाछेन श्रीअन्धक महामुनि ※ यज्ञ कर तुमि ऋष्यशृङ्ग मुनि आनि

---

१ धरोहर। २ वंशसूर्य। ३ अंधक मुनि का शाप।

तिन आगम पूरन मम कामा * कहौ किते शृंगीऋषि - धामा
गुरु वशिष्ठ कह, कोसलनाथा * सुनौ शृंगि ऋषि-उतपति गाथा
तपत विभाण्डक मुनि परतापा * तासु शाप-भय त्रिभुवन काँपा
मुनि तप अतुल, इन्द्र भय छावा * तप-विछेप[1] हित पवन पठावा
नीर-नर्मदा मुनि तपलीना * सोइ पथ गमन उर्वसी कीना
लखेउ गगन उर्वसी, समीरा[2] * करि उर जतन उघारेउ[3] चीरा
दैवयोग मुनि सोइ तन देखी * लगेउ पञ्चसर मोह विसेखी

रेतपात[4], लिय वाम कर, तजेउ न सरिता-नीर।
धरेउ कूल[5] ढिग रेत सोइ, आकुल सिथिल सरीर ॥ ७९ ॥

शुचि आचमन विभाण्डक कीना * भये तपोधन पुनि तपलीना
विधि रचना नहिं मिटै मिटाई * तृषित मृगी तहँ जलहित आई
पयत पानि, तट दूब हरेरी * लागि चरन, मन लोभेउ हेरी
तहँ मुनि-रेत घास लपिटानी * हरिनि-उदर सोइ चरत समानी
रेत-अहार, मृगी ऋतुकाला * धरेउ गर्भ विधिगती विसाला

ऋष्यशृङ्ग मुनिवर कोन देशे बसे * कार्य्य सिद्धि हय यदि सेइ मुनि आसे
कहिते लागिल ये वशिष्ठ महामुनि * शुनह ऋष्यशृङ्गेर उत्पत्ति काहिनी
विभाण्डक मुनि भये सर्व्वलोक काँपे * त्रिभुवन भस्म हय यदि मुनि शापे
ताँहार तपस्या देखि इन्द्र भावे मने * पाठाइया दिल इन्द्र देवता पवने
तपस्या करेन मुनि नर्मदार जले * ऊर्व्वशी चलिया जाय गगनमण्डले
अङ्गेर वसन तार वातासेते उड़े * दैवयोगे ताँर दृष्टि तारे गिया पड़े
ताहाके देखिया मुनि कामे अचेतन * मुनिर हइल रेतः पतन तखन
आस्ते व्यस्ते मुनि ताहा धरे वाम हाते * जले ना फेलिया रेतः फेलाय कूलेते
पुनर्ब्बार महामुनि करि आचमन * तपस्या करेन विभाण्डक तपोधन
विधिर लिखन कभु ना हय खण्डन * तृष्णाय हरिणी जल खाय सेइ क्षण
जल खेये हरिणी कूलेते घास चाटे * घासेर सहित रेतः सान्धाइल पेटे
दैवयोगे हरिणी आछिल ऋतुमती * मुनि वीर्य्य खाइया हइल गर्भवती

---

१ विघ्न। २ वायु। ३ हटा दिया। ४ वीर्यपात। ५ किनारे।

बढ़त गर्भ, पशुवत षटमासा ✻ मृगी कियो मनु प्रसवि प्रकासा
बन-बन फिरउँ मनुज-भय पाई ✻ सो रिपु-जनम गर्भ मम आई
गमनी वन, अनाथ, सिसु डारी ✻ चूसत अँगुरि रुदन पथ भारी
सोइ मग गमन विभाण्डक कीना ✻ रोवत सुवन दीठि मुनि दीना
निर्जन वन, शिशु गात निहारा ✻ हरिनि-बदन[1] अरु मनुज अकारा
धरत ध्यान सब लखेउ तपोधन ✻ आन[2] न हरिनि-गर्भ मम नन्दन
मुनि लै अंक गमन बन कीना ✻ सुत मधुपुहुप पोषि बल दीना
नूतन-कुश-कोमल सुत सयना ✻ दिन-दिन बढ़त महामुनि-अयना
शास्त्रनिपुन, छवि अतुल कुमारा ✻ शृंग गुल्म युग मस्तक धारा
शृंग समय गति उभरे भाला[3] ✻ सोइ विभूति ऋषि शृंग भुवाला
जासु शाप-बर अमिट प्रभाऊ ✻ सोइ-बर पुत्रवान भे राऊ

लोमपाद के राज्य में अनावृष्टि-निवारण के लिए ऋष्यशृंग का लाया जाना

कथन-वशिष्ठ सुमंत्र सुनि, बरनेउ अधिपति-अं॰[4] ।
लोमपाद सन्मानि गृह जिमि राखेउ ऋषि शृं॰ ॥ ८० ॥

दिने दिने गर्भ तार बाड़िते लागिल ✻ छयमासे पशुवत प्रसव हइल
मनुष्येर डरि आमि भ्रमि वने वन ✻ आमार गर्भेते हैल शत्रुर जनम
पुत्र फेलाइया से हरिणी गेल वन ✻ अङ्गुलि चुषिया शिशु जुड़िल क्रन्दन
तपस्या करिया विभाण्डकेर गमन ✻ कानने पड़िया शिशु करिछे क्रन्दन
बालके देखिया मुनि भावे मने मन ✻ मनुष्य आकार देखि हरिणी वदन
ध्याने जानिलेक विभाण्डक तपोधन ✻ हरिणीर गर्भे हैल आमार नन्दन
पुत्र कोले करि गेलेन निज घरे ✻ पुष्पमधु दिया मुनि पोषेण ताहारे
नवीन कुशेर मूले करान शयन ✻ दिने दिने बाड़े विभाण्डकेर नन्दन
परम सुन्दर से विभाण्डकेर बेटा ✻ शास्त्रवेत्ता हय से कपाले शृङ्ग फोंटा
किछु दिन परे शृङ्ग उठिल कपाले ✻ ऋष्यशृङ्ग बले नाम थुइल सकले
यारे वर शाप देन कभु नहे आन ✻ तॉर आशीर्वादे राजा हबे पुत्रवान

लोमपादेर राज्ये अनावृष्टि-निवारणार्थ ऋष्यशृंग के आनयन

वशिष्ठेर वचन हइल अवसान ✻ सुमंत्र बलेन राजा कर अवधान

---

१ हरिणी के समान मुख । २ अन्य । ३ सिर का अग्रभाग । ४ अंग-नरेश राजा लोमपाद ।

सचिव सुमन्त्र! रहो केहि हेता * गवन शृंगमुनि-अंग-निकेता?
कहेउ सुमंत्र अंग नृप-देसा * द्वादश वर्ष वृष्टि नहिं लेसा
लोमपाद पण्डितन बुलावा * अनावृष्टि कर हेतु बुझावा
बुध विचारि बोलत, सुनु राजन! * अनाचार किञ्चित् तव सासन
विन विवाह ऋतुमती कुमारी * तव छिति, भूप! न वरसत वारी
आनहु सुवन-विभाण्डक शृंगा * पाप-छीन, जल वरसै अंगा
भूप एलान[2], नगर-नरनारी * शृंगि आनि, जो काज सवाँरी
अर्ध राजु अर्पन सोइ-हेता * बूढ़ि एक कह दर्प समेता
शृंग न ज्ञान नारि-नर लेसा! * मुनि भरमाइ[3] बुलावहुँ देसा
फल-तरु रोपि[4] सजावहु तरनी * वयस चतुर्दस मुनिसुत हरनी
सवरन नाव जराठि[5] हित साजा * जहाँ अतुल छवि ध्वजा विराजा

लोमपाद राजा अंग देशेर ईश्वर * ऋष्यशृंग आनिया छिलेन निज घर
दशरथ वले पात्र कह विवरण * लोमपाद आनालेन किसेर कारण
सुमंत्र वलेन दशरथ नृपवर * सेइ देशे अनावृष्टि द्वादस वत्सर
लोमपाद ब्राह्मण पण्डिते जिज्ञासिल * मम राज्ये अनावृष्टि कि हेतु हइल
कहिल पण्डितगण करिया विचार * किंचित् तोमार राज्ये आछे दुराचार
तव राये कुमारी हइल ऋतुमती * एइ पापे वृष्टि नाहि हय नरपति
विभाण्डक पुत्र यदि ऋष्यशृंग आसे * पाप दूर हय आर देवता वरषे
नगरेते लोमपाद दिलेन घोषणा * ऋष्यशृंग मुनिके आनिवे कोन जना
ताहारे आनिया मोरे येवा दिते पारे * अर्द्ध राज्य दिव आमि अवश्य ताहारे
डाकिया कहिल कथा बुड़ि एकजन * आमि आनि दिव सेई मुनिर नन्दन
स्त्री-पुरुष भेद सेइ मुनि नाहि जाने * भुलाइया आनिव से मुनिर नन्दने
नौका एक साजाइया देहत आमारे * फलवान वृक्ष रोप ताहार उपरे
चौद्द वत्सरेर सेइ मुनिर सन्तति * बुड़िरे वलये राजा भाल तव युक्ति
सुवर्णेर नौका राजा करिया गठन * विचित्र पताका ताहे करिल साजन

---

१ अग देश मे। २ घोषण। ३ भटका कर। ४ जमाकर। ५ वूढी।

कनक-वितान भवन दुइ सोहा * परम रम्य निरखत मन मोहा
बाछि-बाछि सुन्दरी अनूपा * किन्नरि धौं अप्सरा सरूपा
तरुनि रुदन, मन मलिन विचारी * परि मुनि-साप जरहिं, भयकारी
तिनि प्रबोधि वृद्धा इमि बोली * तजि भय चलहु संग मम, भोली !
सुनु, मम नवयौवन जेहि काला * शत-शत महामुनिन-मन घाला

तरनि[1] तरत जल-नर्मदा, लगी विभाण्डक देस ।
बाँधि तीर तरि, रूपसिन, उपवन कीन प्रवेस ॥८१॥

मुनि-तप मांचि सुन्दरिन त्रासा * जासु कोप परि छिनहिं विनासा
पितु-सूने[2] उपवन एकाकी[3] * रमनिन तहाँ शृंग सुत ताकी
वंसी धुनि कोउ क्रीड़ति बीना * ताल देत सब चलीं नवीना
वृद्धि-अदेस मृदुल पुनि गाई * बहु चोंचला रूप दरसाई
कामिनि-कण्ठ कोकिला-गाना * सामगान ऋषि-सुवन भुलाना

नौकार उपरे करे स्वर्ण दुइ घर * परम सुन्दर नौका अति मनोहर
वाछिया वाछिया निल परमा सुन्दरी * चेना भार अप्सरी कि अमर किन्नरी
कान्दिते लागिल सबे मुखे नाहि हासि * मुनि कोपानले आजि हव भस्मराशि
बूढ़ि बले केन भय करिछ युवती * तोमरा सकले चल आमार संहति
यखन आमार छिल नवीन यौवन * कत शत भुलायेछि महामुनिगण
नर्मदा वाहिया जाय परम हरिषे * उपस्थित हय ऋष्यशृङ्ग येइ देशे
येखाने तपस्या करे विभाण्डक मुनि * सेइ वने तरुणीरा राखिल तरणी
विभाण्डके देखिया सकले भये काँपे * भस्मराशि करे पाछे शाप दिया कोपे
तपोवने आछे यथा ऋष्यशृङ्ग मुनि * आसिया मिलिल तथा सकल रमणी
तरी हैते उपरिला सकल नवीना * केह वंशी पूरये वाजाय केह वीणा
बूढ़ि के वेढ़िया गान करे नारीगण * मुनीर निकटे गिया दिल दरशन
कामिनीर मुखे गीत कोकिलेर ध्वनि * शुनि मुनि वेदध्वनि छाड़िल अमनि

---

१ नाव । २ पिता की अनुपस्थिति मे । ३ अकेला ।

सचिव सुमन्त्र! रहौ केहिं हेता * गवन शृंगमुनि अंग-निकेता ?
कहेउ सुमंत्र अंग[1] नृप-देसा * द्वादश वर्ष वृष्टि नहिं लेसा
लोमपाद पण्डितन बुलावा * अनावृष्टि कर हेतु बुझावा
बुध विचारि बोलत, सुनु राजन! * अनाचार किञ्चित् तव सासन
बिन विवाह ऋतुमती कुमारी * तव छिति, भूप! न बरसत वारी
आनहु सुवन-विभाण्डक शृंगा * पाप-छीन, जल बरसै अंगा
भूप एलान[2], नगर-नरनारी * शृंगि आनि, जो काज सवाँरी
अर्ध राजु अर्पन सोइ-हेता * बूढ़ि एक कह दर्प समेता
शृंग न ज्ञान नारि-नर लेसा! * मुनि भरमाइ[3] बुलावहुँ देसा
फल-तरु रोपि[4] सजावहु तरनी * वयस चतुर्दस मुनिसुत हरनी
सवरन नाव जरठि[5] हित साजा * जहाँ अतुल छवि ध्वजा विराजा

लोमपाद राजा अंग देशेर ईश्वर * ऋष्यशृंग आनिया छिलेन निज घर
दशरथ बले पात्र कह विवरण * लोमपाद आनालेन किसेर कारण
सुमंत्र बलेन दशरथ नृपवर * सेइ देशे अनावृष्टि द्वादस वत्सर
लोमपाद ब्राह्मण पण्डिते जिज्ञासिल * मम राज्ये अनावृष्टि कि हेतु हइल
कहिल पण्डितगण करिया विचार * किंचित् तोमार राज्ये आछे दुराचार
तव राये कुमारी हइल ऋतुमती * एइ पापे वृष्टि नाहि हय नरपति
विभाण्डक पुत्र यदि ऋष्यशृंग आसे * पाप दूर हय आर देवता वरषे
नगरेते लोमपाद दिलेन घोषणा * ऋष्यशृंग मुनिके आनिवे कोन जना
ताहारे आनिया मोरे येवा दिते पारे * अर्द्ध राज्य दिब आमि अवश्य ताहारे
डाकिया कहिल कथा बुड़ि एकजन * आमि आनि दिव सेई मुनिर नन्दन
स्त्री-पुरुष भेद सेइ मुनि नाहि जाने * भुलाइया आनिव से मुनिर नन्दने
नौका एक साजाइया देहत आमारे * फलवान वृक्ष रोप ताहार उपरे
चौद्द वत्सरेर सेइ मुनिर सन्तति * बुड़िरे बलये राजा भाल तव युक्ति
सुवर्णेर नौका राजा करिया गठन * विचित्र पताका ताहे करिल साजन

---

१ अग देश मे। २ घोषण। ३ भटका कर। ४ जमाकर। ५ बूढी।

कनक-वितान भवन दुइ सोहा * परम रम्य निरखत मन मोहा
वाछि-वाछि सुन्दरी अनूपा * किन्नरि धौं अप्सरा सरूपा
तरुनि रुदन, मन मलिन विचारी * परि मुनि-साप जरहिं, भयकारी
तिनि प्रबोधि वृद्धा इमि बोली * तजि भय चलहु संग मम, भोली !
सुनु, मम नवयौवन जेहि काला * शत-शत महामुनिन-मन घाला
तरनि तरत जल-नर्मदा, लगी विभाण्डक देस।
बाँधि तीर तरि[1], रूपसिन, उपवन कीन प्रवेस ॥८१॥
मुनि-तप मांचि सुन्दरिन त्रासा * जासु कोप परि छिनहिं विनासा
पितु-सूने[2] उपवन एकाकी[3] * रमनिन तहाँ शृंग सुत ताकी
बंसी धुनि कोउ क्रीड़ति बीना * ताल देत सब चलीं नवीना
बूढ़ि-अदेश मृदुल धुनि गाई * बहु चोंचला रूप दरसाई
कामिनि - कण्ठ कोकिला - गाना * सामगान ऋषि - सुवन भुलाना

नौकार उपरे करे स्वर्णे दुइ घर * परम सुन्दर नौका अति मनोहर
वाछिया वाछिया निल परमा सुन्दरी * येना भार अप्सरी कि अमर किन्नरी
कान्दिते लागिल सबे मुखे नाहि हासि * मुनि कोपानले आजि हब भस्मराशि
बूड़ि बले केन भय करिछ युवती * तोमरा सकले चल आमार संहति
यखन आमार छिल नवीन यौवन * कत शत भुलायेछि महामुनिगण
नर्मदा बहिया जाय परम हरिषे * उपस्थित हय ऋष्यशृङ्ग येइ देशे
येखाने तपस्या करे विभाण्डक मुनि * सेइ वने तरुणीरा राखिल तरणी
विभाण्डके देखिया सकले भये काँपे * भस्मराशि करे पाछे शाप दिया कोपे
तपोवने आछे यथा ऋष्यशृङ्ग मुनि * आसिया मिलिल तथा सकल रमणी
तरी हैते उपरिला सकल नवीना * केह वंशी मुरये बाजाय केह वीणा
बूड़ि के बेड़िया गान करे नारीगण * मुनीर निकटे गिया दिल दरशन
कामिनीर मुखे गीत कोकिलेर ध्वनि * शुनि मुनि वेदध्वनि छाड़िल अमनि

---

१ नाव । २ पिता की अनुपस्थिति मे । ३ अकेला ।

नर-तिय अबुझ, रूप मुनि भाये * जिमि सुर अवनि, स्वर्ग तजि आये
विह्वल भृंगि द्वार चलि जाई * गहे बूढ़ि-पद अंग नवाई
परति पाँय, कर धरति किशोरा * चूमि कञ्जमुख पुनि-पुनि भोरा[1]
'आव-आव' कहि, सघन बुलाई * गदगद रोम, न मोद समाई
उपवन एक मात्र कुस-आसन * बुढ़िहिं दीन सप्रीति बिछावन
कन्द-मूल-फल नीर समेता * धरेउ भृंगि सो सुमुखिन हेता
'विष्णु-विष्णु' कहि, कर धरि काना * हरि-पूजन बिन किमि जलपाना ?
दिव्य कुसासन सोइ-हित साजी * उपरि जासु नायिका बिराजी
नासा परसि, उलटि दृग-तारा * मुनि प्रतच्छ[2] मनु विष्णु निहारा
कछुक काल बकध्यान[3] लगावा * पुनि प्रसाद-हित सुतहिं बुलावा
अहह सफल जीवन मम आजा * लैं प्रसाद हरि स्वयं बिराजा

फल कहि मोदक, नीर मिस, मायाविनि मधु दीन ।
अमित स्वाद अम्रित सरिस, मुनिसुत मोहित कीन ॥८२॥

स्त्री-पुरुष भेद सेइ मुनि नहि जाने * स्वर्गेर अमरगण मुनि मने माने
व्याकुल हइया मुनिद्वार हइते उले * प्रणिपात करिले बुडिर पदतले
मुनिपुत्र पाये पड़े धरि करे कोले * बार-बार चुम्ब दिल वदन कमले
एस-एस बले मुनि ता सबाके बले * आनन्दे गद्गद से आसन दिते चले
एकखानि कुशासन छिल मात्र घरे * बैस बलि आनिया दिल से बुड़िरे
फल-मूल जल घरे छिल ये सकल * बुडिर भक्षण हेतु दिलेन सकल
श्रीविष्णु बलिया बुड़ि छुँइल दुइ कान * विष्णुपूजा विना नाहि करि जलपान्
दिव्य कुशासन पाति दिलेन बुड़ीरे * पूजा करिबारे बैसे ताहार उपरे
चक्षु उलटिया बुड़ि नाके दिल हात * मुनि बले विष्णु आजि करिल साक्षात्
कतक्षणे नासिकार हात घुचाइल * ए प्रसाद लओ बलि मुनिरे डाकिल
मुनि बले आजि मोर सफल जीवन * विष्णुर प्रसाद देह करिब भक्षण
फल बलि हाते दिल गङ्गाजल लाडू * जल बलि खाओयाइल मधु गाढ़ गाढ़

---

१ भोला । २ साक्षात् । ३ बगुला के समान बनावटी ध्यान ।

उपजत फल कित पूछत शृंगा * चले मुग्ध पुनि युवतिन संगा
मोदक मदनानन्द खवावा * मोदक-मद मुनिसुत तन छावा
दै संदेस,[1] कहैं अतिरूपा * सुखतर फल जहँ, चलिय अनूपा
जो कहुँ सुलभ अधिक रसपागी * चलौं संग तव, उपवन त्यागी
मदन-विभोर निरखि मुनिनन्दन * सरकत बसन अंग छवि-वनितन
कोउ मुनि-कच्छ गात अनुसरहीं * पंकज मुख कोउ चुम्बन करहीं
पुनि गरेरि[2] बहु हास-विलासा * मुनिसुत उपज अमित उल्लासा
परसि उरोज अबुझ कोउ नारी * इकटक दीठि रहइ कोउ डारी
नैन-कटाछ रञ्ज[3] मन कोऊ * करत प्रगाढ़ अलिंगन कोऊ
जो मुनिहरन करहिं तत्काला * विनसैं सकल विभाण्डक-ज्वाला
उचित आजु, तजि चलहिं बराई[4] * कथा सकल सुत जनक[5] जनाई
सुवन-नेह मुनि रहईं निकेता * काल्हि न बन गमनईं तप-हेता

मुनि बले एइ फल कोथा गेले पाई * सङ्गे करि लये गेले तबे सङ्गे याई
खाओयाइल कामेश्वर खाइते सुस्वाद * कामेश्वर खाइया से हइल उन्माद
कन्यागण बलिल खाइले ये संदेश * इहार अधिक आछे फल सेइ देश
मुनि बले इहार अधिक यदि पाइ * तोमरा चलह देशे आमि सङ्गे याइ
मदने भुलिल यदि मुनिर नन्दन * अङ्गेर बसन खसाइल कन्यागण
आसिया मुनिर पुत्रे केह करे कोले * केह केह चुम्ब देय वदन कमले
मुनि लैया सबे करे हास्य परिहास * देखिया मुनिर पुत्र हइल उल्लास
कोन नारी भुलाइल स्तन परशने * केह वा भुलाय ताके भक्ष्य द्रव्य दाने
केह वा हरिल मन चाहिया नयने * केह वा करिल मत्त गाढ़ आलिङ्गने
बुढ़े बले आजि यदि लये याइ हरे * पाछे विभाण्डक मुनि कोपे भस्म करे
आजि पिता पुत्रेते थाकुक एकस्थाने * कहिबे ए कथा मुनि पिता विद्यमाने
पुत्र प्रति यदि स्नेह करे तपोधन * तबे कालि तपस्याय ना याबे कखन

---

१ एक बंगाली मिठाई। २ घेरकर। ३ प्रसन्न करती थी। ४ टल जायें। ५ पिता।

जो तजि तनय श्रेय तप देहीं * कहत बूढ़ि, तब सुत हरि लेहीं
सोचि जुगुति[1] दिय मत मुनिनन्दन * बिलमहु[2] कछुक काल भल उपवन
शिष्य एक तव-सरिस सुहावन * निकट भेटि लौटहु मनभावन
बिनयिउ शृंगि, नाथ तव दासा * सदा स्वामि - ढिग सेवक - बासा
गमन अन्त कहुँ देम, करहु त्यागि मोहिं अमरगन।
पाथक करौं प्रवेस, ब्रह्मघात तव - सीस धरि ॥८२॥
नर-नारी कर भेद न जानी * मुनि-कौतुक ! छलिनी मुसकानी
बोली, करहु बास यहि काला * सुत बोलथि तोहिं लेउ सकाला[3]
मुनि तजि गेह, चलीं मृगनयनी * लागि नर्मदा-तट जहँ तरनी
अस्ताचल जब सूर्य सिधाये * बिकल शृंगि ! सुरगन नहिं आये
करगत अञ्चल-निधी नसानी * मम बिपरीत दैव[4] मैं जानी
रुदन-थकित, तरुतर आसीना * तबहि विभाण्डक उत पग दीना
शोकाकुल सुत लखि मुनिराई * कस मलीन ? पूछत कुसलाई

पुत्र एड़ि जाय यदि तपस्यार तरे * तबे काल लैया याव मुनिर कुमारे
एइ युक्ति तबे बुड़ी भावे मने मने * कहिते लागिल सेइ मुनिर नन्दने
तपोवने बैस हे तोमारे भालबासि * अन्य एक शिष्येर आश्रम देखे आसि
बलिते लागिल तारे ऋष्यमृङ्ग ऋषि * तोमार सेवक हैया तव सङ्गे आसि
आमारे एड़िया यदि याबे कोन देशे * ब्रह्महत्या हबे तबे मरिब हुताशे
बुड़ी बले एइ क्षणे घरे थाक तुमि * संध्याकाले तोमारे लइया याब आमि
एतेक बलिया तारे थुये निजघरे * सकल कामिनी चड़े नौकार ऊपरे
दिवाकर अस्तगत हइल यखन * मुनि बले ना आइल केन ऋषिगण
शिरोमणि हाराइल अञ्चलेर निधि * बुझिलाम आमारे वञ्चित हैल विधि
कान्दिते-कान्दिते मुनि बैसे वृक्षतले * विभाण्डक तप करि एल हेन काले
पुत्रेर देखिया मुनि विचलित मन * जिज्ञासिल केन बापू करिछ क्रन्दन

---

१ युक्ति, तरकीब। २ ठहर जाओ। ३ सायकाल। ४ भाग्य।

कीजिय तात प्रथम जलपाना * हाल सकल पुनि करउँ बखाना
फलाहार करि पितु सुख पावा * दिवसकथा सुत ललकि[1] सुनावा
तपहित जब पितु बनहिं सिधाये * देव स्वर्ग तजि आश्रम आये
चखे न अस फल स्वाद अनूपा ! * दीख त्रिलोक न तिन सम रूपा
जटा सीस छविमण्डित भाला[2] * तहँ साजे कोउ किंशुक-माला
कस मृतिका[3] ! ललाट छविसागर * नभमण्डल जिमि उदित प्रभाकर
कौन पुहुप ! गर हार सुहावन * नीलम, पीत, धवल मनभावन
वल्कल बसन लसत कस अंगा * लाल, पियर, सित, हरियर रंगा
लता कौन सब करन[4] सजीली * कोउ कर मानिक जोति छबीली

लोम[5] न आनन, परम द्विज, मांस-पिण्ड उर दोय॥
कोमल कर परसत मनहुँ, सुरपुर करगत होय॥८४॥

नर-नारी ऋषि शृंग न ज्ञाना * बूझेउ सकल धरत मुनि ध्याना

ऋष्यश्रृङ्ग बले आगे खाओ फल जल * आजिकार विवरण कहिब सकल
फलजल खाइया हइल सुस्थ मन * पितापुत्रे कथावार्त्ता कन दुइजन
तुमि येइ गेले पिता तपस्यार तरे * स्वर्ग हते देवगण आसे मम घरे
सेइ मत फल नाहि खाइ ए जीवने * एत रूप देखि नाइ ए तिन भुवने
कत वा छन्दे ते जटा धरे छे माथाय * कत कुसुमेर माला दियाछे ताहाय
कि जाति-मृत्तिका आछे कपाले शोभित * गगनमण्डलेये न भास्कर उदित
कि जाति वृक्षेर माला सवार गलाय * श्वेत पीत नील कत शोभिछे ताहाय
तेमन ना देखि माता गाछेर वाकल * श्वेत रक्त पीत नील वरण उज्ज्वल
कि जाति वृक्षेर लता सबाकार हाते * कतेक माणिक गाँथा आछये ताहाते
परम ब्राह्मण कारो लोम नाहि मुखे * तुलार समान दुटा मांसपिण्ड बुके
ताते यदि हस्त टि कराइ परशन * स्वर्गवास हाते माइ हेन लय मन
मने भावे महामुनि पुत्रेर वचने * स्त्री-पुरुष ऋष्यश्रृङ्ग कभु नाहि जाने

---

१ प्रसन्न होकर । २ मस्तक । ३ सकेशर चन्दनको भस्म समझा । ३ हाथो मे । ४ दाढ़ी-मूँछ ।

जो तजि तनय श्रेय तप देहीं * कहत बूढ़ि, तब सुत हरि लेहीं
सोचि जुगुति[1] हिय मत मुनिनन्दन * बिलमहु[2] कछुक काल भल उपवन
शिष्य एक तव-सरिस सुहावन * निकट भेटि लौटहुँ मनभावन
बिनयिउ शृंगि, नाथ तव दासा * सदा स्वामि - ढिग सेवक - बासा
गमन अन्त कहुँ देम, करहु त्यागि मोहिं अमरगन ।।
पातक करौं प्रवेस, ब्रह्मघात तव - सीस धरि ।।८८।।
नर-नारी कर भेद न जानी * मुनि-कौतुक ! छलिनी मुसकानी
बोली, करहु बास यहि काला * सुत बोलाय तोहिं लेउ सकाला[3]
मुनि तजि गेह, चलीं मृगनयनी * लागि नर्मदा-तट जहँ तरनी
अस्ताचल जब सूर्य सिधाये * बिकल शृंगि ! सुरगन नहिं आये
करगत अञ्चल-निधी नसानी * मम बिपरीत दैव[4] मैं जानी
रुदन-थकित, तरुतर आसीना * तबहिं विभाण्डक उत पग दीना
शोकाकुल सुत लखि मुनिराई * कस मलीन ? पूछत कुसलाई

पुत्र एड़ि जाय यदि तपस्यार तरे * तबे काल लैया याव मुनिर कुमारे
एइ युक्ति तबे बुड़ी भावे मने मने * कहिते लागिल सेइ मुनिर नन्दने
तपोवने बैस हे तोमारे भालबासि * अन्य एक शिष्येर आश्रम देखे आसि
बलिते लागिल तारे ऋष्यभृङ्ग ऋषि * तोमार सेवक हैया तव सङ्गे आसि
आमारे एड़िया यदि याबे कोन देशे * ब्रह्महत्या हबे तबे मरिब हुताशे
बुड़ी बले एइ स्थाने घरे थाक तुमि * संध्याकाले तोमारे लइया याब आमि
एतेक बलिया तारे थुये निजघरे * सकल कामिनी चड़े नौकार ऊपरे
दिवाकर अस्तगत हइल यखन * मुनि बले ना आइल केन ऋषिगण
शिरोमणि हाराइल अञ्चलेर निधि * बुझिलाम आमारे वञ्चित हैलविधि
कान्दिते-कान्दिते मुनि बैसे वृक्षतले * विभाण्डक तप करि एल हेन काले
पुत्रेर देखिया मुनि विचलित मन * जिज्ञासिल केन बापू करिछ क्रन्दन

---

१ युक्ति, तरकीब । २ ठहर जाओ । ३ सायकाल । ४ भाग्य ।

कीजिय तात प्रथम जलपाना * हाल सकल पुनि करउँ बखाना
फलाहार करि पितु सुख पावा * दिवस-कथा सुत ललकि[1] सुनावा
तपहित जब पितु बनहिं सिधाये * देव स्वर्ग तजि आश्रम आये
चखे न अस फल स्वाद अनूपा ! * दीख त्रिलोक न तिन सम रूपा
जटा सीस छबिमण्डित भाला[2] * तहँ साजे कोउ किंशुक-माला
कसि मृतिका[3] ! ललाट छबिसागर * नभमण्डल जिमि उदित प्रभाकर
कौन पुहुप ! गर हार सुहावन * नीलम, पीत, धवल मनभावन
वलकल बसन लसत कस अंगा * लाल, पियर, सित, हरियर रंगा
लता कौन सब करन[4] सजीली * कोउ कर मानिक जोति छबीली

लोम[5] न आनन, परम द्विज, मांस-पिण्ड उर दोय।।
कोमल कर परसत मनहुँ, सुरपुर करगत होय।।८४।।

नर-नारी ऋषि श्रृंग न ज्ञाना * बूझेउ सकल धरत मुनि ध्याना

ऋष्यशृङ्ग बले आगे खाओ फल जल * आजिकार विवरण कहिब सकल
फलजल खाइया हइल सुस्थ मन * पितापुत्रे कथावार्त्ता कन दुइजन
तुमि येइ गेले पिता तपस्यार तरे * स्वर्ग हते देवगण आसे मम घरे
सेइ मत फल नाहि खाइ ए जीवने * एत रूप देखि नाइ ए तिन भुवने
कत बा छन्दते जटा धरे छे माथाय * कत कुसुमेर माला दियाछ ताहाय
कि जाति मृत्तिका आछे कपाले शोभित * गगनमण्डलेये न भास्कर उदित
कि जाति वृक्षेर माला सबार गलाय * श्वेत पीत नील कत शोभिछे ताहाय
तेमन ना देखि माता गाछेर बाकल * श्वेत रक्त पीत नील वरण उज्ज्वल
कि जाति वृक्षेर लता सबाकार हाते * कतेक माणिक गाँथा आछये ताहाते
परम ब्राह्मण कारो लोम नाहि मुखे * तुलार समान दुटा मांसपिण्ड बुके
ताते यदि हस्त टि करह परशन * स्वर्गवास हाते माइ हेन लय मन
मने भावे महामुनि पुत्रेर बचने * स्त्री-पुरुष ऋष्यशृङ्ग कभु नाहि जाने

---

१ प्रसन्न होकर । २ मस्तक । ३ सकेशर चन्दनको भस्म समझा । ३ हाथो मे । ४ दाढो-मूँछ ।

कहत विभाण्डक, सुत ! ते नारी * कामुकि फिरहिं दनुजि वनचारी
आजु पुन्य-मम बच तव प्राना * पुनि तिन-फन्द न सुत कल्याना
पिता न इमि भाखहु तिन हेता * ते अस कतहुँ न दयानिकेता
सबन कालिह विधि देइ मिलाई * सूचित करहुँ तात ढिग आई
निसि वितीत, मुनि बहु समुझावा * तदपि शृंग कछु बोध न आवा
भोर होत रवि किरन प्रकासी * सुवन-विषय सोचत गुनरासी
जो सुत साधि, आश्रमवासू * अतिव चूक, तप-धर्म विनासू
सकल वृथा—को केहि सुत-नारी * जग असार, सत् प्रभुहिं विचारी
बहुरि प्रबोधि[1] भाँति बहु शृंगा * हटकेउ[2] मुनि तिन वनितन-संगा
ताम्रपात्र, तुलसीदल लीना * तपहित गमन विभाण्डक कीना
सो लखि, बूढि कहत हरषाई * चलौ सबै, मुनिसुत हरि लाई
बीना, वँसुरि, ताल, करताला * चलीं शृंग-ढिग चाल मराला

বিভাণ্ডক বলে বাপু তারা নারীগণ * কামাচারী রাক্ষসী বেড়ায় বনে বন
মম পুণ্যে প্রাণ আজি রেখেছে তোমার * পুনঃ গেলে ধরে খাবে না পাবে নিস্তার
ঋষ্যশৃঙ্গ বলে পিতা না বল এমন * এমন দয়ালু নাই তাহারা যেমন
কালি যদি বিধাতা মিলায় তা সবারে * তখনি যাইব আমি কহিনু তোমারে
সারা রাত্রি ছিল মুনি পুত্র ল'য়ে ঘরে * বুঝাইতে আপনি না পারিল পুত্রেরে
প্রভাত হইল রাত্রি রবির কিরণ * পুত্রের বিষয় মুনি ভাবে মনে মন
যদি আমি ঘরে থাকি পুত্রে করি সাধ * ধর্ম নষ্ট হবে মম হবে অপরাধ
কার পুত্র কার পত্নী সব অকারণ * সংসার অসার সার সত্য নারায়ণ
পুত্রেরে প্রবোধ করিলেন মহামুনি * কারো সঙ্গে কথা নাহি কহিও আপনি
তাম্রঘটী হাতে নিল তুলিল তুলসী * তপস্যা করিতে গেল বিভাণ্ডক ঋষি
বুড়ী বলে বুড়া মুনি ছাড়ি গেল ঘর * সবে চল আনি গিয়া মুনির কোঙর
তাল করতাল বীণা কেহ পুরে বাঁশী * আইল মুনির কাছে সকল রূপসী

---

१ समझाकर। २ मना किया।

गई-द्रव्य मनु दारिद[1] पाई * पद-नायिका गहे लपिटाई
गयेउ कालिह कित मोहिं बराई[2] * तव-हित रोवत निसा विताई
सोइ मोदक रुचि सोइ जल पाना * देव संग तव करहुँ पयाना
फँसे फन्द, तिय कोल[3] करि, लिये नाव हरि शृंग।
तरि, खेवत द्रुत बहि चली, काटत सरित-तरंग ॥८५॥

शृंगी ऋषि का लोमपाद के राज्य मे जाना और अनावृष्टि का निवारण

तरनी तरति, न एनि आभासा * भरमत बनितन सहित हुलासा
मुनि-पद अंगदेस जाइ परसा * अनावृष्टि गत पावस बरसा
लच्छन सुभ, आगम-मुनि जानी * अर्घ्यपाद चलि नृप सन्मानी
लोमपाद नृप कन्याहीना * दसरथ-सुता + दान पुनि दीना
यहि विधि मुनि रघुवंस-जमाई[4] * बोलि अंगनृप, लेहु बुलाई
दसरथ पूछेउ सचिव सप्रीती * कस सुत-सोक विभाण्डक बीती

दरिद्र पाइल येन हाराइया धन * व्यस्त मुनि करे धरि बुड़ीर चरण
आमारे एड़िया कालि गेल पलाइया * सारारात्रि कान्दियाछि तोमार लागिया
सेइ जल सेइ नाडु करिब भक्षण * सङ्गे करि लैया चल करिब गमन
मर्म बुझ सबे कृत्तिवासेर सुवाणी * नारीर कथाय भुले ऋष्यश्रृङ्ग मुनि

ऋष्यश्रृङ्गेर लोमपाद राज्ये गमन ओ अनावृष्टि निवारण

कोले करि बसाइल नौकार उपर * वाह वाह बलि बुड़ी डाकिछे सत्वर
तरणी बाहिया जाय मुनि नाहि जाने * ऋष्यश्रृङ्ग बले यैस व्याघ्र आछे वने
लोमपाद राज्ये मुनि दिल दरशन * अनावृष्टि छिल वृष्टि हइल तखन
लोमपाद जानिल मुनिर आगमन * पाद्य अर्घ्य दिया पूजे मुनिर नन्दन
कन्याहीन लोमपाद शान्ता अभिधान * दशरथ कन्या के मुनिरे दिल दान
सम्बन्धे से मुनि हय तोमार जामाइ * ताहाके चाहिया आन लोमपाद ठाँइ
दशरथ बलिलेन कह हे नायक * पुत्रशोके केमने बाँचिल विभाण्डक

---

१ निर्धन। २ टालकर। ३ गोद। ४ रघुवंशी राजा दशरथ के जामाता।

+ राजा दशरथ की कन्या 'शान्ता' जिसका पालन राजा लोमपाद ने अपनी कन्या मान कर किया था।

उपाख्यान ऋषि शृंग सुपावना * अनजल-हरन, नीर-सरसावन
कृत्तिवास इमि काव्य प्रकासा * राम-नाम मुद-मंगल-वासा

श‍ृङ्गी ऋषि को न देखकर विभाण्डक मुनि का खेद

पुनि सुमन्त्र दसरथहिं सुनावा * बूढ़ी जिमि नृप नीति सिखावा
लोमपाद थिर, सोचहु करनी * मुनिसुत-हरन फन्द पुनि बरनी
कुपित विभाण्डक, साप कराला * सहित राजु बिनसहु मुनि-ज्वाला
तासु त्रान-हित[1] कहउँ उपाऊ * रचना रचहु पन्थ सोइ राऊ
ठौर-ठौर गो-महिष तुरंता * गीत वाद चहुँ नृत्य अनन्ता
उत्सव चहुँ लखि, मुनि-मन-रोषा * मिटै सहज, उपजै सन्तोषा
बूढ़ी बचन महीप प्रमाना * जनपद कायम कीन महाना
ठौर-ठौर तहँ धाम ललामा * सोइ ऋषि शृंग-ग्राम धरि नामा

सकल धान्य-पूरित मही, दिव्य धाम, पुर, ग्राम ।
लोमपाद नृप शृंग ऋषि, इमि राखे निज धाम ॥८६॥

तप करि कुटी विभाण्डक आये * सुत-श्रुतिगान न मुनि सुनि पाये

येइ दशे हय ऋष्यश‍ृङ्ग उपाख्यान * अनावृष्टि घुचे हय से देशे कल्याण
कृत्तिवास पण्डितेर काव्य अनुपम * सानन्दे वसिया सबे शुन राम नाम

ऋष्यश‍ृङ्गेर अदर्शने विभाण्डक मुनिर खेद

सुमन्त्र बलेन शुन राजा दशरथ * बुड़ी लोमपादे नीति कहे वाक्य यत
मन दिया स्थिरचित्ते शुनह वचन * भुलाइया आनियाछि मुनिर नन्दन
यदि शाप देन कोपे विभाण्डक ऋषि * राज्यमह आपनि हइते भस्मराशि
तार ठाँइ यदि तुमि चाओ परित्राण * पथेते करिया राख विहित विधान
स्थाने स्थाने महिष गो राखह सत्वर * गीतवाद्य नृत्योत्सव हउक विस्तर
गीतवाद्य देखिया तखनि तपोधन * यत क्रोध जन्मे थाके हबे पासरण
बुडीर वचन राजा ना करिल आन * पथे पथे करे ग्राम बड़-बड़ स्थान
श्रीऋष्यश‍ृङ्गेर ग्राम बलि तार नाम * सर्व्वशस्ययुता पुरी दिव्य-दिव्य ग्राम
ऋष्यश‍ृङ्ग रहिलेन लोमपाद घरे * विभाण्डक तप करि गेलेन कुटीरे

---

१ रक्षा के लिये ।

नेत-विपरीत, मौन! मन चिंता * द्वार सशंक धरेउ पग सन्ता
दिवस ताप-तप, आश्रम आई * कासु ? नमधु विथा मिटाई
तात! कहि-कुटी प्रवेसा * लखेउ न सुत, मुनि दुसह कलेसा
छूट कमण्डल, मूर्छित गाता * तरु-तर धरनि तपसि-तन पाता
बीते छन, कछु चेतन आवा * किते सुवन! पुनि-पुनि गोहरावा
सवन भेंटि पूछत सुत-वाता * सुवन-नेह जग अतुल विधाता
हे द्रुप, विटप, लता जे उपवन! * लखे जात कहुँ तुम मम-नन्दन
हे खग, मृग, पसु कतहुँ विलोका * तनय जात, इमि मोध ससोका
हेरत चलत न मग विश्रामा * पहुँचे जहँ इक ग्राम ललामा
कवन ग्राम को धाम-निवासी? * पूछत दुखित, सवन पुरवासी
विनय जोरि कर प्रजासमाजू * नाथ शृंगऋषि कर यहु राजू
लोमपाद तनया जिन अर्पी * हय-गज-सुरभि, सुभूमि समर्पी
सुनत प्रजा-मुख मंगल-वानी * शमन क्रोध, आतमा जुडानी

आर दिन दूर हइते शुने वेदध्वनि * से दिन ना शुने शब्द व्यस्त हैल मुनि
आकुल हइया मुनि-दाण्डाइल तथा * कॉंदिया वलेन वाछा ऋष्यशृंग कोथा
तपस्याते श्रान्त ह'ये आइलाम घरे * हेथा आसि कह कथा दुःख याक दूरे
वलिते वलिते गेल कुटीरेर द्वारे * पुत्र-पुत्र वलि डाके पुत्र नाहि घरे
कमण्डलु आछाडिया फेले भूमितले * अज्ञान हइया मुनि पड़े वृक्षतले
क्षणेक रहिया ज्ञान पाइलेक मुनि * कोथा ऋष्यशृङ्ग वलि डाकये अमनि
अपत्येर स्नेह सम नाहिक संसारे * याहारे देखेन मुनि जिज्ञासेन तारे
मुनि वले आछ वने यत तरु लता * देखेछ तोमरा मम पुत्र गेल कोथा
मृग पशु पक्षीरे लागिल सुधाइते * तोमरा देखेछ ऋष्यशृङ्गेरे याइते
कांदियाकांदिया जाय विभाण्डक मुनि * कत दूर गिया पान ग्राम एकखानि
सकल लोकेरे मुनि शोकेते सुधान * काहार ए ग्रामखानि कह विद्यमान
जोड़हात करि प्रजागण कहे वाणी * ऋष्यशृङ्ग मुनिवर इथे राजा तिनि
लोमपाद ताँके कन्या दियाछे कौतुके * ग्राम पशु अश्व गज दियाछे यौतुके
एइ कथा कहिलेक यत प्रजागण * क्रोधमन गेल मुनि अति हृष्टमन

सकुसल सुवन विलस संसारू * मिटेउ छोभ, मुनि करत विचारू
संतति-हीन अवध अजनन्दन[1] * करहिं शृंग सुत-याग अरंभन
सोइ अवसर भेटउँ सुवन, भूप-निमंत्रन पाय ।
अस विचारि, वन गमन किय, मुनिवर तप मन लाय ॥८७॥

राजा दशरथ का पुत्रेष्टि-यज्ञ और नारायण का चार अंशों में जन्मग्रहण

मंत्र-सुमंत्र भूप मन भावा * अंग[2] हेत चतुरंग सजावा
चले लेन हित शृंग मुनीसा * लोमपाद-ढिग अवध-महीसा
दसरथ-खबरि अंग नृप पाई * पाद-अर्घ्य, मृदु असन[3] सजाई
पूजि राज-उपचार समेता * पूछेउ अंग आगमन-हेता[4]
दसरथ कही अंधमुनि बानी * समय पाय सुतजोग बखानी
अवध-पयान शृंग मुनि करहीं * सफल याग संतति हित रचहीं
सुनि, नृप भूप शृंग ढिग आये * मुनिहिं जोरि कर माथ नवाये
लोमपाद परिचय पुनि दीन्हा * रविकुलमणि दसरथ जग चीन्हा

संसार करिते पुत्र करियाछे साध * पुत्रेर कुशल शुनि खण्डिल विषाद
भावे अपुत्रक राजा अजेर नन्दन * ऋष्यशृङ्ग करिबेन यज्ञ आरम्भन
निमन्त्रण हइबेक मम से यज्ञेते * सेइ काले हबे देखा पुत्रेर सहिते
एतेक भाविया मुनि गेल निज वास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथ राजार पुत्रेष्टि यज्ञ ओ नारायणेर चारि अंशे अवतार

दशरथ राजारे सुमन्त्र इहा बले * मुनिके आनिते राजा दशरथ चले
दशरथ लोमपाद नृपतिर घरे * चतुरङ्ग सङ्गे यान हरिष अन्तरे
राजार पाइया वार्त्ता लोमपाद राजा * राज उपचारे यत्ने ताँरे करे पूजा
मिष्टान्न प्रभृति दिया कराय भोजन * जिज्ञासिल कोन कार्ये तव आगमन
दशरथ बलिलेन शुन मोर वाणी * अयोध्याय लये चल ऋष्यशृङ्ग मुनि
अन्धकेर उक्ति आछे ये अतीत काले * पुत्रवान हब आमि ऋष्यशृङ्ग गेले
एमत कहिले दशरथ नृपवर * लोमपाद लये गेल मुनिर गोचर
प्रणाम करेन दशरथ जोड़ हाते * लोमपाद परिचय लागिल कहिते

---

१ दसरथ । २ अंगदेश । ३ जलपान । ४ प्रयोजन ।

सुता शान्ता मुनिहिं बिवाही ❋ जनक तासु दसरथ नृप आही
श्वसुर भूप, मुनि तासु जमाई ❋ सुवन-अभाव ताप दुखदाई
सो तव कृपा होयँ सुतवन्ता ❋ अवध गमन कीजिय भगवन्ता
मुदित ध्यान लखि मुनि, गृहभूपा ❋ चारि अंस प्रभु प्रगट अनूपा
अंधक मुनि कर बचन प्रमाना ❋ अवध-पयान शृंग मन माना
चढ़ि रथ सहित सुता-जामाता ❋ चले अवध पुरजन सुखदाता
लोमपाद नृप संग सुहाये ❋ दल-बल सहित नृपति-घर आये
लखि बशिष्ठ-मुनिगन, कह शृंगा ❋ करहु अरंभन याग-प्रसंगा

सो० आदि विष्णु आराधि, पुनि निमंत्रि मुनिगन सकल ।
भूपति मंगल साधि, अश्वमेध रचना करहु ॥८८॥

भूप निमंत्रण दिय दिग्देसा ❋ जुरे पाय, मुनिवृन्द असेसा
पुलह, पुलस्त्य, पुलोम प्रकासा ❋ गौतम, कौण्डिन्य दुर्वासा
वैशम्पायन, भरत, पराशर ❋ पिप्पलाद, शरभंग, निशाकर

दशरथ रजा एइ शुनेछ आख्यान ❋ तुमि कृपाकर यदि हन पुत्रवान
शान्ताकन्याविवाहयेदियाछि तोमारे ❋ सेइ कन्या जन्मेछिल इहार आगारे
इहार जामाता तुमि तोमर श्वशुर ❋ अपुत्रक तापित ये ताप कर दूर
ध्यानेते जानिल मुनि मनेते प्रशंसे ❋ एइ घरे जन्मिवेन विष्णु चारि अंशे
अन्धक मुनिर कथा कभु नहे आन ❋ एतेक जानिया मुनि करिल पयान
तनया जामाता सङ्गे चढ़ि निज रथे ❋ अयोध्याय आइल राजा लोमपाद साथे
वशिष्ठादि आइल सकल मुनिगण ❋ ऋष्यशृङ्ग बले कर यज्ञ आरम्भन
अश्वमेध यज्ञे कर विष्णु आराधन ❋ यत मुनिगणे तुमि कर निमन्त्रण
दशरथ निमन्त्रण करे देशे देशे ❋ निमन्त्रण पाइया यतेक मुनि आसे
अगस्त्य आइल आर पौलस्त्यपुलोम ❋ आइलेन वैशम्पायन दुर्व्वासा गौतम
जैमनी गोतम पिप्पलाद पराशर ❋ पुलहकौण्डिन्य मुनि आइल निशाकर
मार्कण्डेय मरीचि भरत भरद्वाज ❋ अष्टावक्र मुनि भृगु कूर्म्म दक्षराज
गर्गमुनि दधीचि आइल शरभंग ❋ पूजे राजा मुनिगणे बाड़े मने रंग

अष्टावक्र, पतञ्जलि, गर्गा ※ गोतम, भरद्वाज तपवर्गा
कूर्म मारकण्डेय तपोधन ※ सनक, सनन्दन, ऋषी सनातन
भृगु, अगस्त्य, जैमिनि किय वासा ※ कपिल—सगर जिन सुतन विनासा
वेदवान, चक्रवान, मरीची ※ दक्षराज, सावर्णि, दधीची
मत्स्यकर्णि जिन नीर निवासा ※ सौरभि विष्णु समान प्रकासा
वाल्मीकि तट-जमुन निवासू ※ सवन पूजि, नृप हृदय हुलासू
कश्यप-सुवन विभाण्डक आये ※ अगनित नाम बरनि जनि जाये
तीनि कोटि द्विज श्रुति उच्चारन ※ सकल मुनिन-मुख प्रगट हुताशन
कोउ छिति एक पाद आधारा ※ वर्ष सहस कोउ बिन आहारा
जटा सीस, तन बल्कल वसना ※ विष्णु-कथा तजि, आन न रसना
तीन कोटि इमि मुनिन-समाजा ※ विपुल शिष्यदल सहित विराजा
दिय निवास सन्मानि मुनीसा ※ आये अवध बहुल अवनीसा
मैथिल जनक राज-ऋषि आये ※ काशिराज नृप मल्ल सुहाये

लोमपाद अंगाधिपति, बंग महिप घनश्याम।
भोज पुरन्दर आगमन, नृप मरीचपुर धाम ॥ ८६॥

पातालेते आइल कपिल राजऋषि ※ सगर सन्ताने ये करिल भस्मराशि
वेदवान चक्रवान आइल सावर्णि ※ जल माझे आछे से मुनि मत्स्यकर्णी
सनातन सनक से सनन्द-कुमार ※ सौरभि आइल मुनि विष्णु अवतार
आइल वाल्मीकि यमुनार कूले धाम ※ कश्यपेर पुत्र एल विभाण्डक नाम
कतेक आइल मुनि नाम नाहि जानि ※ राजार यज्ञेते एल तिन कोटि मुनि
तिन कोटि मुनि करे वेद उच्चारण ※ सवाकार वदने निःसरे हुताशन
पृथिवीते केह आछे एक पदे भर ※ केह अनाहारे आछे सहस्र वत्सर
माथाय कपिल जटा वाकल वसन ※ नारायण कथा विना मुखे नहे आन
एमत आइल तथा तिन कोटि मुनि ※ सङ्गे कत शिष्यतार संख्या नाहिजानि
मुनिगण वासार्थ दिलेन वासाघर ※ पृथिवीर राजा आइल अयोध्या-नगर
मिथिलार आइल जनक राजा-ऋषि ※ मल्ल महाराज एल' राज्य यार काशी
अंगदेश अधिपति लोमपाद नाम ※ राजा वंगदेशेर आइल घनश्याम

अतुल तेज तैलंग-नरेसा * चम्पेश्वर नृप अवध प्रवेसा
कोटि अठासि पछाँह-भुवाला * निज पुर तजि लख-लख नरपाला
कर्नाटक, मागध, गंधारा * जेतक नृप तिन अवध अखारा[1]
पाय निमंत्रन-दशरथराऊ * समिटे अखिल भुवन-नरराऊ
राजन अकथ कहौ किमि रंगा * अगनित सचिव-सखा तिन संगा
कोटि अठासी लख नरराई * प्रथक नाम को सकिय गेनाई
सारभौम- दसरथ महराजा * वार्षिक कर भेटैं सब राजा
सो धन सकल राज-भण्डारा * प्रथक वास प्रति भूप हँवारा
रची यज्ञ नृप सरयू तीरा * सोइ शुचि भूमि चले तपधीरा[2]
योजन- लंब एकासी अवनी * द्वादश इतर पच्छ लिय धरनी
चारि कोस मेखला बंधाई * शत योजन छिति-यज्ञ सुहाई
यज्ञभूमि मुनिगन लिय आसन * शुभ छन-लगन याग आ॰॰न

मरीचिपुरेर राजा भोज पुरन्दर * चम्पापुर हइते आइल चम्पेश्वर
आइल तैलङ्ग- राजा तेजेते असीम * आइल आटाशी कोटि ये छिल पश्चिम
मगध मागध आइल गांधार कर्णाट * लक्षलक्ष राजा एल छाड़ि राजपाट
उदयास्त गिरिते यतेक राजा बसे * दशरथ निमन्त्रणे सब राजा आसे
मेदिनी भुवने वैसे यत राजगण * नाना रङ्गे आइलेन सङ्गी असगण
प्रत्येक कहिते नाम नितान्त अशक्य * राजा यत आइल आटाशी कोटि लक्ष
यत राजा गेल दशरथेर गोचरे * राजचक्रवर्ती दशरथ सर्व्वोपरे
आसिया करिल दशरथ सह देखा * दिलेक वार्षिक कर समुचित लेखा
यत धन एने छिल राखिल भाण्डारे * प्रत्येके प्रत्येक वास दिल सवाकारे
यज्ञ करिछेन राजा सरयूर तीरे * मुनिगण गेलेन राजार यज्ञघरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर * द्वादश योजन तार आड़े परिसर
चारिक्रोश बांधियाछे यज्ञेर मेखला * शतेक योजन उभे सेइ यज्ञशाला
मुनिगण बैसे गिया घरेर भितरे * शुभक्षणे शुभलग्ने यज्ञारम्भ करे

१ जमाव । २ तपस्वी लोग ।

आदि स्वस्तयन मुनिगन गावा * पुनि दशरथ संकल्प सुहावा
विनय जोरि कर मधुरम माने * मकल तुल्य, बड़-छोट न जाने
कासु वरन ? मोहिं करहु अदेसा * कहेउ शृंग ऋषि सुनहु नरेसा
कुलगुरु प्रथम सुवन-जगमूला[1] * वरन वशिष्ठ शास्त्र अनुकूला

सो० तासु वरन न विवाद, उचित कहेउ ऋषिगन सकल।
मुनि समान मर्याद[2], अमित द्रव्य नृप देय हरषि ॥९०॥

करहिं वेदध्वनि संग तपाधन * भइ प्रकट मुनि-नदन[3] हुतासन
करि शुचि अनल, याग सोइ थापा * अग्निकुण्ड, सोइ पावक व्यापा
आहुति यव-तिल-तण्डुल रासी * घृत-घट सहस देयँ वनवासी
निरखि याग इमि वर्ष निरंतर * सुरगन सरग न थिर उर अन्तर
विश्वस्रवा-सुवन दससीसा * सुरन सूल नित लंक-अधीसा
कहत इन्द्र, किमि हे चतुरानन * यहि अवसर जन्महिं नारायन

स्वस्तिकादि अग्रेते करये मुनिगण * संकल्प करिल तबे अजेर नन्दन
दाण्डाइल दशरथ जोड करि हात * कहिते लागिल सब मुनिर साक्षात्
छोट बड़ नाहि जानि तुल्य सर्व्वजन * आज्ञा कर कारे अग्रे करिब वरण
ऋष्यशृङ्ग वलिलेन शुनह राजन * अग्रेते करह गुरु वशिष्ठ वरण
ब्रह्मार तनय आर कुलपुरोहित * उहार वरण आगे शास्त्रेते विहित
वशिष्ठे [illegible] रिया घुचाओ अभिमान * बड छोट केह नहे सकलि समान
भाल-भाल बलिया सकल मुनिवले * वस्त्र अलङ्कार राजा दिलेन सकले
मन्त्रे करिल एककाले वेदध्वनि * मुनि मुखे निःसरिल पावक तखनि
सेइ अग्नि पवित्र करिया मुनिगण * अग्निर कुण्डेते लये करिल स्थापन
आतप तण्डुल यव तिल राशिराशि * एके एके दिल घृत सहस्र कलसी
एक वर्ष यज्ञ करे राजा दशरथे * देवतार भय हेथा हइल स्वर्गेते
विश्रवार पुत्र हय राजा दशानन * हीन ज्ञाने लंकाते खाटाय देवगण
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि * एइ काले जन्म कि लवेन श्रीहरि

---

१ ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ। २ प्रतिष्ठा। ३ मुनियों के मुख से। ४ यज्ञार्थ पवित्र अग्नि।

सफल याग, दसरथ-गृह ताता * होय तबहिं दसकंध-निपाता
मत मिलाय गमने सुरवृन्दा * छीर-उदधि जहँ आनँदकन्दा
विनय विरंचि विविधि संलग्ना * प्रभु जगपति किमि नींद-निमग्ना
रमा[1] परसि तहँ प्रभुपद वंदति * शयन अनन्त-सेज[2] त्रिभुवनपति
गे समीप सुर सकल समाजा * पन्नग-विछवनि विष्णु विराजा
आभा-मेघ सलिल कस सोहा * अहिफन सहस छत्र मन मोहा
तव निद्रा निद्रित जग जेता[3] * सकल विश्व तव-चेतन चेता
कृपा-कोरि[4] सेवकन निहारी * विपति दूर कीजिय वनवारी
चौमुख-विनय[5] सुनत रस पागी * श्रीहरि छीर-सयन उठि त्यागी
जुरे सकल सुरगन चहुँ देखी * कहेउ शब्द एक नाथ विशेखी

सो० प्रगट अनुष्टुप छन्द, मुख मलीन सुरवृन्द लखि।
पूछत आनँदकन्द, कहहु शत्रु को प्रगट तव ॥६१॥

पुत्रेर लागिया दशरथ यज्ञ करे * तार पुत्र हैले तबे दशानन मरे
एइ युक्ति करिया यतेक देवगण * क्षीरोद समुद्रे गेल यथा नारायण
चारिमुखे ब्रह्मा गिया करेन स्तवन * कत निद्रा यान प्रभु देव नारायण
पदतले लक्ष्मीदेवी करिछेन स्तुति * अनन्तशय्याय शुये आछेन श्रीपति
सकल देवता गिया दाण्डाइल कूले * देखिल येमन मेघ भासिछे सलिले
शुइया आछेन हरि अनन्त उपरे * वासुकि सहस्र फना तदुपरि धरे
सेवकगणेर प्रति प्रभु देह मन * तोमार निद्राय निद्रा चेतने चेतन
विपत्ति करह दूर श्रीमधुसूदन * चारिमुखे ब्रह्मा यदि करेन स्तवन
क्षीरोदे उठिया वसिलेन नारायण * चारि दिके देखिलेन यत देवगण
वसिया श्रीहरि करिलेन एक शब्द * से शब्दे हइल श्लोक चारि पद बद्ध
हार करिलेन चारिदिके निरीक्षण * म्लान देखिलेन सब देवेर वदन
मलिन देखिया जिज्ञासेन नारायण * तोमा सवाकार शत्रु हैल कोन जन

---

१ लक्ष्मी। २ शेष शय्या। ३ जितना भी, समस्त। ४ कृपादृष्टि। ५ ब्रह्मा की प्रार्थना।

विधि[1] सकोच कह सुनहु पुरन्दर * मम वर प्रबल दशानन निशिचर
सो तुम जाय सकल दुख-गाथा * बरनौ, द्रवित होयँ भवनाथा
जोरि पाणि, सुरगुरु[2] प्रभु आगे * सविनय करन दण्डवत लागे
मंगल रूप परम भगवाना * सबन विदित, राखहु सुर माना
नाथ-अनाथ, दीन कर त्राना * निगमागम[3] तुम सकल पुराना
विश्वस्रवा-तनय[4] दुर्दण्डा * विधि अराधि, वर लहेउ प्रचण्डा
तेज-लंकपति, सुर श्रीहीना * सुरपुर-नाम दुसह तिन कीना
सविता-सोम न स्वर्ग प्रकाशा * निशा-दिवस तम-निविड[5] निवासा
दण्डहीन, हत यम-अधिकारा * वरुन न अधिपति जल-आगारा
पावक प्रबल तेज निर्वाना * कियो दरिद हरि धनद[6] खजाना
गतिविहीन भयभीत समीरा[7] * तजे मार्ग ग्रहगन, अति पीरा
सागर वेग न, मंद तरंगा * राग-रंग जनि कतहुँ प्रसंगा

विधाता बलेन शुन देव पुरन्दर * तुमि गिया कह कथा प्रभुर गोचर
आमि वर दियाछि दुर्दान्त रावणेरे * तुमि गिया कह दुःख प्रभुर गोचरे
देवगुरु बृहस्पति जोड़ करि हात * प्रभुर गोचरे करिलेन प्रणिपात
अवधान करह ठाकुर भगवान * आपनि जानह यत देवतार मान
आगम निगम तुमि भारत पुराण * अनाथेर नाथ तुमि कर परित्राण
विश्वश्रवा मुनिपुत्र राजा दशानन * पाइल ब्रह्मार वर करि आराधन
तार तेजे स्वर्गे देव रहिते ना पारे * देवेर देवत्व हरे दुष्ट बलात्कारे
घुचाइल यमेर यतेक अधिकार * सूर्य्येर उदय नाइ सदा अन्धकार
चन्द्रेर कोटक कभ नाहि तारज्योति * बहुकाल प्रभु स्वर्गे अन्धकार राति
वरुणेर घुचिल अगाध यत जल * निर्व्वाण हइल अग्नि नाहिक प्रबल
कुवेरेर हरे धन पाइल तरास * ग्रहगणेर अधिकार हइल विनाश
सम्वरिल पवन पाइया महाभय * समुद्रेर वेग अति मन्द मन्द वय

---

१ ब्रह्मा। २ बृहस्पति। ३ वेद-शास्त्र। ४ विश्वस्रवा का पुत्र रावण। ५ घोर अन्धकार। ६ कुबेर। ७ पवन।

वीना-नाद न नारद गीता ※ सुरपुर असुभ, सकल विपरीता
पावसादि षड्ऋतु कुसुमाकर ※ तजे समय भयवस दसकंधर
वर विरंचि दीनेउ भय मानी ※ किय दुर्जय रावण अभिमानी
विधि-वर पाय, विधिहिं प्रतिकूला ※ सुरपुर हरन दुसह दुखसूला
छिनीं सुता, अपमान चहुँ, मलिन, न सुरपुर वास।
ठौर न त्रिभुवन सुरन कहुँ, जहाँ जाँय तहँ त्रास ॥६२॥
अहह सरन पग प्रभु तव पावन ※ देव-देवि राखिय वधि रावन
सुनत, नाथ-उर क्रोध कराला ※ जिमि घृत पाय प्रज्ज्वलित ज्वाला
कर गहि चक्र सुदर्शन धारी ※ सुरन प्रबोधि गरुड असवारी
अधिक न सुरगन त्रास प्रसंगा ※ करौं मान-मद-रावन भंगा
अबहिं वधौं, कह गरुड़-असीना ※ विधि सोइ समय निवेदन कीना
मम वर अमर प्रथम दसकंधर ※ वध न तासु बिन मानव-बन्दर
जो नर जनम लेयँ भगवाना ※ निसिचर मारि, करैं सुर-त्राना

छाड़े वीणा नारद वीणाय छाड़े गीत ※ अमङ्गल स्वर्गेयत हैल विपरीत
वसन्तादि अधिकार छाड़े छय ऋतु ※ नित्य भय पाइ सबे रावणेर हेतु
ब्रह्मार वरेते सेइ हइल दुर्ज्जय ※ तारे वर दिया ब्रह्मा निजे पान भय
ताँर वर पेये लङ्घे ताँहार वचन ※ स्वर्ग हैते खेदाड़िया दिल देवगण
काड़िया लइल से देवेर कन्या यत ※ देवेर शरीरे अपमान सहे कत
त्रिभुवने रहिते कोथाओ नाहि स्थान ※ यथा जाइ तथा से करे अपमान
निवेदन करि प्रभु तोमार चरणे ※ रावणे वधिया राख देव देवीगणे
शुनिया प्रभुर क्रोध अन्तरे बाड़िल ※ घृत पेये अग्नि येन प्रज्ज्वलित हैल
विनता-नन्दने हरि करेन स्मरण ※ चक्र हाते करि पक्षे करि आरोहण
कहिलेन देवगणे भय नाहि आर ※ रावणे एखनि ये करिब संहार
गरुड़े चड़िया चलिलेन जगन्नाथ ※ हेनकाले कहे ब्रह्मा प्रभुर साक्षात्
आमि वर दियाछि ये पूर्वे रावणेरे ※ एखनि करिले रण रावण ना मरे
नरेर उदरे यदि लओ हे जनम ※ नर वानरेर हाते ताहार मरण
प्रभुर साक्षाते ब्रह्मा कहेन ए कथा ※ जन्मेर नामेते प्रभु हेंट करे माथा

वर के वीर, विपति मोहिं टेरा * सहज सुभाव सदा विधि केरा
भावी अमिट, चखौ निज करनी * मकल, स्वर्ग तजि गमनौ धरनी
सुनि विरंचि, हरि, विनय सुनावा * दुर्जय दनुज दुसह दुख गावा
प्रहरी-लक्क दण्डधर भानू[१] * निज कर रंधति[२] पाक कृमानू
सुरपति सुमन सँजोवति हारा * पवन करत नित मन्द बयारा[४]
छत्र छपाकर[५] छिति महरानी * मार्जन, वरुन पियावत पानी
घोटक घास काटि उपहासा * दीन विलोकि दमा यम त्रासा
शनि-कुदीठ त्रैलोक विनासा * धोवत वसन लंकपति-बामा
दनुज-सुतन चटसार[६] गुजारा * सकल सृष्टि मैं सिरजनहारा

रावन मन रजन करत, वीनापानि[७] मुनीस।
भुवन सिद्धि-सम्पति सकल, हित विलास-दससीस ॥६३॥

जो नर-जनम न भावै प्रभुमन * हरि-रचना लीजै हरि-चरनन
रचउ विरचि इतर सुरनाथा * तव जग तुमहि समर्पित नाथा

वरेर समय ब्रह्मा हन आगुयान * विपदे पड़िले बले रक्ष भगवान
कतबार दुःख पाव ललाटे लिखन * पृथिवीते याव स्वर्ग करिया त्यजन
पुनश्च हरिरे ब्रह्मा कहेन वचन * दुष्ट रावणेर क्रीड़ा करह श्रवण
हाते अस्त्र सूर्य्यदेव लंकार दुयारी * इन्द्र माला गाँथि देन चन्द्र छत्रधारी
आपनि त अग्निदेव करेन रन्धन * मन्द मन्द वातास करेन समीरण
वरुण वहिया जल देन निति निति * करेन मार्ज्जना गृह निजे वसुमती
शुनिले यमेर कथा हइवेक हास * काटिया आनेन तार घोटकेर घास
शनि दृष्टे त्रिभुवन भस्म हैया उड़े * कापड धुइया देन शनि लङ्कापुरे
जगतेर कर्ता आमि ब्रह्मा महामुनि * पड़ाइ वालकगणे लङ्काते आपनि
रावणेर अग्रेते देव गायक नारद * रावण भुवन जिनि करेछे सम्पद
जन्म निते हरि यदि हइला कातर * आपनार सृष्टि सब लह चक्रधर
आर इन्द्र आर ब्रह्मा करह सृजन * आपनार सृष्टि सब लह नारायण
एतेक वलिया ब्रह्मा करुण वचन * भकतवत्सल प्रभु ताहे देन मन

१सूर्यदेव। २रसोई बनातेहैं। ३अग्निदेव। ४पखा झलना। ५चन्द्रदेव। ६पाठशाला। ७नारद।

सुनि विधि-विनय सुधा रसमानी * भक्तविबस कह मंगल बानी
बरनउ युगुति[1] सकल चतुरानन * कासु उदर जनमउँ, केहि आँगन
कवन देस-कुल मम अवतारा * को मम जग परिजन-परिवारा
कह विधि, अवध भानुकुल-भूपा * कौशल्या पटरानि सुरूपा
तासु गर्भ प्रभु पावन जन्मा * सुनि बोले मृदु बैन अजन्मा[2]
चिर परिचित ते मम दोउ प्रानी * भक्त पुरातन मम-वरदानी
सो वर सफल जनमि तिन गेहा * धरहुँ सुरन हित मानव-देहा
वानर-योनि जनमि सुरवृन्दा * नर-वानर मिलि असुर निकन्दा[3]
जानत विष्णु-गमन छितिलोका * कातर कमला[4] प्रभुहि विलोका
धरा जनम, तव नाथ वियोगा * कतक काल पुनि दरस सँयोगा
दुसह व्यथा, मोहिं तजिय न कन्ता * रमा रोय प्रनवत भगवन्ता
बोले हरि, विधि कहहु विचारी * लोकजननि[5] किमि व्यथा निवारी
जगती जनम बिना जगमाता * होय न प्रभु दसकंध निपाता

हे ब्रह्मन् इहार उपाय वल मारे * कोन वंशे जन्म लव वल कार घरे
काहार उदरे आमि लइव जनम * आमारे वा अपत्य वलिवे कोन जन
ब्रह्मा वले जन्म लवे दशरथ घरे * सूर्य्यवंश पुण्येते कौशल्यार उदरे
विधातार वचने वजेन चक्रपाणि * दशरथ कौशल्या उभये आमि जानि
पूर्व्वेते आमार सेवा करिछे विस्तर * जन्मिव तोमार घरे दियाछि ए वर
नरेर गर्भेते आमि लइव जनम * वानरीर गर्भे जन्म लह देवगण
आमि नर हइ हओ तोमरा वानर * रावण मारिते येन हइओ दोसर
ब्रह्मा वाक्ये स्वीकार करेन नारायण * पदतले पड़ि लक्ष्मी जुड़िल क्रन्दन
तव अवतार हवे पृथिवी मण्डले * तोमा दरशन आमि पाव कत काले
आमारे छाड़िया कोथा याइवे श्रीहरि * विच्छेदय-त्रणा आमि सहिते ना पारि
लक्ष्मीर रोदनेते कान्दे कम्बुग्रीव * ब्रह्मारे जिज्ञासे कोथा लक्ष्मीरे राखिव
शुनिया से वाक्य ब्रह्मा निवेदन करे * उनि नाहिं गेले कि रावण राजा मरे
अयोनि सम्भवा उान जन्मिवेन चापे * जनकेर घरे जन्म मिथिला प्रदेशे

---

१ तरकीब। २ जन्म-मृत्यु-रहित। ३ विनाश। ४ लक्ष्मी। ५ जगदम्बा।

दिव्य जनम[1] छिति जहॉं विदेहा ※ सुता प्रकट मिथिलापति गेहा
कथा हरिजनम विलमि[2] कछु, पुनि बरनेउ कृतिवास।
जगदम्बा जिमि जानकी, जनमी जनक-निवास ॥६४॥

जनक ऋषि के हल जोतते समय लक्ष्मी का जन्म

मिथिला-अधिप जनक ऋषिराजा ※ यज्ञभूमि जोतत सुतकाजा
लै हर जोतत खेत भुवाला ※ नभ उर्वसी गमन सोइ काला
लखि अप्सरा कामसर घाता ※ छिति ऋतुमती, रेत नृप पाता
अवनि-गर्भ सो डिम्ब-सरूपा ※ जोतत भूमि जहॉं नित भूपा
हर परसत, नृप डिम्ब निहारी ※ किये टूक दुइ, कौतुक भारी
सुता रतन छवि रमा सरूपा ※ चपला सरिस, रुदन सुनि भूपा
चकित देव, उत शब्द अकासा ※ सीरभूमि जो सुता प्रकासा
तव तनया, पालौ गृह जाई ※ लै नृप अंक चले हरषाई

एतेक बलिल यदि ब्रह्मा तपोधन ※ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

जनक ऋषिर चाषे लक्ष्मीर जन्म

श्री हरिर जन्म-कथा थाकुक एखन ※ आगेते कहिब माता लक्ष्मीर जनम
येखानेते वेदवती छाडिल जीवन ※ सेखाने हइल दिव्य मिथिला भुवन
तार राजा हइल जनक नामे ऋषि ※ पुत्रेर कारणे राजा यज्ञभूमि चषि
स्वहस्ते लाङ्गले राजा यज्ञभूमि चषे ※ उर्व्वशी चलिया जाय उपर आकाशे
ताहाके देखिया कामे जनक मोहित ※ हठात् ऋषिर वीर्य्य हइल स्खलित
दैवयोगे पृथिवी आछिल ऋतुमती ※ ऋषिवीर्य्य पडिया हइल गर्भवती
डिम्बरूपे भूमि मध्ये छिल बहुकाले ※ भासिया उठिल डिम्ब लाङ्गल मिराले
डिम्ब भाङ्गि जनक करिल दुइ खान ※ कन्यारत्न देखि ताहे लक्ष्मीर समान
उडा-उडा करि कान्देयेन सौदामिनी ※ आचम्बिते आकाशेते हैल देववाणी
चाषभूमि हैते एइ कन्यार जनम ※ तव कन्या बटे एइ करिह पालन
शुनिया जनक बड हरिष अन्तरे ※ कन्या कोले करिया तखनि एल घरे

---

१ अलौकिक (अयोनि) जन्म । २ रुककर । ३ अंड के समान ।

केहि दुख दैन हरन किय बाला ? ❊ कहत रानि, नहिं उचित सुवाला
जोतत सीर लही यह सीता ❊ पालहु रानि समोद सप्रीता
संततिहीन ! उमड़ स्नेहा ❊ सुता बढ़त दिन-दिन नृप-गेहा
केशपाश घन चँवर समाना ❊ अधर ओष्ठ फल बिम्ब लुभाना
करगत सुकर सहज कटि अंगा ❊ अँगुरि पदुमपग हिंगुल रंगा
तनछवि सुबरनलता प्रतीता[1] ❊ सीता[2]-जनम नाम सो सीता
अतुल अथक इंदिरा सरूपा ❊ जेहि छवि मुग्ध विष्णु नररूपा
लक्ष्मी-जनम-कथा सुनि काना ❊ लहैं सुतिय, सुत, संपति नाना

पुत्रेष्टि-यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ का चरु राजा दशरथ की तीन रानियों द्वारा खाना और तीनों के गर्भ से चार अंशों में नारायण का जन्म

जनकपुरी श्री-जनम उत, अवधपुरी श्रीकान्त ।
असुर-सूल सुर-सुखद, किय लीला लीलाकान्त ॥६५॥

यज्ञ, वर्ष लौं, दसरथ कीन्हा ❊ यज्ञभूमि प्रभु दरसन दीन्हा

देखि कन्या राजरार्णा जिज्ञासे तखन ❊ दुःख दिया काहारे आनिले कन्याधन
जनक बलेन क्षेत्रे कन्यार जनम ❊ मम कन्या बटे तुमि करह पालन
अपत्य नाहिक स्नेह बाड़िल अन्तरे ❊ दिने-दिने बाड़े लक्ष्मी जनकेर घरे
घन केशपाश तॉर येमन चामर ❊ पाका बिम्बफल तुल्य तॉर ओष्ठाधर
मुष्टिते धरिते पारि तॉहार कॉकालि ❊ हिङ्गुले मण्डित पादपद्मेर अंगुलि
परमा सुन्दरी कन्या येन हेमलता ❊ सिराले हइल जन्म नाम राखे सीता
लक्ष्मीर रूपेर किबा कहिब तुलन ❊ यार रूपे भुलिबे आपनि नारायण
येइ जन शुने एइ लक्ष्मीर जनम ❊ धन पुत्र लक्ष्मी तारे देन नारायण
कृत्तिवासपण्डितेर कवित्वविचक्षण ❊ गाइल ए आदिकाण्ड लक्ष्मीर जनम

दशरथे पुत्रेष्टि-यज्ञ साग आ यज्ञेर चरु तिन रानीके भक्षण एवं तिनेर गर्भे नारायणेर चारि अंशे जन्म

मिथिलाय हैलयदि लक्ष्मीर उत्पत्ति ❊ अयोध्याय जन्म निते यान लक्ष्मीपति
दशरथ यज्ञ करे एकइ वत्सर ❊ यज्ञस्थले आसि देखा दिलेन श्रीधर

---

१ मालूम पड़ती थी । २ खेत जोतने के बाद की रेखा को सीता कहते हैं । ३ रामचन्द्र ।

शंख चक्र कर पद्म गदाधर ※ वनमाला किरीट कुण्डलधर
शृंगहि केवल दरस सरूपा ※ लखत न आन[1] चतुर्भुज रूपा
कह मुनि, दसरथ-पुन्य महाना ※ जिन निकेत जन्मत भगवाना
कौतुक ! सुरन कीन नभवानी ※ रामजनम, रावनवध जानो
अंधक मों नृप श्रीफल पावा ※ सो शृंगी चरु सहित मिलावा
आहुति पूर्न शृंगि ऋषि दीना ※ विष्णु-रूप चरु प्रगटित कीना
चरु सँजूति पुनि सुवरन थारी ※ सुभ छन मुनि दसरथहिं सवाँरी
महरानिन चरु दीजिय जाई ※ ते सुतवती होयँ सो पाई
चरु नृप लीन, कीन मुनि वदन ※ शुचिपथ महल चले अजनन्दन
कौशल्या, कैकइ पटरानी ※ यज्ञप्रसाद देन मन मानी
दोउन, भाग दै भूप समाना ※ यज्ञभूमि दिसि कीन पयाना
रानि सुमित्रा सकल विलोका ※ भरत उसास, अतुल उर सोका
कवन द्रव्य मोहिं वञ्चित कीन्हा ※ हतभागिन मोहिं भूप न चीन्हा

शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला ※ किरीट कुण्डल कर्णे हृदे वनमाला
एइरूपे आमि देखा दिल नारायण ※ केवल देखिल ऋष्यशृङ्ग तपोधन
मुनि बले दशरथ तुमि पुण्यवान ※ तव घरे जन्मिते आइल भगवान
हेनकाले दैववाणी हैल चमत्कार ※ विष्णु जन्मे रावणेर करिते संहार
ऋष्यशृङ्ग मुनि दिल यज्ञेते आहुति ※ यज्ञ हैते उठे चरु विष्णुर आकृति
विष्णुमत्रे ऋष्यशृङ्ग ताते दिल काटि ※ ताते फेले दिल अन्धकेर फल गुटि
तुलिलेक चरु मुनि सुवर्णेर थाले ※ दशरथ हाते दिया कहे शुभकाले
प्रथमा नारी के लये कराओ भक्षण ※ एइ चरु हैते हवे तोमार नन्दन
मुनि चरु हाते दिल राजा वन्दे माथे ※ अन्तःपुरे गेल राजा सुपवित्र पथे
कौशल्या कैकेयी तॉर मुख्य दुइराणी ※ एकभाग छिल चरु कैल दुइ खानि
अग्रभाग दिल राजा कौशल्या राणीरे ※ शेष भागखानि दिल कैकेयी देवीरे
चरु दिया यज्ञशाले गेल दशरथे ※ हेन काले सुमित्रा से लागिल कान्दिते
ऊर्द्ध श्वासेआसिकहे छाड़ियानिश्वास ※ कोनद्रव्य खेते राजा नाकैल आश्वास

---

१ अन्य किसी का । २ यज्ञ की आहुति के लिये हविष्यान्न ।

जीवन विफल, विलग मोहिं राखी * कतहुँ न सुख, अकेल जो चाखी[1]
करुनामयी कौशिला रानी * कहेउ, सुमित्रा! सुनु मम बानी
महभामिनि तीनिउ भगिनि, अर्द्ध देहुँ तोहिं अंस।
पै, मम सुत-सहचर सदा, रहै तोर अवतंस ॥९६॥
ममज[2] दास तव-तनय जेठानी * दै वर मोहिं सनाथहु रानी
एक भाग निज हित धरि शेषा * दियो सुमित्रहिं चरु अवशेषा
कैकइ+ कौतुक सकल निहारी * अति सयानि, इमि गिरा उचारी
मम चरु-भाग रानि तव हेता * वचन देहु जो हर्ष समेता
मम चरु-अंस प्रगट तव नन्दन * मम-सुत-सखा सतत[3] मनरंजन
दीदी दया लहौं बड़भागी * ममज, दास तव सुत अनुरागी
सुनि कैकई, अस निज दीन्हा * तीनिउ संग पान चरु कीन्हा
हरि, इक अस, जनम तन चारी * शुभ छन तीन कोखि अवतारी

आमित दुर्भागा नारी विफल जीवन * आमारे वञ्चिया खेये कत पावे धन
शुनिया कौशल्या राणी ह'ये दयावती * बलिते लागिल राणी सुमित्रार प्रति
मने मानियाछि हेन तिनटि भगिनी * आपन भागेर तोमा दिव अर्द्धखानि
इहाते तोमार यदि जन्मये नन्दन * आमार पुत्रेर सङ्गे रवेक से जन
सुमित्रा बलेन दिदि एइ देह वर * मम पुत्र हय तव पुत्रेर नफर
अग्रभाग कौशल्या राखिया निज तरे * शेषभाग दिल तवे सुमित्रा भग्निरे
ताहा देखि बसिया कैकेयी क्रूरमति * कपटे डाकिया कहे सुमित्रार प्रति
चरुर अर्द्धेक अंश तोमा दिव आमि * सुमित्रा भगिनी एइ सत्य कर तुमि
आमार चरुर अंशे हवे ये नन्दन * आमार पुत्रेर सङ्गी क'रो सेइ जन
सुमित्रा बलेन दिदि करिलाम पण * तोमार पुत्रेर दास आमार नन्दन
एत शुनि शेषभाग दिलेन ताँहारे * तिनजन खाइलेन चरु एकबारे
एक अंशे नारायण चारि अंश हैया * तिन गर्भे जन्मिलेन शुभक्षण पाइया

---

१ खायगा। २ मुझसे उत्पन्न पुत्र। ३ सदैव।

+ कैकेई का भाव कृत्तिवासानुसार यहाँ नहीं वर्णन किया है। बदल दिया गया है।

दिय नृप सविधि दच्छिना दाना * पूरन याग, द्विजन सन्माना
'नृप सुतवान' सबन वर दीना * तृप्त गमन निज-निज गृह कीना

श्रीराम का जन्म

इत, रानिन चरुपान प्रभावा * कोटिन भानु तेज तन छावा
अमित केस सित, वयस बुढानी * सो तजि, चरुनल तरुनि लखानी
विधि-माया, तीनिउ इक काला * भईं ऋतुवती, विदित भुवाला
धारेउ गर्भ, भूप अनुमाना * बढ़त मतन शशिकला समाना
शुभ लच्छन दुइ मास बितीता * चौथ मास, नृप भई प्रतीता
पञ्चम मास गर्भ पगुधारा * समाचार शुभ जग विस्तारा

पुरुवारध[1], सुमुखिन वदन[2], जिमि प्रभात कर चंद ।
श्याम उरोज सलज्ज मन, अहिनिसि[3] पुलक अनन्द ॥६७॥

कछु बीते रुचि मृतिका गाना * उन्नत उदर, नयन अलसाना
फरकति कछु उठवनि लग भारी * अभरन[4] खसति, अंग पियरारी

हेथा यज्ञ साङ्ग करि राजा दशरथ * ब्राह्मणेरे धन दान करे विधिमत
ब्राह्मणे तुषिल करि नाना धन दान * सबे आशीर्व्वाद करे हओ पुत्रवान
विदाय हइया सबे निज देशे जाय * आदिकाण्डे गाइल पुत्रेष्टि यज्ञ साय

श्री रामेर जन्म

हेथा तिन राणी चरु करिया भक्षण * कोटि सूर्य्य जिनि सेइ तिनेर वरण
हइया छिलेन वृद्धा शिरे पाका केश * चरुर भक्षणे येन प्रथम वयेस
विधाता सकल माया करेन घटन * एक काले ऋतुमती हैल तिनजन
दशरथ जानिलेन ए सब सन्दर्भ * ऋतुर लक्षणे जाना गेल सेइ गर्भ
एइमत तिन गर्भ बाड़े दिने दिने * दुइ मासे गर्भ जाना गेल सुलक्षणे
चारिमास गर्भेते प्रतीत हैल मन * पञ्चमास गर्भेते शुनिल त्रिभुवन
प्रथम गर्भेते लज्जायुक्ता अहर्निशि * वदन हइल येन प्रभातेर शशि
कुचाग्र हइले काल उदर डागर * मृत्तिकार भक्षणेते सदा समादर
घन घन हाइ उठे अलस नयन * पाण्डुवर्ण हैल अङ्ग खसे आभरण

---

१ गर्भकाल का पूर्वार्द्ध समय । २ मुख । ३ रातदिन । ४ गहने ।

असह वसन, तन-बल नित छीना * आभा श्याम उरोजन लीना
बढ़त गर्भ बीते नव मासा * लखि भूपति-हिय अमित हुलासा
पञ्चामृत कराय शुचि पाना * पावन गर्भ कीन सविधाना
पुन्य पुरातन, तरु फल आवा * कौसिल्या हरि सपने पावा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर * दरस चतुर्भुज दिय सारंगधर
सुवन-भाव अंकहिं भरि रानी * प्रभु कह 'मांगु' सुमञ्जुल बानी
प्रथम कीन मम बहु सेवकाई * सुफल, उदर तव प्रगटहुँ आई
पालहु मोहिं दै स्तन पाना * अस कहि पुनि अदरस भगवाना
भौंचक रानि निरखि सुख सपना * सकल समोद दसरथहिं बरना
'मातु-मातु' मोहि नाथ पुकारी * अन्धक-वर नृप सत्य विचारी
हरषि द्विजन बहु सुबरन दाना * गत दस मास नृपति अनुमाना
जस-जस प्रसव-काल नियराई * तस-तस भूप मोद अधिकाई

कृष्णवर्ण प्रकाश हइल स्तन बोँटे * शरीरे ना रहे वस्त्र नित्य बल टुटे
एइमत हइल से गर्भेर वर्द्धन * नयमास गर्भवती हैल तिनजन
देखि दशरथ राजा आनन्दित मन * पञ्चामृत दिया कैल गर्भेर शोधन
ये छिल प्राक्तन पुण्य ताहारि कारण * कौशल्यारे देन देखा प्रभु नारायण
स्वप्ने शंख चक्र गदापद्म शार्ङ्गधारी * चतुर्भुज रूपे देखा दिलेन श्रीहरि
पुत्रभावे हरिके करिल राणी कोले * कहिलेन कौशल्यारे डाकिया मा बले
पूर्व्वेते आमार सेवा करेछ आदरे * सेइ पुण्ये जन्मिलाम तोमार उदरे
आपनि तोमार गर्भ लयेछि जनम * पुत्र बलि स्तन दिया करह पालन
एत बलि अदर्शन हैल नारायण * कौशल्या बलेन किबा देखिनु स्वपन
कहिल सकल कथा दशरथ प्रति * मा बलिया आमारे ये डाकेन श्रीपति
शुनि दशरथ राजा हरषित मन * भावे बुझि सत्य हवे अन्धक वचन
दीन द्विजगणेरे दिलेन कत स्वर्ण * एइरूपे दश मास हइल सम्पूर्ण
प्रसव समय यत निकट हइल * दशरथ भूपतिर आनन्द बाड़िल

अत्र-तत्र जनम, निकट, मन धरहीं * मंगलगान प्रजागन करहीं
हरि आगमन-भूमि अनुमाना * भ्रमति गगन आतुर सुर नाना
दस दिसि मंगल नखत चहुँ, शुभ ग्रह उदित अनन्द।
प्रथम पीर सुनि, प्रसव-पुर[१], प्रविसीं[२] नारीवृन्द ॥६८॥
शुक्ला नवमि चैत्र मधुमासा * शुभ छन जग जगनाथ प्रकासा
व्यथा न सोनित[३], गर्भ पुनीता * श्री हरि जनम सहित उपवीता[४]
दीपशिखा जिमि तिमिर विनासा * प्रभु-तन-दुति रवि कोटि प्रकासा
श्याम गात मकराङ्कित कुण्डल * निखरित मुख, सुधांसु,[५] छवि झलमल
लंब अजानुबाहु मन रञ्जा * श्रवन खचित दृग नीलमकंजा
नूतन, अकथ, सुकोमल अंगा * अधर ओष्ठ कस विवित रंगा
जो छबि विश्व जुरै मिलि तीरा * अतुल, असम श्रीनाथ-सरीरा
पुर-वनितन जय-कलरव कीन्हा * सम्हरि नार-छेदन मन दीन्हा
शुभ संवाद कौशिला - दासी * खुसखबरी नृप पाहि प्रकासी

एखन तखन राणी हइल प्रसव * प्रजागण गान करे सदा शुभ रव
येइ दिन भूमिष्ट हइबे नारायण * आकाश युड़िया वसिलेन देवगण
शुभ ग्रह सकल उदित स्थाने स्थाने * दशदिक मङ्गल सकल तारागणे
प्रथमे प्रथमा स्त्रीर गर्भेर वेदन * अन्त.पुरे प्रवेश करिल नारीगण
मधु चैत्रमास शुक्ला श्रीरामनवमी * शुभक्षणे भूमिष्ट ह'लेन जगत्स्वामी
गर्भव्यथा नाहि पायनाहिक शोणित * शुभक्षणे श्रीहरि हइल उपनीत
अन्धकार घुचे येन ज्वलिलेक बाति * कोटि सूर्य्य जिनिया ताँहार देहद्युति
श्यामल शरीर प्रभु चाँचर कुन्तल * सुधांशु जिनिया मुख करे झलमल
आजानुलम्बित दीर्घ भुज सुललित * नीलोत्पल जिनि चक्षु आकर्ण पूरित
के वर्णिते हय शक्त रक्त ओष्ठाधर * नवनीत जिनिया कोमल कलेवर
संसारेर रूप यत एकत्र मिलन * किसे वा तुलना दिब नाहिक तेमन
जय जय हुलाहुलि दिल नारीगण * सावधाने करिलेन नाड़िका छेदन
कौशल्यार दासी सेइ शुभवार्त्ता नामे * शुभ समाचार दिल गिया राजधामे

---

१ सौंर, सूतिका गृह। २ प्रवेश किया। ३ रक्त। ४ यज्ञोपवीत। ५ चन्द्रमा।

अष्टाभरन आदि सोइ पावा * दसरथ-उर उछाह अति छावा
वेसुध गात विभोर अनन्दा * अगनित धन पाये द्विजवृन्दा
पुनि तरंग पुलकावलि छाई * शत-शत सुरभि दान मन भाई
सुभ छन पूछि, सुवन मुख हेता * अवलोकन नृप चले निकेता
रोहिनि-गेह चन्द्र जिमि गमना * सुरपति चले मनो शचि-भवना
चले भूप छवि-सुत अवलोकन * जहँ कौशिला-कोलि[1] मनमोहन
वहु सम्हारि शिशु उर लपिटाई * पुनि-पुनि चुम्ब चदमुख राई

दरिद मोद निधि-कलस लहि, लोचन लोचनहीन।
ताहू सों नृप अधिक सुख, तनय विधाता दीन ॥६६॥

भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म

प्रथम अंश प्रगटत घनश्यामा * कैकइ छोम जनम सुनि रामा
जनम कौशिला-सुत वड़भागी * विधि[2] न प्रथम मोहिं दीन, अभागी

शुनि दशरथ पूर्ण पुलक शरीरे * अष्ट आभरण आरो दिलेन दासीरे
परम आनन्दे राजा पामरे आपना * कत धन दिल द्विजे के करे गणना
आनन्द सागरे राजा भासे सेइ ठाँइ * पुनरपि दिल दान कत शत गाइ
गणक आनिया करिलेन शुभकाल * पुत्रमुख देखिवारे यान महीपाल
इन्द्र येन चलिलेन शचीर मन्दिरे * चन्द्र येन आसियाछे रोहिणीर घरे
कौशल्या लमियाछे नारायण कोले * पुत्र देखिवारे राजा गेल हेनकाले
धीरे धीरे दशरथ पुत्र निल वुके * एक लक्ष चुम्ब तार दिल चाँदमुखे
दरिद्र पाइल येन निधिर कलस * ततोधिक आनन्दित राजार मानस
अन्धजन येमन नयन लाभे हय * ततोधिक दशरथ पाइया तनय
एतदिने दशरथ मनेते उल्लास * रामजन्म रचिल पण्डित कृत्तिवास

भरत, लक्ष्मण ओ शत्रुघ्नेर जन्म

एक अंशे चारि अंश हैल नारायण * शुनिया दुःखित वड़ कैकेयीर मन
आजिहते कौशल्याये वाड़िलसोहागे * मोरे पुत्र केन विधि नाहि दिल आगे

---

१ कौशल्या की गोद में। २ विधाता।

नृप-सुत जेठ राज-अधिकारी * शास्त्र सकल अस नीति विचारी
पूछत मंत्र मंथरा तीरा * तब लौं बढ़ी प्रसव के पीरा
मंगलघरी प्रगट पद्मासन * अंस द्वितीय जन्म नारायण
भरत सरूप सलोन अनूपा * नखसिख सकल राम अनुरूपा
गई मन्थरा जहँ अजनन्दन * कैकइ-उदर जनम तब नन्दन
मुदित भूप कैकई निकेता * चले सुवन मुख दरसन हेता
आनन-सुत विलोकि महिपाला * बहु धन दान, द्विजन प्रतिपाला
पीर सुमित्रा प्रसव बहोरी * जन्मति जुगुल तनय कै जोरी
गौरवर्ण दोउ हरि-अवतारा * अनुपम छबि सौमित्रि-कुमारा
रूपसि-प्रसव जुगुल सुत देखी * बनितन जय-ध्वनि कीन विशेखी
दीन सगर्व खबरि पुनि चेरी * जोरी नाथ जनम सुत केरी
सुनत अवधपति मोद अपारा * दान लुटाय, द्विजन भण्डारा
निरखि सुतन मुख, भूप पयाना * करैं गनित[1] जहँ बुध-विद नाना

ज्येष्ठ पुत्र राजा हय सर्व्वशास्त्रे बले * मम पुत्र विधि आगे केन नाहि दिले
बलिते बलिते हैल गर्भेर वेदन * कैकेयी बलेन कुँजी गा करे केमन
छिलेन मायेर गर्भे करि पद्मासन * शुभक्षणे जन्मिलेन प्रभु नारायण
कौशल्या राणीर पुत्र येरूप लावण्य * सेइ मुख सेइ नाक किछु नहे भिन्न
कुँजी गिया जानाइल भूपतिर घरे * हइल तोमार पुत्र कैकेयी उदरे
शुनि दशरथ राजा आपना पासरे * पुत्र मुख देखे गिया कैकेयीर घरे
पुत्र मुख देखि राजा अति हृष्टमति * धन वितरणेते देन अनुमति
सुमित्रार हइलेक गर्भेर वेदन * यमज उभय पुत्र प्रसवे तखन
गौर वर्ण हैल दोंहे विष्णु अवतार * सुमित्रा प्रसव कैल यमज कुमार
यखन यमज पुत्र प्रसवे सुन्दरी * जय-जय हुलाहुलि दिल सब नारी
दासी गिया दशरथे कहिल गौरवे * आर दुइ पुत्र राजा सुमित्रा प्रसवे
शुनिया हइल तॉर आनन्द अपार * ब्राह्मण-गणेरे लुटाइल सकल भाण्डार
चलिलेन दशरथ परम कौतुक * तिन घरे देखिलेन चारि पुत्र मुख

---

१ ज्योतिषी गणना ।

रविकुल धनि, नृप सुयस बखाना * सुभ ग्रह घरी अकथ भगवाना
सारभौम[1] मंगल सुवन, रामजनम सुनि गान।
हरन त्र स-यम, लहन सुख, सुत, श्री, संपति खान ॥१००॥

श्री राम जन्म में सभी को आनन्द

चले दान लहि गनित बुध[2] उत पुर अनँद-हिलोर।
अवध, प्रजा-चारिउ बरन मगन, अवध सुख-सोर॥
रघुनाथ-जनम सुनि, नाचत ऋषि-मुनि, दण्ड कमण्डल हाथा।
नाचत सुर सुरपुर, धरा नारि-नर, अवध नचत नरनाथा[3]॥
नाचत विरंचि रंग, देवयानि मंग, इन्द्र नर्त्त शचि-साथा।
जड़-जङ्गम जेते, नृत्य अचेते, वसुमति[4] नर्त्ति सनाथा॥
दिवि अभरन-धारी रूपसि नारी, चलीं दरस भगवन्ता।
विद्याधरि-नर्तन, सकल नगर ध्वनि, रतन प्रदीप ज्वलंता॥

तिन दण्ड वेला हैल गणकेर मेला * खड़िते गणिया देखे शुभ क्षण वेला
सूर्य्यवंशे आछे बहु राजार सुकीर्त्ति * सबा हैते सेइ पुत्र राजचक्रवर्ती
इहार कोष्ठिर किबा करिब गणन * एमन लक्ष्मण बुझि प्रभु नारायण
येइ जने शुने प्रभु रामेर जनम * धन पुत्र लक्ष्मी हय भय पाय यम
अयोध्याय हइल आनन्द कोलाहल * क्षत्रि वैश्य शूद्र सबे करिल मङ्गल
गणके तुषिल राजा दिया नाना धन * आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

श्री रामेर जन्मे सकलर आनन्द

रामेर जनम शुनि, नाचिल सकल मुनि, दण्ड कमण्डलु करि हाते।
स्वर्गे नाचे देवगण, मर्त्ये नाचे मर्त्यजन, हरिषे नाचिछे दशरथ॥
श्री देवयानिर सङ्गे, नाचिछेन ब्रह्मा रङ्गे, शची सङ्गे नाचे शचीपति।
स्थावर जङ्गम आर, सबे नाचे चमत्कार, उल्लासित नाचे वसुमती॥
दिव्य-दिव्य आभरण, परियत नारीगण, चलिजाय अनेक सुन्दरी।
चलि जाय राजपथे, श्रीरामेरे निरखिते, सम्मुखेते नाचे विद्याधरी॥

---

१ चक्रवर्ती। २ ज्योतिषी। ३ दशरथ। ४ पृथ्वी।

कौशिला सुवन जनि[1],गगन सुरन ध्वनि,'रघुपति जय श्रीकन्ता'।
जन्मे नारायन, वधैं दसानन, सुरन कलेस-भनन्ता[2] ॥
प्रभु-ध्यान लगावैं, चरित जो गावैं, धनि ! भवसागर तरहीं।
नर-पुन्य उदित, हरि देवलोक तजि ! धराधाम अवतरहीं ॥
यम-त्रास नसावनि, कथा सुपावनि, सुनि, सुत-संपति लहहीं।
पूरन अभिलासा, कवि कृतिवासा, वालमीकि अनुसरहीं ॥

श्रीराम के जन्म से रावणको अमगल की आशका एव उसके निवारण का उपाय सोचना

अवध जनम जो प्रभु, तौ लका * हिए अतंक,[3] रावन मन संका
अचरज दनुज, सिंहासन हाला * गिरे मुकुट छिति, हाल बेहाला !
धरनि किरीट खसकि किमि आये * कौतुक कस ? अपसकुन दिखाये
कित घननाद ! आनु कोदण्डा * करौं वसुमती[4]-वासुकि[5] खण्डा
कहेउ विभीषण धर्म सरूपा * तव वध, प्रभु प्रगटे हरि रूपा
धरनि- सहसफन[6] कोप अकारन * आनि न केहु अपराध दसानन

रत्नेर प्रदीप ज्वले, पुरी पूर्ण कोलाहले, कौशल्या हइल पुत्रवती।
गगनमण्डले थाकि, देवगण बले डाकि, जय-जय-जय रघुपति ॥
जन्मिलेन नारायण, वधिवारे दशानन, देवेर करिते अव्याहति।
इहा शुने येइ जन, किम्वा करे अध्ययन, भवे मुक्त हय सेइ कृती ॥
वैकुण्ठ करिया शून्य, प्रकाशिते नरपुण्य, अवतीर्ण प्रभु भगवान।
रचिल ये कृत्तिवास, पूर्ण करि अभिलाष, वन्दिया से वाल्मीकि पुराण ॥

श्री रामेर जन्मे रावणेर अमङ्गल आशका एव तन्निवारणेर उपाय चिन्तन

अयोध्याते यदि जन्म निलेन श्रीपति * लङ्काय आतंक देखे सदा लंकापति
आचम्बिते रावणेर सिंहासन दोले * माथार मुकुट खसि पड़े भूमितले
दशमुखे हाय-हाय करे दशानन * आचम्बिते मुकुट खसिल कि कारण
कोथागेल इन्द्रजित आन धनुर्व्वाण * पृथिवी वासुकि करि करि खाना-खान
हेनकाले कहेन धार्म्मिक विभीषण * जन्मियाछे ये तोमार वधिवे जीवन
पृथिवीर प्रति क्रोध कर कि कारण * तोमारे वधिते जन्म निल नारायण

---

१ जन्म देकर। २ क्लेशहारी। ३ आतक,भय। ४ पृथ्वी। ५ शेषनाग। ६ शेषनाग।

तबहिं सुरन नभबानी कीन्हा * दसरथ-सदन जनम प्रभु लीन्हा
सो सुनि चिन्तित अतिव दशानन * कहेउ बोलाय दूत शुक-सारन
लखहु अवनि पग-पग दोउ सोधी * कितै जनम रिपु मोर विरोधी
अबहिं हनौं मोइ सैसव काला * नतरु प्रबल पनपत जंजाला
बंदि लंकपति, आयसु धारी * लघि उदधि, चर करैं विचारी
वैष्णव परम-दूत शुक-सारन * त्रिभुवन प्रकट पुरंदर कारन
कह शुक, सुनु सारन! अस भावै * श्रीपति अवध जनम मन आवै
धन्य भाग! दोउ अवसर पाई * लहैं दरस प्रभु चरनन जाई
लखेउ अवध छवि सुरपुर भासा * घर-घर रतन प्रदीप प्रकासा
बिछलत पग पथ चहुँ चिकनाई * साँझ प्रवेस महल दोउ पाई

तहँ कौशल्या-अंक प्रभु, राजत बाल सरूप ।
जाकर जा विधि भावना, लहैं दरस अनुरूप ॥ १०१ ॥

आर कारो अपराध नाहि दशानन * बासुकी काटिते एवे कह कि कारण
सेइकाले आकाशेते हैल दैववाणी * दशरथ घरेते जन्मिल चक्रपाणि
शुनया चिन्तित बड़ राजा दशानन * डाक दिया बले शुन शुक ओ शारण
एके एके देख एस पृथिवी भुवने * आमार शत्रुर जन्म हैल कोनखाने
एखानि मारिब तारे अति शिशुकाले * प्रबल हइबे बड़ घटिबे जञ्जाले
रावणेर आज्ञा चर बन्दिलेक माथे * समुद्रेर पार हैया लागिल भाविते
परम वैष्णव दूत शुक ओ शारण * बासवेर द्वारी तारा जाने त्रिभुवन
शुक बले शुन मोर भाइरे शारण * अयोध्याय जन्मिलेन बुझि नारायण
आजिशुभ दिन हैल आमा दोंहाकार * भाग्यफले देखि गिया चरण ताँहार
एत बलि अयोध्याय दिल दरशन * देखिल अयोध्या येन वैकुण्ठ भुवन
रतन प्रदीप ज्वले प्रति घरे घरे * तैल हरिद्राय पथे चलिते ना पारे
अलक्षिते सान्धाइल कौशल्यार घरे * बसेछेन कौशल्या श्रीराम कोले करे
याहार मानसे याके ये रूप वासना * सेई रूपे प्रभुरे देखये सेइ जना

युगुल बन्धु-चर भक्त महाना * दरस चतुर्भुज दिय भगवाना
शंख चक्र कर पद्म गदाधर * बनमाला, कुण्डल, किरीट धर
शत कोटिन विधि[1] स्तुति करहीं * हरि-तन तीनि लोक चर लखहीं
सनक, सनातनादि प्रह्लादा * नारद निरखि, चरन[2] अह्लादा[3]
भक्ति भरे दोउ, लखि भवमोचन * लोटि मही प्रणवति भरि लोचन
जोरि हाथ स्तुति सुख लहहीं * पुनि-पुनि सहम दण्डवत करहीं
राकस जाति अधम अज्ञानी * तव महिमा अपार किमि जानी
ब्रह्मादिक पद लहे न ध्याना * चरन[4] मो चरन[5] प्रतच्छ प्रमाना
कृपासिन्धु प्रभु गहन, गुनागर * दीजिय वर, निसिचर अति पामर
सदा रमन मन अंबुज-चरना * यहि विधि वंदि, लक किय गमना
सुक-सारन मग मंत्र मिलावा * रावन सन सब कथा दुरावा
पलक निमेस अटे दोउ लंका * कहेउ, दनुजपति रहौ निसंका
तिल-तिल छानि, लखेउँ त्रैलोका * नाथ ! न तव-रिपु कतौं विलोका

परम वैष्णव तारा भाइ दुइ जन * चतुर्भुज रूपे देखिलेन नारायण
शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला * किरीट कुण्डल शोभे हृदे वनमाला
शत कोटि ब्रह्मा ताँरे करिछे स्तवन * प्रभुर शरीरे देखे ए तिन भुवन
प्रसङ्गे ते देखिल ये मर्त्त्य पारिषद * सनक सनातन आदि प्रह्लाद नारद
एइ रूपे दुइ भाइ प्रभुरे देखिया * सहस्र प्रणाम करे भूमे लोटाइया
भक्तिभावे करये अनेक प्रणिपात * स्तवन करिछे तारा करि जोड़ हात
राक्षसेर जाति मोरा बड़इ अधम * तोमार महिमा ज्ञाने आमरा अक्षम
ये पद ब्रह्मादि देव नाहि पाय ध्याने * हेन पाद-पद्म देखि प्रत्यक्ष प्रमाणे
एइ निवेदन करि शुन महाशय * तव पादपद्मे येन मोर मन रय
कृपार सागर तुमि प्रभु गुणधाम * एत बलि गेल तारा करिया प्रणाम
पथे येते दुइ भाइ भाविलेक मने * एकथा कहिब नाइ पापी दशानने
चक्षेर निमिषे तारा लङ्कापुरे गिया * रावणेरे कहे गिया आगे दाँड़ाइया
एके एके देखिलाम ए तिन भुवने * तोमार ये शत्रु आछे नाहि लय मने

---

१ ब्रह्मा। २ दूतों को। ३ हर्ष। ४ दूतो को। ५ चरण।

खसे किरीट अमंगल जानी * जल स्नान तीरथन आनी
दीन, द्विजन दै सुवरन दाना * टरै विपति, अपसकुन नसाना
खिली केतकी भादौं रंगा * कह ठठाय दसमुख इकसंगा

अवुझ विभीषन बन्धु ! करु, सुक-सारन विस्वास।
धरनि सोधि आये, कतौं, जनि मम रिपु आभास ॥१०२॥

अबहिं कहा परिनाम लखाई * अवसर परे विलोकेउ भाई !
आयसु पुनि पयोधि[1] दिय रावन * सकल तीर्थन सुचि जल लावन
तनिक न देर जोरि जुग-पानी[2] * प्रस्तुत सकल तीर्थन पानी
सोई सुचि सलिल कीन स्नाना * दरिद दुखीजन सुवरन दाना
शत-शत सुरभि, शिला संकल्पा * अमित दान लकेश सदर्पा
दान-पुन्य करि सकल विधाना * भयेउ अमर, दसकन्धर जाना

मुकुट खसिल राजा हवे अपमान * एकाल तीर्थेर जले कर तुमि स्नान
सुवर्ण करह दान दीन द्विजवरे * अमङ्गल घुचिबे आपद यावे दूरे
दशमुख मेलिया रावण राजा हासे * केतकी कुसुम येन फुटे भाद्रमासे
ना बुझिया कथा कह भाई विभीषण * आमार नाहिक शत्रु हेन लय मन
रावणेर कथा शुनि बले विभीषण * परिणामे एइ कथा करिबे स्मरण
रावण समुद्र बलि लागिल डाकिते * आसिया समुद्र दाँड़ाइल जोड़ हाते
राजा बले पृथिवीते यत तीर्थ आछे * सकल तीर्थेर जल आन मोर काछे
वाक्य मात्र बलिते विलम्ब ना हइल * सकल तीर्थेर जल सम्मुखे आइल
तीर्थजल दशानन करिलेक स्नान * दरिद्र दुःखीरे राजा करे स्वर्ण दान
यतेक काञ्चन दिल नाम कर कत * धेनु दान शिला दान करे शत-शत
दान पुण्य करिया बसिल दशानन * भाविल अमर आमि नाहिक मरण
कृत्तिवास पण्डितेर श्लोक विचक्षण * रामेर प्रीतिते हरि बल सर्व्वजन

---

१ समुद्र। २ दोनो हाथ।

वानरों का जन्म

इत नररूप जनम जगदीसा * उत सुरगन प्रगटत तन कीसा[1]
निज-निज तेज देवगन दीन्हा * गर्भ वानरिन धारन कीन्हा
'सुरपति' अंस 'बालि' बलवाना * 'भानु' तेज 'सुग्रीव' महाना
कन्द मूल फल खाय रसाला * किष्किधा तिन शौर्य विशाला
उद्‌गम धन बाढ़ति, धनरासी * तेज, तेज तहँ अवमि प्रकासी
बालि-तनय 'अंगद' बलवंता * 'पवन' अंस प्रगटति 'हनुमन्ता'
सचिव 'जाम्ब' जन्मति 'चतुरानन' * सुत 'केसरी' जनम 'पञ्चानन'[2]
बाढ़ति दिन-दिन जिमि तरुशाला * 'हेमकूट', सुत 'वरुण' विशाला
'यम' सुत पाँच तासु अनुहारा * प्रबल 'प्रमाथि' 'कुबेर' - कुमारा
'चन्द्र'-तेज 'दधिमुख' बलसीला * 'अग्नि' अंश सेनापति 'नीला'
'धन्वन्तरहिं' 'सुषेन', * ज्ञान द्रव्य-गुन सकल जिन ।
कपि 'सुषेन' कर देन, * सुत 'महेन्द्र' 'देवेन्द्र' दोउ ॥

वानरगणेर जन्म

नर रूपे जन्मिलेन प्रभु नारायण * वानर रूपेते जन्म निल देवगण
विधाता बलेन शुन यत देवगण * ये यथा वानरी पाओ कर आलिङ्गन
एक वानरीते रति इन्द्र सूर्य करे * दुइ पुत्र जन्मिलेक ताहार उदरे
हइल इन्द्रेर तेजे बालि कपिवर * सुग्रीव वीरेर जन्म दिलेन भास्कर
किष्किन्ध्यार फल मूल खाइते रसाल * फलमूल खाय दोंहे विक्रमे विशाल
तेज हैते तेज बाड़े सम्पदे सम्पद * हइल बालीर पुत्र कुमार अङ्गद
हइल ब्रह्मार तेजे मन्त्री जाम्बुवान * हइलेन पवनेर तेजे हनुमान
हेमकूट नामे कपि वरुणनन्दन * पञ्च पुत्र यमेर ये यम दरशन
जन्मिल शिवेर तेजे केशरी वानर * दिने दिने बाड़েन ये शाल तरुवर
अग्नि तेजे हइलेन नील सेनापति * कुवेरेर तेजे जन्मे वानर प्रमाथी
सुषेणेर जन्म हय धन्वन्तरि तेजे * औषिविद्या विश्वशास्त्र दिल तार माझे
महेन्द्र देवेन्द्र हइल सुषेण नन्दन * चन्द्रतेज दधिमुख हइल तखन

---

१ वानर-शरीर । २ शंकर ।

मर जेते, निज तेज दै, जन्मे कपि बलवन्त।
प्रथक-प्रथक, रसना अकथ, कोटिन कीस अनन्त ॥१०३॥

दशरथ के चारों पुत्रों का अन्न-प्राशन और नामकरण

आतुर नृप इत, गत दिन चारी * पचयें प्रथम अशौच निवारी[1]
छठी पूजि पुनि राति-जागरन * अठयें शिशुन कलाई-बन्धन
पुनि निमंत्रि पुर-बाल समाजा * असन-बसन-अभरन दिय राजा
दिवस त्रयोदस असुचि निवारा * कतक दान नृप नाहिं सम्हारा
चारिउ सुवन वयस षड्मासा * सवन सुभघरी अन्नप्रासा[2]
अवनि-महीप, निमंत्रन पाई * दसरथ-सदन जुरे सब आई
गुरु वशिष्ठ शुभ साइत देखी * परस अन्न मुख हरष विशेखी
भूपति मुदित अंक लै चारी * मधु जल अन्न कन्जमुख डारी
सुमुख नन्दनन पुनि बैठारी * कौतुक रत्न द्रव्य दिय भारी
सकल सतोष मुदित सब काहू * नामकरन कर सबन उछाहू

प्रतेक कहिले हय पुस्तक विस्तर * एकैक देवेर तेजे एकैक वानर
कृत्तिवास पण्डित ये सुधी सर्व्व दण्डे * वानरेर जन्म एबे गाय आदिकाण्डे

दशरथेर चारिपुत्रेर अन्नप्राशन ओ नामकरण

एकैक गणने ये हइल चारि दिन * पाँच दिने पाँचुटी करिल सुप्रवीण
छय दिने षष्ठीपूजा निशि जागरणे * दिल अष्ट कलाइ अष्टाहे शिशुगणे
डाकिया आने राजा बालक गणेरे * कापड़ पूरिया सोना दिल सबाकारे
त्रयोदशे राजार हइल अशौचान्त * कतेक करिल दान नाहि तार अन्त
छय मास वयस्क हइल चारि जन * कराइल सबाकार ओदन-प्राशन
आमन्त्रण करिया सकल क्षत्रगणे * आनाइल दशरथ आपन भवने
आसिया वशिष्ठ मुनि महानन्द मने * चारि पुत्र मुखे अन्न दिल शुभक्षणे
दशरथ चारि पुत्र ल'ये निज कोले * मिष्ट अन्न दिल जल वदन कमले
वसिलेन चारि भाइ सुचारु वदन * कौतुके यौतुक दिल सबे रत्न धन
सकले यौतुक निले आसि राजधाम * विचार करेन सबे राखेन कि नाम

---

१ पहला नहान पड़ा (सौर में)। २ अन्नप्राशन, पसनी।

निगमागम[1] जँह स्त्रोत पुराना[2] ※ जासु जाप मों त्रिभुवन-त्राना
वालमीकि जोइ जप अविरामा ※ नाम कौशिला-सुत सोइ 'रामा'
सहन भार मेदिनी[3] समर्था ※ राखेउ 'भरत' नाम सोइ अर्था
पुनि जे युगुल सुमित्रानन्दन ※ जेठ 'लखन' लघु सुत 'रिपुसूदन'
दसरथ सुनत चारि सुत नामा ※ दीन भूसुरन[4] अगनित ग्रामा
रजतशिला, सुवरन अरु गाई ※ शतविधि शत-शत वरनि न जाई

सुरभि दुधारू सहस दिय, विविध दान सन्मान।
सहित वशिष्ठ, असीसि नृप, मुनिगन कीन पयान ।। १०४।।

श्री राम-लक्ष्मण आदि की बालक्रीड़ा

छठे मास हरि चलत बकाईं ※ विहँसत चढ़त मातु करिहाईं
छिन पितु-अंक, मातु छिन गोदी ※ तोतरि बोल, दोउन हिय मोदी
ससिमुख राम, सुधा सम बतियाँ ※ हँसी मंद, दुति उघरैं दतियाँ
वर्षगाँठ सुभघरी बहारा ※ कटि करधनि गर कन्चन हारा

विचारिया चारिवेद आगम पुराण ※ ये मन्त्र हइते लोक पावे परित्राण
येइ मन्त्र वाल्मीकि जपेन अविश्राम ※ कौशल्या पुत्रेर नाम राखिल श्रीराम
पृथिवीर भार सहिवेन अविरत ※ तेइ हेतु तॉर नाम हइल भरत
सुमित्रार हइयाछे यमज नन्दन ※ शत्रुघ्न कनिष्ठ तार ज्येष्ठ श्री लक्ष्मण
राजा चारि नन्दनेर शुनिलेन नाम ※ ब्राह्मणेरे दिल दान कत शत ग्राम
रजत काञ्चन दिल नाम लव कत ※ धेनु दान शीला दान करे शत-शत
नाना दान दिया करे वशिष्ठेर मान ※ दुग्धवती गाभी दिल सहस्र प्रमाण
आशीर्वाद करि घरे गेल मुनिगण ※ आदिकाण्डे श्रीरामेर नाम सङ्कलन

श्रीराम लक्ष्मणादिर बालक्रीड़ा

छयमास वयस्क राम देन हामागुड़ि ※ हासिया मायेर कोले यान गड़ागड़ि
क्षणेक मायेर कोले क्षणे पितृकोले ※ वदने ना आसे कथा आध आध बोले
श्रीरामेर चन्द्रानने अमृत वचन ※ प्रकाशित मन्द मन्द हासिते दशन
एक वर्ष वयस्क हइले भाइ कटि ※ पीत धड़ा परिधान गले स्वर्णकाँठि

---

१ वेद शास्त्र। २ पुराण। ३ पृथ्वी। ४ ब्राह्मण।

माल मध्य सुवरन लटकनिया * पग झंकार रतन पैंजनिया
विविध- बालक्रीड़ा बहु करहीं * नेह समान परस्पर धरहीं
राम चलत, लछमन पग डारा * पुनि रिपुदमन भरत अनुसारा
लछमन-राम, भरत-रिपुसूदन * निज चरु अंस लखे दोऊ जन
पल न राम बिन, नृप कोउ काला * तिल बिछोह दुख दुसह कराला
ध्यान न सुलभ चरन चतुरानन * पुनि-पुनि चुम्ब तासु मुख राजन
नित्य बढ़त शशिकला प्रमाना * सबन रूप लावण्य समाना
एक अंस हरि चारि सरूपा * माया-राम बिलोकत भूपा
सदा निहाल राम पै वारैं * मन, मुनि अंधक-शाप विचारैं
मुनि-सराप मोहिं भा फलदाई * सुतन-दरस बिन जीव नसाई
वर्ष सहस नव — कौतुक राजू * पायेउँ 'राम' पुन्यफल आजू
नेह सबन, पुनि राम विशेखी * जीवन सफल सदा मुख देखी
उठत मनोरथ विविध नित, लागेउ पञ्चम वर्ष ।
पाटी-पूजन धाम गुरु, पठयेउ भूप सहर्ष ॥१०५॥

कोँठिर मध्येते दिल सोनार किङ्किणी * रतन नूपुर पाय रुणुरुणु ध्वनि
करेन श्रीराम खेला बालकेर मने * परस्पर सम्प्रीति हइल चारिजने
श्रीराम चलिते पथे चलेन लक्ष्मण * भरतेर चलवेते चलेन शत्रुघ्न
यार ये चरुर अंश जानिल ताहाते * श्रीराम लक्ष्मणे मिले शत्रुघ्न भरते
यथा तथा यान राजा राम यान साथे * एक तिल अदर्शने प्रमाद ताहाते
ब्रह्मा आदि याँर पद ना पाय मनने * पुनः पुनः चुम्ब देन ताँहार वदने
चन्द्रकला येमन वर्द्धित दिने दिने * सेइ रूप लावण्य बाड़िल चारिजने
एक विष्णु चारि भाइ मायार कारण * राम देखि दशरथ भावे मने मन
सर्व्व क्षण दशरथ रामेरे नेहाले * अन्धक मुनिर शाप मने मने बले
शाप दिल मुनि मोरे गौरव कारण * एइ पुत्र ना देखिले आमार मरण
नय हाजार वर्ष राज्य करिनु कुतूहले * राम हेन पुत्र पाइलाम पुण्य फले
पुत्र मुख देखि सदा जीवन सफल * दशरथ गृहे राम प्रथम प्रबल
एइ सब दशरथ करे अभिलाष * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

श्री राम की शास्त्र और अस्त्र-विद्या की शिक्षा

गुरुगृह पढ़न गये सब भाई * बरनाछरी वशिष्ठ सिखाई
त्रिविध वर्ण, आकृति तिन नाना * अष्टशब्द+ हरि कुशल निधाना
काव्य, व्याकरण, श्रुति मन लाई * पारगत स्मृति रघुराई
चौसठ कला अल्प दिन जाना * कवन शास्त्र प्रभु जासु न ज्ञाना
शेष अध्ययन, गुरुहिं प्रनामा * अस्त्र-शस्त्र सीखत पुनि रामा
भोर बन्धु सब जाइँ अखारा * करइँ जोर भिरि मल्ल जुझारा
डण्डा-गुलि अरु लाठी हाँथा * डटत न कोउ विक्रम रघुनाथा
अचल मेरु सम प्रभु कर हाला * लरजत भट न देत कोउ ताला
भानुवंस जन्मत धनुधारी * सुमन-चाप धरि काननचारी
सायक राम जाहि संधाना * तीनिहु लोक न ताकर त्राना
जे नरेस दसरथ-प्रतिकूला * डरपत, राम-तेज तिन सूला
एक दिवस धनु-पुहुप सवाँरी * लखन सहित कानन पग धारी

श्री रामेर शास्त्र ओ अस्त्र-विद्या शिक्षा

पञ्च वर्ष गत हय हाते दिल खड़ि * पड़िते पाठान राजा वशिष्ठेर बाड़ी
क ख ग आठार फला बानान प्रभृति * अष्टशब्द पाठ करिलेन रघुपति
व्याकरण काव्यशास्त्र पड़िलेन स्मृति * अवशेषे लिखिलेन राम चतु.श्रुति
कोन शास्त्र नाहि ताँर हय अगोचर * चौद्द दिने चतुःषष्टि विद्याते तत्पर
विद्या पड़ि करिलेन गुरुरे प्रणाम * अस्त्र विद्या सेइ क्षणे शिखिलेन राम
प्रातःकाले चारि भाइ यान मालघरे * मल्लविद्या शिखिलेक सकले समादरे
गुलि दाँड़ा निया राम लाठरि खेलान * रामेर विक्रमे सब मालर पयान
राम संगे कोन माल नाहि धरे ताल * सुमेरु पर्व्वते येन करिते साताल
सूर्य्यवंशी बालक धनुक माल जाने * फूलधनु हाते राम वेड़ान कानने
धनु हाते करि राम यारे एड़े बाण * त्रिभुवने ताहार नाहिक परित्राण
दशरथ राजार विपक्ष यत छिल * रामेर विक्रम देखि सबे पलाइल
यतने खेलेन राम फूलधनु हाते * एक दिन वने गेल लक्ष्मण सहिते

+ 'अष्ट शब्द' से तात्पर्य कदाचित् शब्दो के आठो कारकों के रूपों से है ।

मृगया हेतु फिरत दोउ कानन * असुर मरीच मिलेउ मनभावन
कहँ अदृश्य कहुँ प्रगट सरूपा * आयो राम सम्मुख मृगरूपा
निरखत मृग, प्रभु कौतुक छावा * बान अचूक सुचाप चढ़ावा
उल्कापात सरिस सर जाई * असुर भीत, भजि चलेउ बराई

सो पलाय मतिमंद, साँझ लीन मिथिलापुरी ।
सुरगन अमित अनन्द, निरखि राम विक्रम प्रबल ॥१०६॥

सब विधि प्रभु समरथ मनभावन * निसचय मरन निकट अब रावन
अथये रवि, छिति साँझ सवारी * थकित लखन-मुख मलिन निहारी
एक दिवस-श्रम दुसह, अधीरा * हनि रिपु कर्कस मिटइ द्विजपीरा
आमलकी[1] निचोरि मुख डारी * छुधा-तृषा मेटन सुखकारी
तौलौं सरवर[2] अनुपम लखहीं * नीर विविध खग कलरव करहीं
कहेउ विरञ्चि सुनहु सुरनाथा * दसरथ-गेह जनम जगनाथा
नर-तन धरि प्रभु निज नहिं चीन्हा * रावन-हनन जनम जग लीन्हा

मृग चाहि दुइ जन वेड़ान कानन * तखन मारिच सङ्गे हइल मिलन
कोन खाने गेल सेइ मारीच निशाचर * मृग रूप हैया गेल रामेर गोचर
मृग देखि रामेर कौतुक हइल मन * धनु के अव्यर्थ बाण जुड़िल तखन
छुटिल रामेर बाण तारा येन खसे * महाभीत मारीच पलाय महा त्रासे
श्रीरामेर बाण शब्दे छाड़िल से वन * जनकेर देशे गेल मिथिला भुवन
रामेर विक्रम देखि देवगण भाषे * एत दिने रावण मरिवे अनायासे
सूर्य्य अस्त गेल यथा वेलार विराम * रण श्रान्त लक्ष्मणेरे देखिलेन राम
मलिन हइया गेल लक्ष्मणेर मुख * देखिया श्रीराम पान अन्तरेते दुःख
एक दिन दुःखे भाइ हइले एमन * केमने मारिवा वैरी राखिवे ब्राह्मण
आमलकी फल पाडि देन तार मुखे * क्षुधा तृष्णा दूरे गेल खान मनोसुखे
हेन काले देखिल निकटे सरोवर * नाना पक्षी जले आछे करे कलरव
एमन समये ब्रह्मा कन पुरन्दरे * जन्मेछे आपनि हरि दशरथ घरे
नव रूपे आपनाके विस्मृत आपनि * रावण मारिते मात्र अवतीर्ण तिनि

---

१ आवला । २ तालाव ।

वन रने असुर ! असन फल-मूला ! * वर्ष चतुर्दस किमि अनुकूला ?
अमिय[1] मृनाल[2] भरहु सुरराई * सुधापान श्रम-छुधा नसाई
सुरपति सुधा नाल सरसावा * सोइ छन श्रीपति लखन बुझावा
लखन मृनाल तोरि प्रभु दीना * सुधा मृनाल पान दोउ कीना
छुधा, तृषा, श्रम गत; दोउ भाई * शयन सेज पल्लव सुखदाई
श्रम उपरांत, नींद अस आई * सोवत मातु-अंक मनु पाई
निरखि न राम, इतै महतारी * अस्त-व्यस्त नृप निकट पधारी
उत अतिकाल, न सुत अवलोका * सभा बिदा करि, भूप मसोका
लखहिं सुवन, चलि मातु-निवासू * भई भेंट दोउ मग-रनिवासू

कौशल्या पूछत विकल, कहहु नाथ कित राम ?
भोजन विविध सेरात[3], मग जोहौं, तात न धाम ॥१०७॥

सुध-बुध दसरथ सुनत बिलानी * बूझत, सुत अलोप कस रानी ?

चतुर्दश वर्ष तिनि थाकिवेन बने * फल मूलाहारे युद्ध करिबे केमने
मृणाल भितर तुमि राख गिया सुधा * सुधापाने रामेर ना लागिवेक क्षुधा
एइ आज्ञा पाइलेन देव पुरन्दरे * राखिया गेलेन सुधा मृणाल भितरे
हेनकाले लक्ष्मणेरे बलेन श्रीराम * मृणाल तुलिया आन करि जलपान
लक्ष्मण आनिया दिल श्रीरामेर हाते * दुइ भाइ सुधा खान मृणाल सहिते
क्षुधा तृष्णा दूरे गेल सुस्थ हैल मन * वृक्षपत्र पातिया ये करिल शयन
परिश्रमे सुनिद्रा हइल वृक्षतले * आछेन श्रीराम येन शुये मातृकोले
ना देखिया श्रीरामेर हइया कातर * आस्ते व्यस्ते गेल राणी राजार गोचर
हेथा राजा बहुक्षण रामे ना देखिया * मने सुख नाहि येन अज्ञान हइया
सबारे बिदाय दिया गेलेन आवासे * रामेरे देखिब बलि कौशल्यार पाशे
दुइ जने पथेते हइल दरशन * चिन्तिता हइया राणी जिज्ञासे तखन
प्रस्तुत आछये घरे खाद्य नाना विध * बहुक्षण रामे केन ना देखि सन्निध
दशरथ बले राणी कि कहिला कथा * देखिते ना पाइ रामे तारा गेल कोथा

---

१ अमृत । २ कमल का डण्ठल । ३ ठंडा हो रहा है ।

दोउ किय गमन कैकयी-धामा ※ पूछत—कतौं लखे तुम रामा ?
सुवन-कन्जमुख दिवस न देखा ※ थिर न प्रान, उर त्रास विसेखा
दरस न आजु राम गुनखानी ※ लहे न प्रभु, कह कैकयि रानी
जहँ सौमित्र[1] तहाँ रघुनाथा ※ सदा भरत रिपुसूदन साथा
अवध नगर भरमत दोउ प्रानी ※ राम-सखा खेलत जहँ जानी
पूछत ललकि— लखन-रघुवीरा ? ※ 'लखे न' सुनि उपजत पुनि पीरा
शावक[2]-हरन फुंकरति वाघिनि ※ फिरैं तीनि तिमि दसरथ-भामिनि
धुनत कपाल फिरत नरनाथा ※ मिलिहैं कवन गैल रघुनाथा
शाप-अंधमुनि आजुइ फूला ※ जीवन हत, वियोग-सुत मूला
सुवन-सोच रचि मीचु[3] विधाता ※ राम-लखन विन काय[4] निपाता
दिवस बीत, चहुँ निसि-तम छावा ※ तात-दरस, नृप आस नसावा
विलखति रानिन आस गँवाई ※ प्रविसे तबहिं नगर रघुराई

वुझि राम रहियाछे कैकेयी आवासे ※ धेये गिया कैकेयीरे उभये जिज्ञासे
आजिआमिनाहिदेखि श्रीरामेरमुख ※ प्राण नाहि रहे मोर विदरये वुक
कैकेयी वलेन आमि किछुइना जानि ※ आजि हेथा नाहि देखि राम गुणमणि
आजि वुझि भुलियारहिलकोनखाने ※ लक्ष्मण ये स्थाने आछे राम सेइ खाने
भरत सहित हेथा मिलिल शत्रुघ्न ※ अयोध्या-नगरे भ्रमे भाइ दुइ जन
येइ येइ वालक खेलाय तार मने ※ ताहारे जिज्ञासे राम आछे कोन खाने
शुनिया सकले कहे शुन राजराणी ※ कोथा राम कोथाय लक्ष्मण नाहि जानि
कौशल्यासुमित्राआरकैकेयीकामिनी ※ डम्बुर हाराये येन फुकारे वाघिनी
हृदे दुःखे दशरथ भाले मारे हात ※ कोथा गेले पाव आमि राम रघुनाथ
अन्धक मुनिर शाप घटिल एखन ※ रामे ना देखिया मम ना रहे जीवन
पुत्रशोकेमृत्यु आजिसृजिल विधाता ※ रामे नाहि देखि यदि मरण सर्व्वथा
दिवसे सकल देखि घोर अन्धकार ※ श्रीराम लक्ष्मणे वुझि ना देखिव आर
एइमत कान्दे राणी वेला अवशेषे ※ हेन काले दुइ भाइ अयोध्या प्रवेशे

---

१ लक्ष्मण । २ बच्चा । ३ मृत्यु । ४ शरीर ।

वन्य कुसुम छवि, सारंग[1] हाथा * ठुमुकि धरत पग लछिमन साथा
भरत-रिपुघ्न[2] कौशिला तीरा * धाय कहत— आये रघुवीरा
सुनत रानि मोह छन उठि धाई * द्वार राम-मुख परेउ लखाई
धाय मात-पितु, लाय उर, लख-लख चुम्बत चंद।
अंक लेत भरि, सिथिल तन, हिय न समात अनन्द ॥१०८॥
दारिद-निधि तुम लोचन-तारा * पलक वियोग प्रलय मनु धारा
अंध-शाप हिय चोर नरेसा * कब विधि वाम, न मिटत कलेसा
भरत-रिपुघ्न बन्धु सिर नावा * राम मातु ढिग भोजन पावा
राजा, रानि, सकल पुरवृन्दा * सुखी, अवध चहुँ दरस अनन्दा

सीता के विवाह के प्रण के लिए शिवजी का धनुप-प्रदान

सतईं बरस राम पशु धारा * लक्ष्मी जनक-गेह अवतारा
जोतत सीर[3], सुता नृप पाई * सीता[4] सोइ रूपसी कहाई

वनपुष्पे भूषित धनुक बाम हाते * नाचिते नाचिते आसे लक्ष्मणेर साथे
भरत शत्रुघ्न गिया कहे कौशल्यारे * हेर माता आइलेन राम पुरद्वारे
तार मुखे एइ वाक्य शुनिते शुनिते * बाहिर हइल राणी श्रीरामे देखिते
धेये राजा दशरथ रामे करे बुके * एक लक्ष चुम्ब दिल तॉर चॉदमुखे
अन्धकेर शाप मुनि करे धुक् धुक् * कि जानि बा हन कबे विधाता विमुख
कौशल्याधाइया गिया रामेकैलकोले * एक लक्ष चुम्ब दिल बदन कमले
दरिद्रेर निधि तुमि नयनेर तारा * पलके प्रलय घटे हइ यदि हारा
भरत शत्रुघ्न तबे देखेन श्रीराम * दुइ भाइ आसि रामे करिल प्रणाम
मायेर आलये राम करिल भोजन * राजाराणी हइलेन सुस्थिर तखन
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर भणित * श्रीरामेर अरण्य-विहार सुललित

सीतार विवाह पणजन्य हरेर धनुक प्रदान

सात वत्सरेर राम अयोध्या-नगरे * लक्ष्मी हेथा जन्मिलेक जनकेर घरे
चापेर भूमिते कन्या पाय महाऋषि * मिथिला हइल आलो परम रूपसी

---

१ धनुप। २ शत्रुघ्न। ३ हल। ४ जोत की रेखा अर्थात् सीता से जन्म होने के कारण सीता नाम पड़ा।

सीता अतुल रूप गुन-खानी * मिथिला प्रगट मनौ श्री रानी
रमा, गौरि धौं सारद रूपा * जनक मुग्ध लखि सुता-सरूपा
कज्जल छवि मृगलोचनि छाई * धवल-पुहुप[1] नासिका सुहाई
सुघर बाहु दोउ सुललित सोहा * इन्दु-सुधा सरसति छवि मोहा
करगत सुकर सहज कटि-अंगा[2] * अँगुरी सिय-पग हिंगुल-रंगा
अरुन कंज पद नूपुर बाजै * राजहंस गति गमनत लाजै
अमिय बैन मधु झरत सुबासा * तासु रूप दस दिसा प्रकासा
रोम-रोम लावण्य ललामा * वर सिय जोग लखिय केहि धामा
सोइ अनुहार न नर जग चीन्हा * प्रोहित मन विदेह मत कीन्हा
कवन देस, कित सिय वर जोगू? * इत चिंतित सुरपुर सुरलोगू

कह विधि, सुरपति सुनहु मन, सात वर्ष रघुनाथ।
सीता छवि निति बढ़त उत, चिंतित मिथिलानाथ ॥१०६॥

राम इतर वर[3] तजैं नरेसा * सोइ हित चलिय समीप महेसा

अद्भुत सीतार रूप गुण मने मानि * ए सामान्य नहे कन्या कमला आपनि
कन्यारूप जनक देखेन दिने दिने * उमा कि कमला वाणी भ्रम हय मने
हरिणी नयने किवा शोभित कज्जल * तिल फूल जिनि तार नासिका उज्ज्वल
सुललित दुइ बाहु देखिते सुन्दर * सुधांशु जिनिया रूप अति मनोहर
मुष्टिते धरिते पारि सीतार कॉकालि * हिंगुले मण्डित तॉर चरण अंगुली
अरुण वरण तॉर चरण कमल * ताहाते नूपुर बाजे शुनिते कोमल
राजहंसी भ्रम हय देखिले गमन * अमृत जिनिया तॉर मधुर वचन
दशदिक आलो करे जानकीर रूपे * लावण्य निःसरे कत प्रति लोमकूपे
जनक भावेन मने सीता दिव कारे * सीता योग्य वर नाहि देखि ए संसारे
पुरोहित आनि राजा कहेन विशेषे * जानकीर योग्य वर पात्र कोन देशे
जानकीरे विवाह करिबे कोन जन * स्वर्गेते करेन चिन्ता यत देवगण
विधाता बलेन शुन देव पुरन्दर * रामेर वयस मात्र सप्तम वत्सर
दिने दिने जानकीर रूप वृद्धिमान * पाछे अन्य वरे राजा सीता करे दान

---

१ श्वेत पुष्प। २ कमर। ३ राम के अलावा अन्य वर।

धरि विधि-वचन सकल सुरवृन्दा ॐ चले, शंभु जहँ परमानन्दा
कह बिरंचि— शिव अंतर्यामी ! ॐ जनक-गेह अस कीजिय स्वामी
तव सेवक आयसु सिर लेही ॐ देंय न इतर राम वैदेही
करि विधि विनय, गमन उत कीन्हा ॐ परशुराम, शिव आयसु दीन्हा
मम धनु लै विदेहपुर धरहू ॐ मम आदेस जनक पुनि कहहू
जो समरथ जग शिवधनु-भंगा ॐ सिया-विवाह रचिय सोइ संगा
राम रमापति बिन त्रयलोका ॐ भञ्जक चाप न कतहुँ विलोका
आयसु शंभु चले भृगुवीरा ॐ कर कोदण्ड[1] प्रचण्ड सरीरा
पीठ निषंग[2] जटा सिर धारा ॐ धनु-प्रतञ्च[3] कर एक कुठारा
सुत-जमदग्नि जनकपुर आये ॐ नृप प्रनम्य आसन बैठाये
पाद अर्घ्य सों नृप सन्माना ॐ भृगुपति निरखि, मुनिन भय माना

एइ युक्ति देवगण करिया मनन ॐ कैलास पर्व्वते गेल यथा त्रिलोचन
ब्रह्मा बलिलेन शुन शिव अन्तर्य्यामी ॐ जनकेर घरे सीता रक्षा कर तुमि
से तव सेवक आज्ञा लघिते ना पारे ॐ येन राम विना अन्ये ना देय सीतारे
एतेक बलिया ब्रह्मा करिल गमन ॐ भृगुरामे डाकिया कहेन त्रिलोचन
आमार धनुक निया करह पयान ॐ जनकेरे घरे राख करि सावधान
आमार धनुर्भंग करिते ये पारे ॐ कह जनकेर येन सीता देय तारे
ए तिन भुवने इहा तोले कोन जन ॐ सबे मात्र तुलिवेन प्रभु नारायण
पाइया शिवेर आज्ञा वीर भृगुपति ॐ धनुक धरिया हाते करिलेन गति
माथाय जटार भार पृष्ठे दुइ तूण ॐ एक हाते कुठार अन्येते धनुर्गुण
ब्रह्मारे येमन देवे करेन सम्भ्रम ॐ जनक परशुरामे करेन से क्रम
प्रणाम करिया ताँरे दिलेन आसन ॐ पाद्य अर्घ्य दिया ताँरे करेन पूजन
भृगुरामे देखि सब मुनिर तरास ॐ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

---

१ धनुष। २ तरकस। ३ धनुष की डोरी।

राजा जनक की धनुर्भंग-प्रतिज्ञा

सिया-विवाह प्रसंग चलावा * सुनि मुनि-वचन जनक सुख पावा।
विनय वचन निज भाग सराहा * मुनि-मत इतर न रचउँ विवाहा
पुनि भृगुराम चले तप कानन * गहि पद युगुल विनय किय राजन
सिय-सौभाग्य सुअवसर पाई * विन तव सीख न रचउँ सगाई

तदपि तपोधन! दरस कर, कब सौभाग्य बहोरि।
तब-सूने[1] केहि संग मुनि, करौं सिया गठजोरि ॥११०॥

आयसु श्रवन धरहु मिथिलेसा * निरखहु कौतुक चाप महेसा
धरि प्रतञ्च, धनु भंजइ वीरा * सुता जोग वर सोइ रनधीरा
सो कहि, गमन कीन भृगुरामा * शम्भु-धनुष तजि मिथिला धामा
सत्तर योजन लब प्रमारा * योजन दसक इतर[2] विस्तारा
नृप प्रन— चाप चढ़ावै डोरी * करौं तासु सन सिय-गठजोरी

जनक राजार धनुर्भंग पण

जिज्ञासिते लागिलेन जनक राजन * कोन कार्य्ये महाशय हेथाय आगमन
बलेन परशुराम तोमार दुहिता * सीता देह यदि राजा करि विवाहिता
जनक बलेन शुन एकि चमत्कार * एत कि सौभाग्य आछे कपाले सीतार
सीतार विवाह काल हइबे यखन * करा याबे युक्तिमत कहिबे येमन
भृगु बले तपस्याय करिब गमन * देखो येन अन्य मत ना हय राजन
एतेक बलिया यदि भृगुराम यान * भृगुर चरण धरि जनक सुधान
तोमार साक्षात आर पाब कत काले * कारे दिब कन्या आमि तुमि ना आइले
बलेन परशुराम आमार धनुक * राखि याब तब स्थाने देखिब कौतुक
धनुक तुलिया येबा गुण दिते पारे * रहिल आमार आज्ञा कन्या दिओ तारे
एत बलि भार्गव गेलेन स्थानान्तरे * पड़िया रहिल धनु जनकेर घरे
हरेर धनुक सेइ अपूर्व्व निर्म्माण * सत्तर योजन उभे धनुक प्रमाण
योजन दशेक धनु आड़े परिसर * करिलेन प्रतिज्ञा जनक ऋषिवर
ए धनुके गुण दिते ये जन पारिबे * सेइ जन जानकीरे विवाह करिबे

---

१ आपकी अनुपस्थिति मे। २ लम्बाई से इतर अर्थात् चौड़ाई।

मन्दिर जोजन दीर्घ एकासी * तँह धनु धरेउ शंभु अविनासी
ग्यारह जोजन गृह चौड़ाई * बिरद[1]-चाप दिग्देसन छाई

समस्त राजाओं एवं रावण का धनुष उठाने में असमर्थ होकर पलायन

सिया-बरन मन सबन उछाहा * जुरे जनकपुर जग-नरनाहा
जे-जे नृप जुरि गाल बजावैं * तिन धनु-मन्दिर जनक पठावैं
प्रन-विदेह— जो चाप चढ़ावै * यौतुक[2] अमित सहित सिय पावै
जिन सूरन धनु ढिग डग डारी * दरस होत पग परे पिछारी
बहुते हुमकि जायँ धनु पाहीं * परस न, दरस होत भजि जाहीं
पट कसि, चाप चढ़ावत साजू * भरहि जोर नरपति-युवराजू
अभिरि प्रानपन, थकित बिचारें * चढ़ब दूर, धनु टरत न टारे
धनु गुन[3] अडिग मेरु सम भारी * लाज बिबस पुर तजि धनुधारी

यतन करिया कैल धनुकेर घर * एकाशी योजन सेइ घर दीर्घतर
एगार योजन तार आड़े परिसर * धनुक पड़िया आछे ताहार भितर
सेइ धनुकेर कथा गेल देशे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

सकल राजा ओ रावणेर धनुक तुलिते अपारग हइया पलायन

धनुकेर कथा यदि गेल देशे देशे * जानकी विवाह हेतु राजा सब आसे
पृथिवीते आछे यत राजा महत्तर * एके एके आसे सब जनकेर घर
आसिया सकल राजा अहंकार करे * सबारे पाठाये देन धनुकेर घरे
जनक बलिल येबा तुलिबे धनुक * तारे सीता कन्या दिब परम यौतुक
धनुक तुलिते यत राजपुत्र जाय * देखिया सकल लोक पश्चाते गोड़ाय
घरेर द्वारे गिया ऊँकि दिया चाय * तुलिबार शक्ति कोथा देखिया पलाय
कत राजा राजपुत्र उद्यत हइया * धनुक तुलिते जाय वस्त्र काछ[illegible]
प्राणपणे तारा धनु टानाटानि करे * तुलिबार साध्य किबा नाड़िते ना पारे
सुमेरु पर्व्वत हेन धनुखान भारि * दिबे कि ताहाते गुण नाड़िते ना पारे

---

१ प्रसिद्धि। २ दहेज। ३ धनुष की डोरी।

डगर सबन निज गेह सम्हारी * बालक-जूथ हसैं दै तारी
तिनहिं मिले मग भूप बहु, आवत सिय अभिलास।
सुनत चाप-कौतुक, तहँ, तजी दरस धनु आस ॥१११॥
उलटे पाँव फिरे निज देसा * दरस-परस कामना न सेसा
अगनित, अकथ अतिथि विस्तारा * तीन कोटि नृप पुर पग धारा
कोउ न समर्थ, अडिग धनु संकर * सजेउ लंकपति पुनि दसकंधर
लै मारीच, प्रहस्त, अकम्पन * सहित महोदर सजि निज स्यंदन
रावन मिथिला कीन पयाना * समाचार मिथिलापति जाना
पात्र मित्रगन सबन बुलाई * चढ़ेउ दनुजपति खबरि जनाई
जो न हर्षि सिय ताहि विवाहू * हरइ जोर, किमि कहौ निवाहू
मग भेटे विदेह अगवानी * हँसा ठठाय सुभट अभिमानी
कह प्रहस्त, सुनु लंक-जुझारा * प्रस्तुत नृप तव शिष्टाचारा
रथ तजि, असुर जनक भरिलीन्हा * बाहु प्रसारि अलिङ्गन कीन्हा

लज्जा पाइया सब राजापलाइया जाय * हात ताल दिया सब बालक दौड़ाय
पलाइया जाय सब आपनार देशे * विवाह करिते अन्य राजागण आसे
पथ मध्ये देखा हय से सबार सने * धनुकेर पराक्रम तारा सब शुने
देखिबार काज नाइ शुनिया डराय * शुनिया शुनिया पथे अमनि पलाय
एतेक कहिले हय पुस्तक विस्तर * तिन कोटि राजा गेल मिथिला नगर
धनुक तुलिते ना पारिल कोनजन * लङ्काय थाकिया शुने लंकार रावण
अकम्पन प्रहस्त मारीच सहोदर * चारि पात्र ल'ये रथे चड़े लकेश्वर
आइल सकले तारा मिथिला भुवन * जनक शुनिल रावणेर आगमन
जनक बलेन शुन पात्र मित्रगण * रावण आइल आजि हइबे केमन
स्वेच्छाय विवाह यदि नादिब रावणे * काड़िया लइबे सीता राखे कोन जने
चलिल जनक राजा रावणे आनिते * देखिया रावण राजा लागिल हासिते
प्रहस्त डाकिया बले रावण राजारे * जनक आइल देख लइते तोमारे
देखिया रावण तारे भूमितले उलि * दुइ बाहु प्रसारिया करे कोलाकुलि

रत्न सिंहासन अतिथि सुहावा ※ उभय मधुर संलाप चलावा
जीवन सफल दरस तव पाई ※ कारन कवन दया दरसाई
कह दससीस, सुता तव सीता ※ करहु दान, सोइ चहउँ ग्रहीता
धन्य भाग मम, निसिचर-नाहा ! ※ तव समान कित जोग विवाहा
तदपि बचन-बन्धन कछु मोरा ※ भृगुपति आनेउ धनुप कठोरा
भञ्जइ चाप वीर धनुधारी ※ सोइ, लंकेस ! सिया अधिकारी

अवनि[1] न अब लौं सफल कोउ, सुभट, सुनहु दसभाल।
धनु चढ़ाइ, प्रन पूर करि, लेहु सुता जयमाल ॥११२॥

आनन दसौ हँसा सुनि रावन ※ धनुबल भल बरनेउ मोहि राजन
गिरि मंदर कैलास उठावा ※ चाप-भार लघु बात चलावा
भञ्जउँ सोइ, जब करउँ पयाना ※ तब लौं सुता करौ मोहिं दाना
मैं प्रन-विवस, करहु धनुभंगा ※ लखैं सबै तव भुजबल रंगा
पुनि प्रहस्त दिय मंत्र बिसेखा ※ प्रन-विदेह कछु अहित न देखा
चढ़त चाप नृप अर्पहि सीता ※ नतरु जोर-बल करब ग्रहीता

बसाइल रावणेरे रत्न सिंहासने ※ मिष्टालाप करिलेन बसि दुइ जने
जनक बलेन आजि सफल जीवन ※ कोन कार्य्ये महाशय तव आगमन
दशानन बले राजा तव कन्या सीता ※ आमारे करह दान आमि ये ग्रहीता
जनक बलेन इहा सौभाग्य लक्षण ※ तोमा विना पात्र आर आछे कोनजन
आनिलेन भृगुराम धनु एक खान ※ हेन वीर नाहि ये ताहाते देय टान
तुलिया धनुकखान भांग गिया तुमि ※ धनुकेर घरे सीता समर्पिब आमि
शुनिया से दशमुखे हासिल रावण ※ आमार साक्षाते बल धनुक विक्रम
कैलास तुलेछि आमि पर्व्वत मन्दर ※ ताहारे जिनिया कि धनुक हवे भार
आगे सीता आनिया आमारे करदान ※ यात्रा काले भाँगिया याइब धनुखान
जनक बलेन कर प्रतिज्ञा पूरन ※ देखुक सकल लोक धनुक भगन
प्रहस्त बलेन शुन राजा दशानन ※ यार ये प्रतिज्ञा भंग ना कर कखन
धनुक भांगिले राजा जानकीरे दिबे ※ इच्छाधीने नाहि देय बले काड़ि लबे

---

[1] पृथ्वी पर।

टूटै धनुष, न संशय येही * मातुल[1] ! वरौं अबै वैदेही
अभिमानी गमनेउ धनुगेहा * संग लंकपति, चले विदेहा
धाई प्रजा, कूतूहल छावा * जानकि-वर विधि आजु पठावा
युवा, वृद्ध, अरु बाल-समाजा * धनुमंदिर पुर सकल विराजा
कौतुक योजन दीर्घ एकासी * ग्यारह परिसर[2] तासु प्रकासी
गृह विशाल जहँ चाप-महेसा * तासु द्वार लंकेस प्रवेसा
दुर्जय धनु निरखत रनबंका * लंकापति उपजी मन संका
बल सुमिरत छिन, पुनि भयभीता * असफल-सफल न हिय परतीता
बिहँसत वदन[3], न अन्तस धीरा * धनु ढिग गयेउ दसानन वीरा
कसि कटि फेंट, सुभट बलधारी * चहेउ चाप भुजबीग उपारी[4]

तमकि, हुमकि, उठि, बैठि बल, विविध करत दमसीस ।
सिथिल गात, हिय लाज अति, टरत न धनुष-गिरीस ।।११३।।

दशमुख बले मामा राखि तव कथा * धनुक भांगिले येन ना हय अन्यथा
अहंकार करिया चलिल लंकेश्वर * देखाइते चलिल जनक नृपवर
शुनिया धाइल सब मिथिला नगर * सबे बले जानकीर आजि एल वर
युवा वृद्ध शिशु एक नाहि रहे घरे * कौतुक देखिते गेल राजार मन्दिरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर * एकादश योजन ताहार परिसर
धनुक पड़िया आछे ताहार भितरे * आसिया रावण राजा दाण्डाइल द्वारे
द्वारेते दाण्डायवीर डाँकिदियाचाय * देखिया दुर्जय धनु अन्तर डराय
मने भावे आमार घुचिल भारिभुरि * ये देखि धनुकखान पारि कि ना पारि
अन्तरे आतङ्क अतिमुखे आस्फालन * धनुक तुलिते जाय वीर दशानन
आँटिया कापड परेबाछिल काँकाले * कुडि हाते धरिल से धनु महाबले
आँकडि करिया तबे धनुखान टाने * तुलिते ना पारे आर चाय चारि पाने
नाकेहातदिया बले कि करि उपाय * कि हइबे मामा धनु तोला नाहि जाय
प्रहस्त बलेन शुन राजा लङ्केश्वर * लोक हासाइला आमि मिथिला नगर
चिन्ता ना करिह तुमि ना करिह डर * गात्रे बल करि आर एक बार धर

---

१ मामा (प्रहस्त) । २ प्रसार-फैलाव । ३ मुख । ४ उठाना ।

मातुल ! थकित भुजा मम बीसा * सिखवति, सुनि, प्रहस्त दससीसा
पुर उपहास असह, यहि कारन * तन, भरि जोर करौं बल धारन
भय तजि, धनु भञ्जिय केहु भाँती * साहस जोरि अड़ायेसि छाती
शिवगिरि मन्दर सहज उपारा * सोइ भुजबल, तिल धनुष न टारा
प्रन-पुरवनि प्रानन पर छाई * मातुल ! जुगुति एक मन भाई
सब मिलि जोर करहिं एकसंगा * कह प्रहस्त, सियवर केहि संगा ?
प्रान जाय पै राखिय माना * करि बल, हित साधिय बलवाना
मातुल ! जतन करौं सिख मानी * तदपि द्वार रथ राखहु आनी
हँसि प्रहस्त, रथ द्वार बुलावा * रावन पुनि बल अमित लगावा
तजी आस, चितवत नभ ओरा * सुरगन मनौ हँसत तेहि ओरा
रथ चढ़ि भजेउ लंक-अधिकारी * बालक हँसत बजावत तारी
मन गलानि उत गमनेउ रावन * इत सुरगन हिय ताप नसावन
बिन हरि, चाप चढ़ै केहि हाथा * श्री-बर कौन विना श्रीनाथा

पुनश्च धनुकखान टानाटानि करे * तथापि धनुकखान नाड़िते ना पारे
दशग्रीव बले आर नाड़िते ना पारि * प्राण जाय मामा तबु तुलिते ना पारि
कैलास तुलिनु मामा पर्व्वत मन्दर * ताहारे जिनिया मामा धनुकेर भार
एइयुक्ति मामा गो तोमार ठाँइ मागि * सबाइ मिलिया तुले धनुखान भाङ्गि
प्रहस्त बलिल शुन वीर दशानन * तबे त सीतार वर हबे कोन जन
पार वा ना पार आर एक बार टान * जाय प्राण राख मान एइ वाक्य मान
रावण बलिल मामा शुन मोरवाणी * तुलिते ना पारि शीघ्र रथ आन तुमि
ईषत् हासिया बले प्रहस्त ताहारे * रथ लये एइ आमि रहिलाम द्वारे
आरबार रावण धनुक खान टाने * तुलिते ना पारे चाय प्रहस्तेर पाने
काँकालेते हात दिया आकाशेनिरखे * मने भावि पाछे आसि इन्द्र बेटा देखे
वुझिया प्रहस्त रथ दिल योगाइया * लाफ दिया रथे उठे धनुक एड़िया
पलाइया चलिल लङ्कार अधिकारी * सकल बालक देय तारे टिटकारी
लकाय शंकाय गेल लंकार रावण * आकाशे थाकिया देखे यत देवगण
श्रीलक्ष्मीपतिर लक्ष्मी लबे कोनजन * तुलिबेक धनुक केवल नारायण

दनुज-त्रास मिटि सीतल छाती * चिंता जनक मिटी यहि भाँती
अमा-ग्रहण[1]-रवि दसरथ देखी * मन धरि सुत-कल्यान विसेखी
हेमदान[2] सुरसरि असनाना * नृप उमग, कृतिवास बखाना

श्री राम का गंगा-स्नान और गुह के साथ मित्रता तथा भरद्वाज मुनि के घर राम का धनुर्बाण प्राप्त करना

सहित चारि सुत, भूप रथ, शत-शत हय, गज संग।
गगन तुमुल रव[3] व्याप चहुँ, अमित[4] कटक चतुरंग ॥११४॥

नृप-नृपसुत रथ दिव्य सुहाये * पन्थ दरम नारद के पाये
पूछत हेतु गमन ? नृप भाषा * मुनि ! स्नान-गंग अभिलाषा
भूप अजान ! राम मुख दरसन * पुनि कित हेतु जाह्नवी परसन
भूतल पतितपावनी धारा * गंग, जासु पद-पदुम प्रसारा
गंग-स्नान पुन्य सोइ दाना * सुवन रूप तव गृह भगवाना
नारद बचन नरेस प्रतीता * चलहु राम गृह, कहेउ सप्रीता

कृत्तिवास पण्डितेरकि कहिब शिक्षा * आदिकाण्ड गाइल सीतार हैल रक्षा

श्रीरामेर गंगास्नान ओ गुहकेर सहित मितालि ओ भरद्वाज मुनिर गृहे रामेर धनुर्व्बाण प्राप्ति

एक दिन दशरथ पुण्य तिथि पेये * गङ्गास्नाने यान राजा चार पुत्र ल'ये
हइबेक अमावस्या तिथिते ग्रहण * रामेर कल्याणे राजा दिबेन काञ्चन
तुरंग मातंग चले संगे शते शते * चारिपुत्र सह राजा चापिलेन रथे
चलिल कटक सब नाहि दिक पाश * कटकेर शब्दे पूर्ण हइल आकाश
चलेछेन दशरथ चारि दिव्य रथे * नारद मुनिर संगे देखा हय पथे
मुनि बले कोथा राजा करिछ पयान * भूपति कहेन साध करि गंगास्नान
मुनि कहे दशरथ तुमि त अज्ञान * राम मुख देखिले के करे गंगा स्नान
पतितपावनी गंगा अवनीमण्डले * सेइ गंगा जन्मिलेन याँर पदतले
सेइ दान सेइ पुण्य सेइ गंगास्नान * पुत्र भावे देख तुमि प्रभु भगवान
एत यदि नृपतिरे कहिलेन मुनि * राजा बले चल घरे राम रघुमणि

---

१ अमावस्या पर सूर्य-ग्रहण। २ स्वर्णदान। ३ शब्द। ४ असीम।

सुनि पितु बचन, कहत रघुराई * बिपिन धर्म-पथ, रीति सदाई
तिनहिं बराय, मातु-डग[1] धरहीं * सुरसरि-सुकृत[2] सफल तन करहीं
पितु मन दीन कथन-रघुनन्दन * सहित उछाह बढ़ेउ नृप-स्यंदन
तौ लौं पथ घेरेउ गुहराजू * कोटिक[3] तीन निषाद-समाजू
कहेउ, कटक इत कस अवधेसा ? * नित गहि पंथ बिगारत देसा
जो सुरसरि-स्नान उछाहू * तजि मम भूमि, आन पथ जाहू
सोइ मग गमन रुचिर यदि भूपा * प्रथम लखौं छबि राम अनूपा
राम-राम गुहपति मुख भाखा * रथ लुकाय रामहि नृप राखा
धनु चढ़ाय सोचत नरनाथा * बध गुह हीन ! कवन जस हाथा ?
जीते हीन, न पौरुष लेसा * हारे त्रिभुवन अजस बिसेसा

छाड़ेहू पुनि पार नहिं, अभिरत उत चण्डाल ।
नृप बिमूढ़-मन, करिय कस ? अरझेउ मग जंजाल ॥११५॥

बापेर बचन सुनि बलेन श्रीराम * अनेक पाषण्ड आछे धर्म्मपथे वाम
गंगार महिमा आमिकि बलिते जानि * ना शुनिओ महाराज नारदेर वाणी
एत यदि बलिलेन कौशल्याकुमार * चलिलेन दशरथ राजा आर बार
चलिल राजारसैन्य आनन्दित है'या * गुहक चण्डाल आछे रथ आगुलिया
तिन कोटि चण्डालेते गुहक वेष्टित * हुडाहुडि वाधे दशरथेर सहित
गुहक चण्डाल बले शुन दशरथ * भाँगिया आमार देश करिले कि पथ
बारे बारे याह तुमि एइ पथ दिया * सैन्येते आमार राज्य फेलिल भांगिया
गंगास्नान करिते तोमार थाके मन * आर पथ दिया तुमि करह गमन
यदि इच्छा थाके हे याइते एइ पथे * देखा ओ तोमार आगे पुत्र रघुनाथे
राम राम बलिया से गुहक डाकिल * रथमध्ये भूपति से रामे लुकाइल
निल दशरथ राजा धनुर्व्वाण हाते * रथेर द्वारेते राजा लागिल भाविते
चण्डालेरे मारि किवा हइवेक यश * नीच जने जिनिले कि हइवे पौरुष
यदि पराजय हइ चण्डालेर वाणे * अपयश घुसिवेक ए तिन भुवने
आमियदिछाड़िनाहि छाड़िवेचण्डाल * कि करिब पथे एक घटिल जञ्जाल

---

१ गंगा माता की राह । २ पुन्य । ३ करोड़ ।

बरसइँ बान, कोपि दोउ लरहीं * रिपु-सर निरखि, उभय मन डरहीं
तर्जहिं परस्पर बान कराला * यहि विधि ठनेउ युद्ध बहु काला
दसरथ पुनि पशुपति सधाना * गुहपति-हाथ बांधि रथ आना
सोचत— दरस न कृपानिकेता * सफल न रन पथ रोकन हेता
पग धनु कसि, पग सों धरि बाना * बिन कर[1] कौतुक रन गुह ठाना
रामहिं अचरज भरत जनावा * पग मन धनुर्युद्ध जस गावा
राम कुतूहल! कला नवीना! * देखन चले निषाद प्रवीना
गुहपति, निरखत छवि-रघुनाथा * नाय माथ, थिर भयेउ सनाथा
पूछत राम, कवन रन-कारन? * सुनहु कथा प्रभु शाप-निवारन
पाप पुरबुले[2], अधम शरीरा * लहि, अब लौं भुगतौं भव-पीरा
पितु वशिष्ठ, सुत जनम पुनीता * वामदेव मम नाम अतीता[3]
सुत विहीन दसरथ जेहि काला * अंध-सुवन-वध-पाप बेहाला
तप-उपवन, पकरे मम चरना * लोटत धरनि विकल मम सरना

दुइजने वाणवृष्टि करे महाकोपे * उभयेर वाणेते दोंहार प्राण काँपे
एइ मत वाणवृष्टि हइल विस्तर * उभयेर संग्राम हइल बहुतर
दशरथ राजा एड़े पाशुपत शर * हाते गले गुह के बान्धिल नरेश्वर
गुहके बान्धिया राजा तुलिलेन रथे * बन्धने पड़िया गुहक लगिल भावते
याहार लागिया आसि आगुलिनु पथ * देखिते ना पाइलाम से राम कि मत
एतेक भाविया गुह करे अनुमान * पायेते धनुक टाने पाये एड़े वाण
भरत कहिल गिया रामेर गोचरे * एमत अपूर्व्व शिक्षा नाहि चराचरे
पायेते धनुक टाने पाये एड़े वाण * देखिते कौतुक राम गेलेन सेइस्थान
येइ मात्र गुहक देखिल रघुनाथे * दण्डवत् हइया रहिल जोड़ हाते
श्रीराम बलेन धनु टानह केमन * गुह बले तोमारे कहिब से कारण
पूर्व्व जन्म कथा मम शुन नारायण * ये पापे हइल मोर चण्डाल जनम
अपुत्रक छिलेन यखन दशरथ * अन्धक मुनिर पुत्र करिलेन हत
मुनि हत्या करिया आसिल तपोवने * लोटाइया धरिलेन आमार चरणे

---

१ बिना हाथ के। २ पूर्वजन्म के। ३ व्यतीत काल का।

राम नाम त्रय बार कहावा ※ सोइ प्रताप नृप-ताप नसावा
नाम एक, वध कोटि उचारन ※ तीनि बार केहि हेतु उचारन ?
सोइ कारन पितु शाप कराला ※ जन्मेउँ अधम योनि चण्डाला

पितु-प्रकोप लखि, गहे पग, शाप मुक्ति किम नाथ ?
कहेउ, निवारन अधम गति, दरस राम रघुनाथ ॥११६॥

सोइ अब राम अवध अवतारा ※ जासु चरन मम पाप निवारा
भक्तन प्रिय तुम नाथ-अनाथा ※ दयासिंधु को अस रघुनाथा
श्वपच-शरीर घृना यदि करहू ※ नाम पतितपावन, हरि ! तजहू
विनय सनी आकुल गुहबानी ※ सुनत राम दृग सरसत पानी
पितु सन विनय करत कर जोरी ※ गुहपति-मुक्ति याचना मोरी
राम ! न कछु अदेय तव हेतू ※ अर्पित गुह तब, हर्ष समेतू
पितु-अनुमति; आतुर रघुनन्दन ※ काटे निजकर गुहपति-बन्धन
लखन सोई छन अनल जराई ※ साखी राम-निषाद मिताई

वशिष्ठेर पुत्र आमि वामदेव नाम ※ तिन बार राजारे बलाइ राम नाम
शुनिया वशिष्ठ शाप दिलेन विशाल ※ याह वामदेव पुत्र हओरे चण्डाल
एक रामनामे कोटि ब्रह्महत्या हरे ※ तिन बार रामनाम बलालि राजारे
लोटाय पडिनु आमि पितार चरणे ※ चण्डाल हइब मुक्त काहार दर्शने
पिता बलिल जबे पाबे श्रीराम दर्शन ※ तबेत हइबे मुक्त चण्डाल जनम
सेइ राम जन्मियाछे दशरथ घरे ※ चरण परश दिया मुक्त कर मोरे
अनाथेर नाथ तुमि भक्तवत्सल ※ करुणासागर हरि तुमि हे केवल
चण्डाल बलिया यदि घृणा कर मने ※ पतितपावन नाम तबे कि कारणे
एतेक बलिया गुह लागिल कान्दिते ※ गुहेर क्रन्दने राम कान्दिलेन रथे
करपुटे दाण्डाइल पितार साक्षात् ※ भिक्षा देह गुहक बलेन रघुनाथ
राजा बले प्राण चाह प्राण पारि दिते ※ चण्डाले तोमाके दिब बाधा नाहि इथे
पाइया बापेर आज्ञा कौशल्यानन्दन ※ खसालेन निज हस्ते गुहेर बन्धन
श्रीरामबलेन अग्नि ज्वालह लक्ष्मण ※ गुहकेर सह करि मित्रता बन्धन

हीन न तात! सुनहु गुहभूपा * सब प्रकार तुम मम अनुरूपा
अधम अहौं, तुम अधम-महाई * जग चहुँ पुजै राम-ठकुराई
करि मित्रता, बिदा गुह कीन्हा * सुरसरि-पथ दसरथ पुनि लीन्हा
फल अनन्त रबिग्रहन पुनीता * दान धर्म स्नान सप्रीता
शत-शत सुरभि शिला किय दाना * कञ्चन, रजत, रतन विधि नाना
दान-पुन्य करि नृप बहु भाँती * सुतन सहित पुनि निरखि सँभाती[1]
भरद्वाज-उपवन चलि जाई * बन्दि चरन-मुनि, विनय सुनाई
सरन तपोधन तव, सुत चारी * अहह भाग तव चरन निहारी

देहु असीस; विलोकि तिन, सोचत मनहि मुनीस।
तजि गोलोक प्रतच्छ लख[2], जग प्रगटे जगदीस ॥११७॥

तव सुत राम, जनक[3] जग केरा * जीवन सफल अवधपति केरा
परम रूप दूर्वादल श्यामा * दरसत मुनिहिं अतुल छवि रामा

लक्ष्मणज्वालिलेनअग्निरामेरसाक्षात्* गुह सहित मित्रता करेन रघुनाथ
येइ आमि सेइ तुमि बलेन श्रीराम * गुह बले घुचाइते नारि निज नाम
श्रीरामेर जगते हइल ठाकुरालि * प्रथमे करेन राम चण्डाले मितालि
विदाय करिया रामे गुह गेल घरे * पुत्र लैया दशरथ गेल गङ्गातीरे
अपूर्व अनन्त फल भास्कर ग्रहण * स्नान करि राजा दान करिल काञ्चन
धेनुदान शिलादान कैल शत शत * रजत काञ्चन तार नाम लब कत
दान धर्म करिते हइल वेला क्षय * प्रदोषे यान राजा भरद्वाज आलय
बसिया आछेन मुनि आपनार घरे * चारि पुत्र सह राजा नमस्कार करे
जोड़ हाते बले राजा मुनिर गोचर * आनियाछि चारि पुत्रे देख मुनिवर
आशीर्व्वाद कर चारि पुत्रे तपोधन * बहुभाग्ये देखिलाम तोमार चरण
देखिया रामेरे भाषे भरद्वाज मुनि * वैकुण्ठ हइते विष्णु आइला आपनि
मुनि बले राजा तव सफल जीविता * राम तव पुत्र किन्तु जगतेर पिता
भरद्वाज एइकाले देखे चमत्कार * दुर्व्वादल श्याम तनु परम आकार

---

१ सायकाल। २ मालूम पड़ता है। ३ पिता।

अंकुश वज्र ध्वजा पद पंकज * शंख चक्र कर पद्म गदा सज
शिव, विरञ्चि जेते सुरलोका * भुवन, राम-तन[1], सकल विलोका
मुनि-आश्रम आतिथि नृप पावा * सहित सैन तहँ रैन बितावा
शयनकक्ष मुनि राम लेवाई * सोवत, अर्धनिसा जब आई
अक्षय कवच दिव्य धनु माथा * सिरहाने राखेउ सुरनाथा
मुनिहिं सकल सो सपन दिखाई * भोर, चाप निरखेउ रघुराई
आयुध दिव्य शचीपति[2] दीन्हा * सो निमि-कथा कथन मुनि कीन्हा
मुनि प्रणम्य, हरि पितु ढिग जाई * सम्मुख धरेउ चाप-सुरराई

राक्षसों की दुष्टता से मुनियों के यज्ञ पूर्ण होने में विघ्न और उसके निवारण का उपाय

दसरथ मुदित; सहित सुत चारी * आगम अवध सदन सुखकारी
राजभोग ऐश्वर्य प्रपन्ना[3] * सब विधि सुख समृद्धि सपन्ना
मिथिला मुनिन यज्ञ सोइ काला * करैं भग नित दनुज कराला

ध्वज-वज्राङ्कुशे शोभित पदाम्बुज * शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज
शङ्कर विरिञ्चि आदि यत देवगण * रामेर शरीरे आरो देखेन भुवन
समुचित आतिथ्य करेन भरद्वाज * सुखे रहिलेन सैन्यसह महाराज
रामेरे लइया मुनि अन्त:पुरे गिया * शयन करेन दोंहे एकत्र हइया
यखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर * शियरे राखेन देवराज धनु शर
स्वप्ने उपदेश एइ करेन मुनिरे * अक्षय धनुक तूण देह श्रीरामेरे
एतेबलि करिलेन वासव पयान * प्राते राम शियरे देखेन धनुर्व्बाण
कहिलेन श्री रामेरे मुनि भरद्वाज * तोमारे दिलेन धनुर्व्बाण देवराज
मुनिर चरणे राम करे प्रणिपात * आनिलेन सेइ धनु पितार साक्षात्
शुनि राजा दशरथ आनन्द हइया * आइलेन देशे चारि कुमार लइया
कृत्तिवास करे आश पाइ परित्राण * आदिकाण्ड गाइल रामेर गङ्गास्नान

राक्षसेर दौरात्म्य मुनिदेर यज्ञपूर्णे व्याघात तन्निवारणेर उपाय

एइ रूपे दशरथ चारि पुत्र लैया * करेन साम्राज्य भोग सावधान हैया
हेथा मिथिलाय यज्ञ करे मुनिगण * यज्ञ पूर्ण नाहि हय राक्षस कारण

---

१ राम के शरीर मे विराट रूप के दर्शन। २ इन्द्र। ३ प्राप्त।

जब-जब मुनिगन याग रचावा ※ तबहिं मरीच रक्त बरसावा
मिथिला चहुँ दिसि याग-विहीना ※ मुनिन बोलाय जनक मत कीना
कौशिक-जुगुति सबन मन भाई ※ अवध जाय आनहु रघुराई

भयो जगत अवतार प्रभु, निसिचर नासन हेत।
जनम राम बलधाम सोइ, दसरथ अवध निकेत ॥११८॥

कहेउ जनक, तुम बिन मुनिराई ※ याग-सिद्धि नहिं जतन लखाई
सबन प्रबोधि, अवध मुनि गयऊ ※ राम-निवास उपस्थित भयऊ
प्रहरी-खबरि— भूप-मन चिन्तन ※ विधि न सीध, कस गाधियनन्दन[1]!
रघुकुल कौशिक विषम प्रभावा ※ बीतै कस ? दसरथ भय छावा
सुविदित सत्यसंध हरिचन्दा ※ तिय-सुत बेचि कटे तिन फन्दा
संसय मन ! मुनि-चरन पखारी ※ बन्दि, भूप मृदु गिरा उचारी
कीन गाधि-सुत पुष्कल[2] धामा ※ अहो भाग्य ! आवउँ मुनि-कामा
कौशिक कहेउ सुनहु अवधेसू ※ मिथिला मुनिन अनन्त कलेसू

यज्ञ आरम्भन करे येइ मुनिवर ※ करे रक्त वर्षण मारीच निशाचर
यज्ञहीन हइलेक मिथिला भुवन ※ करे जनक युक्ति ल'ये मुनिगण
तार मध्ये बलिलेन विश्वामित्र मुनि ※ अयोध्यायगिया रामचन्द्रेआमिआनि
राक्षस बधेर हेतु धरि राम वेश ※ दशरथ गृहे अवतीर्ण हृषीकेश
बलिलेन जनक शुनह महाशय ※ तुमि रक्षा करिले ए यज्ञ रक्षा हय
विश्वामित्र सकलेरे करिया आश्वास ※ चलिलेन यथा राम अयोध्या निवास
उपस्थित हइलेन अयोध्यार द्वारे ※ द्वारी गिया जानाइल तखनि राजारे
भूपति शुनिबा मात्र विश्वामित्र नाम ※ चिन्तित कहेन बुझि आजि विधिवाम
विश्वामित्र मुनि एइ बड़इ विषम ※ प्रमाद घटाय किम्बा करे कोन क्रम
सूर्यवंशे छिल हरिश्चन्द्र महाराज ※ भार्या पुत्र बेचिया तारे दिल लाज
आसि वन्दिलेन राजा मुनिर चरण ※ शिष्टाचार पूर्वक करेन निवेदन
तव आगमने मम पवित्र आलय ※ आज्ञा कर कोन कार्य्य करि महाशय
विश्वामित्र बलेन शुनह दशरथ ※ श्रीरामेर देह यदि हय अभिमत

---

१ गाधि के पुत्र विश्वामित्र। २ पवित्र।

सफल न याग, दनुज-उत्पाता * शोनित-स्रव, अति-काज निपाता
जो मोहिं देव लखन-रघुराई * कटै विपति तौ, असुर नसाई
आवई लौटि वितइ दिन चारी * रघुकुल-सुयस भुवन विस्तारी
मन संसय सो आगे आवा * धुनत सीस दसरथ भय छावा
सुत-वियोग मम काल कपाला * अन्धक-शाप सतत[2] हिय साला[3]
बिन मुखचन्द्र-राम, छिन एका * दूभर[4] जियब, न मुनि अतिरेका[5]
जीवन राम ध्यान मोइ ज्ञाना * पल बिन-दरस अचेत समाना
मम तन-मन अर्पित तव काजू * राम अदेय छमहु मुनिराजू

सोवहुँ निसि, हिय राम धरि, सदा सचेत सभीत।
स्वप्न बिलग — जिय कण्ठगत, कतहुँ न काहु प्रतीत[6]॥११६॥

श्रीराम को राक्षसों के साथ युद्ध के लिए भेजना दशरथ को अस्वीकार

जिमि राम जनमे, धाम मम, मो कथा-क्रम मुनि! श्रवन धरि।
सर तीर, कानन, सिन्धु — सुत-मुनिअंध, जल जिहि काल भरि॥

मुनिगण यज्ञ करे करिया प्रयास * राक्षस आसिया सदा करे यज्ञनाश
एइ भार महाराज दिलाम तोमारे * श्रीराम लक्ष्मणे देह यज्ञ राखिवारे
येइ मात्र विश्वामित्र कहेन ए कथा * भूपति भावेन मने हेंट करि माथा
पुत्रशोके मृत्यु मम लिखन कपाले * ना जानि हइवे मृत्यु मम कोन काले
अन्धकेर शाप मने करे धुक् धुक् * कखन मरिव नाहि देखे चाँदमुख
प्राण चाह यदि मुनि प्राण दिते पारि * एक दण्ड रामचन्द्रे ना देखिले मरि
अतएव रामचन्द्रे ना दिव तोमारे * एक दण्ड ना देखिले हृदय विदरे
आदिकाण्ड गाय कृत्तिवास विचक्षण * राम ध्यान राम ज्ञान राम से जीवन

श्रीरामके राक्षससह युद्धे प्रेरणे दशरथेर अस्वीकार

यखन शुइया थाकि, रामके हृदये राखि, भूमे राखि नाहिक प्रतीत।
स्वप्ने ना देखिले ताय, प्राण ओष्ठागत प्राय, चमकिया चाहि चारि भित॥
येमते पेयेछि रामे, कहि से सकल क्रमे, मृगया करिते गिया वने।
सिन्धु नामे मुनिवरे, सरोवरे जल भरे, तारे मारि शब्दभेदी बाणे॥

---

१ प्रारब्ध। २ सदैव। ३ खटकता रहा। ४ कठिन। ५ अत्योक्ति। ६ विश्वास।

आखेट घूमत, शब्द-जलघट, शब्दवेधी सर हनेउँ ।
सो तौ न पसु ! मुनि-सुवन हत ! धरि कन्ध अन्धक-वन गयेउँ ॥
सन्तान विन, मन ग्लानि निसिदिन, ताप मुनि-सुत-वध दहै ।
तहँ अन्ध-दम्पति, कुपित विलखत, सुत-वधिक—मोहिं शाप दै ॥
'मृत्युयोग वियोग-सुत'— मुनि शाप दिय वरदान मम ।
यहि भाँति पाये चारि सुत, भयभीत हिय, मुनिनाथ ! मम ॥
स्वयं चलि, दलि दनुज, रच्छहुँ याग; सुनि मुनि कोप किय ।
विन लखन-राम न काम, चाहत कुसल कोसलनाथ हिय ॥
दोउ सुवन दै, मुनि काज करु, नतु शाप वंश विनासिहौं ।
कौशिक कुपित लखि, कहत नृप, मुनि कछुक अर्ज सुनाइहौं ॥

राजा दशरथ का विश्वामित्र मुनि के साथ छल करके भरत और शत्रुघ्न को भेजना और विश्वामित्र का कोप, फिर राम को भेजना स्वीकार

वारी वयस लड़ुरियाँ सीमा ॥ रन न ज्ञान! किमि लरहिं मुनीसा?
जेतक सैन चहहु तव हेता ॥ हनै दनुजगन कटक समेता

मृत मुनि कोले करि, गेलाम अन्धकपुरी, देखि मुनि अग्निर समान ।
पुत्र-पुत्र वलि डाके, मरा पुत्र दिलाम ताँके, पुत्रशोके से छाड़िल प्राण ॥
छिलाम सन्तान हीन, मनोदुःखे रात्रिदिन, यापिलाम सिन्धुर जीवन ।
कुपिया सिन्धुर वाप, दिल मोरे अभिशाप, तेइ पाइलाम एइ धन ॥
अतएव तपोधन, शुन मम निवेदन, आमि यात्र सहित तोमार ।
विना श्रीराम लक्ष्मण, अन्य कि प्रयोजन, याहा चाह दिव शतवार ॥
राजार वचन शुनि, कुपिलेन महामुनि, भाट देह तोमार कुमार ।
आपन मङ्गल चाह, श्रीराम लक्ष्मणे देह, नहे वंश नाशिव तोमार ॥

राजा दशरथ विश्वामित्र मुनिके प्रवारणा करिया भरत ओ शत्रुघ्न के प्रेरणा ओ विश्वामित्रेर कोप, तत्परे रामेर गमन स्वीकार

राजा वलिलेन मुनि करि निवेदन ॥ धनुर्विद्या नाहि जाने कि करिवे रण
अत्यल्प वयस मम पुत्र चारि गुटि ॥ शिरे चूल नाहि घुचे आछे पञ्चझुटि
अन्य सैन्य यत चाह लह तपोधन ॥ ताहारा करिवे निशाचरे निवारण

रसद[1] कटक हित कित तपकानन ? * एक राम समरथ खल नासन
नृप तव सैन न कारज लेसा * रविकुल, जहँ हरिचन्द नरेसा
दै छिति दान, बेचि सुत-दारा * सत्यसंध मम भार उतारा
तहँ लघु बात मुनिन-उपहासू ! * प्रगट भानुकुल आजु विनासू
निरखि कोप, नृप युगुति बनाई * भरत-रिपुघ्न समीप बुलाई
करहु अनुगमन मुनि आदेसा * नृप-प्रवञ्च[2] मुनि ज्ञान न लेसा
लखन-राम तिन दोउ अनुमानी * कौशिक चले मोद मन मानी
सरयू तीर पहुँचि मुनिराई * युगुल सुतन दुइ पथ दिखराई
सुगम पंथ दिन तीन चलाई * पहर तीन दुर्गम पथ पाई
दुर्गम मग ताड़का सुरारी[3] * लगति, खाति मुनिगन नित मारी
मन भावै सोइ मग अनुसरहीं * 'कुपथ न हेतु'—भूप-सुत कहहीं
दनुजि एक ! डरपत रनबंका ! * राम-लखन कस ? मुनि मन संका

शुनिया कहेन विश्वामित्र तपोधन * कटके खाइबे यत कोथा पात्र धन
एका राम गेले हय कार्य्येर साधन * सहस्र कटके मम नाहि प्रयोजन
तव वंशे छिल ये हरिश्चन्द्र राजा * पृथिवी आमाके दिया करिलेक पूजा
तथापि ना पाइलेन मनेर सान्त्वना * भार्या पुत्र बेचिया से दिलेन दक्षिणा
एका राम तुमि दिते कर उपहास * सूर्य्यवंश बुझि आज हइल विनाश
चिन्तित हइया राजा भावि मने मने * डाकिलेन भरत शत्रुघ्न दुइ जने
दोंहे दौड़ाइल आसि मुनिर साक्षाते * राजा बलिलेन याह मुनिर सङ्गेते
भूपतिर वञ्चनाय भ्रान्त तपोधन * मने भाविलेन एइ श्रीराम लक्ष्मण
आगे यान महामुनि पाछे दुइजन * सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
मुनि बलिलेन शुन भूपति कुमार * हेथा गमनेर पथ आछे द्विप्रकार
एइ पथे गेले याइ तिन दिने घर * एइ पथे गेले लागे तृतीय प्रहर
तृतीय प्रहर पथे किन्तु आछे भय * सेइ पथे ताड़का राक्षसी नामे रय
ताड़िया धरिया खाय यत मुनिगणे * कोन पथे याइते तोमार लागे मने
बलिलेन भरत शुनह तपोधन * दुष्ट घाँटाइया पथे कोन प्रयोजन

---

१ फौज के लिए अन्न । २ ठगई, छल । ३ राक्षसी ।

जीते कस अगनित खल पाई ? * किमि कोटिक दल-दनुज नमाई ?
भरत ध्यान मुनि नृप-छल जाना * दीन न राम, भरत पहिचाना

फिरे गाधिसुत, कुपित अति, दसरथ किय उपहास !
सहित अवध पुरजन सकल, भूपति करौं विनास ॥१२०॥

मुनि-दृग प्रगटी पावक-रासी[1] * जरत नगर आकुल पुरवासी
हाट-बाट चहुँ जरैं अटारी * राम समीप भजे नर-नारी
तुम तजि, दीन भरत, नरनाहू * कौशिक-कोप अनल पुर दाहू
नगर त्रास लखि अति दुख पागे * धाय राम मुनि चरनन लागे
जेहि सिर पाप — दण्ड-अधिकारी! * निरपराध कम संकट डारी
दोष अकारन, मुनि ! मन आवै * सोइ छन पूरब धर्म नसावै
पितु सनेहबस मोहिं न दीना * करौं विदेह निसाचर-हीना
रच्छहु प्रजा, शमन ! तपपुञ्जा ! * राम-बचन मृदु मुनि-मन रञ्जा

एकथा शुनिया मुनि भाविलेन मने * इनि कि हवेन योग्य राक्षस निधने
एक राक्षसेर नाम शुनि एत डर * मारिबेन किसे इनि कोटि निशाचर
राजार शठता इनि भावेन अन्तरे * श्रीरामे ना दिया राजा दिल भरतेरे
आमार सहित राजा करे उपहास * अयोध्या सहित आजि करिब विनाश
क्रोधे फिरिलेन पुनः विश्वामित्र ऋषि * निर्गत हइल तॉर नेत्र अग्निराशि
सेइ अग्नि लागे गिया अयोध्या-नगरे * प्रजार तावत् घर द्वार दग्ध करे
कान्दिया चलिल प्रजा रामेर गोचरे * विश्वामित्र मुनि आसि सर्व्वनाश करे
तोमारे ना दिया राजा दिल भरतेरे * ते कारणे ए आपद अयोध्या-नगरे
प्रजार क्रन्दन शुनि रामेर तरास * धाइया गेलेन राम विश्वामित्र पाश
मुनिर चरण धरि बले रघुमणि * प्रजालोके रक्षा प्रभु करह आपनि
अपराध येइ करे दण्ड कर तार * निरपराधीर दण्ड करा अविचार
मुनि हैया येइ जन रागे देय मन * पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सेइक्षण
पुत्रे पाठाइते पिता हलेन कातर * यज्ञ रक्षा करि गिया मिथिला नगर
हामिलेन मुनिराज रामेर वचने * अयोध्यार पाने चान अमृत नयने

---

[1] अग्नि की लपटें।

तप प्रभाव, अमित मुनि-लोचन * मरसि अवध किय संकट मोचन
हास न त्रास विपति कहुँ लेसा * मुनि-तप - कौतुक राम विसेसा !

यज्ञरक्षा के लिए मिथिला में श्रीराम-लक्ष्मण का जाना और मन्त्र-दीक्षा

पञ्चशिखा सिर हरि अवतारा * मुग्ध राम-छवि मुनी निहारा
नभ शरदेन्दु[1] सरिस अभिरामा[2] ! * शोभाधाम चलहु मम ग्रामा
सुनी कथा नृप, लखि न उपाऊ * सौंपेउ राम-लखन मुनिराऊ
रहु निचिन्त[3], दसरथ बड़भागी * राम हेतु भय संका त्यागी
तुमहिं न बोध, असुर-बध हेता * जनम राम-तन कृपानिकेता
नृप प्रबोधि, मुनि सुतन बुलावा * सोइ छन रघुबर विनय सुनावा
जो अनुमति, आयसु-जननि, लैं, पुनि करौं पयान ।
नतरु अनन्तर, रुदन-रत, तजैं अन्न-जल-पान ॥१२१॥
चले बहोरि कौशिलाधामा * करि प्रनाम विनयेउ श्रीरामा

सकल करिते पारे तपेर कारण * येमन अयोध्यापुरी हइल तेमन
मुनिर चरित्र देखि रामेर तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

मिथिलाय यज्ञरक्षार्थे श्रीराम-लक्ष्मणेर गमन ओ मन्त्र दीक्षा

शिरे पञ्च झुटि राम विष्णु अवतार * मुग्ध हइलेन मुनि रूपेते ताँहार
पूर्णिमार चन्द्र येन उदय आकाशे * मुनि बलिलेन राम चल मोर देशे
जानिलेन महाराज रामेर गमन * लक्ष्मण सहित रामे करेन अर्पण
बलिलेन विश्वामित्र राजार गोचर * राम लागि चिन्ता ना करिह नरेश्वर
तुमि नाहि जानह रामेर गुणलेश * राक्षस बधिते अवतीर्ण हृषिकेश
श्रीराम लक्ष्मणे ल'ये आमि देशेयाइ * स्थिर हओ महाराज कोन चिन्तानाइ
राजारे कहिया एइ प्रबोध वचन * मुनि बलिलेन चल श्रीराम लक्ष्मण
श्रीराम बलेन मुनि यदि बल तुमि * मातृस्थाने विदाय लइया आसि आमि
माये ना कहिया यात्र मिथिला नगर * कान्दिबेन अन्नजल छाड़ि निरन्तर
गेलेन श्रीरामचन्द्र मायेर गोचरे * प्रणाम करिया पदे बलेन मायेरे

---

१ शरत्पूनो का चद्र । २ मनोहर । ३ वेफिक्र (निश्चित) ।

मिथिला असुर विघिन[1] नित करहीं * नित तिन कोप विपुल मुनि मरहीं
रच्छहुँ याग असुर संहारी * कौशिक चहत मोहिं महतारी
मंगल मन मुद आसिस-माई * लहि प्रसाद लौटउँ जय पाई
अवसर प्रथम, समर शुभ मोरा * उचित न सोच जननि मम ओरा
उपजी सुनत वेदना भारी * भीजे वसन, झरत दृग वारी
भरि गुअंक, कर फेरति सीमा * कातर हिय, बहु भाँति असीमा
मातहिं बहु प्रबोधि रघुबीरा * टरकत, रुकत न लोचन नीरा
चरन धूरि पुनि सीस सँवारी * किय शुभगमन राम धनुधारी
राम-लखन गमने मुनि साथा * दृग जल, धरनि गिरे नरनाथा
ओझल राम न, तौ लौं दरसन * छिति पलोटि, नृप कातर क्रन्दन
समुझावत बहु सचिव सनेही * भावी[2] अमिट, न संशय येही
निरखि राम मुनि मोद उछाहा * रचेउ दैव रघुनाथ-विवाहा
विधि-अनुगत[3] अश्विनीकुमारा * तिमि दोउ, मुनि-पाछे पग धारा

आइलेन विश्वामित्र लइते आमारे * मिथिलाय जाइ आमि यज्ञ राखिवारे
शुद्ध मने आमारे आशीर्व्वाद कर * युद्धे जयी हइ येन प्रसादे तोमार
प्रथम युद्धे ते यात्रा करितेछि आमि * आमार लागिया शोक ना करह तुमि
कौशल्या शुनिया तबे करिछे रोदन * भिजिल नयन नीरे नेतेर वसन
कातरा कौशल्या कोले करिया रामेरे * आशीर्व्वाद करिलेन कर दिया शिरे
मायेरे कहेन राम प्रबोध वचन * नेत्र नीर नेत्रेते हइल निवारण
मातृ पदधूलि राम वन्दिलेन माथे * शुभ यात्रा करिलेन धनुर्व्वाण हाते
श्रीराम लक्ष्मणे निया विश्वामित्र यान * महाराज नेत्रनीरे धरणी भासान
कत दूर गिया राम हन अदर्शन * भूमिते पड़िया राजा करेन क्रन्दन
राजा के प्रबोध करे यत पात्रगण * के करे अन्यथा याहा विधिर घटन
रामे देखि मुनिवर आनन्दित मन * रामेर विवाह हबे दैवेर घटन
आगे मुनिवर यान पाछे दुइजन * ब्रह्मार पश्चाते येन अश्विनीनन्दन

---

१ विघ्न । २ होनी । ३ ब्रह्मा के पीछे मानो अश्विनीकुमार चल रहे हैं ।

विकल अवध-जन लौटति देसा * उत बन विश्वामित्र प्रवेसा
कुम्हरन-बदन[1] मलिन रवितापा * अवलोकत मुनि संसय व्यापा

सो० रामहिं बन सों काम, वर्ष चतुर्दश व्यथा नित।
दुसह एक दिन घाम, अवधि[2] पूरि किमि काटिहैं ॥१२२॥

सोइ विचारि मुनि मत थिर कीन्हा * रामहिं मंत्र-दीक्षा दीन्हा
रघुकुल जे पूर्वज, रघुवीरा! * तजे प्रान शुचि सरयू तीरा
तीरथ पुन्य सलिल सोइ पावन * मार्जन[3] करि आवहु मनभावन
लेहु सुमंत्र दीक्षा आई * सकल शोक-भय-हेतु नसाई
सहस वर्ष नहिं छुधा-पिपासा * सुनि, नहाय, गमने मुनि पासा
युगुल बंधु दिवि[4] मंत्र सिखावा * सुरगन निरखि अतुल सुख पावा
सोइ बल अनाहर बनवासा * विक्रम लखन इन्द्रजित[5] नासा
दिव्य मत्र-दीक्षित शिर नाई * मुनि-अनुगमन कीन रघुराई

कान्दिते कान्दिते सर्व गेल निज वासे * राम निया विश्वामित्र वनेते प्रवेशे
आगे मुनि यान पाछे श्रीराम लक्ष्मण * आतपे हइल म्लान दोंहार वदन
ताहा देखि विश्वामित्र अन्तरे चिन्तित * एक दिने श्रीरामेर दुःख उपस्थित
रविर तापेते यदि मुखे आसे घाम * बहुकाल किमते भ्रमिबे वने राम
विश्वामित्र एइ मत भाविया अन्तरे * कराइल मन्त्रदीक्षा श्रीरामचन्द्रेरे
विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवीर * स्नान करि एस गिया सरयू नदीर
यत राजा पूर्व्व सूर्य्यवंशे हये छिल * एइ स्थाने प्राण छाड़ि स्वर्गवासे गेल
एइ पुण्यतीर्थे राम स्नान कर तुमि * तोमारे सुमन्त्र दीक्षा कराइब आमि
शोक दुःख कखन ना पाइबे अन्तरे * क्षुधा तृष्णा ना हइबे सहस्र वत्सरे
करिलेन रामचन्द्र से मन्त्र ग्रहण * रामेरे कहिते ताहा शिखिल लक्ष्मण
दृढ़ करि शिखिलेन भाई दुइजन * आनन्दित हइया देखिल देवगण
बहुकाल अनाहारे थाकिबे लक्ष्मण * ताहाते हइबे इन्द्रजितेर मरण
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्वेर शिक्षा * आदिकाण्ड गाइल रामेर मन्त्र दीक्षा

---

१ मुख। २ मियाद। ३ स्नान। ४ दिव्य, अलौकिक। ५ मेघनाद।

श्रीराम द्वारा ताड़का राक्षसी का वध और अहल्या-उद्धार

बन - ताड़ुका जबहिं नियरावा * प्रथम प्रश्न मुनि पुनि दोहरावा
फूटत युगुल पंथ इत लखहू * मन भावै सोइ मग अनुसरहू
एक सुगम दिन तीनि चलाई * पहर तीनि, दुर्गम पथ पई
दुर्गम पथ ताड़का सुरारी * लगत, खात, मुनिगन नित मारी
भयङ्करी दानवि जित लागा * मो पथ, सुत ! न उचित अनुरागा!
मग विलंब, गुरु ! मोहिं न भावा * पहर तीनि द्रुत[1] पंथ सुहावा
जो निसिचरी करइ भटभेरा[2] * तौ न तासु वध पातक हेरा
कुपथ बिसूरि उपज मुनि तापा * किमि उछाह रामहिं अस व्यापा ?

सो० भाजहिं पग धरि सीस, भेंट ताडका कतहुँ जो ।
सुनत कथन, जगदीस, बिहँसि धीर बोलत बचन ।।१२३।।

राम न नाम, विफल धनुबाना * हनउँ एक सर राकसि प्राना
सर द्वितीय लों गुरु - दोहाई * तीज गहे मम धर्म नसाई

श्रीराम कर्त्तृक ताड़का राक्षसी-वध ओ अहल्या-उद्धार

गुरुर चरणे राम करिलेन नति * रामे लैया विश्वामित्र करिलेन गति
ताड़कार बने आसि कहे अभिमत * रामे चाहि बलिलेन एइ दुटि पथ
एइ पथे याइ घर तृतीय प्रहरे * एइ पथे तिन दिने याइ मम घरे
तिन प्रहरेर पथे किन्तु भय करि * ताड़का राक्षसी आछे महा भयंकरी
ताड़िया धरिया खाय यत जीवगण * कोन पथे याइ बल श्रीराम लक्ष्मण
करिलेन राम गुरु-वाक्येर उत्तर * तिन दिन फेरे केन याब मुनिवर
यदि से राक्षसी पथे आइसे खाइते * विचारे नाहिक दोष ताहारे मारिते
रामेरे कहेन विश्वामित्र मुनिवर * ओ पथेर नामे मोर गाये आसे ज्वर
तोमार वासना आमि ना पारि बुझिते * मारे निया याह बुझि राक्षसेरे दिते
यखन राक्षसी मोरे आसिबे ताड़िया * आमारे एड़िया दोहे याबे पलाइया
गुरुर वचने हासिलेन प्रभु राम * विफल धनुक धरि व्यर्थ राम नाम
एक बाण बिना कि द्वितीय बाण धरि * तोमार दोहाइ यदि तिन बाण मारि

---

१ जल्दी वाना। २ मुठभेड़, मुठभेड़।

करि प्रन अटल, चले मुनि साथा * कानन अनुज सहित रघुनाथा
युगुल बंधु बिच, मुनि छबि पावा * ठिठकि दूर गृह-असुरि दिखावा
विक्रम बरनि, मनहुँ भय पाई+ * कुअँरन तजि, मुनि चले बराई
लखन जाहु संग, गुरु भयभीता * तजब अकेल न उचित प्रतीता
लछिमन कहत विनय कर जोरी * अनुचर त्रिलग न प्रभु, मति मोरी
विक्रम विपुल विकट गति जाकी * तासन उचित न रन एकाकी
सुनहु लखन प्रिय! मन भय त्यागी * कस समर्थ निसचरि हतभागी
जो मिलि सकल जुरहिं रन अर्था * अँगुरि न मम, सठ लघ समर्था
गुरु-अनुगमन लखन पुनि कीन्हा * असुर-अरण्य राम पग दीन्हा
धनुर्दण्ड बिच धरि कर बामा * तानि तन्तु[1] दक्षिण कर रामा
फेंट-वसन कसि, सारङ्ग[2] हाथा * दूर्वादल श्यामल रघुनाथा

एइमत रघुवीर प्रतिज्ञा करिते * चलिलेन मुनि सेइ ताड़का देखिते
उभय भ्रातार मध्ये थाकि मुनिवर * दूर हैते देखाइल ताड़कार घर
कर वाडाइया तार घर देखाइया * अति त्रासे मुनिवर यान पलाइया
श्रीराम बलेन भाई मुनिर सहित * शीघ्र याह गुरु एका यान अनुचित
लक्ष्मण बलेन रामे जोड़ करि हात * थाकुक सेवक सगे प्रभु रघुनाथ
शुनिले ताहार कथा बड़इ विषम * एकला केमने राम करिबे विक्रम
श्रीराम बलेन भाइ भय नाइ मने * कि करिते पारे भाइ राक्षसीर गणे
सकल राक्षसी यदि हय एक मिलि * लङ्घिते ना पारे मम कनिष्ठ अङ्गुलि
गेलेन मुनिर सङ्गे लक्ष्मण तखन * ताडकार प्रति राम करेन गमन
वाम हॉतु दिया राम धनु मध्यखाने * दक्षिण हस्तेते गुण दिलेन से स्थाने
आँटिया सुपीत वस्त्र बान्धिलेन राम * वाम हाते धनुर्व्बाण दूर्व्वादल श्याम
प्रथमे दिलेन राम धनुके टङ्कार * स्वर्ग मर्त्त पाताले लागिल चमत्कार
शुये छिल राक्षसी से सुवर्णेर खाटे * धनुक टङ्कार शुनि चमकिया उठे
वसिया राक्षसी सेइ एक दृष्टे चाय * दूर्व्वादल श्याम रूप देखिल तथाय

+ सत कृत्तिवास ने विश्वामित्र का भयाकुल वर्णन उपहासास्पद किया है। हिन्दीकार के मत से मुनि ने किशोरों की परीक्षार्थ भय का रूप दिखाया है। १ प्रत्यञ्चा। २ धनुष।

घनुटङ्कार प्रथम, जग हाला * स्वर्ग, मर्त्य, भौचकित[1] पताला
सुवरन - खाट ताड़का सोई * सुनि टङ्कार नींद तिन खोई
नयन पसारि सुरारि[2] निहारी * हरित दूबदल सम छवि प्यारी
आसन - हेत विरञ्चि दिय, कोमल मानव - चाम।
अबहिं हरौं तव प्रान, कहि, उठि धाई जित राम ॥१२४॥
विप्रचर्म-पट खल तन धरही * क्रूर[3], चलत सो चरमर करही
कानन कुण्डल मुनिन-कपाला * मनुज-भाल उर झूलत माला
रक्त-मांस, मुनि जरठ,[4] विहीना * अस्थि-चर्म तिनकर रसहीना
कोमल सुरुचि मांस विधि दीना * दनुजि कथन रघुवर सुनि लीना
विपुल लोम[5] - युत ताम्र सरीरा * विकट दन्त जिमि लौह जँजीरा
भच्छन हित, मुख चली पसारे * लखि निसचरि प्रभु वचन उचारे
केतिक मुनि मनु कानन मारे * तजत पंथ तव-त्रास विचारे
पठवउँ आजु तोहि यमलोका * कुपित निसिचरी प्रभुहिं विलोका
गर्जति निडर, विकट तन धारी * चली राम तन, शाल उपारी

उठिया चलिल सेइ राम विद्यमान * डाकिया वलिल आज लव तोर प्राण
ब्राह्मणेर चर्म तार गायेर कापड़ * चलिते ताहार वस्त्र करे खड़मड़
ब्राह्मणेर मुण्ड तार कर्णेर कुण्डल * मनुष्येर मुण्डमाला गलार उपर
वसिते आसन नाइ भावे मने मन * इहार चर्म्मेते हवे वसिते आसन
रक्त मांस मुनिर शरीरे नाहि - पाइ * अस्थि चर्म्म सार मात्र शुधु हाड खाई
अपूर्व्व इहार मांस दिलेन विधाता * कहिलेन राम शुनि ताडकार कथा
ताम्रवर्ण देखि तोर गाये लोमावली * दन्त गोटा देखि येन लोहार शिकलि
वदन व्यादन करि आइल खाइते * पाठाइव तोरे आजि यमेर वसते
मनुष्य खाइया चेड़ी दश कैलि वन * तोर डरे पथे नाहि चले साधुजन
शुनिया रामेर वाक्य कुपिया अन्तरे * निकटे आसिया से विकट मूर्त्ति धरे
रामेरे खाइते जाय डरे नाहि पारे * शालगाछ उपाड़िल घोर हुहुङ्कारे
शालगाछ उपाड़िया घन दिल पाक * दूर-दूर करिया ताड़का दिल डाक

१ अचभित। २ राक्षसी। ३ बूरे हुए। ४ बूढ़े। ५ रोम।

बालक ! 'सम्हरु,' करौं तव पाना * नभ रव , घोर, शाल संधाना
निरखि राम सर एक चलावा * खण्ड-खण्ड, छिति विटप गिरावा
आयुध[1] विफल कोप अधिकाई * शिशुपाल तरु[2] लै पुनि धाई
तौलति कर, तकि प्रभु, रव घोरा * हरि-सर चलेउ दनुजि मुख ओरा
तदपि ताड़का अति रन ठाना * उत प्रभु तजत बान पर बाना
पावस घन जिमि दामिनि नादा * गर्जे तर्जे सर समर विवादा
सुर-बानी सुनि परी अकासा * बिन सर बज्र न दनुजि-विनासा

राम बज्रसर मारि हिय, राकसि कीन अचेत।
योजन दूरि पचास लौं, गिरी जाय सो खेत ॥१२५॥

आर्त्तनाद करि त्यागेसि प्राना * सुनत दूरि, कौशिक हतज्ञाना
राम, पठयि राछसि यमगेहा * बन्देउ चलि मुनि चरन सनेहा
मुनि सचेत, रघुवर उर लाई * दुर्जय दनुजि तात जय पाई
विनयेउ राम, कहा बल मोरा ? * बिन गुरु-कृपा न कारज घोरा

ताहा देखि रघुनाथ एड़िलेन बाण * बाणाघाते करिलेन गाछ खान-खान
गाछ काटा देखि कुपिया गेल वने * शिशपार गाछ देखि घन-घन टाने
शिशपार गाछ तोले रामे मारिबारे * तार मुख भेदिलेन राम एक शरे
तथापि ताड़िया जाय रामे गिलिबारे * महावीर भय कभु नाहि करे तारे
बाणेर उपरे बाण शब्द ठनूठनि * वर्षाकाले विद्युतेर येन भनूभनि
श्रीरामेरे डाकिया बलेन देवगण * बज्रबाणे ताड़कार बधह जीवन
बज्रबाण एड़े राम युड़िया धनुके * निर्घात बाजिल बाण ताड़कार बुके
बुके बाण बाजिते हइल अचेतन * ताडका पड़िल गिया पञ्चाश योजन
विपरीत डाक छाड़ि छाड़िलेक प्राण * शब्द शुनि विश्वामित्र हैल हतज्ञान
पाठाइया ताड़कारे यमेर सदन * मुनिर चरण राम करिल वन्दन
चेतन पाइया बले गाधिर नन्दन * ताडका मारिला बाछा कौशल्याजीवन
श्रीराम बलेन गुरु कि शक्ति आमार * ताड़कारे बधिलाम प्रसादे तोमार

---

१ अस्त्र । २ शीशम का वृक्ष ।

कौशल्या-सुत ! सुनहु अनूपा * कस ताड़का ? लखिय चलि रूपा
निसिचरि निकट चले धरि धीरा * यदपि मृतक, मुनि कम्प शरीरा
मुनि-मन सोच ! भयावह रूपा * लखेउ न विकट - तासु अनुरूपा
हनि ताड़का, राम द्दग कञ्जा * चले भूमि जहँ जन्म-प्रभञ्जा[1]
उद्गम इत उनचास प्रभञ्जन[2] * कुअँर लखहु ! कह गाधियनन्दन
पवन-भूमि तजि, पुनि पग डारा * गौतम-तिय उपवन विस्तारा
मुनि अदेस, सुनु राजिवलोचन ! * उपल[3] परसि पग करु अघमोचन[4]
परसन सिला कहहु कस कारन ? * कौतूहल गुरु करिय निवारन
कौशिक कही पुरातन बाता * सिर्जि सहस रूपसी विधाता
तिन छवि एक सवाँरि अहिल्या * अतुल रूप जग तासु न तुल्या
रूपरासि सो गौतम-नारी ! * दिवस एक, मुनि तप पग धारी
मुनि-प्रिय शिष्य— इन्द्र, मुनिवेसा * मुनि सूने, किय कुटी प्रवेसा

कस अकाल प्रभु आगमन ? प्रश्न अहिल्या कीन ।
छम्य वेस सुरपति उतर, गौतम-तिय सों दीन ॥१२६॥

मुनि बलिलेन शुन कौशल्यानन्दन * ताड़कारे देखि गिया ताड़का केमन
ताड़कारे देखिते मुनि करेन प्रस्थान * मरेछे ताड़का तबू मुनि कम्पमान
ताड़कारे देखिया भावेन मुनि मने * एमन विकट मूर्त्ति ना देखि नयने
ताड़कारे मारिया राम राजीवलोचन * पवनेर जन्मभूमि करेन गमन
विश्वामित्र कहे देख श्रीरामलक्ष्मण * एइ खाने हैल ऊनपञ्चाश पवन
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया * अहल्यार तपोवने गेलेन चलिया
मुनि बलिलेन राम कमललोचन * पाषाण उपरे पद करह अर्पण
शुनिया बलेन राम मुनिर वचने * पाषाणेते दिब पद किसेर कारणे
मुनि बलिलेन शुन पुरातन कथा * सहस्र सुन्दरी सृष्टि करिलेन धाता
सृजिलेन ता सबार रूपेते अहल्या * त्रिभुवने छिल ना सौन्दर्य्ये तार तुल्या
करिलेन अहल्याके विवाह गौतम * गौतमेर शिष्य इन्द्र अति प्रियतम
एक दिन गौतम गेलेन तपस्याय * गौतमेर वेशे इन्द्र प्रवेशे तथाय

---

१ पवन की जन्मभूमि । २ उनचास वायु का उत्पत्ति-स्थान । ३ पत्थर । ४ पापमुक्त ।

हिय, तव रूप प्रिये ! स्मरना ❋ मदन-दग्ध ! किमि तप-आचरना
गुरु-तिय-रति सुरपति मन डारा ❋ सतवन्ती पति आयसु धारा
छद्म्य वेस पति — शचिपति संगा ❋ विवस अहिल्या-व्रत इमि भंगा
तप-निवृत्त गौतम गृह आये ❋ आसन-मान नारि सों पाये
अवसर विन, शृंगार-प्रसंगा ❋ प्रिय कस लखत चिह्न तव अंगा ?
सुनि ससंक, विनयेउ मुनिनारी ❋ स्वयं नाथ करनी अधिकारी
गिरेउ टूटि नभ गौतम-सीसा ❋ सकल कथा सुनि विकल मुनीसा
धरत ध्यान, कौतुक सब जाना ❋ पापहेतु-सुरपति, पहिचाना
इन्द्र ! इन्द्र ! मुनि गर्जि पुकारा ❋ दबकति[1] पाँव पुरन्दर डारा
अनाहार, धधकत हिय आगी ❋ बोलत दुगुन कोप मुनि पागी
नाना शास्त्र ज्ञान तैं लीन्हा ❋ गुरु-दच्छिणा तासु भल दीन्हा
गुरु-तिय धर्म, नीच ! तैं भंगा ❋ सठ ! तव होय योनिमय अंगा

अहल्या गौतम ज्ञाने करे सम्भाषण ❋ आजके सकाले केन घरे आगमन
इन्द्र वले तव रूप हइल स्मरण ❋ केमने करिब प्रिये तपस्याचरण
मदन दहने दग्ध हय मम हिया ❋ निर्व्वाण करह प्रिये आलिङ्गन दिया
पतिव्रता नाहि लङ्घे पतिर वचन ❋ तखनि शयनगृहे करिल गमन
गुरुपत्नी वलिया ना करिल विचार ❋ धर्म्मलोप करिल वासव अहल्यार
तपस्या करिया मुनि आइलेन घरे ❋ अहल्या आसन दिल अति समादरे
गौतम वलेन प्रिये जिज्ञासि तोमारे ❋ शृङ्गार लक्षण केन तोमार शरीरे
अहल्या वलेन प्रभु निवेदि तोमारे ❋ आपनि करिया कर्म्म दोषह आमारे
ए कथा शुनियामुनि हेंट कैल तुण्डे ❋ आकाश भाङ्गिया पड़े गौतमेर मुण्डे
जानिलेन ध्यानेते गौतम मुनिवर ❋ जाति नाश करिल आसिया पुरन्दर
इन्द्र इन्द्र वलिया डाकेन मुनिवर ❋ पुँथि काँखे करिया आइल पुरन्दर
दिनान्ते अभुक्त मुनि कुपित अन्तरे ❋ द्विगुण ज्वलिया कहिलेन पुरन्दरे
तोके पड़ाइलाम ये आमि शास्त्र नाना❋ एतदिने भाल दिलि गुरुर दक्षिणा
जाति नष्ट कैलि तुइ ओरे पुरन्दर ❋ योनिमय होक तोर सर्व्व कलेवर

---

१ डरा हुआ ।

पुनि, दिय शाप सुतिय अतिरूपा * बसइ तपोवन शिला-स्वरूपा
विकल चरन धरि रुदन अपारा * केहि विधि, नाथ ! शाप निस्तारा ?
कातर तिय प्रबोधि अनुरागी * अमिट शाप मम सुनु हतभागी
दसरथ-गेह जनमि रघुनाथा * याग-क्षेम हित, कौशिक साथा

गमनकाल, मग, चरन-रज, तिन परसत तव सीस ।
लहै मनुज-तन, रुदन तजु, सुमिरु कृपा जगदीस ॥१२७॥

लक्ष्मण कहत विनय सुनि लीजै * ब्राह्मणि-सीस, चरन किमि दीजै
कतहुँ न द्विज; प्रस्तर यहि काला * सुनत पदुमदृग राम कृपाला
परसेउ चरन; सिला तजि रूपा * शापमुक्त तिय भई अनूपा
अमित मोद, गौतम तहँ आये * निरखि अहिल्यहिं सुख अति पाये
विगत अतीत, मिली पुनि जोरी * प्रभु-स्तवन करैं कर जोरी
भक्तन हित तरुकल्प अनूपा ! * दयासिन्धु ! अगतिन-गति रूपा !
किय निस्तार, युगुल प्रभु-सरना * नमन राम जय रघुपति-चरना
एक भाव मन प्रभु तल्लीना * रचेउ चरित कृत्तिवास प्रवीना

अहल्या के शापिलेन क्रोधे मुनिवर * काननेते तोर तनु हउक प्रस्तर
अहल्या चरणे धरि कहिल तखन * कत काले हवे मोर शाप विमोचन
अहल्यारे कातर देखिया तपोधन * कहिलन मम शाप ना हय खण्डन
जन्मिवेन यवे राम दशरथ घरे * विश्वामित्र लये यावे यज्ञ राखिवारे
तोमार माथाय पद दिवेन यखन * तखनि हइवे मुक्त ना कर क्रन्दन
इहा शुनि लक्ष्मण बलेन शुन मुनि * केमने दिवेन पद उनि ये ब्राह्मणी
विश्वामित्र कहिलेन शुन रघुवर * ब्राह्मणी नहेन उनि एखन प्रस्तर
ए कथा शुनिया राम कमललोचन * तदुपरे करिलेन चरण अर्पण
ताहाते हइल तॉर शाप विमोचन * आह्लादित शुनिया गौतम तपोधन
अहल्याके देखिया सानन्द महामुनि * पुनर्व्वार करिलेन पुष्पेर छाउनि
दोहे मिलि स्तव करे जुड़ि दुइ कर * भक्तवाञ्छा कल्पतरु दयार सागर
जय-जय रामचन्द्र अगतिर गति * निस्तार दुयेरे प्रभु पदे करि नति
शुन सबे परे भाइ हैया एकमन * आदिकाण्ड गाइल अहल्या-विवरण

श्रीरामचन्द्र द्वारा तीन कोटि राक्षसों का संहार एवं मुनियों के यज्ञ की विधि
तथा शिवजी का धनुष तोडने के लिए मिथिलागमन

मुनिहिं कहेउ पुनि राजिवलोचन * भयेउ इन्द्र किमि शाप-विमोचन
विश्वामित्र कथा इमि बरनी * सहसयोनि-युत वासव[1] करनी
सोचत सुरगन, सुरपति लाजा * किमि निवरै[2] उपहास-समाजा
अश्वमेध करि पावन यागा * अमित नेम-जप-तप अनुरागा
कायाकल्प, चिह्न जे अंगा * लोचन सहस भये एकसंगा
टोली[3], रत इमि कथा-प्रसंगा * पहुँची कछुक काल तट-गंगा
पाहन[4] पलटि भई मुनिगृहनी * केवट सुनत लुकायेसि तरनी[5]
कौशिक डपटि कहेउ, कैवर्त्ता[6]! * आयसु-लंघ, मिलावहुँ गर्त्ता[7]
उड़े प्रान, आयेउ निकट, कहेउ कोपि मुनिनाथ।
सुरसरि पार उतारु मोहिं, युगुल किशोरन साथ ॥१२८॥
केवट करुन कथा निज बरनी * छिद्र अनेक, जीर्न मम तरनी
उजुर न मुनि आयसु सिर धारौं * सबन कंध लै पार उतारौं

श्रीरामचन्द्र कर्त्तृक तिनकोटि राक्षस बध ओ मुनिगणेर यज्ञ समाधान एवं
हरधनु भाँगिबार जन्य मिथिलाय गमन

श्रीराम बलेन प्रभु करि निवेदन * केमने हइल मुक्त सहस्रलोचन
मुनि बलिलेन शुन दशरथ सुत * हइलेन वासव सहस्रयोनियुत
लज्जायुक्त हइलेन देव पुरन्दर * कि हवे उपाय सब भावेन अमर
अश्वमेध करिलेन तखन वासव * योनि छिल घुचिया हइल नेत्र सब
एइ रूपे कथा वार्ता कहिते-कहिते * तिन जने चलिलेन गङ्गार कूलेते
पाषाण हइल मुक्त कैवर्त्त ता शुने * नौकाखानि लइया से पलाइल वने
कैवर्त्तके डाकिया कहेन तपोधन * ना आइले भस्म आमि करिब एखन
एत शुनि कैवर्त्तेर उड़िल जीवन * आसिया मुनिर काछे दिल दरशन
मुनि बलिलेन बलि कैवर्त्त तोमारे * गङ्गाय करह पार ए तिन जनारे
कातरे कैवर्त्त कहे करिया विनय * नौकाखानि जीर्ण मम शत छिद्रमय
तबे यदि आज्ञा कर मोरे तपोधन * स्कन्धे करि पार करि याह तिनजन

---

१ इन्द्र। २ निवारण हो। ३ मण्डली। ४ पत्थर। ५ नाव। ६ केवट। ७ धूल मे।

कित आनेउ छवि अतुल कुमारा * जिन पग छुअत शिला निस्तारा
सुनी कथा मोइ भय-उपजावन * इन रज-चरन तरत छुइ पाहन
पद-रज परसि तरुनि[1] भइ तरनी[2] * कित निवास? ग्रह भुरभुट घरनी[3]
नौका-हरन, हरन मच काहू * मुनि कित मम परिवार निवाहू ?
जो प्रभु, चरन-धूरि पखराई * तौ तरि[4]-परम[5] न भय अधिकाई
केवट-युक्ति विनय-रस पागी * अनुमनि दीन राम अनुरागी
पग पखारि कुअँरन मुनि माथा * सुरसरि तरनि तरी रघुनाथा
कहेउ राम यहि सम जग माहीं * हे प्रिय लखन ! अकिञ्चन नाहीं
परत दीठि शुभ राम कृपाला * तरनी कनकमयी तत्काला
सरित उतरि लखन-श्रीरामा * पूछत कत, मुनि ! मिथिलाधामा ?
चलिय वेगि, मुनि कहत सनेहा[6] * तीन कोस, सुत ! अवहिं विदेहा
राम-लखन आगम तप-कानन * मुनि-तिय चकित चितैं मनभावन
द्वादस वयस पञ्च सिर चोटी * कौतुक ! हनहिं दनुज त्रयकोटी !

कोथा हैते आनिला ए पुरुष सुन्दर * पायेर परशे मुक्त करिल प्रस्तर
ए कथा शुनिया आमि सभय अन्तर * चरण धूलिते मुक्त हइल पाथर
नौका मुक्त हय यदि लागि पदधूलि * कि दिया पोषिब आमि मम पौष्यगुलि
करिवेक गृहिणी आमाके गालागालि * वलिवे मुनिर बोले नौका हाराइलि
यदि वल श्रीरामेर चरण धोयाइ * नतुवा लागिवे धूला तरणी हाराइ
तरणीते त्वराय करिते आरोहण * धोयाइल कैवर्त्त श्रीरामेर चरण
श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र एइ तिने * पाटनी करिया पार गेल भव जिने
श्रीराम वलेन शुन प्राणेर लक्ष्मण * इहार समान नाहि देखि आकिञ्चन
शुभदृष्टे श्रीराम चाहेन तार पाने * हइल सुवर्णमयी तरणी तत्क्षणे
हइलेन गङ्गापार श्रीराम लक्ष्मण * जिज्ञासेन कत दूरे मिथिला भुवन
मुनि वलिलेन राम चलह सत्वर * एखन मिथिला आछे तिन क्रोशान्तर
पार ह'ये यान राम सहित लक्ष्मण * कहिते लागिल देखि मुनिपत्नीगण
द्वादश वर्षेर राम शिरे पञ्चझुटि * मारिवेन राक्षस केमने तिन कोटि

---

१ तरुण स्त्री । २ नाव । ३ गृहिणी (पत्नी) । ४ नाव । ५ स्पर्श । ६ नेह-सहित ।

शत-शत पुन्य-पूर्व केहि जागी ? * जन्मेसि जननि कवन बड़भागी ?
नारी, अच्छत-दूब लै, पुनि-पुनि देयँ असीस।
असुर-निकन्दन राम लखि, प्रमुदित सकल मुनीस ॥१२६॥
प्रथम दिवस तपवन विश्रामा * भोर निवेदन किय श्रीरामा
युगुल बन्धु आये जेहि काजा * अनुमति मोहि दीजिय मुनिराजा
सुनहु तात हे रघुकुल-चन्दा * रचहिं याग अब द्विज-मुनि-वृन्दा
अब लौं जब-जब याग रचावा * ताड़क-सुत शोनित[1] बरसावा
विप्र-स्वभाव न समुचित क्रोधा * किये कोप, जप-तप अवरोधा[2]
यज्ञ-काज अविलब अरंभा * मुनि-प्रसाद मेटहुँ खल-दम्भा
राम-घोष, तपसी तत्काला * लै कुश चले यज्ञ शुचि शाला
कुश-आसन कोउ-कोउ मृगचर्मा * पूरुब मुख असीन तपकर्मा
करहिं वेदध्वनि बटु अनुरागी * स्वतः मंत्र-बल प्रगटति आगी
गगन धूम्र साकल्य सुवासा * निरखि असुरगन किय उपहासा

कोन भाग्यवती पुत्र धरियाछे गर्भे * कत शत पुण्य से ये करियाछे पूर्व्वे
मुनिगण आइलेन करिते कल्याण * आशीष करेन सबे हाते दूर्व्वाधान
श्रीरामेरे निरखिया यत मुनिगण * आनन्दसागरे मग्न सह तपोधन
से दिन वञ्चिया सुखे श्रीरामलक्ष्मण * प्रातःकाले मुनिरे करेन निवेदन
ये कार्य्य करिते आइलाम दुइ भाई * सेइ कार्य्ये अनुमति करह गोसाई
मुनिरा बलेन शुन श्रीराम लक्ष्मण * एखनि करिब यज्ञ सकल ब्राह्मण
आमरा सकले करि यज्ञ आरम्भन * रक्तवृष्टि करे दुष्ट ताड़कानन्दन
ना पारि करिते क्रोध आमरा ब्राह्मण * यदि क्रोध करि हय धर्म्म उल्लङ्घन
श्रीराम बलेन प्रभु करि निवेदन * अविलम्बे कर यज्ञक्रिया आरम्भन
शुनिया रामेर कथा तपस्वी सकले * खोला कुश लइया गेलेन यज्ञस्थले
केह व्याघ्रचर्म्म वैसे केह कुशासने * बसिलेन पूर्व्वमुख हइया आसने
वेदपाठ करिते लागिलेन सकले * मन्त्रेर प्रभावे से अग्नि आपनि ज्वले
यज्ञेर यतेक धूम उड़ये आकाशे * देखिया राक्षसगण मने-मने हासे

---

१ रक्त, खून। २ रुकावट।

निसिचर-रहत, न यज्ञ-अचारा * तीनि कोटि दल सजि हंकारा
विपुल सैन मारीच सजावा * यज्ञस्थल समीप चढ़ि आवा
सैनन[1] मुनिगन राम चेतावा * होहु सचेत, दनुजदल आवा
रघुवर-दीठि जहाँ लौं जाई * अगनित असुर अनी छिति छाई
तत्पर लखन-राम धनुबाना * खैंचि श्रवन लौं सर संधाना
लिये विटप-पाषान विशाला * दानव समर, बदन विकराला
तिनहिं ताकि, रघुवर हने, तीखे विशिख कराल।
कोटि असुर आहत किये, धनि-धनि दसरथलाल ॥१३०॥
जूझे कोटि दनुज रन हेता * जुरे कोटि धनुधर पुनि खेता
अति सुतीक्ष्ण सर हीरा-जीरा * इन्द्रबान छोड़ति रघुवीरा
पशुपति बान, क्षुरूप-सुरूपा * दलति असुर, ध्वांन मारु अनूपा
गर झलमल मणि-माणिक-माला * हनेउ असुर दुइ कोटि कृपाला
देयँ असीस, मुदित मुनिराई * जीतई समर राम दोउ भाई

जीयन्ते थाकिते मोरा मुनि यज्ञ करे * तिन कोटि निशाचर साजिया चलरे
तिन कोटि लइया मारीच निशाचर * साजिया आइल तारा यज्ञेर भितर
सङ्केते श्रीरामेरे जानान मुनिगण * आसियाछे राक्षसगण कर निरीक्षण
देखिलेन रघुवीर निशाचर गण * व्यापियाछे वसुमति ना जाय गगन
श्रीराम लक्ष्मण करे धरि धनुर्बाण * आकर्ण पूरिया बाण करेन सन्धान
पादप पाथर ल'ये आइल विस्तर * भयङ्कर कलेवर करे निशाचर
कटाक्षेते निक्षेप करेन राम शर * ताहाते पड़िल एक कोटि निशाचर
एक कोटि पड़े यदि रणेर भितर * अन्य कोटि लइया आइल धनुःशर
हीरा बाण जीरा बाण अति खर धार * मारये इन्द्रेर बाण कौशल्या-कुमार
क्षुरूपा सुरूपा बाण पशुपत आर * राक्षस उपरे पड़े बलि मार-मार
गलाते लम्बित मणिमाणिक्येर काठि * रामबाणे पड़िल राक्षस दुइ कोटि
श्रीरामेरे आशीर्वाद करे मुनिगण * सबे बले जयी होक श्रीराम लक्ष्मण
ब्राह्मणेर आशीषे ना हय हेन नाई * मार-मार करिया जुझेन दुइ भाई

---

1 इशारे से।

विप्र-वचन सत, कतहुँ न भगा ※ युगुल बन्धु खेलत रणरंगा
वरुण, पवन, कालानल पासा ※ अटल राम सर विविध प्रकासा
मायासर गंधर्व विशेखा ※ निज दल रिपुन राममय देखा
करहिं परस्पर मारामारी ※ सुरगन निरखि मोद मन भारी
डोलत धरा राम सर-घाता ※ तीन कोटि निसिचरन निपाता
सर तीखे तकि राम-सरीरा ※ मारहिं यातुधान[1] बलबीरा
बरसत सतत[2] दानवी सायक ※ अनुज सहित विचलित रघुनायक
जर्जर भयेउ गात-रघुबीरा ※ रुधिर-लालरी श्याम शरीरा
'दनुज-पराभव' 'जय रघुनन्दन'[3] ※ भाषत सुर-भूसुर जगवन्दन
स्वस्तिवचन-द्विज, बल अति प्रेरा ※ भिरे कुअँर रन जूझ घनेरा
खचित कान प्रभु बान चलावा ※ पावस घन जिमि झरी लगावा

अर्द्धचन्द्र सायक कठिन, कौतुक बरनि न जाय।
हनेउ प्रमुख दुइ सुभट रन, सोइ सर राम चलाय ॥१३१॥

दोउ भट प्रमुख निरखि रनपाता ※ कुपित मरीच ताड़का-ताता

वरुणास्त्र पाश वायुवाण कालानल ※ एडिलेन बहु राम समरे अटल
मारिलेन श्रीराम गन्धर्व्व नामे शर ※ राममय देखिल सकल निशाचर
आपना आपनि सब काटाकाटि करे ※ सकल देवता देखि हासये अन्तरे
श्रीराम करेन युद्ध काँपाइया माटि ※ राम वाणे पड़िल राक्षस तिन कोटि
तिन कोटि पड़े यदि रणेर भितर ※ रामेर उपरे मारे चोख-चोख शर
निरन्तर वाण मारे निशाचर गण ※ धरिवेन सहिष्णुता कत दुइजन
हइलेन जर्ज्जर वाणेते रघुवीर ※ शोणिते भासिया गेल श्यामल शरीर
आशीर्व्वाद करेन अमर द्विजचय ※ हउक रामेर जय राक्षसेर क्षय
ब्राह्मणेर अशीर्वादे वाड़िल ये वल ※ मार-मार करिया गेलेन रणस्थल
आकर्ण पूरिया वाण मारेन राघव ※ वरिषये वर्षार येमन मेघ सव
अर्द्धचन्द्र विशिखेर कि कहिव कथा ※ ताहाते काटेन राम दुइ पात्र माथा
दुइ पात्र पड़े यदि रणेर भितर ※ मारीच रुषिल तवे ताड़काकोडर

---

१ राक्षस। २ लगातार। ३ दानवों का नाश हो, राम की जय हो— नारा!

अलख[1] राम कित ? कहँ लघु भ्राता ? * तीन कोटि किन असुर निपाता ?
मम सर प्रान ताड़का त्यागे * मम कर निधन[2] असुर हतभागे
सुनि हरि-बैन मरीच रिसाना * रव[3] घनघोर, विषम रन ठाना
जिमि बैसाख धूमरित धूरी * राम देहँ सठ बानन पूरी
कातर राम न, वीर अपारा * बरसहिं सर जिमि जलधर धारा
मायामृग सिय हरन विचारी * देवन मीच[4]-मरीच निवारी[5]
विशिष बज्र मन सुमिर कृपाला * प्रस्तुत प्रगटि भयेउ तत्काला
प्रभु मोड़ कुलिशबान संधाना * हिय-मरीच तकि लाग निसाना
घायल चपकि बज्रसर संगा * उड़त यथा परहीन विहंगा
भरमत दिवस सात अतिकातर * धरनि लाग जहँ लंक, निसाचर
लंकवास — बहु हिंसाचारा * तजेसि अन्त लखि जगत असारा
बालक-रन मम हात निपाता * कुधन कुवृत्ति फसत किमि गाता
जटा शीश बल्कल परिधाना[6] * सयन-स्वपन रत रघुपति ध्याना

कोथा गेल राम कोथा गेल वा लक्ष्मण * तिन कोटि राक्षस मारिल कोनजन
श्रीराम बलेन ताड़कार हन्ता येइ * तिन कोटि राक्षस मारिल रणे सेइ
मारीच शुनिया ताहा कुपिल अन्तरे * घन-घन वाण मारे रामेर उपरे
रामेर उपरे वाण पडितेछे नाना * वैशाख मासेते येन पड़ये झञ्झना
महावीर रामचन्द्र ना हय कातर * शरवृष्टि करेन येमन जलधर
मारीचेरे रक्षा करे भावि देवगण * मारीच मरिले नहे सीतार हरण
वज्रवाण बलि राम करिल स्मरण * आसिया से वज्रवाण दिल दरशन
श्रीरामेर वज्रवाण वज्र रे हुडुके * निर्घात पड़िल गिया मारीचेर बुके
बुके वाण बाजिया नाटाई येन घुरे * डाना-भाङ्गा पाखी येन उड़े जाय धीरे
भ्रमिते-भ्रमिते जाय मारिच कातर * सात दिने उत्तरिल लङ्कार भितर
बहु जीव खाइया मारीच लङ्कावासी * विवेक संसार त्यजि हइल सन्यासी
कहे यदि मरिताम बालकेर रणे * के करित दस्युवृत्ति कि करित धने
शिरे जटा परिया बाकल परिधान * शयने स्वपने करे राममय ध्यान

---

१ छिपे हुए । २ नाश । ३ शब्द । ४ मृत्यु । ५ मना की । ६ वस्त्र ।

बटतर[1] तप मरीच मन लावा * इतर रामरट आन न भावा
मिटे विघिन, किय याग मुनीसा * अछत-दूब लै हरिहिं असीसा
यज्ञ-शेष फल-मूल जे, सबन कीन जलपान।
लखन सहित, निसि तपोवन, सोये कृपानिधान ॥१३२॥
जुरी सभा ऋषिगनन प्रभाता * चर्चहिं सकल राम कै बाता
सहज न मनुज, राम अवतारा! * दसरथ-पुन्य प्रगट तनु धारा
स्वत. यज्ञ-प्रभु[2] याग सम्हारी * अब न हेतु भय असुर-सुरारी
हरि जन्मे दानव-बध अर्थो * सोइ प्रन-जनक निबाह समर्थो
रामहिं कौशिक कहेउ सप्रीता * वत्स! विदेह स्वयंवर-सीता
सिय-पितु प्रन! शिवधनु जे भंगा * सुता समर्पित सोइ भट संगा
अगनित भूप निरंतर आई * सभय चाप लखि, गये बराई[3]
रघुवर तव बल विपुल प्रतापा * मन प्रतीत[4] टूटइ शिवचापा
मुनि-आयसु-उलघ अपकर्मा! * को समर्थ? पालन मम धर्मा

वटवृक्षतले तप कल आरम्भन * राम विना मारीचेर अन्य नाहि मन
हेथा यज्ञ मुनिर करिल समाधान * आशीष करेन रामे दिया दुर्व्वाधान
यज्ञ अवशेषे येइ फलमूल छिल * खाइजे से सब फल श्रीरामेरे दिल
से रात्रि वञ्चेन राम मुनिर आश्रमे * प्रभाते एकत्र हन मुनिगण क्रमे
सभाते बसिया युक्ति करे सर्व्वजन * सामान्य मनुष्य नहे राम नारायण
यिनि यज्ञेश्वर यज्ञ राखिलेन तिनि * दशरथ पुन्यफले अवतीर्ण इनि
राक्षसेर भय कर कि कारण आर * राक्षस बधार्थे हरि स्वयं अवतार
करिलेन येइ पण जनक भूपति * राम विना ताहाते ना हबे अन्ये कृति
विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवर * मिथिलाते हइवेक सीता स्वयम्बर
करेछे प्रतिज्ञा एइ जानकीर पिता * हरधनु भाङ्गिबे येइ तारे दिबे सीता
कत शत भूपति आइसे आर जाय * देखिया हरेर धनु सभये पलाय
देखिलाम ये तोमारे वीर बलवान * मने बुझि धनुक करिबे दुइखान
श्रीराम बलेन आज्ञा कर ये एखन * ताहा करि तव आज्ञा लङ्घे कोन जन

---

१ बरगद के तले। २ यज्ञ के स्वामी। ३ बचकर निकल गये। ४ विश्वास।

सुधा-सने सुनि वचन विनीता * चले विप्र, लै राम सप्रीता
धनुधर राम-लखन, चहुँ घेरी * टोली चली सन्त-मुनि केरी
अनुमति-राम गाधिसुत पाई * खबरि प्रथम चलि जनक जनाई
जनक सभा मुनि-आगम देखी * दिय आसन सन्मानि विशेखी
कौशिक कहेउ, जनक तव-धामा * आये लखन सहित श्रीरामा
दुर्जय दनुजि ताड़का मारी * जिन गौतम-तिय शाप निवारी
जासु दरस सद्गति गुह पावा * तिन सर असुर त्रिकोटि नसावा

सो० द्वादस वर्ष ललाम, अनुज लखन, अनुपम सुगुल ।
तव पाहुन[1] सोइ राम, अतुल वीर विक्रम प्रबल ॥१३३॥

राज समाज कथन-मुनि भावा * वर सिय जोग विरंचि पठावा
पुरजन सकल दरस हित धाये * धरि करबन्धु[2] अन्ध लौं आये
राम-लखन-दरसन अति नेहा * उमड़ेउ नगर, वाज तजि गेहा
सीस पञ्चलट केस सँवारे * मणि-माणिक-माला उर धारे

ए कथा कहेन यदि कौशल्या-नन्दन * रामेरे लइया यान सकल ब्राह्मण
हाते धनु करि यान श्रीराम लक्ष्मण * आगे पाछे चलिलेन सकल ब्राह्मण
विश्वामित्र बलिलेन शुन रघुवर * अग्रेते गमन करि जनकेर घर
ए कथा शुनिया राम बलेन ताँहारे * आगे गिया वार्ता देह जनक राजारे
विश्वामित्र देखिया उठिल सर्व्वजन * आइस बलिया दिल वसिते आसन
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन * तव घरे आइलेन श्रीराम-लक्ष्मण
ताड़कारे मारिलेन हेलाय ये जन * अहल्यार करिलेन शाप विमोचन
कैवर्त्तके तारिलेन सुकृपा दर्शने * तिन कोटि राक्षस मरिल यार बाणे
सेइ राम द्वादश वत्सर वयःक्रम * लक्ष्मण ताँहार भाई दुइ अनुपम
ए कथा शुनिया सबे राज सभाजन * कहिल सीतार वर आइल एखन
आइल समस्त लोक करिते दर्शन * बन्धु कर धरिया आइल अन्धजन
सबे बले देखिब लक्ष्मण आर राम * मिथिलार सब लोक छाड़े गृहकाम
उभ करि बान्धियाछे शिरे पञ्चझुटि * गलाते निर्मित मणि माणिक्येर काँटि

---

१ अतिथि । २ हाथी का सहारा लेकर ।

बटतर[1] तप मरीच मन लावा * इतर रामरट आन न भावा
मिटे बिघिन, किय याग मुनीसा * अछत-दूब लै हरिहिं असीसा
यज्ञ-शेष फल-मूल जे, सबन कीन जलपान।
लखन सहित, निसि तपोवन, सोये कृपानिधान ॥१३२॥
जुरी सभा ऋषिगनन प्रभाता * चर्चहिं सकल राम कै बाता
सहज न मनुज, राम अवतारा! * दसरथ-पुन्य प्रगट तनु धारा
स्वत: यज्ञ-प्रभु[2] याग सम्हारी * अब न हेतु भय असुर-सुरारी
हरि जन्मे दानव-बध अर्था * सोइ प्रन-जनक निबाह समर्था
रामहिं कौशिक कहेउ सप्रीता * बत्स! विदेह स्वयंवर-सीता
सिय-पितु प्रन! शिवधनु जे भगा * सुता समर्पित सोइ भट संगा
अगनित भूप निरंतर आई * सभय चाप लखि, गये बराई[3]
रघुवर तब बल विपुल प्रतापा * मन प्रतीत[4] टूटइ शिवचापा
मुनि-आयसु-उलघ अपकर्मा! * को समर्थ? पालन मम धर्मा

वटवृक्षतले तप करे आरम्भन * राम विना मारीचेर अन्य नाहि मन
हेथा यज्ञ मुनिर करिल समाधान * आशीष करेन रामे दिया दुर्व्वाधान
यज्ञ अवशेषे येइ फलमूल छिल * खाइते से सब फल श्रीरामेरे दिल
से रात्रि वञ्चेन राम मुनिर आश्रमे * प्रभाते एकत्र हन मुनिगण क्रमे
सभाते बसिया युक्ति करे सर्व्वजन * सामान्य मनुष्य नहे राम नारायण
यिनि यज्ञेश्वर यज्ञ राखिलेन तिनि * दशरथ पुन्यफले अवतीर्ण इनि
राक्षसेर भय कर कि कारण आर * राक्षस बधार्थे हरि स्वयं अवतार
करिलेन येइ पण जनक भूपति * राम बिना ताहाते ना हबे अन्ये कृति
विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवर * मिथिलाते हइबेक सीता स्वयम्बर
करेछे प्रतिज्ञा एइ जानकीर पिता * हरधनु भाङ्गिबे येइ तारे दिबे सीता
कत शत भूपति आइसे आर जाय * देखिया हरेर धनु सभये पलाय
देखिलाम ये तोमारे वीर बलवान * मने बुझि धनुक करिबे दुइखान
श्रीराम बलेन आज्ञा कर ये एखन * ताहा करि तव आज्ञा लङ्घे कोन जन

---

१ बरगद के तले। २ यज्ञ के स्वामी। ३ बचकर निकल गये। ४ विश्वास।

सुधा-मने सुनि वचन विनीता * चले विप्र, लै राम सप्रीता
धनुधर राम-लखन, चहुँ घेरी * टोली चली सन्त-मुनि केरी
अनुमति-राम गाधिसुत पाई * खबरि प्रथम चलि जनक जनाई
जनक, सभा मुनि-आगम देखी * दिय आसन सन्मानि विशेखी
कौशिक कहेउ, जनक तव-धामा * आये लखन सहित श्रीरामा
दुर्जय दनुजि ताड़का मारी * जिन गौतम-तिय शाप निवारी
जासु दरस सद्गति गुह पावा * तिन सर असुर त्रिकोटि नसावा

सो० द्वादस वर्ष ललाम, अनुज लखन, अनुपम युगुल।
तव पाहुन[1] सोइ राम, अतुल वीर विक्रम प्रबल ॥१३३॥

राज समाज कथन-मुनि भावा * वर सिय जोग विरंचि पठावा
पुरजन सकल दरस हित धाये * धरि करबन्धु[2] अन्ध लौं आये
राम-लखन-दरसन अति नेहा * उमडेउ नगर, काज तजि गेहा
सीस पञ्चलट केस सँवारे * मणि-माणिक-माला उर धारे

ए कथा कहेन यदि कौशल्या-नन्दन * सामेरे लइया यान सकल ब्राह्मण
हाते धनु करि यान श्रीराम लक्ष्मण * आगे पाछे चलिलेन सकल ब्राह्मण
विश्वामित्र बलिलेन शुन रघुवर * अग्रेते गमन करि जनकेर घर
ए कथा शुनिया राम बलेन ताँहारे * आगे गिया वार्ता देह जनक राजारे
विश्वामित्र देखिया उठिल सर्व्वजन * आइस बलिया दिल बसिते आसन
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन * तव घरे आइलेन श्रीराम-लक्ष्मण
ताड़काऱे मारिलेन हेलाय ये जन * अहल्यार करिलेन शाप विमोचन
कैवर्त्तके तारिलेन सुकृपा दर्शने * तिन कोटि राक्षस मरिल यार बाणे
सेइ राम द्वादश वत्सर वयःक्रम * लक्ष्मण ताँहार भाई दुइ अनुपम
ए कथा शुनिया सबे राज सभाजन * कहिल सीतार वर आइल एखन
आइल समस्त लोक करिते दर्शन * बन्धु कर धरिया आइल अन्धजन
सबे बले देखिब लक्ष्मण आर राम * मिथिलार सब लोक छाड़े गृहकाम
उभ करि बान्धियाछे शिरे पञ्चझुटि * गलाते निर्मित मणि माणिक्येर काँटि

1 अतिथि। 2 साथी का सहारा लेकर।

बटतर[1] तप मरीच मन लावा * इतर रामरट आन न भावा
मिटे बिघिन, किय याग मुनीसा * अछत-दूब लै हरिहिं असीसा
यज्ञ-शेष फल-मूल जे, सबन कीन जलपान।
लखन सहित, निसि तपोवन, सोये कृपानिधान ॥१३२॥
जुरी सभा ऋषिगनन प्रभाता * चर्चहिं सकल राम कै बाता
सहज न मनुज, राम अवतारा! * दसरथ-पुन्य प्रगट तनु धारा
स्वत: यज्ञ-प्रभु[2] याग सम्हारी * अब न हेतु भय असुर-सुरारी
हरि जन्मे दानव-बध अर्था * सोइ प्रन-जनक निबाह समर्था
रामहिं कौशिक कहेउ सप्रीता * वत्स ! विदेह स्वयंवर-सीता
सिय-पितु प्रन ! शिवधनु जे भगा * सुता समर्पित सोइ भट संगा
अगनित भूप निरंतर आई * समय चाप लखि, गये बराई[3]
रघुवर तव बल विपुल प्रतापा * मन प्रतीत[4] टूटइ शिवचापा
मुनि-आयसु-उलघ अपकर्मा ! * को समर्थ ? पालन मम धर्मा

वटवृक्षतले तप कल आरम्भन * राम विना मारीचेर अन्य नाहि मन
हेथा यज्ञ मुनिर करिल समाधान * आशीष करेन रामे दिया दुर्व्वाधान
यज्ञ अवशेषे येइ फलमूल छिल * खाइते से सब फल श्रीरामेरे दिल
से रात्रि वञ्चेन राम मुनिर आश्रमे * प्रभाते एकत्र हन मुनिगण क्रमे
सभाते वसिया युक्ति करे सर्व्वजन * सामान्य मनुष्य नहे राम नारायण
यिनि यज्ञेश्वर यज्ञ राखिलेन तिनि * दशरथ पुन्यफले अवतीर्ण इनि
राक्षसेर भय कर कि कारण आर * राक्षस वधार्थे हरि स्वयं अवतार
करिलेन येइ पण जनक भूपति * राम विना ताहाते ना हवे अन्ये कृति
विश्वामित्र वलेन शुनह रघुवर * मिथिलाते हइवेक सीता स्वयम्वर
करेछे प्रतिज्ञा एइ जानकीर पिता * हरधनु भाङ्गिवे येइ तारे दिवे सीता
कत शत भूपति आइसे आर जाय * देखिया हरेर धनु सभये पलाय
देखिलाम ये तोमारे वीर वलवान * मने बुझि धनुक करिवे दुइखान
श्रीराम वलेन आज्ञा कर ये एखन * ताहा करि तव आज्ञा लङ्घे कोन जन

---

१ बरगद के तले। २ यज्ञ के स्वामी। ३ बचकर निकल गये। ४ विश्वास।

सुधा-सने सुनि वचन विनीता * चले विप्र, लै राम सप्रीता
धनुधर राम-लखन, चहुँ घेरी * टोली चली सन्त-मुनि केरी
अनुमति-राम गाधिसुत पाई * खबरि प्रथम चलि जनक जनाई
जनक, सभा मुनि-आगम देखी * दिय आसन सन्मानि विसेखी
कौशिक कहेउ, जनक तव-धामा * आये लखन सहित श्रीरामा
दुर्जय दनुजि ताडुका मारी * जिन गौतम-तिय शाप निवारी
जासु दरस सद्‌गति गुह पावा * तिन सर असुर त्रिकोटि नसावा

सो० द्वादस वर्ष ललाम, अनुज लखन, अनुपम युगुल।
तव पाहुन सोइ राम, अतुल वीर विक्रम प्रबल ॥१३३॥

राज समाज कथन-सुनि भावा * वर सिय जोग विरंचि पठावा
पुरजन सकल दरस हित धाये * धरि करबन्धु[2] अन्ध लौं आये
राम-लखन-दरसन अति नेहा * उमड़ेउ नगर, बाज तजि गेहा
सीस पञ्चलट केस सँवारे * मणि-माणिक-माला उर धारे

ए कथा कहेन यदि कौशल्या-नन्दन * रामेरे लइया यान सकल ब्राह्मण
हाते धनु करि यान श्रीराम लक्ष्मण * आगे पाछे चलिलेन सकल ब्राह्मण
विश्वामित्र बलिलेन शुन रघुवर * अग्रेते गमन करि जनकेर घर
ए कथा शुनिया राम बलेन तोँहारे * आगे गिया वार्ता देह जनक राजारे
विश्वामित्र देखिया उठिल सर्व्वजन * आइस बलिया दिल बसिते आसन
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन * तव घरे आइलेन श्रीराम-लक्ष्मण
ताड़कारे मारिलेन हेलाय ये जन * अहल्यार करिलेन शाप विमोचन
कैवर्त्तके तारिलेन सुकृपा दर्शने * तिन कोटि राक्षस मरिल यार बाणे
सेइ राम द्वादश वत्सर वय:क्रम * लक्ष्मण तोहार भाई दुइ अनुपम
ए कथा शुनिया सबे राज सभाजन * कहिल सीतार वर आइल एखन
आइल समस्त लोक करिते दर्शन * बन्धु कर धरिया आइल अन्धजन
सबे बले देखिब लक्ष्मण आर राम * मिथिलार सब लोक छाड़ि गृहकाम
उभ करि बान्धियाछे शिरे पञ्चझुटि * गलाते निर्मित मणि माणिक्येर कोटि

---

१ अतिथि। २ साथी का सहारा लेकर।

मुनि, अनुसरत राम नरनाहा ※ लखि विदेहपति अमित उछाहा
सोचत मनहिं, सबन मन्मानी ※ सियवर विधि पठयेउ अब जानी
मुनि-आदेस, लखन-रघुराई ※ रहे जनक ढिग सीस नवाई
तिन मृदुबैन मोद अधिकाई ※ पुलकि भूप दोउ उर लपिटाई
योगी जनक! ध्यान सब भासा ※ जगन्नाथ छिति[1] स्वयं प्रकासा
दुर्जय शिवधनु जित आसीना ※ गमन स्वयंवर-थल नृप कीना
घोष कुतूहल प्रन दोहराई ※ सभा-सदस्य! सुनहु मन लाई
जो समर्थ शंकरधनु भंगा ※ सिया समर्पन सोइ भट संगा
कमलनयन, सुनि बचन-महीपा ※ गवने प्रभु शिव-चाप समीपा
सखिन सहित सिय चढ़ी अटारी ※ पूछत सोइ छन, कहु अँखियारी[2]!
लखन, सजनि को? कहँ सखि रामा? ※ सियहिं सकेत[3] बतावइँ भामा
श्याम दूबदल छबि रघुनाथा ※ निरखि, सुरन सिय नावइ माथा

विश्वामित्र लइया यान जनकेर घरे ※ अनुब्रजि रामेरे लइल समादरे
उल्लासित कहेन जनक नृपवर ※ आइल सीतार वर एत दिन पर
कौशिक बलेन शुन श्रीराम-लक्ष्मण ※ जनकेरे प्रणाम करह दुइजन
गुरुवाक्य अनुसारे श्रीराम-लक्ष्मण ※ करिलेन राजा के उभये सम्भाषण
आलिङ्गन दिलेन जनक दोंहाकारे ※ भासिलेन तखन आनन्द पारावारे
महायोगी जनक जानेन अभिप्राय ※ गोलोक छाड़िया हरि देखि मिथिलाय
धूर्ज्जटि दुर्ज्जय धनु आछे येइ खाने ※ सभा सह गेल सेई स्वयम्वर स्थाने
हेनकाले जनक बलेन कुतूहले ※ सभाय बसिया कथा शुनेन सकले
ये जन शिवेर धनु भाङ्गिबारे पारे ※ सीता नामे कन्या आमि समर्पिब तारे
ए कथा शुनिया राम कमल-लोचन ※ धनुकेर निकटेते करेन गमन
हेनकाले सीता देवी सह सखीगण ※ अट्टालिका परे उठि करे निरीक्षण
जानकी बलेन सखी करि निवेदन ※ कोनजन राम वा लक्ष्मण कोनजन
सीतार देखाय सखीगण तुलि हात ※ दूर्व्वादलश्याम ओइ राम रघुनाथ

---

१ पृथ्वी पर। २ सुलोचनी। ३ इशारे से।

सो० नलिनिविलोचन राम, पुरनहँ वाञ्छित देवगन ।
कतहुँ विरञ्चि न वाम, पुनि-पुनि सुमिरत जानकी ॥१३४॥

देवताओं के निकट श्री सीताजी का वर-याचना

छं० कर जोरि युग, मन विकल, आतुर, सुरन ध्यावति जानकी ।
करि दाय, पुरवहँ आस, गुणनिधि राम रूपनिधान की ॥
वरुन, सुरपति, काल, सब दिगपाल, गणपति, अग्नि जे ।
ते भूतनाथ सनाथ करि वर देहिं भगवति गौरिजे ॥
धरन-पालन, करनि-मंगल, जननि-जग, माता, शिवा ।
वध-चण्ड-मुण्ड विलोकि निर्भय भजत सुरगन निशि-दिवा ॥
मातु-पद प्रणिपात, रघुपति बिन न गति, जीवन वृथा ।
पति मिलैं रघुकुलचन्द, आनँददायिनी मेटउ व्यथा ॥

रामेरे देखिया सीता भाविलेन मने ※ पाछे से विरिञ्चि करे वञ्चित ए धने
देवगणे प्रार्थना करेन सीता मने ※ स्वामी करि देह राम कमललोचने

देवगणेर निकटे सीता देवीर वर-प्रर्थना

कृताञ्जलि सुचिन्तिता, प्रार्थना करेन सीता, शुनह सकल देवगण ।
यदि राम गुणनिधि, स्वामी करि देह विधि, तवे हय कामना पूरण ॥
शुनह देव हुताशन, आर शुन गजानन, शुनह आमार परिहार ।
महेन्द्र, वरुण, काल, शुन सवे दिक्‌पाल, महादेव करह निस्तार ॥
कात्यायनी भगवती, कर जोड़े करे स्तुति, पति देह राम गुणमणि ।
तुमि शिव, तुमि धाता, सकल देवेर माता, वेदमाता हरेर घरणी ॥
चण्ड, मुण्ड आदि यत, वधिले से कत शत, देवगणे करिला निस्तार ।
श्रीरामेरे पति देह, घुचाओ मनेर मोह, राम विना गति नाहि आर ॥
कमठ-कठोर धनु, श्रीराम कमल तनु, केमने तुलिवे शरासन ।
कत शत वीरगणे, ना पारिल उत्तोलने, दारुण पितार एइ पण ॥
सीतार एमन मन, बुझिलेन देवगण, आकाशे हैल देववाणी ।
शुन गो जनकसुता, ना हइओ दुःखयुता, स्वामी तव राम गुणमणि ॥
फूलेर धनुक प्राय, हेलाय तुलिया ताय, भाङ्गिवेन कौशल्यानन्दन ।
देवतागणेर कथा, कभू ना हइबे वृथा, एइ कृत्तिवासेर वचन ॥

कुलिश कठिन धनु टरत न टारे * बल-प्रयोग अगनित भट हारे
कोमल कमल राम इत अंगा * पितु-प्रन दारुन, अहह प्रसगा !
सिय-ससपंज[1] सुरन अनुमानी * सुखद प्रबोधि कीन नभबानी
सुमन-सरिस सिवसारंग, सीता * सहज राम-कर भंग प्रतीता
तजहु सोक-भय, जे जगवन्दन * सोइ तव पति रघुपति रघुनन्दन

श्रीराम द्वारा शिवधनु भग और श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न का विवाह
तथा परशुराम का दर्प चूर्ण

धनुमंदिर धनु-धारन हेता * चले जबहिं प्रभु, नृपदल जेता
विस्मित, निरत[2] विविध अनुमाना * किमि समर्थ शिशु धनु-संधाना ?
कह सौमित्र, नाथ ! धरि चापा * मेटहु, सभा कुतूहल व्यापा
अनुज-विनय, मुनि-आयसु पाई * बिहँसि, पिनाक[3] साधि रघुराई
सभा विलोकि कहेउ, सुनु भाई ! * तोरत शिवधनु मन सकुचाई
पुनि प्रतंच धरि, सविनय हेरी * चहेउ कुअँर अनुमति मुनि केरी
भञ्जि चाप पुरवउ मनकामा * कौतुक सबन देखावउ रामा !

श्रीराम कर्त्तृक हरधनु-भग ओ श्रीराम-लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्नेर विवाह
ओ परशुरामेर दर्प चूर्ण

धनुकेर घरे राम गेलेन यखन * धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
यत राजा आछे तारा भाविल अन्तरे * देखिल केमने शिशु धनुभङ्ग करे
विस्मित हइया सबे करे निरीक्षण * धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय * घुचाओ धनुक धरि सबार विस्मय
श्रीराम बलेन शुन गाधिर नन्दन * आज्ञा कर करिब कि धनुक धारण
एतेक बलिया राम सहास्य वदने * धनुक धारण करे देखे सर्व्वजने
धनुके तुलिया राम बलेन लक्ष्मणे * भाङ्गिब शिवेर धनु भय हय मने
धनुके अर्पिया गुण बलेन मुनिरे * ताहा करि याहा आज्ञा करिबे आमारे
मुनि बलिलेन राम देखाओ कौतुक * मनोरथ पूर्ण कर भाङ्गिया धनुक

---

१ पशोपेश । २ लीन । ३ शिवधनुष ।

त्रण टंकार — विपुल कोदण्डा * तड़-तड़ निमिष, भयेउ दुइ खण्डा
सभा अचेत, कम्प त्रयलोका * इत विदेह निवरेउ[1] सब सोका
बाजन बजत, बजत सहनाई * चहुँ मिथिला आनन्द बधाई
सबन विदेह निमंत्रन दीन्हा * गर धरि बसन समादर कीन्हा

द्विज-सुमंत्र[2]-गृह राम इत, द्विजतिय करत बखान ।
राममातु धनि ! जनक ढिग, उत मुनि[3] कीन्ह पयान ॥
मुनि-पद बन्दे जानकी, पूछत पुनि नरनाह ।
शुभ साइत अनुमति चहौं, रघुवर-सिया विवाह ॥१३४॥

नृप-प्रस्ताव पाय मुनि धाये * लखन सहित जहँ राम सुहाये
सुनहु तात ! मम मंगल हेतू * करि विवाह पुनि जाहु निकेतू
बहुत काल बीतेउ मुनि-चरनन * आकुल अवसि मातु-पितु-परिजन

आज्ञा पेये श्रीराम दिलेन गुणे टान * मड मड शब्दे धनु हैल दुइखान
सभार सकल लोक हाराइल ज्ञान * त्रिभुवन सघने हइल कम्पमान
हइलेन जनक भूपति हरषित * वाद्य बाजे मिथिला नगरे अगणित
गले वस्त्र दिया राजा अति समादरे * निमन्त्रण एके एके सबाकारे करे
सुमन्त्र ब्राह्मण रामे लये गेल घरे * सुमन्त्रेर ब्राह्मणी कौशल्या नाम धरे
कौशल्यार तुल्य केह नाहि भाग्यवती * मा मा बलिया यार डाकेन श्रीपति
सुमन्त्र मुनिर घरे राखिया रामेरे * विश्वामित्र गेलेन से जनकेर पुरे
सीतादेवी वन्दिलेन मुनिर चरन * आनन्दित हइलेन जनक यशोधन
जनक बलेन प्रभु कारि निवेदन * सीतार विवाह जन्य कर शुभ क्षण
ए कथा शुनिया मुनि गाधिर नन्दन * अमनि आइल यथा श्रीराम लक्ष्मण
मुनि बलिलेन राम एइ आमि चाइ * विवाह करिया घरे याह दुइ भाइ
श्रीराम कहेन प्रभु निवेदि तोमारे * आमा दोंहे लये चल अयोध्या-नगरे
बहुदिन आसियाछि तोमार सहित * विलम्ब हइले पिता हवेन चिन्तित

---

१ मिट गया । २ मिथिला का कोई सुमन्त्र ब्राह्मण । ३ विश्वामित्र ।

तासों अवध चलिय मुनिराइ * बात एक मन और समाई
जन्मे सकल अनुज सँग, ताकी[1] * तिन तजि किमि विवाह एकाकी[2]
सुता चारि जहँ, तहँ मन माहीं * चारिउ बंधु ब्याहि घर जाहीं
वचन राम सुनि उपजेउ त्रासा * मुनि-कपार जिमि टूट अकासा
सुनहु विदेह ! राम प्रतिकूला * बरनत दुसह तपोधन सूला
तजे अवध बीतेउ बहु काला * अवसि तहाँ पितु हाल बेहाला
अनुजन जनम लीन एक संगा * तिन तजि उचित न बरन-प्रसंगा
सुता चारि तहँ रचिय विवाहू * सुनि मुनि-वचन विकल नरनाहू
शतानन्द प्रोहित सोइ काला * दिय प्रबोध, थिर[3] होहु भुवाला
भ्रात कनिष्ठ कुशध्वज नामा * सुता युगुल गुण-रूप ललामा
दुहिता दुइ रूपसि तव भूपा * सुता चारि इमि अर्पि[4] अनूपा
करौ भूप ! जो रघुपति भावा * सुनि प्रमुदित मुनि हाल जनावा

चारि भाइ जन्म लइयाछि एक दिने * से सबार छाडि करि विवाह केमने
ए चारि भ्राताके येइ कन्या दिबे चारि * चारि भाइ विवाह करिब घरे तारि
एइ वाक्य नि:सरिल श्रीरामेर तुण्डे * आकाश भाङ्गिया पड़े कौशिकेर मुण्डे
दु:खित हइया मुनि गेलेन तखन * जनकेर निकटे दिलेन दरशन
जनक बलेन प्रभु करि निवेदन * सीतार विवाह दिन कर शुभक्षण
विश्वामित्र बलिलेन शुन नरपते * रामेर मनस्थ नहे विवाह करिते
कहिलेन बहुकाल छाडियाछि घर * विलम्ब हइले पिता हबेन कातर
ये चारि भायेरे चारि कन्या समर्पिबे * तार घरे रामचन्द्र विवाह करिबे
शुनिया भावेन राजा करि हेंट माथा * सीता विना कन्या नाइ आर पाब कोथा
एतेक भाविया राजा विषण्ण वदन * शतानन्द पुरोहित कहिछे तखन
केन राजा हइयाछ विचलित मन * तबे घरे चारि कन्या हइबे घटन
तोमार कनिष्ठ भाइ कुशध्वज नाम * तार दुइ कन्या आछे रूप गुणधाम
तोमार दुहिता दुइ परमा सुन्दरी * चारि भाये समर्पण कर कन्या चारि
श्रीरामेर ये वासना हबे सेइ मत * ताँहारे जानाओ गिया समाचार यत

---

१ देखकर। २ अकेले। ३ स्थिर। ४ अर्पण करके।

तात ! जनक-गृह कन्या चारी * रघुकुल चारि कुअँर अनुहारी[1]
मनचाही दसरथ-सुवन, मनभाई मिथिलेस ।
सुता चारि अर्पत, कुअँर ! अब न विघिन लवलेस ॥१२६॥
मुनिवर ! अबहुँ एटक[2] सुभकाजू * बन्धु न पितु, किमि मंगल-साजू ?
जो विदेह, मत, मुनि ! मन भावै * अवध मनुज चलि पितु लै आवै
विस्वामित्र जनक ढिग जाई * बरनेउ सकल कथन-रघुराई
पठवौ अवध तुरत कोउ पायक[3] * शुचि-उन्नत विचार रघुनायक
रोम-रोम नृप पुलकित अगा * मन-बच लहरति सुखद तरंगा
मुनिवर ! आन[4] न जोग लखाई * लावहु नृपति अवधपुर जाई
गाधितनय हिय अमित उछाहू * चले लेन जस[5] राम-विवाहू
सिद्धाश्रम — जहँ मुनिन समाजू * पूछत भेंटि कुतूहल काजू ?
अजय चाप त्रिपुरारि कठोरा * मुनी अवधसुत छिन महँ तोरा
सिय-कल्याण हेतु शिवसायक * स्वतः[6] टूट, बोले मुनिनायक

हरषित हैया मुनि गाधिर कोङर * वार्त्ता गिया देन तबे रामेर गोचर
शुन राम नाहि देखि इहार बाधक * चारि भाये चारि कन्या दिबेन जनक
राम बलिलेन प्रभु करि निवेदन * सब भाइ हैथा नाइ करिब केमन
इहाते बाधक आरो आछे मुनिवर * विवाह करिते नारि पितृ अगोचर
आमार विवाह दिते यदि आछे मन * अयोध्याते मनुष्य पाठाओ एकजन
एतेक शुनिया गेल गाधिर नन्दन * कहिलेन जनकेरे सब विवरण
शुनिया भावेन राजा भावे गद गद * वचन मनेर अगोचर ए सम्पद
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन * आनिबारे राजारे पाठाओ एकजन
राजा बलिलेन मुनि करि निवेदन * तोमा भिन्न के याइबे अयोध्या-भुवन
ए कथा शुनिया मुनि भाविलेन मने * घटक हइया याइ अयोध्या-भुवने
एइ यश आमार घुषिबे त्रिभुवने * विवाह दिलाम आमि श्रीराम लक्ष्मणे
एतेक भाविया मुनि करिल गमन * सिद्धाश्रमे प्रथमतः दिल दरशन
सुधाय सकल मुनि कि शुनि कौतुक * राम नाकि भाङ्गियाछे हरेर धनुक
मुनि कन करिबारे सीतार कल्याण * शिवधनु आपनि हइल दुइखान

---

१ अनुरूप । २ रुकावट । ३ दूत-प्यादा । ४ दूसरा । ५ यश । ६ अपने आप ।

सिद्धाश्रम तजि मुनि पग धारा ※ कछुक काल भे सुरसरि पारा
मुनि पहुँचे जहँ गौतम नारी ※ शिला परसि पग रघुवर तारी
बहरि चले जहँ जन्म प्रभञ्जन ※ सो तजि पार कीन ताड़कवन
चलि आये पुनि सरयू तीरा ※ परसेउ गाधि-तनय शुचि नीरा
कहत सुदूर अवध-पुरवासी ※ दरसत सोइ तपसी बनवासी
राम-लखन गमने जिन साथा ※ सो किमि आजु बिना रघुनाथा

खबरि दीन कोउ दसरथहि, आवत मुनि बिन राम।
वज्रपात, आकुल, रुदन, कहाँ राम घनश्याम ॥१३७॥

कस अकेल ? कित मम सुत प्राना ? ※ आजु अन्धमुनि-वचन प्रमाना
राम-लखन बिन — जल बिन मीना ※ दै निधि दीनहि, विधि हरि लीना
रच्छन याग, असुर-उत्पाता ※ मेटन हेतु, लीन मम ताता
ते अलोप[1], टूटी सब आसा ※ हरेउ प्रान, मुनि सर्व विनासा

विश्वामित्र सिद्धाश्रम पश्चात् करिया ※ गङ्गार कूलेते मुनि उत्तरिल गिया
गंगापार हइया चलिलेन मुनिवर ※ अहल्या येखाने छिल हइया पाथर
अहल्यार तपोवन पश्चात् करिया ※ पवनेर जन्मभूमि उत्तरिल गिया
पवनेर जन्मभूमि राखि कत दूर ※ ताड़कार वने यान पाछे सरयूर
करिलेन सरयूर नीर परशन ※ दूरेते थाकिया देखे अयोध्यार जन
आसिया ये मुनिराज रामे लये गेल ※ एका मुनि आसितेछे राम ना आइल
ए कथा कहिल गिया दशरथ प्रति ※ वज्रपात सम ज्ञान करेन भूपति
कान्दिया बाहिरे आसि अजेर नन्दन ※ रामे ना देखिया कहे कातर वचन
एका ये आइले मुनि राम मोर कोथा ※ हइल प्रत्यक्ष आजि अन्धकेर कथा
कोथाराम कोथाबालक्ष्मण गुणनिधि ※ दरिद्रेर दिया निधि हरिलेन विधि
यज्ञ रक्षा हेतु ल'ये गेला निजबास ※ छलेते करिले मुनि मम सर्व्वनाश
राक्षस बधेर हेतु लइया कुमार ※ के जाने बधिबे मुनि पराण आमार

---

१ गायब।

शावक बिन बाघिन विकराला * विकल रानि, तहँ गये भुवाला
अन्तःपुर अपार दुख आवा * अवध, प्रमाद नकल दिसि छावा
द्वादस वयस नवोढ[1] किशोरा * हतेउ कतहुँ वन निसिचर घोरा
बिखलत भूप, न गात सम्हारी * विश्वामित्र कुतूहल भारी
सुहृद, सचिव कित ? कहत भुवाला * गुरु वशिष्ठ आगम जोइ काला
कौशिक कहौ कुअँर केहि भाँती ? * राम-कुसल कहि जुड़वउ छाती
परेउ न भल-अनभल[2] कछु काना * कह मुनि, रुदन अतुल कस ठाना ?
कस न, गाधिसुत ! अचरज कारन ? * अलख राम किमि धीरज धारन !
ज्ञान, ध्यान, जीवन घनस्यामा * चहुँ तम[3] अवध-भुवन बिन रामा
लेहिं चरन-मुनि, भूप अधीरा * पूछत, किते लखन रघुबीरा ?
कहेउ गाधिसुत, सुनु नरनाथा ! * विक्रम-सुवन, विरद-रघुनाथा
निसचरि प्रबल ताड़का मारी * शाप-रहित किय गौतम नारी

वार्ता पेये आइल राजार यत राणी * डम्बुर हाराये येन कुकारे ना बेनी
कौशल्या सुमित्रा राणी हाहाकार करे * प्रमाद पड़िल आजि अयोध्या-नगरे
द्वादश वर्षेर राम तेर नाहि पुरे * हेन रामे वधिल कि वने निशाचरे
आकुल हइल राजा अजेर कुमार * विश्वामित्र भावलेन ए कि चमत्कार
राजारे बुझाये कत पात्र मित्रगण * हेनकाले आइलेन वशिष्ठ ब्राह्मण
वशिष्ठ बलेन कह गाधिर नन्दन * रामेर मंगल शुनि जुड़ाक जीवन
एइ कथा शुनिया कहेन तपोधन * भालमन्द ना शुनिया कान्द कि कारण
वशिष्ठ बलेन मुनि कह कि आश्चर्य * रामे ना देखिया कार मन हय धैर्य
रामध्यान रामज्ञान राम से जीवन * राम विना अन्धकार अयोध्या भुवन
लोटाये पड़ेन राजा मुनि पदतले * कोथाय लक्ष्मण कोथा राम एइ बले
विश्वामित्र बलेन शुनह यशोधन * पुत्रेर विक्रम कथा करह श्रवण
ताड़कारे मारिलेन कौशल्यानन्दन * अहल्या के करिलेन शापे विमोचन

---

१ नव-उम्र । २ भला-बुरा । ३ अंधकार ।

केवट कीन सनाथ, पुनि, दनुज कटक हनि राम।
पुरये मुनिगन-याग सुचि, पहुँचे मिथिला धाम ॥१३८॥
जहँ धनुभंग जनक प्रन ठाना * परसत[1] सोइ हारे नृप नाना
शिवधनु भंजि, राखि प्रन-भूपा * लहेउ दान सिय रमा-सरूपा
सुता चारि तहँ, सुत तव चारी * भूपति! चलिय बरात सँवारी
दसरथ सुनि मुद-मंगल-गाथा * पुनि-पुनि मुनिपद बंदहि माथा
सजी बरात अवध सजि आवा * लख-लख हय-गज-रथ चहुँ छावा
भरत-रिपुदमन आयसु पाई * सबन निमंत्रि, दीन पहुनाई
प्रथम चलेउ रथ मुनिन-समाजू * पुनि सुत युगुल सहित नरराजू
तौलौं कहति कौशिला रानी * जननि-स्वभाव सुधा सरसानी
राघव-तन किमि हारिद[2]-परसन * वर-सरूप सुत-छवि किमि दरसन?
लखन-मातु कह मंजुल बानी * अमित उछाह सुधारस-सानी
दीदी! लै रघुवर कर नामा * करहु सकल सुचि मंगल कामा
लख-लख हय-गज-रथ-पद यूथा * चली अनी चतुरंग वरूथा[3]

कैवर्त्तके करिलेन कृतार्थ श्रीराम * राक्षस मारिया पूर्ण करिलेन काम
जनक करियाछिल धनुर्भङ्ग पण * ताहाते हारिया गेल यत राजगण
शंकरेर धनुक करिया दुइखान * लक्ष्मीरूपा कन्या राम पाइलेन दान
चारि कन्या दिबेन जनक चारि भाये * चल महाराज शीघ्र दुइ पुत्र लये
ए कथा शुनिया राजा आनन्दे विह्वल * प्रणति करेन मुनिर चरण कमल
अयोध्याते तखन पड़िया गेल साड़ा * लक्षलक्ष हस्ती साजे लक्षलक्ष घोड़ा
नाना रूप रथ साजे अति सुशोभन * डाकिया आनिल राजा भरत शत्रुघ्न
त्वरा करि सबारे करिल निमन्त्रण * अयोध्यार लोक सब करिल साजन
अग्रे रथे चड़िलेन यतेक ब्राह्मण * चड़िलेन रथे राजा सह पुत्रगण
बलेन कौशल्या देवी सुमित्रा देवीरे * ना पाइ हरिद्रा दिते रामेर शरीरे
सुमित्रा बलेन दिदि केन भाव आर * रामेर नामेते करि मङ्गल आचार
लक्षलक्ष पदादिक चलिलेक सङ्गे * चक्रवर्ती चलिलेन सैन्य चतुरंगे

---

१ छूते ही। २ हल्दी लगाना—एक मांगलिक कार्य। ३ समूह।

बिरदभाट, बट्ट[1] वेदन गावा * उत विदेह रच रंग, सुहावा
विधि-मिथि रमा जनम सिय केरा * मिथिला सुख, धन, धाम घनेरा
मग, सुपेय घृत क्षीर तडागा * आतिथि-भाव धारि तन जागा
अतुल राशि पकवान मिठाई * चहुँ बरात हित, भूप सजाई

अवध-सैन सुखदेन मग,- ठौर-ठौर जनवास[2] ।
असन-बसन-आमोद बहु, सब विधि विविध सुपास[3] ॥१३६॥

रघुकुल-कटक लिये अजनन्दन * सरयू-सलिल परसि किय वन्दन
पुनि स्नान, अमित करि दाना * सुधा सरिस नृप किय जलपाना
सरिता उतरि अरण्य सोहावा * गाधि-सुवन इमि वचन सुनावा
जहाँ राम ताड़का विनासी * सोइ वन विकट लखौ, गुनरासी !
कस ताड़का दनुजि विकराला ! * लखिय, सोचि पग धरे भुआला
विकट वदन परतच्छ निहारी * कौतुक ! किमि मृदु राम पछारी[4] !
पवन जन्म जहँ, भूमि अनूपा * पुनि गौतम-तिय-उपवन; भूपा !

रायबार पड़े भाट वेद विप्रगण * मिथिलार एवे किछु शुन विवरण
सीतारूपे लक्ष्मी स्वयं तथाय जन्मिल * मिथिला नगर धने पूर्णित हइल
घृत दुग्धे जनक करिल सरोवर * स्थाने-स्थाने भाण्डार करिल मनोहर
चालराशिराशि सुमिष्टान्नकोंड़िकोंड़ि * स्थाने स्थाने राखे राजा लक्षलक्ष होंड़ि
हेथा सैन्यगण लये अजेर नन्दन * सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
सरयू नदीते राजा करि स्नान-दान * मिष्टान्न भोजन करे मिष्ट जलपान
त्वरिते सरयू नदी उत्तीर्ण हइया * ताड़कार वनेते प्रवेश करे गिया
कौशिक बलेन शुन अजेर नन्दन * एइ वने ताड़का हइल निपातन
शुनिया बलेन राजा अजेर नन्दन * ताड़का दोंरात्र प्रभु सेइ वा केमन
ताड़कार निकटे गेलेन दशरथ * देखेन पड़िया आछे आगुलिया पथ
ताड़का देखिया राजा भाविलेन मने * इहारे बालक राम मारिल केमने
ताड़कार वन राजा पश्चात् करिया * पवनेर जन्मभूमि देखिलेन गिया
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया * अहल्यार आश्रमेते उत्तरिल गिया

---

१ ब्राह्मण । २ बारात के टिके निवासगृह । ३ आराम । ४ पछाड़ा ।

पावन दरस हरत श्रम-पीरा * पहुँचे शुचि सुरसरि के तीरा
जासु तरनि उतरे रघुनाथा * भेंटेउ सोइ निषाद नरनाथा
अवध-कटक तरि[1] साजि उतारा * सिद्धाश्रम सुभ दरस[2] निहारा
वन-उपवन, मुनि ! लखे ललामा * कतक दूर अब मिथिला-धामा ?
गाधिसुवन कह, सुनहु नरेसा * कोस तीनि मारग अवसेसा
मुनि-तिय कहइँ पूर मन-कामा * नृप ! निकेत तव जन्मे रामा
चले बहोरि विदेह-समीपा * प्रजा-सैन युत, अटे[3] महीपा
बाजन विविध बजत मन मोहा * हास-हुलास सकल दिसि सोहा
कौतुक-अस्त्र, खेल, उल्लासा * दूत जनक संवाद प्रकासा

धाम जनक, सन्मानि बहु, भेंटि अवधपति लीन ।
समुचित शिष्टाचार पुनि, सविनय स्तुति कीन ॥१४०॥

सुत तव चारि, चारि मम बाला * लेहु दान, जो दया-भुआला
बिहँसि अवधपति जनक प्रबोधा * बनी बात, कित लेस[4] विरोधा ?

अहल्यार तपोवन पश्चात् करिया * गंगातीरे उपनीत हइलेन गिया
ये कैवर्त्त श्रीरामेर पार क'रे छिल * से राजार नाम शुनि नौका साजाइल
नौकाते हइल पार यत सैन्यगण * सिद्धाश्रम दर्शन करेन यशोधन
भूपति बलेन मुनि निवेदन करि * कत दूर आछे आर मिथिला-नगरी
विश्वामित्र बलेन शुनह नृपवर * आछे आर तिन क्रोश मिथिला-नगर
मुनिपत्नी सबे बले राजा पूर्णकाम * याँहार औरसे जन्म लइलेन राम
सिद्धाश्रम दशरथ पश्चात् करिया * मिथिलार सन्निकटे उत्तरिल गिया
आह्लादित प्रजा सब आर सैन्यगण * नानाजाति अस्त्र खेले बाजाय बाजन
दूत गिया वार्त्ता दिल जनक राजारे * अनुव्रजि लओ राजा अजेर कुमारे
रथ हैते नामिलेन अयोध्यार पति * करिलेन जनक आदरे बहु स्तुति
जनक बलेन राजा यदि कर दया * तव चारि पुत्रे देइ चारिटि तनया
दशरथ बलिलेन शुन हे जनक * सम्बन्ध हइल ठिक तबे कि बाधक

---

१ नाव पर । २ दृश्य । ३ पहुँचकर रुके । ४ अंश—जरा भी ।

जनक बंदि गवने निज धामा ※ दशरथ पठइ, धाम जहँ रामा
पितु-आगम लखि, आयसु पाई ※ गहे तात-चरनन लपिटाई
पितु प्रनाम किय लखन, वन्दना ※ भरत-रिपुदमन रघुपति चरना
भरतहिं लखन, लखन रिपुसूदन ※ पद[1]-अनुसार करहि पद-पूजन
मिलहिं सनेह परस्पर चारी ※ तन-मन भूप, मोद लखि भारी
कोमल-दल सुपास बहु भाँती ※ मिथिला, सकल प्रफुल्ल बराती
व्यञ्जन बहु पकवान मिठाई ※ परसइँ, खाइँ, छटा छिति छाई
सोइ अवसर वशिष्ठ, नृपगेहा ※ चलि भेंटे जहँ सभा विदेहा
उठि सन्मानि कीन मुनि-वन्दन ※ स्वागत, पाद्य, अर्घ्य अरु आसन
सिय-विवाह शुभ लगन विचारी ※ कहउ, तपोधन! मंगलकारी
नखत पुनर्वसु कर्कट कन्या ※ अनुपम लगन, महीप! अनन्या[2]
दंपति-सुख, जनि कतहुँ बिछोहा[3] ※ सुनि मुनि-वचन सबन मन मोहा

उभये हइल शिष्टाचार सम्भाषण ※ विदाय हइया राजा करेन गमन
येइ घरे वसिया आछेन रघुवीर ※ सेइ घरे चलिलेन दशरथ वीर
पितार आदेश पाइया हइया बाहिर ※ वन्दिलेन पितृ पदद्वय रघुवीर
लक्ष्मण वन्दिल गिया पितार चरण ※ रामेर चरण वन्दे भरत शत्रुघ्न
लक्ष्मण वन्दिल गिया भरते तखन ※ शत्रुघ्न आसिया वन्दे दोसर लक्ष्मण
चारि भ्राता परस्परे करे आलिंगन ※ सुखे पुलकित अंग अजेर नन्दन
बाटेते नामिल केह उतरे वा माठे ※ केह पाक करि स्नाय सरोवर घाटे
खाओखाओ लओलओ एइमात्र शुनि ※ अन्न व्यञ्जनेते पूर्ण हइल मेदिनी
गेलेन वशिष्ठ मुनि जनकेर घर ※ सभा करि वसियाछे जनक नृपवर
वशिष्ठे देखिया राजा करे अभ्यर्थन ※ पाद्य अर्घ्य दिल तार वसिते आसन
कहिते लागिल राजा जनक तखन ※ सीतार विवाह लग्न कर शुभक्षण
वशिष्ठ सभार मध्ये ज्योतिष मेलिल ※ पुनर्व्वसु कर्कटेते कन्या लग्न हैल
ताहाते विवाह विधि हइले घटन ※ स्त्री पुरुषे विच्छेद ना हय कदाचन

---

१ मर्याद— छोटाई-बड़ाई। २ बेजोड़। ३ बिछोह।

उतै सुरन सुरपुर मन छोहा[1] * जो न होय सिय राम-बिछोहा
तौ बनगमन न बध दसमाथा * देवन मिलि सोचत शचिनाथा[2]
लगन सुकर्कट टरइ जिमि, कीजिय जतन विचारि।
निरखि मयंक,[3] भरोस करि, बोले इमि असुरारि[4] ॥१४१॥
नर्तकि[5]-भेष जनकपुर जाई * रचहु रंग, शशि! छवि निखराई
सुध-बुध तजइँ नर्त सब देखी * बीतइ कर्कट लगन बिसेखी
इत वशिष्ठ सुभ-लगन विचारी * दसरथ-हृदय मोद अति भारी
अभरन विविध भूप बहु साजी * अमित भार फल बहुल बिराजी
खाँड, दूध, दधि, घृत-मधु, भारा * सेवक चले लदे तिन थारा
द्विजन सहित, अधिवास[6] विचारी * जनक सभा वशिष्ठ पग धारी
आसन अर्घ्य पाय सन्मानू * लगन चढ़न मुनि कीन विधानू
दूर्वा-धान मंगलाचारा * लगे होन, दोउ कुल अनुसारा
करइँ वेद-ध्वनि द्विज समुदायी * कनकासन सिय चौक सुहायी

सेइ लग्न करिल ये यत बन्धुजन * स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण
स्त्री पुरुषे विच्छेद ना हय कालान्तरे * केमने मारिबे तबे लकार ईश्वरे
करह मन्त्रणा एइ बलि सारोद्धार * लग्न भ्रष्ट कर गिया श्रीराम सीतार
नर्त्तकी हइया तबे याओ शशधर * नृत्य कर गिया तुमि जनकेर घर
तत्र नृत्य देखिले भुलिबे सर्व्वजन * अतीत हइबे तबे कर्कट लगन
शुभ लग्न करिया वशिष्ठ मुनिवर * वार्त्ता गिया दिलेन भूपतिर गोचर
आनन्दित हइलेन अजेर नन्दन * आयोजन करिलेन सर्व्व आभरण
भारे भारे दधि दुग्ध भारे भारे कला * भारे भारे क्षीर घृत शर्करा उज्ज्वला
सन्देशेर भार लये गेल भारिगण * अधिवास करिबारे चलेन ब्राह्मण
सभा करि ब'सेछेन जनक भूपति * सेखाने गेलेन वशिष्ठ महामति
द्रव्येर यतेक भार एड़िलेक गिया * वसेर वशिष्ठ कुशासन पातिया
घट संस्थापन करे येमन विधान * उपरेते आम्रशाखा नीचे दूर्व्वाधान
वेदध्वनि करिते लागिल ब्राह्मण * सीतारे आनिया दिल नाना आभरण

१ क्षोभ। २ इन्द्र। ३ चन्द्रमा। ४ इन्द्र। ५ नाचनेवाली। ६ हल्दी,तेल, उबटन आदि, प्रत्येक मांगलिक कार्य के पूर्व होनेवाले टेहले या रस्में।

भूषण, वसन, भाल छवि चन्दन * सुभ परिधान करावइँ परिजन
दै जलधार सुता तहँ लाये * खरचि द्रव्य बहु, जनक सोहाये
सिय-अधिवास, संपदा सारी * पाय विप्रगन चले सुखारी
पुनि-अधिवास-राम - आदेसू * पुलकि वशिष्ठ दीन अवधेसू
चारिउ कुअँर बिना उपवीता[1] * तिन अरंभ भए काज पुनीता
चौर, स्नान, गंध, कोपीना * मेखल, दण्ड, मंत्र, मुनि दीना
यहि विधि कुअँर चारि उपवीती * अमित दान दिय भूप सप्रीती

तिन अधिवास, समोद नृप, करहिं स्वकुल अनुरूप।
वरन विविध अभरन सजे, मंगल मूरति रूप ॥१४२॥

श्राद्ध नान्दीमुख नृप कीन्हा * अतुल दान पुनि विप्रन दीन्हा
जे ब्राह्मणी, साथ जे दासी * निरखि राम अति हृदय हुलासी
मायन तैल हरिद्रा उबटन * मगल गीत सहित किय सखियन
पुनि स्नान कलावा बन्धन * कुअँरन करन[2] सोह सुभ कंकन

बसिलेन सीतादेवी सुवर्णेर पाटे * वेदमन्त्रे दिल गन्ध सीतार ललाटे
चारिजने अधिवास करिल तखन * वस्त्र पराइल आर नाना आभरण
जलधारा दिया कन्या लइलेक घरे * जनक भूपति सब द्रव्य व्यय करे
अधिवास द्रव्य लैया चलिल ब्राह्मणे * श्रीरामेर अधिवास करे सर्व्वजने
वशिष्ठ बलेन दशरथे सम्बोधिया * चारि तनयेर कर अधिवास क्रिया
राजा बले शुनह वशिष्ठ तपोधन * अयज्ञोपवीत एइ चारिटी नन्दन
क्षौरकर्म्म करालेन चारिटि नन्दने * आर यज्ञोपवीत हइल चारि जने
रामचन्द्र बसिलेन बापेर निकटे * चन्दन दिलेन चारि पुत्रेर ललाटे
चारिजन अधिवास करिल राजन * वसन पराये दिल नाना आभरण
नान्दिमुख करिलेन येमन विधान * नान्दीमुख उपलक्ष्ये करिलेन दान
कौशल्या ब्राह्मणी आरयत दासी लैया * आनन्द करेन सबे रामेरे देखिया
हरिद्रा माखान चारि बरे कुतूहले * अंगेते पिठालि दिल सखीरा सकले
तोला जले स्नान कराइल चारि बरे * मंगलसूता बान्धिलेक ताँहादेर करे

---

१ यज्ञोपवीत। २ हाथों में।

निरखि चारि वर छबि एकसंगा * मनहु बिराजत चारि अनंगा
मुक्तावलि उर मंजुल सोहा * पाग ललाट अतुल मन मोहा
बाजूबंद मुद्रिका कंकन * कुण्डल कान अमित मनरञ्जन
बसन दिव्य आभरन सरीरा * भाइन सहित सोह रघुबीरा
सुभ विवाह छत्रिय-कुल रीती * सजैं दोल[1] कह भूप सप्रीती
सजे चारि चंदोल सोहावन * आगे कनक-कलश अति पावन
चौदिक सुबरन-झालरि परहीं * बिच गजमुक्ता झलमल करही
चवँर, निसान सुमंगलकारी * ठौर-ठौर गंगाजल-झारी[2]
चारि बरन चन्दोल सजीले * दसरथ-ठाठ अकथ रोबीले
अभिमत[3] अभरन बहु परिधाना[4] * धारि, चढ़े रथ, कर धनुबाना
मन हुलास, सजि चली बराता * चारन बिरद कीन विख्याता
नाचहिं नर्तक बाजन रोरा * ढाक, ढोल, ढफ, नभ अति सोरा

सो० बजे बयालिस साज, दोल अरोहन सुतन किय।
दगड़ दमामे बाज, बीना, बँसुरी माधुरी ॥१४३॥

मंगल करिया बसिलेन चारिजन * देखिया सकले भावे ए चारि मदन
बान्धिल अपूर्व पाग मस्तक मण्डले * मनोहर मुक्ताहार शोभे बक्षःस्थले
अगुले अंगुरी करे अंगद वलय * कर्णेते कुण्डल दिल शोभे अतिशय
दिव्य वस्त्र परिधान भाइ चारिजन * अपर अंगेते दिल नाना आभरण
क्षत्रिय विवाह करे चतुर्दोल परे * साजाइते चतुर्दोल कहे नृपवरे
चतुर्दोल साजाइल अति से रुपस * उपरे तुलिया दिल सुवर्ण कलस
चारि दिके दिल नाना सुवर्णेर धारा * झलमल करे गज मुकतार झारा
गङ्गाजल चामर दिलेक ठाँइ ठाँइ * चतुर्दोल साजाइल हेन आर नाइ
आपनार सुसाज करेन दशरथ * परिधान परिच्छद यत मनोमत
रथोपरि चड़िलेन हाते धनु.शर * शुभयात्रा करिलेन सानन्द अन्तर
भाटे रायबार पड़े नाचे नट गण * बाजना बाजाय कत ना जाय गणन
दामामा दगड़बाजे बियाल्लिश बाजना * चतुर्दोले आरोहण करे चारि जना

---

१ श्रीवर के लिये एक प्रकार की सवारी, पालकी। २ गंगाजली। ३ मनचाहे। ४ वस्त्र।

बजत बाजने पारी-पारी ※ कछु न सुनात कोलाहल भारी
कहुँ असि[1]-ढाल सुभट चमकावैं ※ तुरगसवार[2] कतक शत धावैं
कहुँ सूरमा लिये सर-चापा ※ मस्त! बरात मोद चहुँ व्यापा
नचत चन्द्र! उत जुरी समाजा ※ जनक-सभा रसरंग विराजा
सोइ अवसर कोसलपति आये ※ धाय जनक सन्मानि लेवाये
रेल-पेल दोउ दल अगवानी[3] ※ दर्सक भिरैं, कहैं कटुवानी
सोम-नर्त[4]— मन मुग्ध लोभाना ※ कब कस लगन? सबन विसराना
सोइ छन राम-लखन तहँ आये ※ शतानन्द इमि वचन सुनाये
'साधिय लगन', न केहु दिय काना ※ मोहित, प्रबल विरञ्चि-विधाना
बीती लगन, होस[5] जनि काहू ※ आये पुनि जहँ विहित विवाहू
कुअँर चारि मण्डप तर आये ※ द्विज-समाज प्रति सीस नवाये
चन्दन चौक राम बैठाई ※ बनितन कृत पैपुजी सोहाई
दूर्वाधान शीश श्रीरामा ※ चरन परसि दधि हुलसहिं बामा

ढाक ढोल बाजाइछे डम्प कोटि कोटि ※ चारि दिके उठिल वीणार झटपटि
कत ठाँइ बाजाइछे जोड़ा जोड़ा मानि ※ काँशि बाँशी यतबाजे नियम ना जानि
ढालि पाइक जाय खाँडार चिक्रिमिकि ※ कत शत अश्वारोही कत वा धनुकी
चन्द्रनृत्य करिछेन जनक सभाय ※ हेनकाले दशरथ गेलेन तथाय
ताँरे अनुब्रजिया लइलेन जनक ※ द्वारे ठेलाठेलि करे उभय कटक
प्रथमेते उभयेते हैल ठेलाठेलि ※ ठेलाठेलि हइते हइल गालागालि
चन्द्रनृत्य देखिते भूलिल सर्व्वजन ※ ताहे मग्न कोथा लग्न के करे गणन
आगे आइलेन राम पश्चात् लक्ष्मण ※ शतानन्द बले कन्या कर समर्पण
भाल मन्द केह कारो ना शुने वचन ※ अतीत हइल लग्न सबे विस्मरण
ल'ये गेल सबाकारे विवाहेर स्थले ※ चारि भाइ बसे छाया मण्डपेर तले
प्रणाम करेन सबे सकल ब्राह्मणे ※ वरण करिल रामे वसन चन्दने
नारीगण करिलेक वरण विधान ※ पाये दधि दिल आर शिरे दूर्व्वाधान
वरण करिया गेल यत सखीजन ※ दुइ पुरोहित करे कथोपकथन

---

१ तलवार। २ घोड़सवार। ३ पेशकारा। ४ चन्द्रमा का नाच। ५ होश—सुधबुध।

श्रीवर वरन कीन अनुरागी * चलीं बहोरि गेह रसपागी
शाखोच्चार घरी पुनि जानी * निज-निज उपरोहितन बखानी
शतानन्द किय विनय हुलासा * रविकुल करहु वशिष्ठ प्रकासा
रघुकुल-गुरु दीन्हेउ उतर, चन्द्रवंश विस्तारि।
कहहु प्रथम; सुनि तपोधन, बोले सभा निहारि ॥१४४॥

चन्द्रवंश-वर्णन

चन्द्रवंश कर दिव्य प्रकासू * कहउँ, श्रवन मंगलमय जासू
उदधि सुरासुर मंथन करनी * जासों प्रगट 'रमा' जगजननी
सोइ मंथन जग जनम 'सुधाकर' * भूतल 'चन्द्र' नाम छबि-आगर
'बुध' मतिमान चन्द्रसुत जानी * तासु 'पुरुरुवा' सुवन बखानी
पुनि 'पुरुकृष्ण' पुरुरुवानन्दन * 'शतावर्त्त' तिनकर जगबन्दन
'आर्यावर्त्त' तनय पुनि तासू * 'सेपदि' जनम महाशय जासू
'वाण' बहोरि 'रेत' सुत जाही * जगत-विदित 'ध्रुव' प्रगटत ताही
तिनके 'स्वर्ग', 'सर्व' सुत-स्वर्गा * कीन प्रकास चराचर वर्गा
सर्व-तनय 'हैहय' छबिरूपा * अंगज 'अर्जन' सुभट अनूपा

शतानन्द बलेन वशिष्ठ महाशय * सूर्य्यवंश कि प्रकार देह परिचय
वशिष्ठ बलेन मुनि हबे बोझाबुझि * कहो देखि तुमि चन्द्रवंशेर कुलजि

चन्द्रवंश-कथन

शतानन्द बले मुनि सभार भितर * शुन चन्द्रवंशेर विस्तार मुनिवर
देवासुर मन्थन करिल सिन्धु नीर * ताहे लक्ष्मी जगन्माता हइल बाहिर
सागर मन्थनेते जन्मिल शशधर * चन्द्र नाम हइल ताँहार मनोहर
हइल चन्द्रेर पुत्र बुध मतिमान * पुरूरवा नामे हैल ताँहार सन्तान
पुरूकृष्ण नामे हैल ताँहार कुमार * शतावर्त्त नामे पुत्र विदित संसार
आर्य्यावर्त्त नामे हैल ताँहार तनय * सेपदि नामेते ताँर पुत्र महाशय
वाण नामे पुत्र हैल जाने सर्व्वजन * रेतनामे ताँर पुत्र अति विचक्षण
ध्रुव नामे ताँर पुत्र विदित भूतले * स्वर्ग नामे ताँर पुत्र सर्व्वलोके बले
पुत्र स्वर्ग राजार से सर्व्व नाम धर * हैहय नामेते ताँर पुत्र मनोहर

चिरजीवी तिन सुत 'निमि' धीरा ※ मथेउ सबन मिलि तासु सरीरा
निमि-तन मथन, जनम 'मिथि' पावा ※ मिथिला जिन रमनीक बसावा
(जनक)'सीरध्वज', 'कुशध्वज'नन्दन ※ मिथि के प्रगट युगुल जगवंदन
प्रमुदि वशिष्ठ कही, मुनि ज्ञानी ! ※ सुनी चन्द्रकुल धन्य कहानी

सूर्यवंश-वर्णन

भानुवंश बरनउँ मनरंजन ※ जासु आदि कुलपुरुष 'निरञ्जन'
'शिव''विधि' 'हरि'सुविदिततिनरूपा ※ सुता 'कंदिनी' एक अनूपा
सो किय 'जरत्कारु' मुनि-अर्पन ※ जरत्कारु कंदिनी समर्पन
सो० तिन की सुता ललाम, 'भानु' नाम प्रगटी जगत ।
ऋषि 'जमदग्नि' सुधाम, मुनिवामा होइ, गई जहँ ॥१४५॥
तासु गेह मंगल अवतंसा ※ हरि स्वरूप प्रगटेउ एक अंसा
सोइ एक दिवस रेत-विधि पाई ※ जन्मेउ सुत 'मरीच' सुखदाई
'कश्यप' सुत-मरीच, जिन व्यापी ※ 'सूर्य' तासु अति प्रखर प्रतापी

हैहयेर नन्दन अर्जुन नाम धरे ※ निमि नामे ताँर पुत्र विदित अमरे
निमिर कीर्तिते व्याप्त सकल संसार ※ निमि नामे ताँहार ये हइल कुमार
सकले मिलिया तार मथिल शरीर ※ ताहाते जन्मिल पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ बसाइल एइ मिथिला-नगर ※ जनक कुशध्वज हैल ताँहार कोडर
वशिष्ठ बलेन शुनिलाम विवरण ※ आमि कथा कहि तबे ताहे देह मन

सूर्यवंश-कथन

आदि पुरुषेर नाम हैल निरञ्जन ※ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइल तनया एक जानि ※ सकले ताहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनि पुत्र नारद वीणापाणि ※ ताहाके विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सबे गीत गाय नारद बाजाय वीणा ※ ताहाते जन्मिल भानु नामे तार कन्या
ताहाके विवाह दिल जमदग्नि वरे ※ एक अंशे नारायण जन्मिल ताँर घरे
ब्रह्मार काछेते ताँर पडिलेक वीज ※ ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर पुत्र हैल नामेते कश्यप ※ ताँहार तनय सूर्य्य प्रचण्ड प्रताप

सूर्यवंश 'मनु' जग-विख्याता * तासु 'सुषेन' सूनु[1], सुखदाता
पुनि 'प्रसेन' छिति कीरति पाये * नृप 'युवनाश्व' तनय तिन जाये
'मान्धाता' पुनि तासु वंशधर * तासु भूप 'मुचकुन्द' कीर्तिकर
'धुन्धुमार' आँगन तिन सोहा * 'इला' जासु नन्दन मन मोहा
'शतावर्त्त' क्रम रविकुल आई * 'आर्यावर्त्त' जन्म सुभ पाई
'भरत' धरा चहुँ यश पुनि छावा * भारत नाम हेतु सोइ पावा
भरत-तनय 'इक्ष्वाकु' धनुर्धर * प्रोहित-पद वशिष्ठ लिय जाकर
पुनि सुमंत्र सारथि जिन स्यन्दन * 'भूधर' सोइ महीप कर नन्दन
भूधर-'खाण्ड', खाण्ड-सुत 'दण्डा' * पुरनारी-हारी बरबण्डा[2]
दण्ड-सुवन 'हारीत' बखाना * तिन 'हरिबीज' प्रबल जग जाना
तनय तासु 'हरिचन्द' प्रतापी * सत्यसंध महिमा जग व्यापी
कौशिक सकल दान जिन अर्पी * काया, काञ्चन हेत समर्पी

सूर्य्येर हइल पुत्र मनुनाम ताँर * मनुर नामेते सर्व्व व्यापिल ममार
मनुर हइल पुत्र सुषेण नामेते * प्रसेन ताँहार पुत्र विदित जगते
प्रसेनेर पुत्र युवनाश्व नाम धरे * राजा युवनाश्व हय अयोध्या-नगरे
युवनाश्व राजार कहिब किबा कथा * ताँहार जन्मिल पुत्र नामेते मान्धाता
मान्धातार पुत्र हैल मुचुकुन्द नाम * गुणवान धुन्धुमार ताँर पुत्र नाम
ताँहार हइल पुत्र इला नाम धरे * ताँर पुत्र शतावर्त्त अयोध्या-नगरे
आर्य्यावर्त्त नामे ताँर हइल नन्दन * भरत ताँहार पुत्र जाने सर्व्वजन
भरत राजार आर कि कब आख्यान * याँर नामे पृथिवीर भारत पुराण
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति * वशिष्ठ पुरोधा याँर सुमन्त्र सारथि
ताँहार भूधर नामे हइल नन्दन * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अयोध्या-भूषण
हइल खाण्डेर बेटा दण्ड नाम धरे * से प्रजार कामिनी के बलात्कार करे
ताँर पुत्र हइल हारीत नाम धरे * हरिबीज ताँर पुत्र विदित संसारे
हरिबीज राज्य करे परम आनन्द * हइल ताँहार पुत्र नाम हरिश्चन्द्र
याँर दान लइलेन गाधिर नन्दन * बिकाइया आपनि ये शुधिला काञ्चन

---

१ पुत्र । २ उद्दण्ड ।

चिरशासन पूरन अभिलासा * तासु बंसधर सुत 'रुहिदासा'

'मृत्युञ्जय' पुनि आगमन, तिन 'त्रिशंकु' तपरूप ।
जिन जन्मे 'रुक्मांगद', सील-धर्म-यस-रूप ॥१४६॥

द्वादस वर्ष कीन उपवासा * धर्म सुवन तिन 'मरुत' प्रकासा
'अनारण्य' पुनि रविकुल-नाथा * तिन-बध कीन लक-दसमाथा
'बाहु' अनारण्यक-तन जाता * तिन शिवभक्त 'सगर' विख्याता
सगर-सूनु 'असमंज' धर्मधर * 'अंशुमान' तिन धर्म-धुरंधर
जिनके प्रगट 'भगीरथ' भूपा * जिन-तप सुरसरि बही अनूपा
सुर, नर, असुर— सृष्टि जिन तारी * भागीरथी भुवन विस्तारी
'वितपत' प्रगट बंसधर तासू * अवधरतन 'विवरन' सुत जासू
पुनि 'अमर्षि', जिन सुवन 'दिलीपा' * तिन-'रघु' प्रबल प्रचण्ड महीपा
साका जिन रघुवंस चलावा * जासु नाम, रविकुल जस पावा
सब विधि 'अज' पितु सम रघुनन्दन * तासु तनय प्रस्तुत जगवंदन

हरिश्चन्द्र राज्य करे पूर्ण अभिलाप * ताँहार हइल पुत्र नाम रुहिदास
से रुहिदासेर पुत्र नाम मृत्युञ्जय * त्रिशङ्कु ताँहार पुत्र यिनि तपोमय
ताँर पुत्र रुक्माङ्गद अयोध्या-निवासी * द्वादशे वत्सर काल करे एकादशी
रुक्माङ्गद जन्माइल धार्म्मिक तनय * ताँर पुत्र हइल मरुत महाशय
अनारण्य ताँर बेटा जाने सर्व्वजन * ताँहाके मारिया गेल लङ्कार रावण
हइल ताँहार पुत्र बाहु नृपवर * शिवभक्त पुत्र ताँर हइल सगर
असमञ्ज नामे ताँर हइल नन्दन * ताँर बेटा अंशुमान धर्म्मपरायण
अंशुमान राजा राज्य करिल कौतुके * मरिल ताँहार वंश आर नाहि थाके
भगीरथ ताँर बेटा अयोध्या-नगरे * गङ्गा आनि उद्धारिल देव दैत्य नरे
वितपत नामे ताँर हइल नन्दन * विवर्ण ताँहार पुत्र अयोध्या-भूषण
ताँहार हइल बेटा अमर्षि राजन * दिलीप ताँहार बेटा जाने सर्व्वजन
दिलीपेर सुत रघु बड़ बलवान * रघुवंश बलि यार वंशेते आख्यान
रघुर तनय अज पितार समान * ताँर पुत्र दशरथ देख विद्यमान

'दसरथ' शौर्य्य-वीर्य्य गुणधामा * धार्मिक लखौ सुवन 'श्रीरामा'
वंशावलि वशिष्ठ जस गाई * प्रोहित सहित सभा मन भाई
गर[1] धरि बसन, दसरथहिं पेखी * विनती करइँ विदेह विसेखी
कोशलपति तव सुत बलधारी * शरण, समर्पित तनया चारी
बोले दसरथ, सुनउ विदेहा * सुवन चारि अर्पित तव-नेहा
समधी उभय निरत[2]-संभाषन * सोइ छन बहुरी सकल सखीगन

विविधि भाँति लाईं सकल, भूषन बसन ललाम।
अस बानक[3] सिय साजिये, मुग्ध होयँ लखि राम ॥१४७॥

आमलकी[4] मलि सिर स्नाना * पुनि तन मोह दिव्य परिधाना
रुचि-रुचि आलिन केस सँवारी * लटन लसी वेणी मनहारी
बिन्दी कुंकुम भाल सोहाई * जिमि नभ, प्रभा-बालरवि छाई
मुक्ता सहित सोह नकबेसर * तन सुवास शुचि सलिल सकेसर
चञ्चल नयन सुकज्जल धारी * लोचन लचत मनोज निहारी
झिलमिल हार कण्ठ अति शोभा * उर कञ्चुकी जरी[5] मन लोभा

दशरथ राजा शौर्य्यवीर्य्य गुणधाम * तॉर ज्येष्ठ पुत्र एइ धार्म्मिक श्रीराम
एतेक वशिष्ठ मुनि बलिल सबाके * शुनि शतानन्द मुनि हात दिल नाके
गले वस्त्र दिया बले जनक राजन * तव पुत्रे कन्या दिया लइनु शरण
दशरथ बलिलेन जनक राजारे * शरण लइनु दिया ए चारि कुमारे
दुइ राजा उठि तबे कैल सम्भाषण * कन्या आन आन बले यत बन्धुगण
हेन वेश भूषण पराय सखीगण * याहाते मोहित हय श्रीरामेर मन
सखी देय सीतार मस्तके आमलकी * तोलाजले स्नान कराइल चन्द्रमुखी
चिरुणीते केश आँचड़िया सखीगण * चूल बान्धि पराइल अङ्गे आभरण
कपाले तिलक दिल निर्म्मल सिन्दूर * बालसूर्य्य सम तेज देखिते प्रचुर
नाकेते वेसर दिला मुक्ता सहकारे * पाटेर आछड़ा दिल सकल शरीरे
चञ्चल नयने किवा कज्जलेर रेखा * कामेर कामना येन गुणे जाय देखा
गलाय ताहार दिल हार झिलिमिलि * बुके पराइया दिल सोनार कॉचलि

---

१ गले मे पट लपेटकर— विनय सूचक। २ लीन, तन्मय। ३ सजधज। ४ आँवला।
५ जरी के काम वाली।

करनफूल कनकावलि न्यारी ※ भुज भुजबन्द छटा अति प्यारी
दोउ कर चूरी शंख विराजी ※ तापर कञ्चन कंकन साजी
पग-अँगुरिन नूपुर बजनारे ※ प्रचुर वसन-भूषन छवि धारे
कनकचौक छवि जुडवति छाती ※ चहुँ दिक् दीप्ति जोति-अवहाती[1]
दुहितन सविधि सहचरिन साजी ※ मण्डप-तर पुनि लाइ विराजी
पुष्पाञ्जलि दै सिय-कर जोरी ※ राम सहित सत भाँवरि फेरी
अवसर, ओट भईं जब सखियाँ ※ मिलीं राम-सिय सकुचति अँखियाँ
सलिल-धार दै, राम लेवाई ※ चलीं, कछुक पुनि सिय लै जाई
राखिन जहँ पटनई[2] अँधेरी ※ आली कहँ राम-तन हेरी
'षष्ठी'[3] कर पूजन मन लाई ※ करहु कुअँर इत मंगलदायी

घहुँ अँधेर, सिय-पग चहेउ, देन सखिन हरि-हाथ।
सिया-सकुच, चुरियन खनक, सजग भये रघुनाथ ॥१४८॥

सिय-कर मञ्जु राम गहि लीन्हा ※ सुमुखिन निरखि ठठोली कीन्हा

उपर हातेते दिल ताड स्वर्णमय ※ सुवर्णेर कर्णफुले शोभे कर्णद्वय
दुइ बाहु शङ्खे ते शोभित विलक्षण ※ शङ्खेर उपरे साजे सोनार कङ्कण
वसन पराये तारे सुन्दर प्रचुर ※ दुइ पाये दिल तार बाजन नूपुर
सुवर्ण आसने वसिलेन रूपवती ※ चारिदिके ज्वालि दिल सोहागेर बाति
चारि भगिनीते वेश करि विलक्षण ※ तखन मण्डपे गिया दिल दरशन
पुष्पाञ्जलि दिया तवे नमस्कार करे ※ प्रदक्षिण सातवार करिल रामेरे
अन्तःपट घुचाइल यत बन्धुगण ※ सीता रामे परस्पर हैल दरशन
जलधारा दिया तार कन्या दिल परे ※ शोयाइल जानकीरे अन्धकार घरे
वरेरे आनिते आज्ञा करे सखीगण ※ आसिया करुन राम षष्ठीर पूजन
हाते धरि आनाइल रामेरे तखन ※ सीतार हात धरि तोल बले सखीगण
तखन भावेन मने सीता ठाकुरानी ※ पाये हात देन पाछे राम गुणमणि
करिलेन सीता वाम हस्ते शङ्खध्वनि ※ हाते धरि सीतारे तोलेन रघुमणि

---

१ सौभाग्यवती। २ नीची पटी हुई अंधेरी कोठरी। ३ षष्ठी माता— कुलदेवी दुर्गा।

कोउ कह सियहिं लीन धरि हाथा * कोउ कह पग परसे रघुनाथा
षष्ठी-पूजन, सिय-पग-परसन * सो मसखरी[1] विफल भइ बनितन
वर-कन्या आगमन बहोरी * रोहिनि-चन्द्र गगन जिमि जोरी
सविधि सुभग संपन्न विवाहा * कन्यादान दीन नरनाहा
यौतुक[2] अमित दास अरु दासी * विविध सुपास दीन सुखरासी
दम्पति लिये, देत जलधारा * चलि रनिवास जनक पग धारा
रानी रुचि-रुचि पाक बनावा * दोउन परसि जेवनार करावा
सखियन सेज सुहाग सजाई * सिया सहित शोभित रघुराई
भरत निवास माण्डवी संगा * लखन-उर्मिला रत रसरंगा
श्रुतिकीरति-रिपुसूदन रमना * निज-निज वास प्रमोद निमग्ना
हास-हुलास सुमिथिला-धामा * बनिता करैं चुहल[3] तकि रामा
हँसि-हँसि करैं रञ्जना[4] एही * तुम न राम, सरवरि[5] बैदेही
रूपसि अतुल सिया, तुम कारे * विहँसि, राम बोलत ढिठियारे[6]
अब सहवास सुन्दरी पाई * धन्य होहु छवि सों छवि पाई

स्त्री लोकेरा परिहास करे छल पेये * केह बले हाते धरे केह बले पाये
पूर्व्वापर वर कन्या आइले दुजने * रोहिणीर सह चन्द्र येमन गगने
कन्यादान करे राजा विविध प्रकारे * पञ्च हरीतकी दिया परिहास करे
बहु दास दासी राजा दिल कन्या वरे * जलधारा दिया कन्या वर लैल घरे
राजराणी गिया परे करिल रन्धन * वरकन्या दुइ जने करिल भोजन
साजाय वासर घर यत सखीगण * राम सीता ताहाते वञ्चेन दुइजन
उर्मिला सहित सुखे वञ्चेन लक्ष्मण * माण्डवीर सहित भरत विचक्षण
श्रुतकीर्त्ति सहित आछेन शत्रुघ्न * एइरूपे बासरेते वञ्चे चारिजन
सानन्द हइल सब मिथिला भुवन * रामके देखिते जाय यत नारीगण
परिहास करे सबे रामेर सहित * तुमि ये जानकी पति ए नहे उचित
एइ कथा राम हे तोमाके बलि भाल * सीता बड़ सुन्दरी तुमि हे बड़ काल
हासिया बलेन राम सबार गोचर * सुन्दरीर सहवासे हइब सुन्दर

---

१ मजाक । २ दहेज । ३ छेड़खानी, मनोरंजन । ४ बातें बनाना । ५ समान । ६ ढीठ वचन ।

अति खिसियईं[1], सकल हतज्ञाना * मुग्ध, राम-पद तजि मन-आना
लखनलाल ढिग गईं पुनि, ठगीं चितइ तिन ओर।
अनुज न कहुँ घट बन्धु सों, अनुपम रूप किशोर ॥१४६॥
कोशल-कुअँर चारि छविखानी * लोचन करहिं सनाथ सयानी
निज अनुरूप कामिनिन पाई * रंग रसाल रमत सब भाई

परशुराम का दर्प-चूर्ण

भोर उदित रविकिरन-समाजा * सभा सपरिजन भूप बिराजा
बजत जनक-घर अनँद बधाई * किय वशिष्ठ याचना-बिदाई
कातर जनक, अतुल पितुमोहा * कहत, दुसह तत्काल बिछोहा[2]
वर्ष एक आयसु पहुनाई * रहैं जनकपुर सिय-रघुराई
बिहँसि प्रबोधि कहेउ अजनन्दन * प्रान छाडि तन तुमहि समर्पन
तौ अरदास[3] करिय स्वीकारू * मम गृह सकल लहैं जेवनारू
दशरथ पुलकि अनुमती दीनी * उतै विदेह व्यवस्था कीनी

परिहास करिबे कि हाराइल ज्ञान * श्रीरामेर चरणे मजाय मन प्राण
येखाने बसिया आछे अनुज लच्मण * सेखाने चलिया जाय यत सखीगण
अग्रज येमन तॉर अनुज लच्मण * भूलिल रामेरे तारा हेरिया लच्मण
एइ रूपे चारि स्थाने करि दरशन * मानिल कामिनीगण सफल नयन
चारि भाइ तुल्य चारि लइया सुन्दरी * नाना सुखे कौतुके बन्चेन विभावरी

परशुरामेर दर्प-चूर्ण

प्रभात हइल रात्रि उदित तपन * सभा करि बसिलेन यत बन्धुगण
बाजिल आनन्द वाद्य जनक भवने * बिदाय मागेन गिया वशिष्ठ ब्राह्मणे
जनक बलेन अति हइया कातर * राम सीता राखि याओ एकटि बत्सर
हासिया बलेन तबे अजेर नन्दन * शरीर लइया याव राखिया जीवन
बलेन जनक राजा शुनहे वचन * सकले आमार घरे करिबे भोजन
भाल भाल बलिया दिलेन अनुमति * आयोजन करिलेन जनक भूपति

---

१ लज्जावश सकोच। २ वियोग। ३ निवेदन।

रानी कुशल रसोई-रंधन * एक द्रव्य सों शत-शत व्यञ्जन
करि स्नान जनात-बराती * परिजन-पुरजन, जाति-विजाती
पंगत-क्रम[१], पारुस रुचिकारी * भोजन लहि सुतृप्त नर-नारी
रामलला जेवनार विराजे * षटरस, दूध, दही सब साजे
भोजन तदुपरि कीन आचमन * सादर पान सुगंधित अर्पन
विगत-निसावत[२] पुनि श्रीरामा * मिथिलाधाम कीन विश्रामा
भोर होत नृप लीन बिदाई * सजा अवध-दल, आयसु पाई

दान अपरिमित दुखिन दै, दीन अयाचक कीन।
चारि दोल[३] चढ़ि, चले सब, कुअँर-वधू आसीन ॥१५०॥

माथे मौर, दिव्य परिधाना * तेज सरूप, सोह धनुबाना
भाइन सहित दूबदल श्यामा * चंदोलन अरूढ़ श्रीरामा
मुदित, अवध तन, नृप पग दीना * स्यंदन दिव्य वशिष्ठ असीना
सोइ छन चहुँ अपसकुन निहारी * द्विजवर ! कस विपरीत बयारी[४]
कस होनी ? कस विपति-विरोधा ? * सुनि वशिष्ठ भूपतिहिं प्रबोधा
हे कोशलपति ! तव सुत चारी * राजत कुशल समुख[५] सुखकारी

राजा राणी घरे गिया करेन रन्धन * एक अन्न सह आर पञ्चाश व्यञ्जन
स्नान करि आसिया सकल प्रजागण * आनन्दित हैया सबे करेन भोजन
भोजन करेन राम परम हरिषे * दधि दुग्ध दिल राजा भोजन विशेषे
सुतृप्त हइया सबे करे आचमन * कर्पूर ताम्बुले करे मुखेर शोधन
से रात्रि थाकेन राम तथा पूर्व्ववत् * प्रातःकाले विदाय मागेन दशरथ
राम सीता चतुर्द्दोले करि आरोहण * दीन दुःखीरे धन करेन वितरण
दिव्य वस्त्र परिधान माथाय टोपर * दुर्व्वादलश्याम राम हाते धनुःशर
परे तिन भ्राता चापिलेन चतुर्द्दोले * परम आनन्द राजा अयोध्याय चले
देवरथे चड़िलेन वशिष्ठ ब्राह्मण * किन्तु चतुर्द्दिके राजा देखे अलक्षण
राजा बलिलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण * चारिदिके देखि केन एत अलक्षण
कि जानि केमने हबे विपद घटन * वशिष्ठ बलेन शुन अजेर नन्दन

---

१ ज्योनार मे बैठने की व्यवस्था। २ पिछली रात के समान ही। ३ वर-वधू योग्य सवारी, पालकी, (डोला शायद इसी का अपभ्रंश है)। ४ उलटी हवा। ५ साक्षात्।

का सक तव अपसकुन विचारे ? * सुनत, बजे पुनि कटक नगारे
बाजत तुमुल घोष नभ छावा * परशुराम-हिय कंपन आवा
बाजन-रव मिथिलापुर एही * बरन कीन कोउ नृप वैदेही
कवन भूप ? सोचत भृगुराई * जनक व्यस्त इत बागबिदाई[1]
वर-कन्या-बिछोह, गर भरहीं * लख-लख चुंब भूप मुख करहीं
कहत, सिया भरि अंक, भुआला * लली ! कीन अब लौं प्रतिपाला
कबौं-कबौं पितुपुरी बिसूरी[2] * सास-ससुर सेइय पदधूरी
कोउ प्रति इर्ष्या, राग न द्वेषू * सुख-दुख सम अदृष्ट[3] सतोषू
सतत स्वामिपद सेइय सीता * करुन, सीख पितु दीन सप्रीता
तब लौं आइ सखी, सहबोली * परिचारिका करुन रस घोली

सो० चली सबन तजि सीय, दरस चन्द्रमुख होय कब ?
सकल-दसा दयनीय, सिसकि सिसकि रोदन करहि ॥१५१॥

जनक, बिदा सिय-रघुवर कीना * शत सहस्र धन विप्रन दीना
सोइ अवसर कर कठिन कुठारा * जामदग्न्य[4], रहु ! रहु ! ललकारा

चारि दिके चारि पुत्र देख विद्यमान * के करिते पारे तव अशुभ विधान
बाजनार महाशब्द उठिल आकाश * परशुरामेर चित्ते लागिल तरास
मिथिलाते शुनि केन वाद्येर बाजना * सीता के विवाह बुझि करे कोन जना
मने मने युक्ति करे सेथा मुनिवर * हेथा राजा विदाय करेन कन्यावर
लक्ष लक्ष चुम्ब दिया वदन कमले * जनक करिया कोले जानकीरे बले
करिलाम बहु:दुखे तोमारे पालन * बारेक मिथिला बलि करिओ स्मरण
श्वशुर श्वाशुड़ि प्रति राखह सुमति * राग द्वेष असूया ना कर कार प्रति
सुख दु खना भाविओ यआछे कपाले * स्वामीसेवा सीताना छाड़िओकोनकाले
झियारी बहुरी सब आसिया तखन * गलाय धरिया सब जुड़िल क्रन्दन
आमासबाछाड़िया किचलिलाजानकी * आर कि हइवे देखा सीता चन्द्रमुखी
राम सीता विदाय करिलेन जनक * द्विजेर दिलेन धन सहस्र संख्यक
हेन काले जामदग्न्य हातेते कुठार * रह रह बलिया डाकिछे बार बार

---

१ बारात विदा होने पर, ग्राम की सीमा तक सम्बन्धी को विदा करने जाने की रस्म । २ याद करना । ३ भाग्य पर । ४ परशुराम ।

खड्ग, चर्म[1] तन, मर-कोदण्डा * महा भयानक वेष प्रचण्डा
भीमवेग धावत करि गर्जन * प्रस्तुत रुद्ररूप भृगुनन्दन
गात विकंपित कोसलराई * राम-लखन मुनि चरनन लाई[2]
सविनय मौन; निरखि सोइ काला * परशुराम कह, सुनिय भुआला !
जनक-गेह शिवधनु केहि भंगा ? * को तुम ? बरनउ सकल प्रसंगा
मम सुत राम, नाथ ! तव दासा * मोइ-कर छुवत प्रतञ्च विनासा
अग्निपुन्ज कोपे भृगुरामा * मम समता[3] राखेसि सुत-नामा
परशुराम भूतल मोहिं जानी * आन[4] राम कस नाम बखानी
सो सुनि, रघुपति विनय सुनाई * छमहु दोस तपसी द्विजराई
रक्तनयन कह, सुनु अज्ञानी ! * निपट विप्र-तपसी अनुमानी
बोलत मन्द, अबुझ मम करनी * क्षत्रिय-हीन कीन यत[5] धरनी
मम कुठार कृत इकइस बारा * बही मही चहुँ शोनित-धारा
कश्यप सौंपि धरा नित दीनी * 'तापस द्विज' कहि, ताकर हीनी
मम गुरु-चाप, मूढ़ जोइ भंगा * मस्तक रहित करौं सोइ अंगा

खड्ग चर्म्म धनु:शर शरीरे ग्रथित * भीमवेगे भार्गव हइल उपस्थित
महा-भयानक वेश देखिया मुनिर * दशरथ भूपतिर कम्पित शरीर
एक हाते रामे धरि अपरे लक्ष्मणे * मुनिर चरणे राजा दिल सेइ क्षणे
मुनि बले दशरथ बलि हे तोमारे * धनुक भाङ्गिल केबा जनकेर घरे
दशरथ कहेन आमार पुत्र राम * गुण दिते धनुके हइल दुइखान
महाकोपे ज्वलिया बलेन भृगुराम * मम सम करि राखियाछ पुत्र नाम
आमि त परशुराम विदित भूतले * हेन जन आछे के ये राम नाम बले
ए कथा शुनिया राजा बलेन वचन * दोष क्षमा कर प्रभु तपस्वी ब्राह्मण
बलेन परशुराम आरक्त नयन * तुच्छ ज्ञान कर देखि तपस्वी ब्राह्मण
नि:क्षत्रिय भूमि करि तिन सप्तवार * रक्ते नदी बहाइल आमार कुठार
समस्त पृथिवी करि कश्यपेर दान * तपस्वी ब्राह्मण बलि कर अपमान
आमार गुरुर धनु भाङ्गिलेक येइ * ताहाके बधिया आजि प्रतिफल देइ

---

१ मृगचर्म । २ पैरों पर झुकाकर । ३ समान । ४ अन्य व्यक्ति को । ५ जितनी भी, समस्त ।

सो० कहेउ भूप, भय मानि, महावीर विक्रम विपुल !
छमहु सुबालक जानि, तबहि लखन बोले बचन ॥१५२॥
वीरन बिरद-बखान न हेत * मो गावत निज मुख भृगुकेत
छत्रि-बिनास सराहेउ जो बल * सोइ जुग राम-लखन बिन भूतल
सुनि कटु गिरा-लखन बिषसानी * भृगुपति कोपि कहेउ इमि बानी
जीरन[1] चाप भञ्जि नहि पारा * मम धनु-गुन[2] चढये निस्तारा
अस कहि धनुप दीन रघुराई * सिय मन उपज सोच अधिकाई
राम सुयोग[3] एक धनु तोरा * पितु-प्रन राखि बरन किय मोरा
पुनि भृगु आनि धरेउ धनु शूला * सौतिन सरिस किधौं प्रतिकूला
दीन सदर्प चाप भृगुरामा * तासु भार बिनसई श्रीरामा
सो हँसि बाम-पानि[4] रघुवीरा * सहज लीन, अति पुलक सरीरा
कौतुक लखहु लखन ! धनुधारी * यहि धनुही गरिमा मुनि भारी
हे मुनिवीर ! धनुष किय अर्पन * तौ सर कीजिय नाथ समर्पन

भूपति बलेन भये कम्पित शरीर * बालकेर अपराध क्षम महावीर
रुषिया कहेन तबे सुमित्रा-कुमार * कथाय कि फल कर वीरेर आचार
क्षत्रिय विनाश तुमि करेछ यखन * तखन ना जन्मेछिल श्रीराम लक्ष्मण
एतेक बलिल यदि सुमित्रानन्दन * कुपित परशुराम कहेन वचन
जीर्ण धनु भाङ्गिया ये देखाइल गुण * आमार धनुके राम देह देखि गुण
एतेक कहिया धनु दिलेन तखन * जानकी भावेन नम्र करिया वदन
एक बार धनुक भाङ्गिया अकस्मात् * करिलेन विवाह आमारे रघुनाथ
आर बार धनुक आनिल भृगुमुनि * ना जानि हवे मोर कतेक सतिनी
धनुखान भृगुराम दिल बड दापे * मरे त मरुक राम धनुकेर चा
धनुक देखिया अति प्रसन्न अन्तरे * हासिया धरेन राम धनु वाम क
श्रीराम बलेन हे लक्ष्मण धनुर्द्धर * ए धनुकेर गरिमा करेन मुनि
श्रीराम बलेन शुन ओहे वीरवर * धनु यदि दिले तबे देह एक

१ जीर्ण, पुराना । २ धनुष की डोरी । ३ संयोग से । ४ बायाँ हाथ ।

राम सरिस, सिय सब गुनखानी * धन्य पिता, धनि जननि बखानी
आगे चलि सरयू करि पारा * नगर अयोध्या नृप पग धारा
शोभा अकथ, अवध-छवि न्यारी * प्रमुदित बाल, वृद्ध, नर, नारी
उदधि-अनन्द हिलोरैं लेहीं * आगम-राम सकल सुख लेहीं
सुता-कुलबधुन, निज-निज द्वारे * घृत प्रदीप दीपहिं सँभियारे
कनककलस, बंदन अमरारी[1] * नरियल रंभा[2] सगुन सुपारी
ग्राम प्रदच्छिन करि अजनन्दन * नगर समीप बजाये बाजन
कौशल्यादिक तीनिउ रानी * परछन बधुन चलीं सुखसानी
चलीं पुरबधू तिन संग धाई * घर-घर पुरी, बजत सहनाई
जय-जय ! सुमन बृष्टि सुरबृन्दा * नाचैं, उर उल्लास अनन्दा
बहुअन बगल सोवरन कलसी * दै सुभ सबन, आत्मा हुलसी
हरा-भरा तिन सीस धराई * केला खील तहाँ छिटकाई
कुल अनुरूप सुमंगल रीती * सविधि सबै पुरवइँ अति प्रीती
सुभ साइति, रानिन मुँह देखा * चन्द्रमुखिन लखि जूड़ बिशेखा
अभरन, बसन, रत्नमय भूषन * नाना यौतुक दीन सबंजन

इहार जननी धन्य धन्य एर पिता * येमनि गुणेर राम तेमनि ए सीता
तथा हैते चलिलेन परम हरिषे * उत्तरिला गिया सबे आपनार देशे
अयोध्यार ये शोभा ता वर्णिते नापारि * आनन्द-सागरे मग्न बाल वृद्ध नारी
कुलबधू आर यत प्रजार कुमारी * घृतेर प्रदीप ज्वाले द्वारे सारि सारि
सुवर्णेर पूर्ण कुम्भे दिल आम्रसार * गुवाक कदली नारिकेल राखे आर
ग्राम प्रदक्षिण करे अजर नन्दन * ग्रामेर निकटे गिया बाजाय बाजन
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा रमणी * चारिबधू आनिते चलिल तिन राणी
सङ्गे ते चलिल रङ्गे पुरवासी नारी * सानन्द सकल पुरी बाजे तुरी भेरी
देवगण वरिषण करे पुष्पराशि * जय दिया नाचेसबे आनन्द उल्लासि
चारि वधू कक्षे दिल सुवर्ण कलसी * व्यवहार मत कर्म्म करे पुरवासी
कक्षे दिल कलसी मस्तके दिल डाला * छड़ाइया फेले सेइ खाने खइ कला
शुभक्षणे राणीरा देखिल वधूमुख * निरखिया चन्द्रमुख जुड़ाइल वुक

---

१ आम के पत्तो की वन्दनवार । २ केला ।

यौतुक रघुपति लहेउ जो, अतुलित विविध प्रकार।
तामों परिपूरन भयेउ, अमित राम-भण्डार॥
लहेउ सिया यौतुक यतक, निरखि रमा सकुचाय।
चारि कुअँर उत परसि पग, जननिन वन्देउ जाय॥
रानिन दीन असीस बहु, धन, सुत, आयु बखानि।
सुतन लिये दशरथ अवध, मगन पाय सुखखानि॥
सुख संपति सासन सकल, सुरपुर-स्वर्ग समान।
सलिल सरिस कृतिवास इमि, ललित कीन हरिगान॥
आदिकाण्ड गाथा परम, पावन इतै विराम।
रचौ अयोध्याकाण्ड पुनि, वन्दि सियावर राम॥१५५॥

नाना विधि यौतुक दिलेन सर्व्वजन * मणिमय आभरण वसन भूषण
यौतुकेते पान राम यत अलङ्कार * ताहाते हइल पूर्ण ताँहार भाण्डार
पाइलेन सीतादेवी यतेक यौतुक * निजे लक्ष्मी तिनि ताँर ए नहे कौतुक
श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न * वन्दिलेन गिया सबे मायेर चरण
चारि पुत्रे आशीर्व्वाद करे राणीगण * चिरजीवि हओ पाओ बहु पुत्र धन
चारि पुत्र ल'ये राजा सुखी बहुतर * सुखे राज्य करे येन स्वर्गे पुरन्दर
कृत्तिवास रचे गीत अमृत-समान * एत दूरे आदिकाण्ड हैल समापन

❀ आदिकाण्ड समाप्त ❀
